# १ प्राणायाम की महत्ता ०४ १२ १९८५

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ हैं, कोई भी ऐसी स्थली नहीं है, जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो। मानो समुद्रों की कोई भी तरंग ऐसी नहीं, और पर्वतों की कोई ऐसी गुफा नहीं है, जहाँ वे परमपिता परमात्मा वास न करता हो। मानो वह सर्वत्र विद्यमान है, इसीलिए मानव को, उस परमपिता परमात्मा का उद्गीत गाना चाहिए, क्योंकि जो परमपिता परमात्मा की महिमा के ऊपर चिन्तन और मनन करते रहते है। उनकी जो मनोनीत बुद्धि है, वे महान् और पवित्र बनती चली जाती हैं। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, नाना प्रकार के वैज्ञानिक हुए, परन्तु उन वैज्ञानिकों के चिन्तन करने का जो एक समूह रहा है, अथवा एक विचार रहा है, वह एक बड़ा अनुपम रहा है।

## पञ्च महाभूतों से जीवन सत्ता

मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी ने, कई काल में वैज्ञानिकों की चर्चाएं की हैं, परन्तु हमारे यहाँ, जिस भी काल में वैज्ञानिक जनों ने, अन्वेषण और अनुसन्धान किया है, वह बड़ा विचित्र रहा है। एक समय ऐसा इन्होंने वर्णन कराया, कि आधुनिक काल का जो विज्ञानवेत्ता है, वह यह कहता है कि आधुनिक वैज्ञानिकों ने नाना जीवन शक्ति के ऊपर अन्वेषण किया है, और वह माना है कि ये जीवन शक्ति कहाँ तक निहित है। परन्तु वह जहाँ तक जान पाए हैं वहाँ तक वह अपने में यह निर्णय देते हैं, कि विज्ञान ने बड़ी उपलब्धियाँ की हैं, और जीवन सत्ता को जानने का प्रयास किया है और जाना है। परन्तु जब वेद का मन्त्र इस सम्बन्ध में कुछ विवेचना देने लगता है, तो वेद का मन्त्र यह कहता है विज्ञान के सम्बन्ध में रोहिणी रूद्र प्रहा व्रतं देवाः वासन्चौ शरणास्ते बेटा! वेद का मन्त्र यह कहता है कि जहाँ अग्नि है और वहीं आपो है और जहाँ आपो और अग्नि है वहीं वायु है और जहाँ वायु और अग्नि हैं वहीं पार्थिवतत्व हैं और जहाँ यह पार्थिवतत्व है और आपों है और अग्नि है और वायु है वहीं एक अंतरिक्ष की प्रतिभा कहलाती है। तो जहाँ यह पंचमहाभूत होंगे, वहीं जीवन सत्ता होगीं। परन्तु वेद का मन्त्र यह कहता है, वेद का ऋषि भी यही उद्गीत गा रहा है, एक-एक अणु और परमाणु में जीवन सत्ता को वो स्वीकार कर रहा है। तो हमारा वेदमन्त्र मानो यह कहता है हे मानव! तू संसार की कोई वस्तु ऐसी नहीं है जहाँ उस परमपिता परमात्मा की चेतना, अपना क्रिया कलाप न कर रही हो। जैसे माला में मानो देखो, नाना मनके हैं और एक सूत्र में वह पिरोए हुई हैं। वह एक सूत्र में पिरोया हुआ, मानो वह माला बनी हुई है, इसी प्रकार यहाँ, एक परमाणु है, उस परमाणु के अन्तर्गत नाना जीवाणु अपने क्रियाकलाप कर रहे हैं। जीवाणु के साथ-साथ एक विशेष परमाणु होता है, तो वह एक माला बनी हुई रहती है। जैसे माला का हम उदाहरण देते रहते हैं, इसी प्रकार यह संसार एक प्रकार की माला के सदृश्य माना गया है।

तो आज हमें विचार विनिमय करना चाहिए, हम अपने में कुछ अन्वेषण करते चले जाएं, कि संसार में कोई वस्तु संसार की ऐसी नहीं है जहाँ वह चेतना अपना क्रियाकलाप न कर रही हो, और मानव चेतना के साथ जीवन सत्ता है। तो जीवन जहाँ मानवब्रहे पांचों पंचमहा भूत हैं, वही एक जीवन की धारा कहलाती है, चाहे वह समुद्रों के आंगन में हो, चाहे यह पृथ्वी मण्डल पर हो, चाहे वह किसी भी लोक लोकान्तरों में क्यों न हो, परन्तु प्राणी अपने क्रिया-कलाप में लगा हुआ है और अपने में रत्त हो रहा है।

तो विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! देखो, ये जीवन की धाराएं। आज मैं विशेषता में तुम्हें ले जाना नहीं

चाहता हूँ। ये तो विज्ञान का युग है, विज्ञान की प्रतिभा है, बेटा! मैंने तुम्हें कई काल में ये निर्णय देते हुए कहा था। जब मैं किसी काल में देवपूजा के सम्बन्ध में, अपनी विवेचना हम देते रहते हैं, तो मानो जड़ और चेतन दो प्रकार के देवता कहलाते हैं। उन देवताओं में मानो देखो, एक महान् सत्ता कहलाती है, उसमें एक महानता की ज्योति जागरुक रहती है। जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से विचार विनिमय करता रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, आज हम देखो, कुछ विचार विनिमय करेंगे, जिन विचारों के ऊपर, परम्परागतों में भी हमने बहुत से विचार तुम्हें प्रदान किए हैं। मानो देखो, कई काल हुआ जब बेटा! हमने कहा था कि वायु हमारा पितर कहलाता है। हमारे यहाँ पंचयागों का जो एक क्रियाकलाप है, ये ऋषि-मुनियों ने बेटा! अनुसन्धान करने के पश्चात्, ये पांच प्रकार के यागों का चलन, हमारे प्रायः वैदिक साहित्य में आता रहा है। पांच प्रकार का याग कौन-सा है? सबसे प्रथम ब्रह्मयाग कहलाता है, जहाँ ब्रह्म की धारा निहित रहती है। उसके पश्चात् देवपूजा कहलाता है देवपूजा का अभिप्राय यह है। हमारे यहाँ जो परम्परागतों से बेटा! पूजा के सम्बन्ध में, भिन्न-भिन प्रकार की धाराएं, मानव के समीप नृत्य करती रही है, पूजा का अभिप्राय अपने-अपने रूपों में मानो उसका निरूपण किया है। हमारे यहाँ देवपूजा का अभिप्राय यह है कि हम, अपने में कटिबद्ध हो करके, नतमस्तक हो जाएं, और मस्तक को उसमें, न्यौदा में परिणत करते चले जाएं। मेरे प्यारे! देखो, यहाँ ऐसा नहीं है वास्तव में, यह विचारा गया है कि हमारे यहाँ जो देवपूजा का अभिप्राय है, पूजा कहते हैं जब अन्तिम छोर पर, मानव जाता है। पूजा का अर्थ यही है कि जिस वस्तु को हम जानना चाहते हैं। उसका सदुपयोग किया जाएं और उस सदुपयोग का नाम ही उसकी पूजा कहलाई जाती है। मेरे प्यारे! जैसे हम अग्नि की पूजा करना चाहते हैं, तो अग्नि की पूजा का अभिप्राय यह है कि हम अपने गृह में, अपने आसन पर मानो देखो, हमारे यहां याग करना, सुगन्ध लेना और उससे वायुमण्डल को पवित्र बनाना है। मानो देखो, वह उसकी पूजा हो गई।

## महर्षि सोमतिति का अनुष्ठान

मुझे स्मरण आता रहता है एक समय सोमतिती मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान थे। तो सोमतिती मुनि महाराज मानो देखो, उनके हृदय में, यह जिज्ञासा जागरूक हुई, कि मैं तपस्वी बनूं। तो वह तप करने के लिए, भयंकर वन में चले गए। तप का अभिप्राय क्या है? तप भी उसे ही कहते हैं इन्द्रियों का सदुपयोग करना, उनके विषयों को एकत्रित करके उनको जानने का नाम तप कहा जाता है। इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, वह अप्रतम् ब्रह्म जब इन्द्रियों का शोधन करने के लिए, मन को पवित्र बनाने के लिए साधना में रत्त होने लगे, तो सोमतिती महाराज ने बेटा! भयंकर वनों में कुछ साकल्य एकत्रित किया और साकल्य एकत्रित करके, उसको अग्नि में परिणत करने ले। मेरे प्यारे! देखो, अग्नि से ही वायु मण्डल का शोधन किया जाता है, और यह वाणी भिन्न-भिन्न प्रकार की, अग्नि, भिन्न-भिन्न प्रकार को बन करके रहती है। काष्ठों में जो अग्नि रहती है उस अग्नि में जितना साकल्य पदार्थ तुम प्रदान करोगे, उतना ही वायुमण्डल में वायु उनके वातावरण में महानता की ज्योति जागरूक हो जाती है।

मेरे प्यारे! सोमतिती मुनि ने भयंकर बनों में बेटा! सुगन्ध पदार्थों को ले करके याग करना प्रारम्भ किया, तो वायु मंगलं ब्रह्मे तो जब वह याग करने लगे, तो वह छह माह हो गए थे, वह नित्यप्रति याग करते थे, वायुमण्डल बड़ा पवित्र हो गया, मन की प्रवृत्ति मानो रजोगुण से सतोगुण के आंगन में प्रवेश कर गई। और मुनिवरों! तीनों गुणों से किसी-किसी काल में उपरामता को प्राप्त हो जाती थीं। तो मुनिवरों! देखो, जब वह याग कर रहे थे छह माह हो गए, तो एक समय बेटा! कहीं से भ्रमण करते हुए महर्षि अटूटी मुनि महाराज भ्रमण करते हुए बेटा! उनके समीप आ गए थे। महात्मा अटूटी ने कहा ऋषिवर सोमतिती! तुम क्या कर रहे हो? उन्होंने कहा प्रभु! मैं याग कर

## याग एक सर्वांग पूजा

रहा हूँ, इस वायुमण्डल को पवित्र बनाने के लिए, मुझे इस वायुमण्डल में बाह्य जगत् से परमाणुओं को लेना है, और परमाणुओं को ही देना है, आदान-प्रदान में लगा हुआ हूँ। मानो देखो, जब मैं वायुमण्डल के परमाणुओं को शुद्ध करूंगा तो मेरे श्वासों में जो परमाणु आएगा, वह भी स्वच्छ बन करके, मेरे अन्तःकरण को पवित्र बनाएगा, ऐसा मानो देखो, ऋषि सोमतिती ने महात्मा अटूटी से ये कहा। उन्होंने कहा याग का अभिप्राय क्या है? याग को, तो अग्नि को तो देवपूजा के रूप में हम परिणत करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, महात्मा सोमतिती ने कहा, कि क्या तुमने वेदों का अध्ययन नहीं किया, यह मानो देखो, मैं जो क्रियाकलाप कर रहा हूँ इसके ऊपर तुम विचार-विनिमय करो। बेटा! प्रातःकाल जब हुआ, तो वह याग को प्रारम्भ करने लगे, जब याग प्रारम्भ किया, तो कर्मकाण्ड की आभा में नियुक्त हो गए।

मेरे प्यारे देखो, कर्मकाण्ड क्या, वह याग की प्रदक्षिणा मानो जल से संचालित होने लगी, आपों में रत्त होने लगी। तो उन्होंने कहा हे भगवन! यह तुम क्या कर रहे हो? उन्होंने कहा यह सर्वांग पूजा कर रहा हूँ, उसे सर्वांग पूजा कहा हैं। उन्होंने कहा प्रभु! उसको नहीं जान पाए। उन्होंने कहा कि मैं जल की प्रदक्षिणा कर रहा हूँ। देखो, यह तो तुम्हें प्रतीत होगा कि मानो देखो, यह जो आपो है, ये जैसे परमपिता परमात्मा ने, जब सृष्टि की रचना की तो मानो देखो, पृथ्वी की जब रचना हो गई, तो पृथ्वी के तीन आंगन में, तीन विभागों में देखो, परमपिता परमात्मा ने जल को अर्पित किया है, मानो प्रदान किया है। वह प्रदक्षिणा के रूप में, आपो अपने में रत्त हो रहा है। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा प्रिय, यथार्थ है। उन्होंने कहा कि इसी स्वरूप को ले करके, माता के गर्भस्थल में, जब मैं था। तो मेरी माता यह वर्णन कराती रहती थी, कि हे बालक! हे ब्रह्मचारी! तू अध्ययन कर रहा है, तू सर्वांग अध्ययन करना। तो मैं माता से यह कहा करता था, कि हे माता! यह सर्वांग अध्ययन क्या होता है? उन्होंने कहा सर्वांग अध्ययन वह होता है, जैसे माता के गर्भस्थल में हे बालक! जब तू मेरे गर्भाशय में विद्यमान था तो मानो तेरे तीन विभाग में जलाशय भरा हुआ था, और वह जलाशय में ही तू पनप रहा था। इसीलिए वेद का मन्त्र कहता है, अदिति मानो देखो, अदिति कहता है, सरस्वती कहता है और वही कहीं अनुमते कहता है, वही वेदमंत्र जब यह कहता है। तो वह कहता है कि यह सरस्वती वाला जल है, यह मानो माता के गर्भस्थल में जो जलाशय है, वही तो पनपाता है। इसीलिए वायुमण्डल या पनपाना यह सब जलाशय की ही प्रतिभा कहलाती है। तो मानो देखो, इस प्रकार जब ऋषि यह वर्णन कर रहे थे, तो महात्मा अटूटी ने कहा प्रभु! यह मेरे विचार में तो यह वाक् आया नहीं। उन्होंने कहा तो जानो, कि दक्षिण दिशा में, दक्षिणायन में इन्द्र रहता है। यह तो तुम्हें प्रतीत है। इन्द्र नाम वायु का है, वही मानो देखो, सूक्ष्म रूप में अदिति वही कहलाता है। वही और सूक्ष्म रूप में आदित्य कहलाता है और वहीं और सूक्ष्म रूप में मानो देखो, द्यौ कहलाता है और वह द्यौ मानो देखो, दक्षिणायन से गमन करता हुआ, वह उत्तरायण में जाता है और उत्तरायण से गमन करके वही पश्चिम अन्न का भंडार बन करके रहता है, और वही जब अन्न का भण्डार बन गया, तो वही सरस्वती के रूप में रहता है, ज्ञान का भण्डार उसको प्राप्त हो जाता है और ज्ञान से विवेक होता है और विवेक से मानो परमपिता परमात्मा की अनुपम पगडण्डी को ग्रहण करता है। मेरे प्यारे! तो जब ऋषि ने यह वर्णन कराया, जब ऋषि ने ये वर्णन ब्रह्मे ऋषि ने कहा हे भगवन्! अटूटी! मेरी माता ऐसा कहा करती है मानो देखो, मैं माता की उस आज्ञा का एक पात्र बना हुआ हूँ और मैं यह स्वीकार करता हूँ कि प्रायः माता का अनुभव बड़ा विचित्र है, क्योंकि मेरी माता सदैव वेदों का अध्ययन करती रहती थी और तपस्या में तल्लीन रहती और वह अपने गर्भाशय में रहने वाली आत्मा से आत्मा का मिलान करके, वार्त्ता प्रगट करती रहती थी। तो मेरे प्यारे! महात्मा अटूटी मौन हो गए।

## जातवेद अग्नि

## याग एक सर्वांग पूजा

उन्होंने कहा प्रभु! यह विचार तो मेरे हृदय में समाहित हुआ है, परन्तु देखो, मैं यह और जानना चाहता हूँ, कि सर्वांग पूजा के रूप को मैं नहीं जाना हूँ। उन्होंने कहा यह जल की पूजा हो गई है, और दिशाओं की पूजा हो गई है। पूजा का अभिप्राय ये है कि हम उनसे कुछ लेते हैं उनसे कुछ विज्ञान में परिणत होते हैं। जिससे वायुमण्डल में पवित्रता आ जाए। परन्तु उसके पश्चात् देखो, समिधाओं में, काष्ठ में जो अग्नि विद्यमान है, उस अग्नि का बाह्य जगत वाली अग्नि से समन्वय करते हैं, और समन्वय करके जब वह अग्नि उद्बुद्ध हो जाती है वह देखो, जातवेद अग्नि कहलाती है। वह अग्नि मानो जब उद्बुद्ध हो जाती हे तो उस अग्नि में हम, क्योंकि वह अग्नि भेदन करती है, वह जल का भी भेदन करती है, वह मानो प्रत्येक पदार्थों का भेदन करती रहती है। चार प्रकार के साकल्यों के द्वारा, हम अग्न्याधान करते हैं। सबसे प्रथम मानो देखो, जो रूग्ण, रोगों को नाश करने वाली हो, रूग्ण का विनाश करने वाली हो, रूग्ण हमारे शरीरों में नहीं रहने चाहिए। उसके पश्चात मुनिवरों! देखो, तृतीय हमारा जो पौष्टिक है, वह पौष्टिक परमाणु, पौष्टिक पदार्थों का तुम अग्नि में प्रदान करोगे, तो उसका वह भेदन कर देगी, और भेदन करके मानो देखो, वह पौष्टिकता को प्रदान करती है। उसके पश्चात् सुगन्धित पदार्थ, मानो वह जो सुगन्धि देने वाले, जो पदार्थ है, वह मानो देखो, दुर्गन्धता को समाप्त करते हैं, और सुगन्ध को प्रदान करने लगते हैं। मानो देखो, यह तीन प्रकार का, जो साकल्य अग्नि में प्रदान किया जाता है, वह जो अग्नयाधान हो रहा है, अग्नि में उसे हम प्रदान कर रहे हैं, अग्नि ही संसार के प्रत्येक पदार्थ का भेदन कर देती है। मानो देखो, यही अग्नि है जो काष्ठों से बाह्य जगत बन करके ये तरगें बन करके जाती है। यही शब्दों के साथ में, मानो देखो, और भी शब्दों के साथ में शब्द के अपने ऊपर विश्राम करा करके, वह वायुमण्डल में प्रसारण करा देती है, और जब यह वायुमण्डल में चला जाता है, तो वायुमण्डल में मानो देखो, अणु और परमाणु के रूप में परिणत होता है। परिणत हो करके यही द्यौ लोक में प्राप्त हो जाता है। द्यौ में प्रवेश कर जाता है। जब यह द्यौ मण्डल में प्रवेश करता है तो मुनिवरों! देखो, द्यौ से ये नाना प्रकार के, जो लोक लोकान्तर है, अथवा सूर्य जैसा मण्डल है, यह ऊर्ज्वा को ले करके, द्यौ से मुनिवरों! देखो, प्रकाश देता रहता है। ये संसार को ऊर्ज्वा में परिणत कर देता है और यह प्रकाश देता रहता है।

तो मुनिवरों! देखो, विचार क्या, सोमतिती मुनि महाराज ने यह कहा, महात्मा अटूटी से कि महाराज! अब आपने जाना है मेरे मन्तव्य को, कि मैं याग कर रहा हूँ और मैं याग क्या मैं पूजा कर रहा हूँ। पूजा का अभिप्राय ये है कि उसके विशुद्ध रूप को जानना मेरी एक पूजा कहलाती है। मानो देखो, पूजा का अभिप्राय ये है कि अग्नि को मैं वह पदार्थ देना चाहता हूँ, जिससे यह वायुमण्डल पवित्र हो जाए, और विज्ञान की धाराओं में, वह परमाणु अपने में सार्थक बन करके रहे। तो मुनिवरों! देखो, महात्मा अटूटी ने वह वाक् भी स्वीकार कर लिया, परन्तु पुनः उन्होंने यह कहा कि महाराज! यह सर्वांग पूजा कैसे मैं स्वीकार करूं? उन्होंने कहा सम्भवे अग्नि का जहाँ विश्लेषण आता है कि अग्नि शब्द को ले करके, अन्तरिक्ष में परिणत करा देती है, मानो देखो, वहाँ वायु भी उसमें सहयोगी बनता है, क्योंकि वायु ही अग्नि के परमाणुओं को गति देती है। अग्नि ही मानो देखो, शब्द को ऊर्ध्वा में ले जाती है। यह वायु प्राण सत्ता को प्रदान करने वाली है। वेद का आचार्य यह कहता है वायं ब्रह्म प्राणः वृत्ति देवाः वायु ही तो प्राण देता है और ये प्राणसत्ता को पा करके मानव नाना प्रकार की आभा में नियुक्त हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! विचार क्या? मैं बहुत गम्भीर वाक्यों में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार ये देना चाहता हूँ मुनिवरों! देखो, यह आपं ब्रह्म लोकां ब्रहे संस्ताः वेद का आचार्य यह निर्णय देने लगा, कि यह वायु ही तो मानो हमारा पितर कहलाता है, और यह देवता भी कहलाता है। इसकी देवपूजा हमें करनी है क्या मानो देखो, वायु ही इस संसार की आभा में नियुक्त रहता है मानो परमाणुओं को गति देता है।

वायु मुनिवरों! देखो, भिन्न प्रकार की कहलाती है। एक वायु वह कहलाती है जो वेग से भ्रमण कर रही है, मानो उसमें उसमें शीतल के परमाणु प्रवेश कर गएं तो शीतल बन गई है। ऊष्ण परमाणु विशेष गति कर गएं हैं ऊष्ण बन गई है। वही ऊष्ण बन करके मानव के प्राणों की भी घातक बन जाती है। अपने प्राण को भी अपने में संचय करने लगती है। वही वायु है, जो बहुत धीमे धीमे गति करती है, और मानव यह कहता है कि आज तो मानो वायु वेग में गति नहीं कर रही है। परन्तु वह अपने में गति कर रही है गति न करें तो मानव श्वास भी नहीं ले पा सकता। मानो देखो, वह अप्रतम् ब्रह्म लोकाम् वह भी एक वायु है। एक वायु वह कहलाती है, जिस वायु को मानो देखो, प्राण के द्वारा अपने में संचित करने लगता है। प्राणायाम करता है, और प्राण के द्वारा, मुनिवरों! देखो, वह नाना प्रकार के प्राण के रूपों को जानने लगता है। वह मानो देखो, वायु ही प्राणों के रूप में रहती है जैसे खेचरी मुद्रा है, रेचक है, पूरक है, कुम्भक है, ये सब प्राण की प्रतिक्रिया कहलाती है।

तो तुम्हें मैंने बहुत पुरातन काल में एक वाक् प्रगट करते हुए कहा था, बेटा! वह त्रेता काल का वाक् है। भगवान् राम मुनिवरों! देखो, जब रावण से संग्राम करने के लिए, समुद्र के तट पर मानो अपनी सेना नियुक्त की तो उन्होंने बाली के पुत्र अंगद को यह कहा कि जाओ तुम दूत बन करके जाओ। क्योंकि देखो, एक राजा को राजा के समीप जा करके ऐसा औषध देना चाहिए। जिससे उसका विचार परिवर्तन हो जाए, तो बहुत ही प्रियता है। उसके राष्ट्र की रक्षा हो जाएगी और दूसरे प्राणियों की रक्षा होगी। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने अंगद को कहा तुम जाओ, रावण के द्वार पर क्योंकि वह राजा है, राजा भी है, और बुद्धिमान भी है। तुम उनके समीप जा करके याचना करो, कि तुम राम का और तुम्हारा दोनों का विलय हो जाए, तो बहुत ही प्रियता है। मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि महाराजा! अंगद ने वहाँ से गमन किया और गमन करते समय राम से यह कहा कि प्रभु! मैं समन्वय कैसे करवाऊं, कैसे कर सकता हूँ मुझे कोई आप आज्ञा तो दीजिए। उन्होंने कहा कि समन्वय यही है, कि वह सीता को मुझे प्रदान कर दें, और तुम अपनी लंका का राज मानो सुचारू रूप से करो और कोई किसी प्रकार का विवादनीय विषय नहीं होना चाहिए। उन्होंने ये वाक् स्वीकार कर लिया, मेरे प्यारे! मेघनाथ जी बाली पुत्र भ्रमण करते हुए, लंका में पहुंचे। लंका में देखो, राजा रावण अपने न्यायालय में विराजमान थे। मानो अपनी राजस्थली पर विद्यमान थे। मुनिवरों! देखो, एक आसन पर मेघनाद जी विद्यमान हैं, एक आसन पर देखो, वह कुम्भकरण जी विद्यमान हैं, सर्वत्र राष्ट्र के जो ऊर्ध्वा में कर्मवेत्ता है वे सब विद्यमान हैं। उन्होंने कहा रावण ने कहा यह कौन है? द्वारम् ब्रह्मे द्वारपाल ने उनको वृत्ति कर दिया कि मैं आज्ञा ले आऊं। तो वह द्वारपाल पहुंचे, द्वारपाल से रावण कहते हैं यह कौन है? उन्होंने कहा यह वाली पुत्र मेघनाथ हैं उन्होंने कहा यहाँ कैसे इनका पदार्पण हुआ? उन्होंने कहा आपसे मिलन करना चाहते हैं। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम! मानो देखो, वह राज स्थलियों पर, मुनिवरों! देखो, वह सभा में पहुंचे।

राज सभा में जब पहुंचे, तो उन्होंने कहा कहो बाली पुत्र! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ है? मैंने तो यह श्रवण किया है कि राम की सेना में तुम सेनापति बन गएं हो। उन्होंने कहा प्रभु! जो आपने श्रवण किया है वह यथार्थ है। उन्होंने कहा तो तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा मैं राम की सेना का, मानो देखो, राम की आकृतियों से मैं आज आपके यहाँ देखो, राजदूत बन करके आया हूँ और मेरी इच्छा ये है कि आप देखो, राम से विलय करके, अपने में समन्वय कर लें, तो बहुत ही प्रियता होगी, यह लंका का वृत देखो, लंका एक सुसज्जित रह जाएगी।

मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि तुम दूत बन करके आए हो। उन्होंने कहा भगवन! अवश्य, मैं दूत बन करके आया हूँ क्योंकि राजा का कर्तव्य है कि एक दूत बनके भी आना चाहिए, जिससे दोनों का विलय हो जाए या दोनों में समन्वय की प्रतिभा जागरूक हो जाए। रावण ने कहा कि मैं राम से अपना किसी भी काल में विलय करना

नहीं चाहता, मैं उनसे समन्वय नहीं चाहता हूँ। उन्होंने कहा प्रभु! कारण? उन्होंने कहा कारण यह हे कि वह मेरे समीप कोई न तो बलवान है, न वह वैज्ञानिक इतना है, मैं मानो वह सूक्ष्म समय में नष्ट न करके, मैं अपने राष्ट्र का पालन करूंगा। जब यह वाक् उन्होंने प्रगट किया, तो सम्भूति ब्रह्मा मेरे प्यारे! वह बोले कि नहीं भगवन्! ऐसा अभिमान नही करना चाहिए, एक राजा को अभिमान में नहीं आना चाहिए, क्योकि हो सकता है कि द्वितीय प्राणी तुम पर जो आक्रमण करने वाला है, उनमें कितना बल है इसको प्रभु जानता है, इसको तुम नहीं जानते। उन्होंने कहा कि हम जानते हैं कि हममें बहुत बल है, हमारे यहाँ विज्ञान है, हम आकाश मार्ग में, अंतरिक्ष में भी संग्राम करने वाले हैं, पृथ्वी पर भी संग्राम करने वाले हैं, समुद्रों के गर्भ में भी जा करके हम संग्राम करने वाले हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने यह वाक् प्रगट किया तो उन्होंने बहुत नम्रता से कहा, नहीं भगवन! देखो, यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने में शुद्ध बुद्धां ब्रह्मे बुद्धि से अपने क्रिया-कलापों में तत्पर रहें। क्योंकि संसार में विवाद जितने भी होते हैं वह बड़े भयंकर होते है। मानव के रक्त का जैसे नदी अपने में नीर से प्रणय रहती है, जलाशय से परिपक्व रहती है, ऐसे ही राजा के राष्ट्र में जब संग्राम होने लगता है, तो प्राणियों का रक्त बहाया जाता है। वह रक्त नही बहाना चाहिए, रक्त में से जो तरंगें बन करके वायु मण्डल में प्रवेश करती है, वायुमण्डल भी दूषित हो जाता है। देखो, वायुमण्डल दूषित होता है और पृथ्वी मण्डल दूषित हो जाता है और मानव की मनोप्रवृत्तियों में अन्तर्द्वन्द्व आ जाता है और वह जो अन्तर्द्वन्द्व होता है वह वर्ण शंकर में परिवर्तित हो जाता है। हे राजन्! तुम्हें यह वाक् मेरा स्वीकार कर लेना चाहिए। उहोंने कहा हे अंगद! तुम्हें यह प्रतीत है, तुम्हारे जो पिता थे बाली वे मेरे मित्र थे, वह इस समय नहीं हैं संसार में, परन्तु यदि वह होते तो तुम्हें यह प्रतीत हो जाता, कि मेरे में कितना बल है। उन्होंने कहा कि मैं यह जानना चाहता हूँ कि भगवन! तुम में बल बहुत है परन्तु देखो, इस बल का बनता क्या है संसार में? इसका अन्तिम चरण क्या है? बल का उपयोग करना तो बल की पूजा कहलाती है। जैसे वायु में प्राण गति करता है, वायु मानो जब दूषित हो जाती है, तो वही प्राण घातक बन जाती है, परन्तु देखो, वही वायु का जब हम शुद्धिकरण करके उसका उपयोग करते हैं वही वायु हमारे भिन्न-भिन्न प्रकार के क्रियाकलापों में प्रवेश कर जाती है। इसी प्रकार मानो बल का सदुपयोग करो और बल तुममें है बहुत प्रियता है, हमें बड़ी प्रसन्नता है, तुम बल के कारण राष्ट्र का पालन करो, राष्ट्र में एक महानता आ जाए, उसमें बल के द्वारा ही चरित्र की स्थापना करो, इससे तुम्हारा चरित्र ऊंचा बन जाए और तुम संसार में छायमान हो जाओ और तुम्हारा साम्राज्य तुम्हारी अच्छाईयों का साम्राज्य संसार में छायमान हो जाए। यदि तुम्हारा जो क्रिया कलाप है यदि वह हिंसा देखो, हिंसा में निहित रहेगा, हिंसा की प्रवृत्ति में निहित रहेगा, रावण तुम्हें प्रतीत है कि एक राजा का दूसरे की राजकन्या को या दूसरे की राजलक्ष्मी को अपने गृह में लाना यह राष्ट्र के लिए शोभा नहीं देता, यह राष्ट्र के लिए एक अपराध है। यह एक राष्ट्र के लिए एक पामर प्रवृत्ति बनानी है।

रावण को जब यह कहा तो उन्होंने कहा हे मेधम्ब्रहा! तुम्हें यह प्रतीत है, कि तुम किससे वार्त्ता प्रगट कर रहे हो। मैं इस समय राजा हूँ और मैं लंकापति राजा हूँ, इसका पाताल पुरी में भी राष्ट्र है। उन्होंने कहा मैं जानता हूँ मुझे यह प्रतीत है, कि तुम्हारे राष्ट्र में न सूर्य उदय होता है न अस्त होता है। मैं यह जानता हूँ परन्तु जानने के साथ-साथ तो मैं यह कह रहा हूँ कि तुम्हारे बल का उपयोग, यथार्थ होना चाहिए और यथार्थ होगा, तो तुम्हारे राष्ट्र में जितनी कन्याए हैं ये सुरक्षित रहेंगी, और तुम्हारे राष्ट्र में जितना मानव बल है, यह पवित्रवत बना रहेगा।

तो मुनिवरों! देखो, जब ये वाक् उन्होंने प्रगट किया तो रावण ने एक वाक् भी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा हे मेघनाथ! तुम पामर हो, तुम मानो देखो, उसकी पूजा कर रहे हो जिसने तुम्हारे पिता को मृत्यु में पहुंचा दिया। तब उन्होंने कहा मेरे पिता तो चले गये, कोई वाक् नहीं, क्योंकि पिता का जाना यथार्थ है, कोई पिता हो या

पुत्र हो, या पुत्री हो जिसके चरित्र में भिन्नता आ जाती है, चरित्र भ्रष्ट हो जाता है, उसका संसार में न होना ही प्रियता कहलाती हैं। क्योंकि वह परिवार, वह कुटुम्ब कलंकित हो जाते हैं, उस कलंक से ही तो मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह कलंकित नहीं होना चाहिए, हमारा गृह कलंकित हो गया था, वह चले गएं कोई वाक् नहीं। परन्तु तुम अपने लिए विचारों कि तुम्हारा क्या बनना है? जो श्रेणी उनकी थी, वह श्रेणी उससे आगे श्रेणी तुम्हारी है। तुम्हारी श्रेणी उससे कई गुणा श्रेणी, ऊर्ध्वा में अब तुम्हारा क्या बनेगा। तुम अपने हृदय में विचारों, जिसकी राज कन्या को तुम अपने गृह में, अपने वाटिका में निहित करके उसके चरित्र को तो तुम नष्ट इसलिए नहीं कर सकते, क्योंकि वह महान् है, वह देवी है, और यदि मानव प्रव्हे यदि तुम यह चाहते हो कि मुझे इतना अधिकार है राम पर, कि तुम सीता माता को मुझे दो और तुम्हारा देखो, उनका कोई विवाद नहीं रहेगा, इस संसार में। मेरे प्यारे! रावण ने कहा कि हे अंगद! तुम इन वाक्यों को क्यों उच्चारण कर रहे हो? जब मैंने तुम्हें कहा है, देखो, यह अस्त्रों और शस्त्रों का, मेरे यहाँ जो केंद्र है, वह इतना विशाल है क्या देखो, इस पृथ्वी को भी नष्ट कर सकता है। मेरे प्यारे! जब यह वाक् नहीं आया, तो रावण ने कहा मैं बहुत बलवान हूँ। मेरे भुजदंडों बल है, मैं राम से अपना संगतिकरण नहीं करूंगा।

मेरे पुत्रों! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण है जब वह वाक् स्वीकार नहीं किया, गया तो मुनिवरों! देखो, मेघनाथ ने, मैं प्राण की चर्चा कर रहा था, उसने अपने पांवों से, नखनों से अप्रतम् देखो, अप्रतम् ब्रह्मा प्राणायाम जो किया उन्होंने सर्वश शरीर का प्राणायाम वह अपनी एक मानो जंघा में आ गया और उन्होंने कहा रावण! यदि तुम बलवान हो तो तुम मेरे इस पग को तुम मानो देखो, एक स्थान से दूसरे स्थान पर कर दो, तो मैं माता सीता को त्याग करके चला जाऊंगा। और राम को ले करके, अयोध्या चला जाऊंगा। तब मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा अप्रतप्रव्हे देखो, वह जब प्राणायाम करके जब अपनी जंघा में प्राण को ला करके स्थिर हो गए, प्राणायाम में उन्होंने खेचरी प्राणायाम किया और प्राणायाम में खेचरी करके उन्होंने अपनेपन में सर्वश प्राण को ला करके वह बोले कि आओ, कोई बलवान् है। तो देखो, मेघनाथ जी आए, मेधम् ब्रह्माः वृतम्वही वृताम मुनिवरों! देखो, कौन अंगद ब्रह्मा अंगदो सम्भवा लोकाम् वाचप्रहे लोकम् ब्रह्मः लोकस्वताः मुनिवरों! देखो, अंगद जी ने कहा सम्भूति ब्रह्माः वेदाम् ब्रह्मा लोकाम् वरुण अस्वति सुप्रजा प्राण मुनिवरों! देखो, वह मेघम् प्रमाणाऽस्वति सुप्रजाः उन्होंने कहा तुम्हें यह प्रतीत है कि हे रावण! मेरा नामोकरण दो नामों से उच्चारण कया जाता है एक मेरा नाम अंगद के नामों से परिणत किया जाता है, एक मेघनाद के नाम से वर्णन किया जाता हैं, मेरे दो नामोकरण हैं मेरी माता मुझे अंगद कहती थी, और पिता मुझे अप्रतं ब्रह्मः देखो, अस्वताम् ब्रहे वृणास्तु रूद्राः दोनों रूपों से मेरा नाम अंगद है। तो एक मेघनाथ के नामों से उच्चारण किया जाता है। तेरा भी पुत्र मेघनाथ विद्यमान है, आज मेघनाथ, मेघनाथ दोनों का संग्राम होगा। मेरे प्यारे! जब उन्होंने अश्वतम् ब्रहे मुनिवरों! देखो, मेघनाथ का और उससे ऊर्ध्वा में जो मानो देखो, वलिष्ठ थे, तो अपने को यह जानते हुए अंगद के इस पग को मानो दूरी जब करने लगे, तो वह दूरी नहीं हुआ। तो अंगद का मंगलव्रहे देखो, मेघनाथ जी आए, अब मेघनाथ जी भी अपने बल को अस्वत् करने लगे, तो उनसे उनका पग नहीं हटा, एक स्थली से दूसरी स्थली पर नहीं पहुंचा। तो मुनिवरों! देखो, वह सब जितने बलवान थे सब अपने में मौन हो गए। अंत में देखो, रावण ने विचारा, यह कैसा अद्भुत प्राणी है, यह कैसा अद्भुत मानो बाली पुत्र है यह मेघनाथ कितना बलिष्ठ प्रहा है, यह अंगद के नामों से वर्णन भी हम तो इसको मेघनाथ ही उच्चारण करते रहे हैं। परन्तु देखो, यह तो अंगदाम् ब्रहे यह अंगद के नामों से जो माता उच्चारण करती थी, उनकी मानो जिससे इन्हेंने प्राण की विद्या ले ली है। उस प्राण की विद्या के आश्रित हो करके मैं मानो देखो, इसके पग को दूरी करूंगा। जब वह वहाँ देखो, वह उनके आंगन में आए तो इतने में ही अंगद जी ने कहा भगवन्! मंगलम्

**याग एक सर्वांग पूजा**

देखो, अपने पग को अपने आंगन में लाए, और प्राण को ज्यों का त्यों निश्चय करके बोले, रावण! आप इस योग्य क्यों बनते हो कि मेरे पगों को तुम स्पर्श करते हो। तुम राम के पगों को स्पर्श करो, जिससे तुम्हारा उद्धार हो जाए, तुम्हारी लंका सुरक्षित रहे। तो उस समय उन्होंने कहा हे बालि पुत्र! यहाँ से, अपने स्वामी के पार कर चले जाओ, अन्यथा तुम्हारा हमारा संग्राम हो जाएगा। उन्होंने कहा बहुत प्रिय भगवन्!

मैं उच्चारण यह कर रहा था क्या मुनिवरों! प्राण की कितनी विशेषता होती है, यह प्राण अपने में तो मेरे प्यारे! प्राणायाम करते रहे हैं। वह जो बालि पुत्र अंगद वह प्राण बारह-बारह वर्षों तक प्राणों का अध्ययन करते रहे। तो वह गए इसलिए देखो, उनका नाम अंगद और मेघनाथ दोनों कहलाता था। दोनों के नामों से उद्गीत गाते रहते थे, मानो उच्चारण करते रहते थे। मुनिवरों! देखो, यह आवश्यक नहीं है कि रावण के पुत्र का नाम मेघनाथ हैं, तो मेघनाथ कोई हो नहीं सकता। यह तो आवश्यक नहीं है, मुनिवरों! देखो, वह दोनों नामों से उच्चारण किया जाता था। उनको माता मेघनाथ कहती, पिता उन्हें और जो कुटुम्ब था, वह उन्हें अंगद के नाम से वर्णन करता रहता था। राम भी उन्हें अंगद ही कहते थे। तो मैं विचार दे रहा था क्या यह प्राणसत्ता है, इस प्राण सत्ता को तुम जानने का प्रयास करो, यह प्राण की महानता है, तो इसीलिए वायु हमें प्राण देता है, यह वायु देवता कहलाता है। तो ऋषि कहता है, कौन मेरे प्यारे! सोमतिति अप्रतम ब्रह्मा वाचो देवाः महात्मा अटूटी से ऋषि कहते हैं कि हे भगवन्! मैं सर्वांग पूजा कर रहा हूँ। सर्वांग पूजा को चर्चा केवल वायु तक आई है। कल मुझे देखो, वायु की प्राण की विवेचना कल और की जाएगी।

आज का विचार यह क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हम मुनिवरों! उन्हें देखो, सर्वांग पूजा में रत्त हो जाएं।यह आज का विचार अब हमारा समाप्त होने जा रहा है, कल समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाएं प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। दिनांक ०४ १२ १९८५

# २ जीवन सत्ता ०५ १२ १९८५

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते चले जा रहे थे। क्योंकि हम प्रायः उसी का गुणगान, उसी का गुणवादन जिससे मानव को एक ऊर्ज्वा प्राप्त होती है, क्योंकि परमपिता परमात्मा के स्मरण से, और उसके ज्ञान और विज्ञान की धाराओं में रत्त रहने से, बेटा! हमें एक ऊर्ज्वा प्राप्त होती है, जिस ऊर्ज्वा को प्राप्त करने के पश्चात, मानव को अन्तिम जब, एक ऊर्ज्वा मानव के हृदय में, परिपूर्णता में दृष्टिपात आने लगती है। तो उसे नाना प्रकार की और ऊर्ज्वा की आवश्यकता नही होती। क्योंकि आत्मा अपने में स्वतः ऊर्ज्वा है, शक्ति है, चेतना है। क्योंकि इसके न रहने से, यह जो मानव का शरीर है, यह शून्य बन जाता है, और जब तक यह शरीर में विद्यमान रहती है, यह मानव के शरीर में जितनी जीवन सत्ता है, चाहे वह मनस्तव रूप में हो, चाहे वह इन्द्रियों के रूप में हो, परन्तु उन सभी को ऊर्ज्वा देने वाला, यह आत्मा है, शरीर में जब तक विद्यमान है, मानव का शरीर बना रहता है, चेतनावत रहता है। परन्तु जब आत्म तत्त्व पृथक हो जाता है। तो मेरे प्यारे! मानव को ऊर्ज्वा की एक चेतना भी प्राप्त नही होती, वह शून्यवत् हो जाता है। तो मुनिवरों! हम उस परमपिता परमात्मा से क्या, अपने में स्वतः आत्मा को जानने वाले बनें, क्योंकि मानव को जब आत्मा का ज्ञान और भान हो जाता है, तो मानव के हृदय में आत्मा की एक ज्योति का एक प्रादुर्भाव होता है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव को चाहिए, कि हम अपनी आत्मचेतना में रत्त हो जाएं, परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र, जहां यह गम्भीर वाक्यों को, उदघृत कर रहा है, वहां वही वेदमन्त्र मानो कृतियों में रत्त रहने वाला है। हम उच्चारण कर रहे थे, यागां यज्ञं भविते देवाः मेरे प्यारे! मैं याग की चर्चाएं कर रहा हूँ, कई समय हो गया है।

आज का हमारा वेदमन्त्र, कुछ कह रहा था वेदमन्त्र कहता है समिधां ब्रह्म वाहा कृति लोकाः मानो देखो, यह समिधा, अग्नि में प्रबल, अग्नि में जब प्रचण्ड होती है, तो मानो यज्ञमान के हृदय को पवित्र बनाती हैं। मेरे यज्ञमान का हृदय प्रफुल्लित हो जाता है, जैसे आत्म तत्त्व में आया है, कि वे परमपिता परमात्मा ब्रह्मा बन करके निर्माणवेत्ता हैं, और इस मानो देखो, पृथ्वी की आभा में रत्त और अपने में महानता का प्रायः दर्शन होता रहता है। तो वेद का मन्त्र कहता है यज्ञमान की वाणी को पवित्र बना, यज्ञमानं ब्रह्मे सदना असति देवता जनों में बेटा! देखो, सुगन्ध की आहुतियां और प्रार्थना के रूप में बेटा! देखो, वह अपने में उडित रहा है तो विचार क्या, मानो देखो, वही, वेद का मन्त्र कहता है कि हम जल का प्रोक्षण करते हैं, हे यज्ञमान! मेरे प्यारे महानन्द जी तो भिन्न-भिन्न रूपों से, अपनी मधुर वाणी से उद्गीत गाते रहते हैं। परन्तु उनका हृदय विशुद्ध मम् ब्रहाः वायु जगत्यम् ब्रह्म वाचो देवाः हे यज्ञमान! यह समिधा तेरी वाणी को पवित्र बनाती है। बड़ा विचित्र वाक् है कि समिधा यज्ञमान की वाणी को कैसे पवित्र बनाती है? जैसे जल अपने में परोक्षण करके वह आपो के रूप में भी विद्यमान रहता है, और जल परोक्षण कहलाता है, उसके पश्चात मुनिवरों! देखो, वह और भी नाना यज्ञशाला में आहुति प्रदान करके द्यौ की याचना कर रहा है द्यौ की उपासना कर रहा है और वह कहता है कि मैं द्यौ तेरे समीप आ गया हूँ, मुझे तू अपने हृदय से आलिंगन कर। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या, जितना भी अध्वर्यु, उद्गाता चाहे वह जड़वत में है, चाहे वह चैतन्यवत् में, परन्तु मेरे यज्ञमान की वाणी तो पवित्र वास्तव में होती ही रहती है। क्योंकि वह आत्मा है, वह शाश्वत है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब वह अपने में पुरूषार्थ की आभा में रत्त होता है, ओर वह स्वतः ज्योतिवान बनता है, पुरूषार्थ करने के पश्चात भी ज्योतिवान होता है, यदि हमारे द्वारा पुरूषार्थ प्रभु का स्मरण नही हैं, तो

हमारा जीवन मानो देखो, न होने के तुल्य बन जाता है। तो इसीलिए वेद का मन्त्र, वेद की प्रतिभा, हमें भिन्न-भिन्न रूपो में परिणत कर रही है, मानो देखो, हे यज्ञमान! तू आ, और अग्नि को तू उद्बुद्ध कर जैसे यह बाह्य अग्नि यज्ञशाला में परिणत हो रही है इसी प्रकार तू आन्तरिक अग्नि को मानो जागरूक और ज्योतिवान बना करके ही आपो में तू प्रवेश कर मानो उसमें ओझल हो जाता तो मुनिवरों! देखो, वे परमपिता परमात्मा का यह जो अनुपम जगत है, यह मुझे एक यज्ञशाला के रूप में दृष्टिपात आता है। मानो यह नाना प्रकार का जो विचार है यह कहीं से समिधा बन करके रहता है जैसे बाह्य जगत में अग्नि को प्रदीप्त किया जाता है, जैसे बाह्य जगत की अग्नि को प्रदीप्त किया जाता है, इसी प्रकार जो मानो बाह्य अग्नि है, उसको तू हे यज्ञमान! तू उद्बुद्ध बना। उद्बुद्ध करता हुआ तू वेद की प्रतिभा में गान गाने वाला बन, जैसे मानो देखो, यह अन्तरिक्ष में नाना प्रकार की ध्वनियां हो रही है, और वह ध्वनित होता हुआ, उसमें प्राण का संचार रहता है। मेरे प्यारे! देखो, साधक जन, जब इस प्राण के ऊपर, अनुसन्धान करते हैं, तो मन को प्राण में ओझल कर देते हैं, मानो वही प्राण है, जो मानव के जीवन में एक महानता का प्रदर्शन कर रहा है, वस्वकन्श्रं ब्रह्मा व्रतं लोकां मेरे प्यारे! ऐसा वेद की आख्यिका कहती है क्या मुनिवरों! हम प्राण को जानने वाले बनें, मन को जानने वाले बनें, तो मन को तो वह साधक जानता है, जिसने प्रकृति का अध्ययन किया। जो प्रकृति का अध्ययन करता है, मानो प्रकृति के गर्भ में क्या-क्या नही है। तो मुनिवरों! देखो, प्रकृति के गर्भ में खाद्य पदार्थों में अन्नाद आता है, और वह अन्नाद जब आता है तो मुनिवरों! देखो, प्रणव ब्रह्मा और चेतना का प्रतिनिधि बन करके प्रणव आता है। मेरे पुत्रों! देखो, दोनों का मिलान हो जाता है। जब दोनों का मिलन होता है तो एक सूत्र के मनके बन गएं हैं। और वह एक सूत्र के मनके बन करके बेटा! वे उस अनुपमता की धारा में रत्त हो गए। तो विचार क्या मुनिवरों! यह सिद्ध हुआ, प्रकृति का सबसे सूक्ष्म तन्तु, यदि कोई है तो वह संसार में मन है। मानो देखो, चेतना का, प्राणां ब्रह्मे उसको प्रणव कहते हैं। मेरे प्यारे! उसको प्राण भी कहते हैं, मानो प्राण के नाना प्रकार के स्वरूप माने गएं हैं। मैंने तुम्हें इससे पूर्व काल में, प्राण के सम्बन्ध में बेटा! मुनिवरों! देखो, बालि पुत्र अंगद की एक चर्चा हो रही थी। मानो देखो, उन्होंने अपने प्राण सखा को अपनी जंघा में ला करके और रावण की सभा में मानो देखो, वह अपने में स्थिर हो गया। परन्तु यह चर्चाएं हो रही थी।

मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे प्रेरणाएं देते रहते हैं कि आपने इससे पूर्व काल में महाराजा मेघनाथ को उच्चारण किया और देखो, वह अंगद न कह करके मेघनाथ इन्द्रजीत कहलाता था परन्तु इससे पूर्व काल में समाधान किया, क्या देखो, वह बालि के राष्ट्र में इनके पुत्र मेधनं ब्रहा स्वस्ति सुप्रजा मानो उसको मेघनाथ भी कहा गया था। बाल्यकाल में माता कहती थी। राष्ट्र कहता था। परन्तु देखो, उनका नाम मेघ वर्णित कहलाया जाता। परन्तु देखो, जब लंका को उन्होंने अपने में विजय करने के लिए विचार बनाया तो उन्होंने बेटा! अपना नामोकरण अंगद के रूप में सम्बोधित कराया। वह भी बाल्यकाल में नामोकरण था। परन्तु उसमें कोई आश्चर्य का वाक् नही हैं।

तो आज का विचार-विनिमय हमारा क्या कि हम प्राण सखा की वासं ब्रहे मनस्तव मानो प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु है, वह मन्थन करते-करते बेटा! प्रकृति की धाराओं को मन्थन किया गया, मन्थन से मेरे पुत्रों! देखो, इस मन की प्रतिभा का जन्म हुआ और मन की प्रतिभा का जन्म जब साधक जन अपने में विद्यमान होते हैं, जो प्राण एक क्रिया चल रही है, वह क्रियावान है, और मन का जब उसमें मिश्रण हो जाता है, तो बेटा! देखो, एक-एक श्वास की एक मानो देखो, मनके के सदृश्य एक माला पिरोना स्वीकार करता है। जैसे मेरे प्यारे प्रभु ने इस संसार की माला बनाई है, मानो एक दूसरे में कटिबद्ध हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, प्राण सूत्र, जब गति करता है, तो प्राण सूत्र में ही तो सब पिरोया हुआ है। माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु है, और बिन्दु में भी प्राण सत्ता है। परन्तु वह

जो प्राण सत्ता है वही तो प्रणव को धारण करने वाली है। सम्भवा गोरस्ते, मेरे पुत्रों! तुम्हें विचार में आ गया होगा, क्या मुनिवरों! देखो, इस विचार की धारा में हमें रत्त होना है प्रणव ब्रहे सम्भवा मेरे प्यारे! जो भी साधक अपने में साधना करना चाहता है, वह मानो माला के सदृश्य अपने श्वास को पिरोता है, कहीं पिरो रहा है, किसी के चेतना में, वह ध्वनि को ध्वनित कर रहा है, जैसे माता के गर्भस्थल में बिन्दु हैं, बिन्दु में परमाणु है, अणु हैं मानो वह परमाणु अपने देखो, प्रकृति से अपने जीवन सत्ता को ले करके वही बाल्य प्रबल होता रहता है, कहीं माता की लोरियों से ऊर्ज्वा को लेता है, शक्ति को प्राप्त करता है। मेरे प्यारे! जीवन शक्ति के ऊपर अनुसन्धान, जब आचार्यों ने किया है तो कहां-कहां जीवन सत्ता प्राप्त हुई है। मैंने जीवन सत्ता के ऊपर कई काल में अपना विचार देते हुए कहा था, क्या मुनिवरों! देखो, जीवन सत्ता कहां-कहां चली गई? जहां मन और प्राण है वहीं जीवन सत्ता है। चाहे वह पृथ्वी मण्डल पर हो, चाहे वह सूर्य मण्डल पर हो, चाहे वह मंगल में हो किसी भी मण्डल में क्यों न हो।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां जब मुनिवरों! देखो, एक यन्त्र का निर्माण हुआ था वह तुम्हें प्रतीत होगा, उस यन्त्र में यह निर्माणं ब्रह्मा उन्होंने मुनिवरों! देखो, निर्माण किया, उस यन्त्र का, और यन्त्र कैसा विचित्र क्या मानो एक दूसरे में पिरोया हुआ, मानो देखो, एक ऊर्ज्वा में पिरोया हुआ बेटा! लोकों का दर्शन और ऊर्ज्वा को प्राप्त करने के लिए वह वैज्ञानिक यन्त्र अन्तरिक्ष मार्ग में उड़ान उड़ने लगा। मेरे पुत्रों! मुझे तो स्मरण है, एक समय उस यन्त्र में विराजमान हो करके, महाराज कुम्भकरण उसमें विराजमान हो करके मेरे पुत्रों! देखो, अपनी उड़ान उड़ता है, वह उसमें नाना ब्रहे कजली वनों से वह भारद्वाज मुनि के आश्रम से, मेरे प्यारे! देखो, जब वह उड़ान उड़ता है तो उड़ान उड़ता हुआ कहां, वह विचारता है मुझे जीवन सत्ता को प्राप्त करना है, यह जीवन सत्ता कहां-कहां विद्यमान हैं? तो कौन राजा रावण के विधाता कुम्भरण और ब्रह्मचारी सुकेता और ब्रह्मचारिणी शबरी ये तीनों अपने यन्त्र में विद्यमान हो करके भारद्वाज के यहां उड़ान उड़ता है। अब जीवन सत्ता को प्राप्त करने के लिए सबसे प्रथम वह यान उनका मंगल में पंहुचा है, मानो देखो, मंगल से पूर्व भी, वह मानो सबसे प्रथम चन्द्रमा में पंहुचा, चन्द्रमा में दृष्टिपात किया की इसमें बड़ी ऊर्ज्वा है वह ऊर्ज्वा कहां से लेता है, विचारा वैज्ञानिकों ने ऊर्ज्वा कहां से लेता है? छह माह तक महाराजा कुम्भकरण और ब्रह्मचारी सुकेता ओर शबरी मानो देखो, उस चन्द्र मण्डल में रहे, और चन्द्रमा में शनवेषण करते हुए अपने में यह निश्चय कर लिया कि इस चन्द्रमा में तो जीवन सत्ता है, मानो जीवन कहां रहता है? जहां प्रकृति के पंच महाभूत है वहीं जीवन सत्ता है चाहे वह किसी भी द्वार पर, किसी भी स्थली पर चले जाएं, मेरे प्यारे! देखो, छह माह के पश्चात, यह निश्चय कर लिया कि इसमें सत्ता है ओर सत्ता भी किसी से कटिबद्ध है, यहां से वह उन्होंने उड़ान ऊड़ी तो मंगल से उड़ान उड़ी वह चन्द्रमा से उड़ान उड़ करके वह उन्होंने बुद्ध में मानो उन्होंने गमन किया, बुद्ध में मानो लगभग तीन माह तक वह रहे, और तीन माह तक ही अनुसन्धान किया, जिसमें जीवन सत्ता कहां-कहां है? किस-किस प्रकार से है। तो जीवन सत्ता का अभिप्रायः यह है कि जहां मानव आत्मा के सहित मानो अपने में जीवित रहे अपने शरीर को धारण किए रहे मानो वहां एक जीवन सत्ता का उन्हें एक अनुभव होता है। मेरे प्यारे! वहां से भी तीन माह के पश्चात उड़ान उड़ते हैं, उड़ान उड़ करके यह शुक्र में पंहुचे, जहां मुनिवरों! देखो, दैत्यराज प्राचीन अतीत के काल में मेरे पुत्रों! देखो, एक महाराज शुक्राचार्य हुए हैं, महात्मा शुक्राचार्य भी अपने योग शक्ति के द्वारा, योग विद्या, प्राण की ऊर्ज्वा, संकल्प शक्ति के द्वारा, वह शुक्र मण्डल की यात्रा करते रहे हैं मानो शुक्र में वशिष्ठ गति रही है, और वहां अपने में देखो, यन्त्रों के परमाणुओं के द्वारा यानों का निर्माण करके और अपने में संकल्पमयी योग हो अहा असुति में प्रवेश करके बेटा! उसका वह गमन करते रहे हैं। तो मुनिवरों! देखो, वहां शुक्र मण्डल में, बेटा! वह लगभग वह दो माह रहे, ओर दो माह तीन दिवस रहे ओर वहां ऊर्ज्वा को प्राप्त करने लगे। वहां बेटा! वनस्पतियां

हैं, और वनस्पतियों के साथ मानो वहां एक प्राणी रहते हैं और प्राणी मुनिवरों! देखो, अपने में, वह भी उसी आहार को करते रहे। मेरे प्यारे! वहां से उड़ान उड़ता है तो जीवन सत्ता को प्राप्त करने के लिए, वह मुनिवरों! देखो, मंगल में पहुचे मंगल में एक वर्ष तक रहे। क्योंकि मंगल का वायुमण्डल इस पृथ्वी मण्डल के जैसा ही है, सदृश्य वहां का वायुमण्डल है। मेरे पुत्रों! कुछ ऐसा स्मरण है क्या एक वर्ष तक मुनिवरों! देखो, वह महाराजा कुम्भकरण ब्रह्मचारी सुकेता और शबरी तो वहां के वैज्ञानिकों से वहां के राजवाहक क्रियाकलाप करने वालों से, उनकी चर्चाएं हुईं, उनकी वार्त्ताएं होती रही, एक वर्षों तक मानव सर्वत्र राष्ट्र का मंगल मण्डल की उन्होंने यात्रा की, और यात्रा करने के पश्चात एक वर्ष के पश्चात, अपने वाहन में विद्यमान हो करके, मेरे पुत्रों! देखो, वहां से वह गमन करते हैं, परन्तु उससे पूर्व वह क्रियाकलाप भी करते रहे, उसके पूर्व वह वैज्ञानिक, अब वैज्ञानिक स्तर पर अपनी वार्त्ता प्रगट करते रहे वैज्ञानिकों से वार्त्ता होती रही।

जैसे मुनिवरों! देखो, मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे एक समय वर्णन कराया था क्या आधुनिक काल में भी, दूसरे मण्डल के यन्त्र मानो देखो, इस पृथ्वी मण्डल पर भ्रमण करते रहते हैं, और पृथ्वी मण्डल के यन्त्र भी मानो दूसरे लोकों में भ्रमण करते रहते हैं, परन्तु आज मैं विज्ञान के वांगमय में इतना जाना नही चाहता हूँ विचार केवल एक देने आया हूँ क्या मुनिवरों! देखो, वह ऊर्ज्वा वाला यानां ब्रह्मे कृताम् बेटा! यान आगे रमण करता है मंगल से उड़ान उड़ता हुआ, वह मृचिका मण्डल में पंहुचा है, और मृचिका मण्डल में भी वनस्पतियां है, मानो जलाशय उन्होंने दृष्टिपात किए लगभग एक जलाशय के तट पर, मुनिवरों! देखो, एक माह दो दिवस मुनिवरों! देखो, उस जलाशय के तट पर रहे। अपने में क्रियावान रहे। तो नाना प्रकार के देखो, वायु का सेवन, वायु प्राणायाम क्योंकि महाराजा कुम्भकरण अपने समय में बड़े साधक रहे हैं। मानो देखो, ब्रह्मचारिणी शबरी और ब्रह्मचारी सुकेता तो अपने में ब्रह्मवर्चोसि का पालन करते हुए मानो देखो, अपने में रत्त रहे हैं, और वह वहां से वायुमण्डल को अपने में पान करने लगे और उसी से अपने जीवन सत्ता को कुछ व्यतीत किया। कुछ आहार भी करते थे परन्तु देखो, वहां से उन्होंने गमन किया, और गमन करके बेटा! वहां से भ्रमण करते हुए, वह उसके पश्चात मेरे पुत्रों! देखो, अरूणधती मण्डल में पंहुचे, अरूणधती मण्डल में जब प्रवेश किया, तो अरूणधती मण्डल का वायुमण्डल मानो देखो, एक मानो जल प्रधानता में प्रतीत हुआ, जहां जल प्रधान है जल प्रधानता में जहां जल है तो वहां प्राण सत्ता है, जीवन सत्ता है, जिस जीवन सत्ता को वैज्ञानिक जन अपने में धारण करने के लिए सदैव तत्पर रहे हैं। तो मेरे प्यारे! मैं कहां चला गया हूँ? विचार क्या देखो, अरूणधती मण्डल में, वह वैज्ञानिक यन्त्र मुनिवरों! देखो, लगभग देखो, तीन माह रहा और तीन माह में वहां के वायुमण्डल को उन्होंने दृष्टिपात किया। वहां से उड़ान उड़ी, तो वशिष्ठ मण्डल में क्या मुनिवरों! देखो, अरूणधती से वशिष्ठ में पंहुचे, वशिष्ठ मण्डल का वायुमण्डल भी मानो देखो, ऐसा ही प्रतीत हुआ, ऊर्ज्वा में एक प्राण सत्ता प्राप्त होती चली गई है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह यान जब मुनिवरों! देखो, भव अस्ते व्रताः जब वशिष्ठ मण्डल से उड़ान उड़ता है, तो वह श्वेतकेतु मण्डल में पंहुचा है तो श्वेतकेतु मण्डल में प्रवेश हो करके, मेरे पुत्रों! देखो, वहां का वहां देखो, वायु ब्रहे वहां अग्नि तत्त्व प्रधान माना गया है। जिससे सूर्य का समन्वय रहा है मेरे प्यारे! देखो, वहां से भी उड़ान उड़ता है, तो मुनिवरों! देखो, पुनत्रेश्च मानो मण्डल में प्रवेश हो गया, जिसको मेरे प्यारे! देखो, जिस मण्डल में मानो कुछि रहती है, जब उस मण्डल में पंहुचे तो लगभग मुनिवरों! देखो, वह छह माह तक मण्डल में रहे। वहां का वायुमण्डल मानो शीतल है, वृचिका है। मेरे प्यारे! देखो, वहां मुनिवरों! देखो, पार्थिव तत्त्व और आपो तत्त्व दोनो में प्रधानता है। मेरे प्यारे! देखो, वहां से उड़ान उडता हुआ, वह यान बारह वर्षों में देखो, बहतर लोकों में भ्रमण किया। उस यान ने, मैं बेटा! देखो, विशेषता में तुम्हें नही ले जा रहा हूँ, मैं प्रत्येक मण्डल की चर्चा करने नही जा रहा हूँ, बहतर

## याग एक सर्वांग पूजा

लोकों में वह यान भ्रमण करके बारह वर्षों तक उन्होंने भ्रमण किया। मेरे प्यारे! बारह वर्ष के पश्चात वह यन्त्र मुनिवरों! देखो, पुनः वह एक पृथ्वी मण्डल पर वह महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में आ गया। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! मैं विज्ञान के वांगमय में जाना नही चाहता हूँ, तुम्हें मैं यह निर्णय करा रहा हूँ, क्या बहतर लोकों तक वह जा करके बेटा! ऊर्ज्वा को प्राप्त करते चले गएं हैं वह जीवन सत्ता उन्हें प्राप्त होती चली गई, वह जीवन सत्ता कहां नही हैं? परन्तु वैज्ञानिक देखो, यौगिक क्षेत्रों में रत्त होता है, तो ऐसा बेटा! अनुभव में आया है भारद्वाज मुनि से भी ऐसा प्रतीत हुआ है क्या मुनिवरों! देखो, वह ब्रहा ब्रहे मुनिवरों! देखो, प्रत्येक मण्डल में जहां भी वह कोई मण्डल है, तो किसी में पिरोया हुआ है।

जैसे बेटा! मैंने कई काल में, तुम्हें माला की चर्चाएं कही हैं, और वह माला बड़ी विचित्रिता में, मैंने तुम्हें वर्णन कराई है, इसी प्रकार जैसे एक मानव, मानव का साथी बना हुआ है, मानव मानव में पिरोया हुआ है, जैसे मानो प्रभु की विचित्रता यहीं तो दृष्टिपात आती है। माता से, माता से माता में पुत्र पिरोया हुआ है, और पिता में पुत्र पिरोया हुआ है, पुत्री पिरोई हुई है, पति में पत्नी पिरोई हुई है, और मुनिवरों! देखो, पत्नी पति में पिरोई हुई है मुनिवरों! देखो, इसी प्रकार मेरे पुत्रों! देखो, यह पृथ्वी जीवन सत्ता में पिरोई हुई है नाना प्रकार के खाद्य ओर खनिज में पिरोई हुई है, मेरे पुत्रों! यह पिरोई हुई सी दृष्टिपात आती है। जैसे मानव के शरीर में, प्रत्येक इन्द्रियां हैं, एक दूसरे में पिरोई हुई है मुनिवरों! देखो, रूप को दृष्टिपात करते हैं, नेत्र और मुनिवरों! देखो, रूप को दृष्टिपात करने वाले नेत्र हैं, और वह मन के साथ में वह पिरोएं हुए हैं, वह रूप मन के द्वारा पिरोया हुआ है, मन से तरङ्गें प्राण की चलती हैं तो बेटा! वह रूप क्रियात्मकता में परिणत हो जाता है वह रूप क्रियात्मकता में आ गया है और वही मानो क्रिया में आ करके मुनिवरों! भोगता बना है। विचार मेरे प्यारे! देखो, एक दूसरे में नेत्र मेरे पुत्रों! देखो, रूप में पिरोई हुई है और रूप मेरे पुत्रों! देखो, अग्नि में पिरोया हुआ है वाह हे मेरे प्रभु! तू कैसा विचित्र है। मानो देखो, रूप मुनिवरों! देखो, नेत्रों से पिरोया हुआ और नेत्र अग्नि से पिरोएं हुए रूप अग्नि से पिरोएं हुआ अग्नि मेरे पुत्रों! देखो, वह प्रभु से पिरोई हुई है। मेरे पुत्रों! देखो, एक दूसरे की कैसी माला बन गई है पुत्रों! मानो देखो, ऐसे शब्द पुत्रों! देखो, शब्द रसना से पिरोया हुआ है, और रसना जल से पिरोई हुई है, और जल मुनिवरों! देखो, आपो से पिरोया हुआ है और आपो प्रभु से पिरोया हुआ है। कैसा प्रिय सूत्र बन गया, मेरे प्यारे! देखो, जैसे शब्द है, शब्द मुनिवरों! देखो, शब्द श्रोत्रों से पिरोया हुआ है, और श्रोत्र अन्तरिक्ष से पिरोएं हुए हैं, या न्यूं कह लीजिए क्या मुनिवरों! देखो, श्रोत्र शब्द से, और शब्द अन्तरिक्ष से और अन्तरिक्ष मेरे प्यारे! देखो, दिशाओं की प्रतिभा बनी हुई है। और मुनिवरों! देखो, दिशाओं का सम्बन्ध विद्युत से है वायु से कह लीजिए, परन्तु देखो, वायु का जो समन्वय है, वह प्राणतव प्रभु से माना गया है। क्या मेरे प्रभु कैसी एक माला है, आज मैं इस माला को जब धारण करता हूँ, तो मेरा हृदय मेरे पुत्रों! देखो, यह त्वचा स्पर्श से पिरोई हुई है। मानो त्वचा स्पर्श सत्ता से पिरोई हुई है ओर स्पर्श मुनिवरों! देखो, सम्प्रहा संगतिकरण से पिरोया हुआ है, और उसका सम्बन्ध मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी से रहता है। और पृथ्वी का सम्बन्ध गुरूतव से है। ओर गुरूतव का सम्बन्ध, मेरे प्यारे! प्राण पिण्ड से है, और प्राणतव का सम्बन्ध, मेरे प्यारे प्रभु से रहता है।

तो मुनिवरों! देखो, यह कैसा अनुपम है विचार आता है मुनिवरों! देखो, प्रत्येक आभा अपने में पिरोई हुई है पंच महाभूतों में बेटा! देखो, जहां यह पांचों है, वहीं जीवन सत्ता है, और कोई पिण्ड संसार का ऐसा नही है, प्रायः कोई लोक ऐसा नही है जिसमें ये पंचीकरण न हो रहा हो। तो बेटा! यह पिरोया हुआ है, यह पिण्ड कैसे पिरोए हुए हैं, मुनिवरों! देखो, कैसा अनुपम कैसा केन्द्र बना हुआ है, जैसे प्रभु इन पंच महाभौतिकों का केन्द्र बना हुआ है, इसी प्रकार मानव के द्वारा कैसी स्थिरता है, मुनिवरों! देखो, रूप आता है, मुनिवरों! देखो, यह रूप लाते

हैं, नेत्र तो मुनिवरों! देखो, इसकी स्थिति मानव के हृदय में समाहित हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, घ्राण से मन्द सुगन्ध आती है, वह भी समाहित हृदय में हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, शब्द अन्तरिक्ष से आया, शब्द दिशाओं से आया, श्रोत्र ने श्रवण किया, तो बेटा! हृदय में समाहित हो गया। मेरे प्यारे! त्वचा से प्रीति आई, उसका समन्वय पृथ्वी से आया, वह साकल्य बन करके मानव के हृदय में समाहित हो गया। मेरे प्यारे! नाना प्रकार के रस बन करके आए, जो वनस्पति ब्रह्मे व्रतो देवाः मेरे प्यारे! जिनका समन्वय पृथ्वी से रहता है। मानो रसों का समन्वय चन्द्रमा से रहता है, मेरे पुत्रों! वह भी हृदय में समाहित हो गया, वाह रे मेरे प्रभु तुमने यह मानव यह शरीर में हृदय यह कैसा अनुपम है, बेटा! जो संसार को अपने में समाहित कर रहा है। जब मुनिवरों! देखो, साधक साधना में परिणत होता है, तो यह मानो देखो, यह मन को ले करके क्योंकि मन प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु है, प्राण सत्ता बेटा! एक गति है जब दोनों का समन्वय होता है दोनों का जब भी समन्वय होता है तो मुनिवरों! देखो, उसका हृदय को प्राप्त हो जाता है और हृदय में हृदय का समन्वय मानो चित्त मण्डल से भी माना गया है नाना प्रकार के संस्कार बेटा! उद्बुद्ध हो जाते हैं। और उन संस्कारों की ज बेटा! उद्बुद्धता होती है। तो बेटा! उनका समन्वय हृदय से है और हृदय का समन्वय बेटा! परमपिता परमात्मा के हृदय से माना गया है। वह मोक्षां पगडण्डां ब्रहे वह एक पगडण्डी है विचित्र पगडण्डी है।

तो मुनिवरों! देखो, मैं विचार यह दे रहा था, आज बेटा! मैं व्याख्याता नही हूँ, मैं तो केवल परिचय देने चला आता हूँ व्याख्या को तो बड़े विचित्र पुरूष होते हैं, मैं तो केवल परिचय के लिए आया हूं और वह परिचय क्या है मुनिवरों! वह जो नाना प्रकार का जो विज्ञान है यह मानव के हृदय में समाहित रहता है और मानव का जो हृदय है, उसमें बेटा! सर्वत्र समाहित परन्तु देखो, यह प्रभु की माला है, यह कैसी विचित्र माला है, यह कैसा सुमेरू बनाया है। जैसे माला के सर्वत्र मनके मानो देखो, एक सुमेरू में समाहित हो जाते हैं जैसे ब्रह्म गन्थि में वह समाहित हो जाते हैं जैसे मानव का शरीर मानो निर्माण करते-करते देखो, वह पंच महाभौतिक मानो देखो, उसमें पांचो इन्द्रियों में समाहित कर दिया और पांचों इन्द्रियों का जो विषय है वह हृदय रूपी जो सुमेरू है उसमें बेटा! वह समाहित हो गया है बेटा! मैं कहां तक यह वार्त्ता वर्णन करूं यह तो विचार एक वन में वन है जिस वन में जाने के पश्चात मानव का हृदय अगम्यता को प्राप्त हो जाता है।

आओ मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या, यह प्रभु का जगत है यह माला है, हृदय की माला को कई समय पिरो गया हूँ, बेटा! देखो, यह माला देखो, गो नाम का पशु है, बेटा! वह दुग्ध देता है, उसका समन्वय मानो वनस्पतियों से रहता है, वनस्पतियों को पान करता है, तो बेटा! वह दुग्ध देता है, पय देता है, उसी को बेटा! देखो, मानव पालना करता हुआ, मानव देखो, दुग्ध का आहार करता है। वह कहां से पिरोया हुआ? बेटा! देखो, मानव उसके दुग्ध को आहार करता है, पय देता है, मानो पय का सम्बन्ध मानव देखो, गो के यन्त्रालयों से है, और मानो देखो, उनका समन्वय नाना प्रकार की वनस्पतियों से है, और उन वनस्पतियों का समन्वय चन्द्रमा और सूर्य से माना गया है, और चन्द्रमा और सूर्य का मानो देखो, उनका समन्वय चन्द्रमा से निचले वह पूर्व मेघों से माना गया है और मेघों का समन्वय मानो देखो, पृथ्वी से माना गया है, और पृथ्वी से वनस्पतियां उपलब्ध हैं, मेरे प्यारे! देखो, उसका समन्वय चन्द्रमा से चन्द्रमा का समन्वय सूर्य से, और सूर्य का समन्वय मानो देखो, वह द्यौ से, और द्यौ का समन्वय मानो देखो, वह विद्युतां ब्रह्मा द्यौ बन करके ही मेरे प्यारे! देखो, वह अणुवाद बन करके और उस अणु का सम्बन्ध जीवन सत्ता से है और वह जो जीवन सत्ता है वह प्रकृति की देन है जब तक प्रभु का जब तक प्रकृति से समन्वय रहता है। तो मेरे पुत्रों! मैं कहां चला गया हूँ दूरी नही जाना चाहता हूँ। विचार केवल यह हमारा है क्या हम मुनिवरों! देखो, विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करते हैं, अपने में धारा को अपनाते हुए इस संसार की

## याग एक सर्वांग पूजा

प्रतिभा में मानो देखो, ऊँची-ऊँची उड़ाने विचारों की उड़ते रहें, तो आओ मुनिवरों! देखो, मैं विशेष विवेचना, मैं तो तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, विचार केवल यह प्रगट करने के लिए आया हूँ, क्या मुनिवरों! देखो, एक माला को हमें धारण करना है, उस माला में, हमें प्रवेश होना है, जिस माला की ऊपर बेटा! हमारा बड़ा गम्भीर अध्ययन रहा है, जैसे मुनिवरों! देखो, वह सर्वांग की चर्चा कर रहा था, वह हमारा विषय विचित्र बन गया है, मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि सोमतिति महाराज महात्मा अटूटी से यही वर्णन कर रहे थे, और वह उच्चारण कर रहे थे क्या देखो, याग सर्वांग मानो देखो, देव पूजा कहलाती है। बेटा! सर्वांग देव पूजा है, वह कैसे यज्ञमान जब यज्ञशाला में विद्यमान हो करके, वह मानो जल का परोक्षण करता है, जल से मानो अग्नि का समन्वय है, मेरे पुत्रों! देखो, वह जैसे उत्तम देवाः अभ्योदं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, वह परोक्षण कर रहा है और परोक्षण करके वह आगे अग्नयाध्यान करता है तू वास्तव में अग्नि है मानो उसको वह अग्नं ब्रह्मे मानो देखो, वेद की वाणी से के द्वारा वेद की वाणी इन तरंगों को उद्बुद्ध करता हुआ, बेटा! वह द्यौ लोक में वह ध्वनि चली जाती है, तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, याग अपने में सर्वांग हैं, क्योंकि वह ध्वनित हो करके वही ध्वनि है जो अशुद्ध परमाणुओं को निगल जाती है। शुद्धिकरण करती चली जाती है। बेटा! देखो, आज का विचार हमारा क्या कह रहा है, वेद का वाक् यही तो कहता है, अपने में महान बनने वाले बनें, महानता की ज्योति को अपनाते हुए, मानो उस परमपिता परमात्मा की उस महती से उसका चिन्तन और मनन करते चले जाएं, तो बेटा! आज मैं तुम्हें यज्ञमान की माला को उच्चारण कर रहा था, बेटा! यह माला तो मैं कल भी उच्चारण करूंगा आज विचार हमारा यह क्या कह रहा है क्या हम मुनिवरों! देखो, अपने मानव शरीर को ले करके, परमपिता परमात्मा का जो बाह्य जगत है, प्रकृति में जीवन सत्ता है मुनिवरों! देखो, ये चर्चाएं कल अपना मन्तव्य प्रगट करूंगा, कल मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द भी उच्चारण करेंगें। आज का विचार हमारा यह क्या कह रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणागान गाते हुए, हम इस संसार सागर से पार हो जाएं। बेटा! हम अपने हृदय को, एक मन और प्राण को दोनों को मानो दोनों को मिलान करके अपने में धारण करने वाले बनें, यह आज का वाक् अब समाप्त, कल समय मिलेगा तो आगे की शेष चर्चाएं, हम कल प्रगट करेंगें आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन।

दिनांक ०५ १२ १९८५

# ३ महाराजा यूधिष्टर का राजसूय यज्ञ ०८ १२ १९८५

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं हैं। क्योंकि जितना भी यह संसार रूपी याग हो रहा है। मानो इस परमपिता परमात्मा का यह आयतन माना गया है। चाहे वह विज्ञान के रूप में हो, चाहे वह यागों के रूप में हो, और भी भिन्न-भिन्न प्रकार का जो क्रियाकलाप हो रहा है। मानो वह सर्वत्रता में ओत-प्रोत है। वह यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं हैं। क्योंकि जितना भी संसार का सुकर्म है। सु क्रियाकलाप है। मानो उससे ही यज्ञों के रूपों में एक रत्त होता रहा है। ओर वे परमपिता परमात्मा का आयतन है, अथवा वह उसका गृह है। वह उसमें वास कर रहा है। तो इसीलिए हमारा वेद का मन्त्र यागों के सम्बन्ध में बहुत ऊँची-ऊँची उड़ाने उड़ता रहा है। मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रेरणा देते रहते हैं। आज भी इनकी प्रेरणा का एक स्रोत मेरे समीप आ रहा है। क्या याग के सम्बन्ध में कुछ विचार-विनिमय होना चाहिए। हमने इस याग के सम्बन्ध में बहुत से विचार दिए हैं और नित्यप्रति कोई न कोई विचार मानो याग के सम्बन्ध में प्रायः आता रहता है। तो सबसे प्रथम मानव की जीवन चर्या का एक स्रोत याग माना गया है। क्योंकि बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों में मानव याग की बड़ी विशिष्ठता आती रही है। तो आज का हमारा वेदमन्त्र याग के सम्बन्ध में बहुत ऊँची उड़ाने उड़ता रहा है और यह वेदमन्त्र कहता है, यागां भवि वर्णा स्वस्ति मेरे प्यारे! देखो, याग एक स्वस्ति है, वह स्वस्ति का देने वाला है। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, राष्ट्र में किसी प्रकार की भी मानो क्रान्ति आ जाती तो राजा याग करते थे। मुझे स्मरण आता रहता है। जब द्वापर के काल में इन्द्रप्रस्थ का निर्माण हुआ तो निर्माण के पश्चात एक समय मानो देखो, पाण्डु पुत्र विराजमान थे, तो पाण्डु पुत्रों ने यह विचारा कि इन्द्र प्रस्थ में एक याग होना चाहिए। महाराजा युधिष्ठर अपनी स्थली पर विद्यमान हैं। प्रातःकाल का समय है। तो मुनिवरों! देखो, महाराजा कृपाचार्य और द्रोणाचार्य और ब्रह्मचारी श्वेतकेतु पितामह भीष्म जिनको कहा जाता है। राष्ट्रपिता के नामों से उनकी मानो देखो, शब्दों में देखो, ध्वनियां होती रहती थीं और भगवान कृष्ण और भी नाना बुद्धिमान जैसे महर्षि व्यास मुनि महाराज तो मुनिवरों! देखो, सब अपनी-अपनी स्थली पर विद्यमान थे मुनिवरों! प्रातःकालीन यह विचार आया कि हे भगवन! तुम सब याज्ञिक पुरूष हो, तुम मानो किन्हीं न किन्हीं रूपों में याग करते रहते हो, मेरी इच्छा ऐसी है कि इस इन्द्रप्रस्थ में एक राजेश्वरी याग की मेरी इच्छा है। तुम अपने-अपने विचारों को व्यक्त करो कि होना चाहिए या नहीं मेरे प्यारे! देखो, इसमें महा योगप्रहा भगवान कृष्ण ने यह कहा कि तुम्हारे हृदय में यह राजन्! याग की प्रेरणा कहाँ से उत्पन्न हुई है? तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा कि यह याग की जो प्रेरणा है, यह हमारे अन्तःकरण से उत्पन्न होती है। क्योंकि यह जो अन्तःकरण है, यह भी एक प्रकार का याग है और वह बाह्य याग की हमें प्रेरणा दे रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्हें उत्तर प्राप्त हो गया उन्होंने कहा यह जो राजेश्वरी याग होते हैं। यह वह राजा करते हैं, जो राजा इस संसार को पृथ्वी मण्डल पर जितने राजा होते हैं। उन सबको जब विजय कर लेते हैं। चाहे वह अस्त्रों-शस्त्रों के द्वारा विजय होते हों, चाहे वह विचारों से विजयी होते हों, परन्तु उस काल में यह याग का आयोजन किया जाता है। राजेश्वरी याग का यह जो क्रियाकलाप है, अथवा यह जो उसका कर्मकाण्ड है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा बहुत प्रिय भगवन! कोई राजा ऐसा नही हैं, इस पृथ्वी जो मानो यह स्वीकार न करे कि याग न होना चाहिए। उनकी सदैव यही इच्छा है, क्या एक याग होना चाहिए। राजेश्वरी याग में कोई ऐसा प्रोहतत्व नही हैं। तो मेरे प्यारे! जब यह उस समय यह वाक् कहा

## याग एक सर्वांग पूजा

तो भगवान कृष्णा ने कहा तो बोलो क्या हे भीष्म पितामह! भीष्म! उद्गीत गात्रो कि यह क्या कहते हैं, तुम्हारे पौत्र मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि भई! कि यह जो अपना एक पारिवारिक जीवन है। उनसे भी इस वाक् को हम स्वीकार करें मेरे प्यारे! देखो, दुर्योधन इत्यादि सभी इन्द्र प्रस्थ में विराजमान थे, उन्होंने सबकी एक गोष्ठियां प्रारम्भ की और महाराजा युधिष्ठर ने कहा भई! मेरी इच्छा ऐसी है कि हम एक याग करना चाहते हैं राजेश्वरी याग होना चाहिए मेरे प्यारे! देखो, दुर्योधन ने अपने कण्ठ मुख से उसकी सराहना की मानो सभी ने उसकी सहराना की क्या हमे याग करना चाहिए। हमारा बहुत-सा वंशलज समाप्त हो गया है। जब से मानो देखो, हमारे यहाँ राजेश्वरी याग नही हुए, वैसे याग तो नित्यप्रति होते रहते हैं। याग तो हम नित्यप्रति क्योंकि यह तो हमारी नित्यप्रति जीवन चर्या का एक स्रोत है। मानो देखो, यह तो हमे प्रायः करना चाहिए, परन्तु राजेश्वरी याग होना है। इसमें हमें बड़ी प्रशंसा है। मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् स्वीकार हो गया सबने बेटा! इसको कृपाचार्य ने और द्रोणाचार्य ने सभी ने मुनिवरों! देखो, इसकी अपने हृदय से सहारना की क्या यह विचार बहुत प्रिय है। तो मेरे प्यारे! देखो, भगवान कृष्णा ने भी इस वाक् को स्वीकार कर लिया परन्तु देखो, उन्होंने यह कहा वाक् तो स्वीकार कर लिया परन्तु यह कहा गया कि हे युधिष्ठर! इसमें कुछ बाधाएं मानो देखो, किसी प्रकार की अब्रह्म वेत्तां शचि ब्रह्वा कुछ मानो देखो, तुम्हारे राजेश्वरी याग में क्रोधाग्नि भी जागरूक हो सकती है। तुम्हारे पांचों विधाताओं में मन उल्लंघन नही होना चाहिए, उन्होंने कहा बहुत प्रिय मुनिवरों! देखो, उन्होंने महारानी द्रोपदी से यह कहा कि हमारे यहाँ राजेश्वरी याग होने वाला है। उन्होंने कहा प्रियतम मानो होना चाहिए। मुनिवरों! देखो, यह विचार होते हुए क्योंकि राजेश्वरी याग था उन्होंने बेटा! निमन्त्रण देना प्रारम्भ कर दिया ब्राह्मणों को निमन्त्रण दिया ऋषि-मुनियों को भी निमन्त्रित किया तो मुनिवरों! देखो, महर्षि वेदव्यास अपने आसन पर विराजमान थे। वेदव्यास से बोले महाराज हमारे यहाँ याग होना चाहिए। मानो तुम्हारी सुमति होनी चाहिए। उन्होंने कहा बहुत प्रिय वेदों का उद्गीत गाने के लिए मैं तत्पर हूँ। मानो जिस प्रकार का भी वेदों का गान गाना हो। मैं उसी प्रकार का याग अवश्य उसी प्रकार के गान में मेरी निष्ठा रहती है। तो मुनिवरों! देखो, यह सबने स्वीकार कर लिया मानो देखो, उसके पश्चात राजा महाराजाओं को निमन्त्रित किया गया राजेश्वरी याग में बेटा! सब राजा मानो उनके निमन्त्रण के कथनानुसार इन्द्र प्रस्थ में सबका आवास था मानो कृत्ति हो गया नाना प्रति भोजों में परिणत हो गएं तो मुनिवरों! देखो, सर्वत्र राजाओं के भिन्न-भिन्न कक्ष हैं और उसी प्रकार के कक्ष हैं। जिस प्रकार का मानो वह राजा हो तो मुनिवरों! देखो, वह महाराजा दुर्योधन इत्यादि सब उनके स्वागतार्थ में मुनिवरों! देखो, जब लग गएं तो मुनिवरों! देखो, जब याग के याग का साकल्य एकत्रित हो गया और याग के साकल्य एकत्रित हो जाने के पश्चात मेरे प्यारे! यज्ञशाला का भी निर्माण हो गया शिल्पकारों ने बड़ी प्रिय यज्ञशाला का निर्माण किया। मानो जिसने बेटा! उस यज्ञशाला को दृष्टिपात किया मानो उसे प्रतीत है वह कितनी प्रिय मानो यज्ञशाला पुष्पों से सजातीय अपने मानो चित्रों से सजातीय बना करके देवताओं से वह मानो यज्ञशाला को उन्होंने सजातीय किया और सजातीय करके मुनिवरों! देखो, अग्नं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मे वह नाना ब्राह्मण मुनिवरों! देखो, अपनी-अपनी स्थली पर विद्यमान हो गएं और निर्वाचन का क्रियाकलाप होने लगा। सबसे प्रथम देखो, भगवान कृष्णा से यह कहा गया क्या भगवन! अब निर्वाचन होना चाहिए, यज्ञशाला का निर्वाचन हो और देखो, बाह्य जो सेवा है। उसका भी निर्वाचन होना चाहिए। तो मुनिवरों! देखो, ऐसा मुझे प्रतीत है, क्या मानो देखो, जितना कोष था वह दक्षिणा वह मानो देखो, जो गो शाला ब्रहे मुनिवरों! देखो, उसका उनके दुर्योधन उनके कोष का स्वामीतव का निर्वाचन किया और महाराज दुर्योधन को देखो, उस याग का मानो देखो, जो भी स्वतः प्रहा मानो देखो, अश्व भाग वह राजाओं के निमन्त्रण आ ब्रहे उनके सहित आए। वह उनके जो आहार का जो प्रबन्ध है, आहार की प्रतिव्रता है, वह जो दुर्योधन के रूप में परिणत की गई। तो मानो देखो, अब निर्वाचन हो गया अब

## याग एक सर्वांग पूजा

मुनिवरों! देखो, युधिष्ठर से कहा कि महाराज! आप तो इस यज्ञशाला के यज्ञमान हैं। आप यज्ञशाला में विराजिए तो मानो देखो, वह अपनी यज्ञशाला में विराजमान हो गयें और नुकुल से देखो, कहा कि तुम मानो अश्वों की सेवा करो और भीम से कहा कि तुम इनके अस्त्रों-शस्त्रों को निश्चित स्थान पर नियुक्त करो और देखो, वह अर्जुन को कहा गया कि भगवन! आतप्रहो तुम मानो देखो, इनकी सेवा में अन्न प्रहे तुम भोजनालय में मानो सुचारू रूप से क्रिया में लाने का प्रयास करो। मेरे प्यारे! देखो, सबका निर्वाचन हो गया निर्वाचन हो करके ब्राह्मण जन अपनी-अपनी स्थली पर विद्यमान हो गएं अब मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने ब्राह्मणों का निर्माण किया महर्षि जैमिनी मुनि महाराज मेरे पुत्रों! देखो, व्यास जी देखो, उस यज्ञ के व्यास मुनि देखो, ब्रह्मा निर्वाचन हुआ और महर्षि जैमिनी और महर्षि श्वेत तुण्डुक ऋषि महाराज दोनों मुनिवरों! देखो, उस याग के मानो देखो, उद्गाता बने और उदगातं ब्रहे सम्भवा मुनिवरों! देखो, कृपाचार्य जी उस याग के मानो देखो, अध्वर्यु बन करके याग को संचारू रूप से ओर मानो देखो, गुरु द्रोणाचार्य उस याग के पुरोहित नियुक्त किए गएं मानो देखो, याग का सुचारु रूप प्रारम्भ हो गया ओर यज्ञमान मुनिवरों! देखो, महाराजा युधिष्ठर को निर्वाचन किया गया मेरे प्यारे! जब याग का निर्वाचन हुआ तो भगवान कृष्ण ने युधिष्ठर को यह कहा क्या भगवन! जब सबका निर्वाचन हो गया है, तो आपका क्या क्रियाकलाप होगा आपका भी तो कोई आसन होना चाहिए। मेरे प्यारे! भगवान कृष्ण ने उस समय यह कहा कि हे युधिष्ठर! मानो देखो, मेरा तो एक ही क्रियाकलाप रहा है, बाल्यकाल से अब तक यही क्रियाकलाप रहा है, क्या देखो, जो बाहर से आगुन्तक आते हैं। उन आगुन्तकों के चरणों के जल से स्पर्श करके मैं उस जल में आचमन करता हूँ। मानो देखो, बेटा! देखो, भगवान कृष्ण ने जब यह कहा तो युधिष्ठर अपने में बहुत नम्र वृत्तियाँ ब्रहे मेरे प्यारे! आश्चर्य करने लगे उन्होंने कहा नहीं भगवन! उन्होंने कहा नहीं ऐसा ही होगा। मेरे प्यारे! देखो, सुचारू रूप से क्रियाकलाप प्रारम्भ हो गया। जब याग का प्रारम्भ हुआ तो मुनिवरों! देखो, प्रारम्भ में देखो, आगुन्तक और यज्ञमान अपने में मानो देखो, यज्ञं ब्रह्मा वेद का उद्गीत गाने वाले महाराजा वेद व्यास ने कहा गोतप्प्रहे हे यज्ञमान! आओ, हे होतागणों! तुम आओ मेरे यज्ञमान की वाणी को पवित्र करो, क्योंकि वाणी ही उद्गाता है। वाणी ही ब्रह्मा है, वाणी ही अन्तरिक्ष में जाती है, और वाणी ही लोक में जाती है। मानो यह वाणी पवित्र होनी चाहिए। वाणी ही उद्गीत गाने वाली है। मेरे प्यारे! देखो, वेदव्यास ने यह प्रार्थना की मुनिवरों! देखो, सब अपनी-अपनी स्थलियों पर मानो वेद का यशोगान गाने लगे जब वेदों का यशोगान गाने लगे जब वेदों का यशोगान गाने लगे। तो मुनिवरों! देखो, कहीं से महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज मेरे प्यारे! देखो, भ्रमण करते हुए अपने मानो कुछ शिष्यों के सहित वह मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला में पधारे यज्ञशाला में पधारे, तो वहाँ एक प्रसंग ऋषि के समीप आया जैसे उन्होंने कुछ विराम लिया तो वेदव्यास से महर्षि विभाण्डक ने यह कहा क्या महाराज मैं यह चाहता रहता हूँ कि यह जो यज्ञ आपका प्रारम्भ हो रहा है। इसमें जो वेदों का उदगान गाया जा रहा है। वेदों के उच्चारण करने का आशय याग से क्या समन्वय है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि याग से वेद के मन्त्रों का समन्वय रहता है, क्योंकि संसार का जितना भी देवतावाद है वह सर्वत्र मानो देखो, वेदों में निहित रहता है। कहीं मानो देखो, इन्द्र के सम्बन्धित कहीं मानो देखो, सूक्ष्म से सूक्ष्म ज्ञान है। आध्यात्मिकवाद है, परन्तु जितना भी विज्ञान है। आभाओं में रत्त हो रहा है उस सबमें एक-एक वेदमन्त्र उसका उद्गीत गाता रहता है। इसीलिए मैं वेदों का उद्गीत गाने के लिए तत्पर हो रहा हूँ। तो मुनिवरों! देखो, वह ऋषिवर मौन हो गएं और विभाण्डक मुनिवरों! अपने शिष्यो के सहित यज्ञशाला में विद्यमान हो गएं मेरे प्यारे! देखो, कुछ समय के पश्चात ब्रह्मणा व्रते देवाः मेरे प्यारे! देखो, कहीं-कहीं मध्यम् ब्रह्मणा लोकां हिरण्यं ब्रह्वा मुनिवरों! देखो, याग का प्रारम्भ होता रहा याग की प्रतिक्रियाओं में मानो एक क्रियाओं में रत्त होता रहा तो बेटा! देखो, यज्ञमान का आहार मानो लवण युक्त है, और ब्राह्मण जनों का आहार भी लवण युक्त है,

## याग एक सर्वांग पूजा

सात्विक पदार्थ, सात्विक विचार रहना उद्गीत गाने वालों का बहुत अनिवार्य है। तो मुनिवरों! देखो, इस प्रकार उन्होंने अपनी आभा प्रतों में युक्त की तो विचार-विनिमय क्या आज बेटा! मैं तुम्हें याग के सम्बन्ध में विचार यह दे रहा हूँ कि याग हमारा बेटा! परम्परागतों से जन्म सिद्ध अधिकार रहा है। परम्परा क्या ऋषि-मुनियों का एक ही रत्त है। सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके मानो देखो, वर्तमान के काल तक यह एक याग हमारे यहाँ एक मानो देखो, आत्मीय क्रियाकलाप है जिससे समाज मानो देखो, वायुमण्डल पवित्र बनता है। जिससे मानवीयता भी अपने में उद्बुद्ध होती रहती है। तो विचार-विनिमय क्या हमारे यहाँ एक ही राजेश्वरी याग नही होती नाना प्रकार याग मानो देखो, राष्ट्रों में होते रहते हैं। देखो, यह राजेश्वरी याग है, यहाँ राजेश्वरी याग में मानो देखो, राजा के यहाँ यज्ञशाला में निर्वाचन होता है। यह राजेश्वरी याग का एक मानो क्रियाकलाप माना गया है। अश्वमेध याग में प्रजाओं का निधिपति होता है। और वह निधि मानो देखो, उसका ब्राह्मण स्थली से नीचे विराजमान हो करके मानो देखो, उसका निर्वाचन करते हैं।। उसको पश्चात देखो, जो अजामेध याग है अजामेध याग में देखो, याग के पश्चात इस वीरतव का निर्वाचन करते हैं। क्योंकि जिससे देखो, अजा में यकुतं देखो, वह अजा को प्राप्त होने वाला है। तो मुनिवरों! देखो, हमारे साहित्यों में हमारे यहाँ वैदिक मन्त्रार्थों में भी इस प्रकार की प्रतिक्रियाएं आती रहती हैं। परन्तु देखो, हमारे यहाँ और भी नाना प्रकार के यागों का चयन परम्परागतों से एक विचित्रतम माना गया है। आज मैं विशेष विवेचना में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ। विचार क्या है मानो देखो, यह जब प्रारम्भ रहा याग का मुनिवरों! मुझे ऐसा कुछ स्मरण है क्या वह इक्कीस दिवस तक इक्कीस दिवस याग का प्रारम्भ रहा है। मुनिवरों! देखो, उस याग के पश्चात वह पूर्णता को प्राप्त हो गया। वह याग का सम्पन्न हुआ तो सम्पन्न होने के पश्चात मुनिवरों! देखो, राजेश्वरी याग में एक मानो देखो, महापुरूष का निर्वाचन होता है। तो वहाँ जब निर्वाचन का प्रश्न आया तो ब्राह्मणो से कहा क्या कौन निर्वाचन होना चाहिए। उन्होंने कहा युधिष्ठर आप निर्णय कर सकते हैं। उन्होंने कृपाचार्य और देखो, द्रोणाचार्य पितामह भीष्म इत्यादि सबको निमन्त्रित करके वह विराजमान थे। उन्होंने कहा कि महाराज! राजेश्वरी याग देखो, सम्पन्नता के आंगन में पंहुच गया देखो, एक महापुरूष का निर्वाचन होना है। राजेश्वरी याग में ऐसा कौन पुरूष है। जिन राजाओं का प्राप्त किया जाऐ तो राजा सब राजा यज्ञशाला में विद्यमान हैं। तो मुनिवरों! देखो, उस समय शिशुपाल भी उसी यज्ञशाला में विद्यमान है। तो मुनिवरों! देखो, जब निर्वाचन का प्रसंग आया तो निर्वाचन में मुनिवरों! देखो, पितामह भीष्म ने कहा कि भई! मेरे विचार में यह आता है तुम्हारे विचार में यह आ जाएगा क्या इस समय हमारे में जितने राजा हैं। इस पृथ्वी पर उनमें सर्व श्रेष्ठ क्रियाकलाप जो है। जो मानो देखो, वह भगवान कृष्ण का है। इनका निर्वाचन होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक् आया तो मुनिवरों! देखो, सब राजा शान्त हो गएं, हर्ष ध्वनि करने लगे राजाओं ने कहा बहुत प्रियतम मानो वह शिशुपाल देखो, अपनी स्थली पर देखो, अपने में उद्धधृत हो गएं और उन्होंने कहा हे युधिष्ठर! तुम्हारा याग हुआ है। यह बहुत प्रियतम है। मुझे महान प्रसन्नता है, क्योंकि राजेश्वरी याग हुआ है ऐसे याग मानो देखो, राजाओं के यहाँ होने चाहिएं। परन्तु यह जो तुम इसे मानो देखो, निर्वाचन कर रहे हो यह प्रियता नही, तुम्हारे यहाँ पितामह भीष्म द्रोण जैसे और भी राजा है, यह मानो तुम्हारे महापुरूष हैं। इनका निर्वाचन होना चाहिए, इसका निर्वाचन नही होना चाहिए। मैं इसके विरोध में रहता हूँ, मेरा सदैव मानो देखो, इसका मानो देखो, संघर्ष होता रहता है। तो महाराज युधिष्ठर ने कहा कि यह तो मैंने शिशुपाल स्वीकार कर लिया परन्तु जो व्यक्ति प्रहा अपना विवाद रहता है। उसे देखो, जो सामूहिक क्रियकलाप होते हैं। उनसे उनका कोई समन्वय नही रहना चाहिए। तुम्हारा हृदय मानो इससे कुण्ठित हो रहा है। यह भी स्वीकार करता हूँ। परन्तु देखो, यह जो सामूहिक समाज है। सामूहिक जो जगत होता है। इसमें अपने व्यक्तिगत या अन्तरात्मा की मानो उस घृणात्मक विचार नही बनाने चाहिए जब तुम घृणात्मक विचार बनाते हो यह

प्रियता नही है। महाराजा शिशुपाल ने जब यह वाक् स्वीकार किया तो शिशुपाल ने कहा कि भगवन! मेरा तो यह सदैव मेरी अन्तरात्मा में इसके प्रति दाह है। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा तो घृणा यहाँ स्वीकार नही की जाएगी। तुम्हारी घृणात्मक वाक्यों को नहीं स्वीकार किया जाएगा तो मुनिवरों! देखो, शिशुपाल मौन हो गएं, मौन हो करके उन्होंने पितामह भीष्म से भी यही वाक् कहा तो मानो देखो, सम्भवा लोकां मुनिवरों! देखो, यह विचार मैं किसी काल में प्रगट करूंगा, यह संघर्ष का एक विचार है, परन्तु देखो, विचार केवल यह है कि हमारे यहाँ राजेश्वरी यागों के कर्मकाण्ड में बड़ी विचित्रता रहती है, और विचित्रता मानो देखो, वही रहती है कि उनमें वह जो निर्वाचन इसीलिए होता है। क्या राष्ट्र में मानो एक निधिपति ऐसा होना चाहिए। जिससे राष्ट्र में शान्ति बनी रहे और मानव के हृदयों में पवित्रता बनी रहे ओर मानव के हृदय में याग के प्रति एक मानो एक उनका हृदय विचित्र बना रहे, तो यह आज का वाक् अब मैं समाप्त करने जा रहा हूँ, अब मेरे प्यारे महानन्द जी इस सम्बन्ध में दो विचार व्यक्त करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् दधिमा रथं आभ्यां गता सर्वे तां गच्छम यज्ञाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी इस साहित्यिक याग की चर्चा कर रहे थे जिस याग पर दृष्टिपात करने का प्रायः सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव प्रत्येक याग को आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान से दोनों का समन्वय कर देते हैं। परन्तु आज मैं विशेष या अपना व्यक्तव्य देने नही आया हूँ। केवल मैं यह उच्चारण करने के लिए आया हूँ। जहाँ यह हमारी आकाशवाणी जा रही है। उस स्थली पर एक याग की सम्पन्नता का नृत्त हमारे समीप मुझे दृष्टिपात हुआ है, और मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से इसीलिए प्रेरणा देता रहता हूँ कि याग के सम्बन्ध में कोई अपना विचार दीजिए। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी याग के सम्बन्ध में निर्वाचन के सम्बन्ध में अपने बड़े ऊर्ध्वा में विचार प्रगट किए हैं। वास्तव में देखो, इन्द्र प्रस्थ में यह वही इन्द्र प्रस्थ है मानो जहाँ हमारी आकाश वाणी जा रही है, यह वही स्थली है, जहाँ मानो देखो, महाराजा युधिष्ठर का इन्द्र प्रस्थ मानो उन्हीं का निर्माण किया हुआ था ओर यहाँ एक राजेश्वरी याग हुआ था राजेश्वरी याग में मेरे पूज्यपाद गुरुदेव बड़े विचित्र हैं क्या जहाँ शिशुपाल के मरण का समन्वय आया वहाँ अपने विचार उन्होंने शान्त कर दिए। क्योंकि यागां भविते लोकां यह राजेश्वरी याग नहीं मानो देखो, पूज्यपाद गुरुदेव ने मैं यही परिचय देने के लिए आता रहता हूँ। क्या मेरा तो हृदय यज्ञमान के साथ रहता है। इस मानो देखो, मैंने कई काल में पूज्यपाद गुरुदेव से कहा है क्या यह जो समय है, यह जो काल प्रतीत हो रहा है। यह माया पुरी का काल है। यह मायापुरी मायापुरी का अभिप्रायः यह है कि मानो जो वाममार्ग परम्परा हो वाममार्ग की परम्परा में देखो, द्रव्य का दुरूपयोग द्रव्य का मानो देखो, सुरा ब्रहे सुरापान दूसरे के देखो, मांस का भक्षण करना यह सब मानो देखो, वाममार्ग की परम्परा कहलाई जाती है। आज मैं इस काल में ऐसे ही भौतिक काल में मानो देखो, मेरे पूज्य मानं ब्रह्मा मानं ब्रीहि लोकां मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मैं यज्ञमान को अपने हृदय से यह कहता रहता हूँ। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे मानो देखो, जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है जिस मानो देखो, जिस काल में दूषित वायुमण्डल में मानो देखो, शुद्ध वायुमण्डल की तरंगें तरंगित की जाती है। इससे महान सौभाग्य संसार में नही होता। तो मैं सदैव यह विचारता रहता हूँ कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहें। मैं अपने हृदय से यह हृदय की वार्त्ता सदैव मानो प्रगट करता रहता हूँ। हे यज्ञमान! मेरी यह कामना रहती है, क्या तेरे द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे देवता ओर देवतव को प्राप्त होता रहे तो आज का हमारा वाक् यह क्या कह रहा है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहता रहता हूँ, क्या याग के सम्बन्ध में उनके विचार बड़े गम्भीर हैं। याग के सम्बन्ध में उन्होंने संसार को भी याग माना है। हम भी सब स्वीकार करते हैं कि यह संसार एक यज्ञशाला के रूप में क्रियाकलाप हो रहा है, यह याग हो रहा है। जिस याग में भविते लोकां

## याग एक सर्वांग पूजा

जिस याग में प्रत्येक प्राणी अपनी-अपनी देखो, याग की आहुति दे रहा है। परन्तु मैं आज विशेष चर्चा नही केवल मैंने बहुत पुरातन काल में मैं अपने विचार देता रहता हूँ। समय समय पर और यह विचार मेरा क्या है, मानो देखो, किसी याग से मैं इसीलिए याग में यहाँ किसी का तिरस्कार नही होना चाहिए। मानो देखो, सबको पूजा की दृष्टि से दृष्टिपान करें। तो वह याग हमारा सम्पन्नता को प्राप्त होता है। जैसा अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव प्रगट कर रहे थे। महाराजा युधिष्ठर की चर्चा कर रहे थे महाराजा युधिष्ठर ने, महाराजा शिशुपाल को बहुत-बहुत प्रार्थना की और यह कहा कि हे राजन! यह याग मानो सम्पन्न होने जा रहा है, यह सम्पन्न हो गया है, मानो इसमें किसी प्रकार की क्रूरता नही होनी चाहिएं। परन्तु देखो, वह जो निर्वाचन है, वह होती ही इसीलिए है। क्या एक मानो एक क्रूर बन जाता है। तो मानो उसको शिक्षा दी जाएं, शिक्षा को स्वीकार न करे तो उसका वध कर देते हैं। ऐसा मानो देखो, इन्द्र प्रस्थ में देखो, यह वही स्थली है, जहाँ महाराजा युधिष्ठर ने राजेश्वरी याग किया था आज मानो देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार के नाना प्रकार के इस भूमि पर नाना प्रकार का परिवर्तन हुए हैं। नाना परिवर्तन हुए हैं। इस भूमि पर मानो देखो, मेरी पुत्रियों को सतीत्व भी हनन किए गएं हैं, और भी देखो, राष्ट्रीय आभा में देखो, नाना प्रकार का परिवर्तन होता रहा है। वह परिवर्तन मानो देखो, आज कुछ और परिवर्तन है। इसके पूर्व कुछ और परिवर्तन है। परिवर्तन ही होता रहता है क्योंकि प्रकृति का यह स्वभाव बना हुआ है। तो आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कोई वाक् उच्चारण करने वाला नही हूँ। केवल यह कि हे यज्ञमान! मेरे हृदय की यह कामना रहती है हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे तू पवित्र बन करके अग्न्याधान करता है। यह अग्नि याग का जीवन है, यह अग्नि ही विभाजन करती है। परमाणुओं का और विभाजन करके यही वायुमण्डल का शोधन कर देती है। जैसा इसमें पदार्थ दोगे उसी पदार्थ का विभाजन करके यह वही क्रिया में लाने वाला है और तो उच्चारण मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने बहुत से प्रगट किए हैं। आज मैं उन विचारों में न जा करके केवल यही कि मैं यज्ञमान को अपने हृदय की कामना उच्चारण करने के लिए अब मैं पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो शब्द उच्चारण किए इनका हृदय मानो देखो, हृदय मुक्त हो करके अपनी वार्त्ता प्रगट करते रहे कोई वाक् नही यह संसार परिवर्तन शील है, यह कोई ऐसा वाक् नही है, प्रकृति का एक-एक परमाणु अपने में परिवर्तित होता रहता है। तो यह आज का वाक् अब मैं देखो, जैसा महानन्द जी ने कहा है हे यज्ञमान! मेरा हृदय भी मानो यह कहता रहता है कि सु कामना में रत्त रहें आज का विचार अब समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन ओ३म् देवाः मानां त्वा रथं आभ्यां मां ध्रुवश्चमाः देवं रथाः ओ३म् दधि सर्वं भविता रेवं गताः ओ३म् सर्वं गताः मां गतौ अच्छा भगवन्!

# ४ पञ्चीकरण ०८ १० १९८६

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि यह परमपिता परमात्मा के वसुन्धरा के रूप में प्रायः उसका वर्णन होता रहता है, और यह कहा है कि माता वसुन्धरा को हम रूप में विद्यमान रहती है। और परमपिता परमात्मा का नामोकरण मानो वसुन्धरा के रूप में वर्णन किया गया है। परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र और भी बहुत-सी ऊँची-ऊँची उड़ाने उड़ रहा था और मानव को भिन्न-भिन्न प्रकार का संकेत अथवा वह ज्ञान और विज्ञान से परिपक्व मानो देखो, महान जो उपदेश हैं। वह सदैव महानता के आँगन में निहित रहते हैं, प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करता रहा हंऊ, और उसकी जो अनुपम महती है, उसी में बेटा! वह संसार अपने में प्रभु को स्वीकार करता रहता हैं। हमारे यहाँ साधना वालों ने अपने बहुत से विचार व्यक्त किए हैं, और साधना वालों ने कहा है क्या मानव जब साधना में तत्पर हो जाता हैं, मानो वह जो साधना है वही मानव को एक माधुर्य पगडण्डी का ग्रहण करा देता हैं तो प्रत्येक मानव बेटा! उस पगडण्डी में एक पगडण्डी के आँगन ब्रहे वर्णन उस पगडण्डी में गति करना चाहता हैं।

तो मुनिवरों! हमें एक महान पगडण्डी को अपनाना है, परम्परागतों से यह एक अनूठा, एक प्रत्येक आभा में नृत्त होता रहा है, क्या हम मानो देखो, उस पगडण्डी को ग्रहण करना चाहते हैं, जिस पगडण्डी में जाने से हम वास्तव में देखो, अपने जीवन को पंचीकरण के रूपों में दृष्टिपात करने वाले हैं। हमारे यहाँ पंचीकरण के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रकार की धाराएं मानी गई हैं। मानो पंचीकरण हमारे यहाँ जो पंचधाराएं हैं, अथवा वह जो पंचतत्व माने गएं हैं, प्रकृति का जो सूक्ष्मतम तन्तु माना गया हैं, उसको हमारे यहाँ पंचीकरण कहा जाता हैं। वास्तव में यह वाक् प्रत्येक वृक्ष के जब समीप आयुर्वेदाचार्य इसके ऊपर अन्वेषण करना प्रारम्भ करते हैं। तो एक-एक वृक्ष में मानो पंचीकरण उसमें निर्णित होता हुआ दृष्टिपात आता हैं, तो मेरे प्यारे! हमें यह विचार-विनिमय करना है, क्या वह जो मानवीयता में जो पंचीकरण की वार्त्ता आती है, और पंचीकरण उसे कहते हैं जो पंच महाभूतो से निहित हो मेरे प्यारे! जो भी हमारा मानवीय यह शरीर है। इससे हमें पंचीकरण को जब जान लेते हैं, तो बेटा! हमे सोम की प्राप्ति होती हैं। वेद कहता है कि सोम की प्राप्ति होती है बेटा! सोम किसे कहते हैं? हमारे यहाँ आयुर्वेदाचार्यों ने तो भिन्न-भिन्न प्रकार की लताओं को भी मुनिवरों! देखो, सोम माना है। परन्तु देखो, वह जब पूर्णिमा का दिवस होता हैं, तो चन्द्रमा की नाना प्रकार की जो कान्तियां हैं, उनकी जब धाराएं प्रारम्भ होने लगती हैं, और मानव के आज्ञा चक्र से मानो उनका समन्वय होता है, तो वह सोम को पान करने वाला बेटा! सोमव्रत्ति कहलाता हैं। सोम रस के सम्बन्ध में बेटा! प्राण का निदान किया जाता हैं। यह जो प्राण जो सखा है इस शरीर में, अपनी गतियां कर रहा हैं, और वह प्राण मानो देखो, उसका, जब एक दूसरे में समावेश करते हुए प्राण सखा वह भी मुनिवरों! देखो, इस सोमरस की आभा में निहित कहा गया हैं।

तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, सोमरस, प्रत्येक वृक्ष के मानो देखो, पंचांग में भी, मुनिवरों! देखो, पंचीकरण भासता रहता हैं। इसी प्रकार कोई भी, ऐसा मानो देखो, कोई वृक्ष नही हैं, जिसमें हम पंचीकरण को मैं अपने में धारण कर सकूं। मेरे प्यारे! देखो, वह जो पंचीकरण हैं, वही तो मानव को उद्बुद्ध करने वाला हैं, मेरे प्यारे! यह जो मन है, यह भी पंचीकरण कहलाता है। जब मानव ये प्रकृति के महान रूपों में रक्त होने लगता हैं, तो मुनिवरों! देखो, यह प्राणं ब्रह्मा, यह जो मन है यह प्रकृति का सूक्ष्मतम तन्तु माना गया हैं। मेरे प्यारे! देखो, यही तो घृणा

का मूल है, और यही घृणा को दूरी करने वाला हैं, यही घृणा को आश्रय देने वाला हैं, मेरे प्यारे! यही राष्ट्रवाद का निर्माण करने वाला हैं, मेरे पुत्रों! यह जो मन है, यह मन मानो देखो, जहाँ प्राण का अनुष्ठान मात्र हुआ और वह जो प्राण है वह आत्मा की छाया कहलाती हैं। जहाँ छाया का मन से समन्वय हुआ, तो मुनिवरों! देखो, अनन्तमयी ज्योति जागरूक हो जाती है। मेरे पुत्रों! जब मैं इस वाक् के ऊपर हम विचारने लगते हैं, तो प्रायः ऐसा दृष्टिपात आता है कि वह मन और प्राण के सन्निधान मात्र से अपने क्रियाकलापों में यह लगा रहता है। मेरे पुत्रों! वहीं तक वर्णन नही किया गया हैं मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला में जब ब्रह्मा यज्ञमान को सम्बोधित करता हैं, तो जीवन में पंचीकरण होना चाहिए, पंचीकरण का अभिप्रायः पांच यज्ञ माने गएं हैं मानो देखो, ब्रह्मयाग है ब्रह्मयाग में ब्रह्म का चिन्तन करना हैं और ब्रह्म के चिन्तन करने के पश्चात वह देवपूजा में आरूढ़ हो जाता हैं, बेटा! देवपूजा किसे कहते हैं? मैंने पूजा के सम्बन्ध तुम्हें बहुत-सी आख्यिकाएं वर्णन की हैं, परन्तु जब न्यौदा में मन्त्रों के गर्भ में प्रवेश करने लगते हैं। तो मुनिवरों! देखो, वह जो प्रहा कृतं ब्रह्म लोकां मेरे प्यारे! मानो वह जो पंचीकरण की वृत्तियाँ आती है, तो वह उस देव याग में भी विद्यमान हैं। मेरे प्यारे! देवताओं का जब याग होता हैं, देवताओं का जो युग मेरे प्यारे! वह अग्नि से स्वीकार किया गया हैं। तो सर्वत्र देवता ये अग्नि के आश्रित रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, पुरोहित जन क्या आचार्य जब अपनी यज्ञशाला में विद्यमान होता हैं। तो वह ब्रह्मा बन करके, मानो अग्न्याध्यान के लिए घोषणा करता हैं, अग्न्याध्यान किया जाएं, वह अग्नि मुनिवरों! देखो, देवताओं का मुख है। देखो, अग्नि का अग्नि से समन्वय हो जाता है, क्योंकि अग्नि ही वाणी रूप है, और अग्नि ही जो यज्ञशाला में प्रदीप्त होने वाली है, वह भी अग्नि है। परन्तु दोनों प्रकार की अग्नियों का जब मुनिवरों! देखो, परस्पर जब समन्वय हो जाता है। तो मुनिवरों! देखो, वह मानव अपनी महानता को प्राप्त होने लगता हैं।

तो मेरे पुत्रों! देखो, वेद का ऋषि कहता हैं क्या हम देव पूजा करें। पूजा का अभिप्रायः यह है कि हम उसे यथोचित मानो उसका आदर होना चाहिए, उन क्रियाओं में हमें लग जाना है जैसे परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में, मानो यह पृथ्वी का निर्माण किया, और पृथ्वी में मेखला का निर्माण किया, जिस मेखला में मानो बेटा! जल भी का प्रोक्षण किया जाता हैं, वह जल मुनिवरों! देखो, अमृत हैं, वह उस जल की देखो, उस संसार रूपी यज्ञशाला का जो, मेरे प्यारे! विचारक हैं वह देखो, सर्वत्र मेखला के रूप में विद्यमान हैं मानो इसी प्रकार जब हम अपने बाह्य या दैनिक क्रियाकलापों में प्रवेश करते हैं, तो दैनिक क्रियाओं में भी, दैनिक मानो देखो, कर्मकाण्ड में भी बेटा! देखो, मेखला का सम्बन्ध है, क्योंकि मेखला कहते हैं, जहाँ जल की आभा प्राणवाचक होने लगती है। मेरे पुत्रों! देखो, वह अपने में जब ये विचारते हे कि वह हमारा पंचीकरण कहलाया जाता हैं, मेरे पूर्वजों ने, आचार्यों ने मुनिवरों! देखो, ऊर्ध्वा में कल्पना करते हुए, ऊर्ध्वा में गति कराते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने वर्णन करते हुए कहा है, उन्होंने अपनी आख्यिका प्रगट करते हुए कहा हैं, क्या यह जो मानो देखो, हमारा जो पंचीकरण मानो पंच याग है देवयाग विशेष माना गया हैं, मानो कर्मकाण्ड की पद्धति में, ब्रह्मा आचार्यजन कहते हैं, आओ, हे यज्ञमान! तुम मानो जल का प्रोक्षण करो, जैसे परमपिता परमात्मा ने इस पृथ्वी के विष को उगलने, पृथ्वी के विष को सिंचन करने के लिए, अपने में मानो देखो, पृथ्वी से अपने में मानो देखो, जलों का सिंचन करता हैं, और वह पृथ्वी के विष को अपने में धारण कर लेता है। मेरे प्यारे! देखो, वही तो मानो देखो, मेखला के रूप में विद्यमान हैं, वही जल है, वही आपो है, उस आपो की जो प्रतिभा है, वह मानो देखो, एक आभा में निहित हो रही हैं। मेरे पुत्रों! देखो, यज्ञमान, अपने या ब्रह्मा, पुरोहित को अपने यज्ञमान को उस स्थली पर ले जाता हैं, जहाँ मुनिवरों! देखो, वह आचमन करता हुआ कहता है कि मैं माता के गर्भस्थल में विद्यमान था, तो मानो देखो, मेरी तो आपो ने ही तो रक्षा की हैं, माता को जानने की कौन रक्षा कर रहा है, वेद की आख्यिका कहती है, कि मानो देखो, वह

**याग एक सर्वांग पूजा**

आपो ही तो कहलाता है जो आपो बन करके रहता है, आपो ही ओढ़न बन करके रहता है, आपो ही मानो जो अपने रूपों में प्रगट होती रहती है। पांसे बन जाती हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, वह जो आपोमयी ज्योति है, उसका वह प्रोक्षण कर रहा हैं, परन्तु देखो, उसमें कितनी आभा निहित है। तो पूजा का अभिप्रायः यह है, क्या उसका हम सदुपयोग करें, जहाँ यज्ञशाला में यह ज्ञान कराया जाता हैं।

मुझे वह काल स्मरण आता रहता हैं जिस काल में बेटा! विश्वविद्यालयों में, आचार्य जन ब्रह्मचारियों को बेटा! देखो, यह कर्म काण्ड की प्रतिभा, मानो देखो, उन्हें स्मरण कराई जाती है। क्योंकि कर्मकाण्ड ही अपने में, एक मर्म कहलाता है, मानो देखो, वह याग की भूमिका कहलाती है, वह याग का एक उच्चतम मानो कर्म कहलाया जाता हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह अपने में तीन आचमन करके कहता है, मेरा ओढ़न, मेरा आसन, मानो सभी आपोमयी ज्योति कही जाती हैं। वह मेरा हृदय मानो उसमें संलग्न हो जाता हैं, मैं कितना विचित्र बनने जा रहा हूँ, तो मेरे पुत्रों! जब ऋषि ने अपने में वाक् अपने में वार्त्ता प्रगट कर रहा हैं, तो वह कहता है, क्या यज्ञमान को आचमन करा करके मानो देखो, वह वह दक्षिण और देखो, ऊर्ध्वा में गति करता हुआ, मुनिवरों! देखो, वह देवत्तव को प्राप्त होता हैं। मेरे प्यारे! देखो, स्वाहा कह रहा हैं वह अपने में स्वाहा कह रहा हैं क्या मेरी वाणी पवित्र हो जाएं, मेरे नेत्र पवित्र हो जाएं, मानो सर्वत्र को निष्ठावान और मानो संकल्पवादी बनाता हैं। जब संकल्पवादी बनाता है तो मुनिवरों! देखो, एक महानता का दर्शन होता हैं। मुझे एक वार्त्ता स्मरण आ रही है मानो देखो, यह जो याग का पंचीकरण है, पंच यज्ञों का जो हमारे यहाँ एक विधान है बड़ा विचित्र माना गया हैं। परन्तु आचर्यों ने और भी ऊँची-ऊँची कल्पनाएं की हैं, और वह कल्पना पूर्व काल में हमने वर्णन की हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब यह हमारे यहाँ नाना ऋषि-मुनियों का एक समाज जब एकत्रित होता है, तो बेटा! ऋषि मुनियों का विचार उनका चिन्तन बड़ा गम्भीरता में मुद्रित हो जाता हैं। मेरे प्यारे! मुझे कुछ स्मरण आता रहता हैं, नाना ऋषि-मुनियों का एक समाज विद्यमान हैं, और उस सभा में परमाणुवाद की कुछ चर्चाएं की, मानो कुछ याग की चर्चा की, और मुनिवरों! कुछ मृत्यु की चर्चाएं की। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि वरतेन्तु अपने में एकान्त प्रश्नों का उत्तर देने लगें। उन्होंने कहा भई! मेरे विचार में तो यह आ रहा है, कि यह जो परमाणुवाद हैं, यह हमारे ऋषि-मुनियों से मस्तिष्कों से दो प्रकार से यह गति करता रहता हैं, एक गति ध्रुवा है, एक ऊर्ध्वा है। एक अन्तिम मानो शून्य बिन्दु पर है, और दूसरी शून्य बिन्दु को ले करके, मानो उसका प्रारम्भ होता है। जैसे मुनिवरों! देखो, बहुत पुरातन काल में हमने अपना वाक् निर्णय देते हुए कहा था वाक् उच्चारण करते हुए कहा क्या जब नाना ऋषि-मुनियां का एक मानो समूह विद्यमान हो गया, तो वहाँ जब परमाणु की चर्चा होने लगी तो उस चर्चा में मुनिवरों! देखो, ऋषि ने यह कहा क्या यह जो चन्द्रमा हैं, यह मानो देखो, यह अपने में भासता रहता हैं, यह अपने मानो प्रकाश देता रहता हैं, रात्रि अहिल्या को अपने में धारण करने वाला हैं। सहस्रों मानो देखो, कान्ति वाला बन करके, रात्रि अपने गर्भ में धारण कर लेता है। वह मानो देखो, कौन है, ऐसा मुनिवरों! जो धारण कर रहा है, अपने गर्भ में धारण कर रहा है, वह चन्द्रमा कहलाता है बेटा! जो रात्रि के वैभव को अपने में धारण कर लेता हैं, मुनिवरों! देखो, वह चन्द्रमा अमृत बहाता रहता है। अमृत को देता रहता है, वह मानो देखो, मुझे नाना वार्त्ताएं स्मरण आती रहती हैं। एक समय बेटा! ब्रह्मचारी कवन्धि ने अपने वाक्यों में यह कहा था वह एक समय मानो कुछ पुष्पांजलियों को वह पनपाने के लिए वह जल का प्रोक्षण कर रहे थे। जब जल का प्रोक्षण कर रहे थे, तो सुकेता ने कहा भगवन! क्या कर रहे हो? तब उन्होनें कहा मैं मानो देखो, वृक्ष का सींचन कर रहा हूँ, उन्होंने कहा तुम वृक्ष का क्यों सिंचन कर रहे हो? उन्होंने कहा कि मैं चन्द्रमा से मानो इसमें रस आयेगा अमृत बन करके मैं इस अमृत को दृष्टिपात करूंगा। मेरे प्यारे! देखो, वह उस वृक्ष में तो पूर्व ही पंचीकरण था परन्तु जब मानव देखो, चन्द्रमा अपनी आभा में छटकने लगा

## याग एक सर्वांग पूजा

अहिल्या को अपने में धारण करता हुआ तो मुनिवरों! देखो, वह उसे अमृतमयी बनाने लगा, उन्होंने वृक्ष को अमृतमयी बनाया, जब मानो देखो, कृषक उस गृह में पंहुचा, तो कृषक के यहाँ मुनिवरों! देखो, एक पौधा है, उस पौधे पर दो प्रकार का अन्न विद्यमान हैं, उस अन्न में मुनिवरों! देखो, चन्द्रमा अमृत दे रहा हैं, वह इस चन्द्रमा देता हुआ कहता है, यह तो अमृत है, तो मेरे प्यारे! वह अमृत वह अमृतं ब्रह्मा कृषक प्रसन्न हो रहा है। मेरी कृषि प्रियता में हो गई है, उपजने लगी हैं, उसको कौन-सा रस प्राप्त हुआ है, बेटा! वह चन्द्रमा का रस प्राप्त होने लगा, वही चन्द्रमा जब मैं अपनी माता के द्वार पर जाता हूँ।

एक समय मैंने देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी की माता से यह कहा कि क्या हे माता! जब महर्षि कागभुषुण्ड जी तुम्हारे गर्भस्थल में विद्यमान था, तो तुमने कौन से अमृत का पान किया? मेरे प्यारे! माता नही जानती थी परन्तु वह तपों में निहित रहती थी तपों में निष्ठावान रहती थी, उन्होंने कहा तप तो करती रही हूँ, परन्तु मैं ओत-प्रोत नही हुई हूँ, तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आया वह जो चन्द्रमा का मानो सोम था, वह माता की रसना के निचले विभाग में बेटा! देखो, इसको परमपिता पिता परमात्मा मानो देखो, इसको प्रोक्षण के रूप में प्रोक्षण करने लगा। तो मेरे पुत्रों! हमें कुछ ऐसा स्मरण है, जब माता प्रहा माता नही जानती कि कौन अमृत दे रहा हैं? कौन-सी नाड़ी के द्वारा अमृत प्राप्त हो रहा है, जब मैं नाड़ी क्षेत्र में प्रवेश करता हूँ, तो माता निरूत्तर हो जाती है। मानो देखो, उसमें बेटा! पंचीकरण बेटा! एक नाड़ियों का होता हैं, रसना के निचले विभाग में चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी है, चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी का समन्वय मेरे पुत्रों! देखो, वह अस्स्युतम ब्रह्मा मुखां मातां ब्रह्मे कृतं देवा रसना के निचले विभाग में वह नाड़ी है। उसी नाड़ी की एक धारा हैं, जिसको श्वेतकेतु नाड़ी कहा जाता हैं। उस नाड़ी का सम्बन्ध माता की पुरातत नाम की नाड़ी से होता है, पुरातत नाम की नाड़ी का समन्वय माता के रीढ़ से होता है। रीढ़ से पंचम नाड़ी बन करके चलती हैं, वह मानो नाभि केन्द्र में मानो देखो, लोरियों से ले करके नाभि केन्द्र में प्रवेश कर जाती है। तो मानो देखो, वह नाड़ी का समन्वय होता हैं, मानो देखो, वह पंचम नाड़ी कहलाती हैं। जिसको हमारे यहाँ पंचीकरण कहा जाता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, यह जो चन्द्रमा है, यह पंचीकरण कहलाता है, परन्तु देखो, ऋषि-मुनि बड़े विचित्र होते हैं। उन्होंने कहा कि वही पंचीकरण समुद्रों में प्रवेश कर रहा है। चन्द्रमा का जो समन्वय हैं, जब पूर्णिमा आती हैं, पूर्णमा का दिवस होता है, तो यह चन्द्रमा अमृत को अपने में सिंचन कर लेता हैं। अमृत को अपने में ग्रहण कर लेता है, जब यह अमृतमयी बन जाता है, अमृत को प्राप्त कर लेता हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, मानव भी अमृतमय बनता हुआ समुद्रों में अन्तरिक्ष में जब मानो देखो, वही स्थिर हो जाता है। मानो जल का परमाणुवाद उसी समय मुनिवरों! देखो, सूर्य की पूजां ब्रहा मानो देखो, चन्द्रमा तो उसे स्थिर करने वाला हैं, वह धीमी-धीमी वृष्टि के रूप में बेटा! परिणत हो जाता हैं, अरे, वही तो अमृत है। जो नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देता है, जो नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को ऊँचा बनाता है। तो बेटा! देखो, विचार क्या चल रहा है विचार यह चल रहा था कि मानो यह जो चन्द्रमा हैं वह सोम की वृष्टि करने वाला है, जो उसे पान कर लेता है, मैंने तुम्हें कई काल मे वर्णन कराते हुए कहा था महात्मा अश्विनी कुमार जो राजा रावण के यहाँ वैद्यराज थे और अश्विनी कुमारों ने मानो देखो, जो उनकी माता थी श्वेधनि वह मुनिवरों! देखो, चन्द्रमा के पूर्णिमा के दिवस मानो चन्द्रमा को उनकी कान्तियों को अपने शरीर में सिंचन करती रही हैं, और उनके गर्भ से उत्पन्न होने वाले अश्विनी कुमार दो पुत्रों जन्म हुआ। उन अश्विनी कुमारों की चर्चाएं पुत्रों! मैंने कई काल में वर्णन की हैं, आज मैं मानो अश्विनी कुमारों के गर्भ में नही जाना चाहता हूँ। वह कितने वैद्यराज थे, उनकी कितनी आयुर्वेद में गति थी, यह चर्चा तो बेटा! हम पुरातन काल में करेंगें, आज का विचार तो केवल यह कि माता ने उसका निर्माण कर दिया और उस पंचीकरण में मानो परिणत करते हुए कहा था एक आभा में जीवन को प्रदान कर दिया, तो मेरे पुत्रों!

## याग एक सर्वांग पूजा

देखो, विचार क्या है, हमारा जो विचार चल रहा है, क्या हम अपने में पंचीकरण करते हुए मानो चन्द्रमा की धारा में रत्त हो जाएं। मेरे प्यारे! देखो, जब चन्द्रमा की धाराएं समाप्त होने लगीं, तो उन्होंने बेटा! देखो, लोकों का वर्णन करने लगे, और वह जो नाना प्रकार के तारा मण्डलों की एक माला है, और एक-एक माला का अपना-अपना महत्व है। बेटा! मेरे प्यारे! देखो, कोई तो वैज्ञानिक मानो देखो, पृथ्वी के मध्य में और कोई देखो, सूर्य के मध्य वाले मानो देखो, माला को धारण करता हैं। मेरे प्यारे! देखो, कोई यह कहता है कि नही सूर्य की माला को धारण कर लिया जाएं, मेरे पुत्रों! देखो, चन्द्रमा की जो प्रतिभा है, अथवा उसकी जो प्रतिष्ठा हैं, वह मुनिवरों! देखो, सूर्य में ओत-प्रोत हो जाती हैं। वह सूर्य मुनिवरों! देखो, एक माह है। मैंने कई काल में बेटा! तुम्हें सूर्य का वर्णन करते हुए कहा हैं, यह जो सूर्य यह महानता वाला हैं। मानो यह द्यौ से प्रकाश लेता है, यह मानो प्रत्येक प्राणी को ऊर्ज्वा देता है, नाना प्राणियों में वही तो ऊर्ज्वा को देने वाला है, मेरे पुत्रों! देखो, एक समय हमारे यहाँ राजा रावण की वैद्यराज थे, वह वैद्यराज एक समय भयंकर वनों में चले गएं, पर्वतों की कन्दराओं में चले गएं, तो मानो जब उन्हें एक औषध को दृष्टिपात किया, बेटा! वह प्रातःकाल से मानो उदय होना उसका प्रारम्भ होता था सांयकाल को को उसी औषध का क्षय हो जाता था। मध्य मानो देखो, मध्य दिवस में उसका पूर्ण हो जाना, और मध्य में से उसकी प्रतिभा मानो समाप्त हो जाना, मेरे प्यारे! देखो, वैद्यराज ने उसे दृष्टिपात किया सूर्य उदय होने पर उसकी प्रतिभा महान है। परन्तु सूर्य अस्त होने पर उसकी प्रतिभा ओर प्रकार की बन गई हैं। जिसका बेटा! देखो, निदान करना, यह अन्वेषण करना या विचार-विनिमय करना बेटा! एक महानता एक नृत्त कहलाता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! यह जो सूर्य है, यह ऊर्ज्वा के देने वाला हैं, यह जो सूर्य है, यह प्रकाश में पंहुचाने वाला हैं, प्रत्येक मानव को प्रकाश में रत्त रहना हैं, प्रत्येक मानव को प्रकाश के मानो पुंज में पंहुचाना हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह सूर्य भासता रहता हैं, यह अमृत है, यह ब्रह्मचारी है, आदित्य है, यही ऊर्ज्वा का मानो देखो, पथिकतव माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, यह याग को अपने जो गर्भ में धारण कर लेता हैं, याग को बेटा! देखो, यह अपने में धारण करके व्यंजनों को जन्म देता है, तो मुनिवरों! देखो, यह सूर्य, अपने में आभा वाला हैं, परन्तु जब यह भी समापन होने लगा, तो ऋषि ने अपने में यह विचारा कि मानो अब मैं मालाओं में जाना चाहता हूँ। वह जो मालाएं हैं जिस पर आचार्यजन, वैज्ञानिक जन मानो जिस माला को धारण करके, बेटा! अपने में, अपने को शून्य बिन्दु में ले जाते थे, बेटा! मैंने बहुत पुरातन काल में, निर्णय देते हुए कहा था, जब लोकों की गणना हुई, करने लगते हैं तो हम बेटा! मौन हो जाते हैं। ब्रह्माण्ड का वर्णन किया नही जाता, पूर्ण रूपेण परन्तु जितना भी अनुसन्धान किया है वह ऋषि-मुनियों ने बड़ा अद्वितीय किया हैं।

मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे यह वर्णन कराया क्या आधुनिक वर्तमान का जो विज्ञानवेत्ता हैं, वह मानो देखो, तेरह लाख पृथ्वियों को जान पाया परन्तु हमारे जब हम वेद के वांगमय में प्रवेश करते हैं, और लघु मस्तिष्क में ध्यानावस्थित होते हैं, तो बेटा! विचारा गया है कि तीस लाख पृथ्वियों तक मानव ने विज्ञानवेत्ताओं ने पृथ्वियो को जाना है बेटा! इसकी एक माला बनती हैं। उस काल को मानो भक्तजन प्रभु के जो महान पुजारी होते हैं, वह अपने में धारण करने लगते हैं। वह एक विचित्र माला बन करके मेरे पुत्रों! देखो, हम अपने में उसे धारण करने लगते हैं। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में निर्णय देते हुए कहा था, क्या यह जो तारामण्डलों का एक समूह बना हुआ हैं, तारामण्डलों की जो प्रतिभा बनी हुई हैं मुनिवरों! वही तो एक महानता वाली एक ज्योति कहलाती है, जिस ज्योति का अनुभव करता हुआ मानव अपने में बेटा! देखो, ज्योतिवान बन जाता हैं, पवित्र बन जाता हैं, मेरे प्यारे! देखो, वह जो तारामण्डलों की माला हैं, ऐसे-ऐसे तारामण्डल प्रभु के राष्ट्र में हैं, जिसमें बेटा! एक सहस्त्र सूर्य उसमें समाहित हो जाते हैं। बेटा! जब विचारा जाता हैं, क्या जब इस सीमा पर जाते हैं, तो विचार आता है

शून्य बिन्दु पर गणना का क्षय हो जाता है।

तो विचार-विनिमय क्या यह पृथ्वी अपने में महानता वाली है, और इन पृथ्वियों की माला को सूर्य अपने में धारण करता है। मेरे प्यारे! यह सूर्य अपने में अपनेपन की आभा को प्राप्त होने लगता हैं, आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या चल रहा हैं, विचार-विनिमय हमारा यह है, क्या हम मुनिवरों! देखो, अपनेपन में अपने आभा को दृष्टिपात करते रहें, तो यह जो नाना प्रकार के तारामण्डलों की माला है, एक माला नही, दो माला नही, मानो अनन्तमयी माला हैं। जिस माला में बेटा! देखो, एक-एक सौर मण्डल समाहित हो जाता हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह सौर मण्डल समाहित रहता हुआ आकाश गंगा को धारण करने वाला बेटा! शिव कहलाता है। जब हम शिव के द्वार पर जाते है, और विचारते हैं कि गंगाओ को कौन धारण कर रहा हैं, जिसमें मानो अरबों-खरबों मुनिवरों! देखो, जिसमे सौर मण्डल कहलाते हैं। जिसमें मानो देखो, वह अरबों-खरबों जो सौर मण्डल हैं, उन सौर मण्डलो में गति कराने वाला बेटा! कौन हैं? कौन धारण कर रहा है, अरे, वही तो शिव कहलाता हैं। वही तो मानो देखो, जो शिव है, जो मानो देखो, इस संसार को पिण्ड का आकार में पिण्डाकार में इस ब्रह्माण्ड को जो निर्माण करता हैं। जो मानो इसे अपने में धारण कर रहा है, मेरे पुत्रों! वह शिव कहलाता हैं, विचार क्या वह मुनिवरों! देखो, वे परमपिता परमात्मा एक महान अन्नतमयी कहलाते हैं, तो वह इस माला का अन्तिम जो मनका हैं, वह गन्धर्व कहा जाता है। और गन्धर्व से पूर्व मानो देखो, नाना मण्डलों की चर्चाएं होती रहती हैं। आज मैं उस विचारों में जाना नही चाहता हूँ, पुत्रों! क्योंकि यह तो विचारक वन है, लोक-लोकान्तरों का वन हैं, एक विशाल कहलाता है। आओ, मेरे पुत्रों! हम जाना नही चाहते हैं विचार कहाँ, विचारों का अन्त करना चाहते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि कहता है, कि यह गन्धर्व, अपने में कहीं प्रतिष्ठित होता हुआ, मेरे प्यारे! देखो, वह इन्द्र कहलाता है। हमारे यहाँ इन्द्र की विवेचना करने वालों ने, मानो इन्द्र नाम बेटा! उस परमपिता परमात्मा का, इन्द्र नाम राजा का, मेरे प्यारे! देखो, इन्द्र नाम सूर्य को, विद्युत को भी कहा जाता हैं। द्यौ को भी वह इन्द्र के रूप में परिणत किया गया है। उस राजा का नाम इन्द्र है, जो एक सौ एक अश्वमेध याग कर देता है और जिसका संसार में कोई भी मानो देखो, बहिष्कार न करने वाला हो, और सब उसका आदर करने वाले हों मेरे पुत्रों! देखो, वह इन्द्र कहलाता हैं। अश्वेमध याग का अभिप्रायः क्या है? हमने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था कि अश्वमेधं याग उसे कहते जो मानो देखो, अश्व नाम राजा का, और प्रजा नाम देखो, मेध कहलाई जाती हैं और प्रजा मानो आज्ञा के अनुसार याग में परिणत हो जाएं, और वह मुनिवरों! देखो, राजा कहलाई जाती हैं। वह इन्द्र है, वह इन्द्रतव कहलाता हैं। मेरे प्यारे! एक नही नाना प्रकार की इसकी विवेचनाएं है, जिसे अपने विशुद्ध रूप में रत्त होती रहती हैं। मानो देखो, इसके गौ के रूप में वह इन्द्र हैं, वह सखा है, वह इन्द्र हमारा पालन करने वाला हैं। मेरे प्यारे! देखो, इन्द्रो भवा सम्ब्रह्मा इन्द्र एक लोक को भी कहा जाता है, जहाँ यह गन्धर्व समाहित होता है, मानो उसे भी इन्द्र कहते हैं, यहाँ इन्द्र का जो प्रकरण है, वह बड़ा विचित्र हैं, मेरे प्यारे! देखो, वह मन से इसका समन्वय रहता हैं। यह जो प्रकृति का सूक्ष्मतम तन्तु हैं इसका नाम भी इन्द्र कहा जाता है और वह मनस्तव के रूप में प्रगट होता रहता हैं। मेरे पुत्रों! देखो, यह जो मन है यही तो मानो सर्वत्र प्रकृति की आभा को अपने द्वारा लाता हैं, समाज को महान बनाता रहता है।

तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! प्राण का सन्निधान मात्र मन के साथ होते ही, मन अपनी प्रकृति को जानने लगता है, उसके गर्भ में प्रवेश होने लगता हैं, कहीं भी उसे प्रकृति का तन्तु प्राप्त हो जाएं, वही मन अपनी आभा को ले करके उपस्थित हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार-विनिमय क्या ये हम विचार यह दे रहे थे क्या मुनिवरों! देखो, यह जो इन्द्र है यह इन्द्र हमारा सखा हैं, महान है, पवित्र है, देखो, हमें इन्द्र उपासना करनी हैं। परन्तु देखो, इन्द्र है क्या? आत्मा का नाम इन्द्र है, अरे, जैसे इन्द्र आत्मा हैं, वही तो शरीर में भासता रहता हैं,

## याग एक सर्वांग पूजा

जब तक इसमें इन्द्र हैं जब तक यह शरीर हैं, इन्द्र के विच्छेद होने से यह शरीर शून्य हो जाता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, वह इन्द्र कहलाता हैं। विचार-विनिमय क्या, आगे वेद का वाक् कहता हैं, वेद की आख्यिका कहती है, क्या मुनिवरों! देखो, इन्द्र के आगे, जब गति करने लगे, तो प्रजापति का व्यवधान आया और यह कहता है कि प्रजापति ही मानो देखो, वह प्रजापति ही महान और वह प्रजापति ही याग कहलाता है, इस संसार की जो रचना हैं, संसार की जो रचना है, यही तो मानो देखो, यही तो मानो प्रजापति कहलाता है, माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु का जब मानो वास होता हैं, तो बेटा! देखो, उसी बिन्दु से पूर्णता की प्राप्ति हो जाती है, वही तो प्रजापति की रचना है, वही तो प्रजापति कहलाता हैं। बेटा! जो मानो देखो, प्रजापति हमें हमारा कल्याण करता हैं, नाना प्रकार की वनस्पतियों के रसों का, जो मानो देखो, अन्तिम जो सार है, उसे प्रजापति कहते हैं। मेरे प्यारे! वही तो प्रजापति बन करके, इस संसार को निर्माणित कर रहा हैं, चाहे वह पृथ्वी मण्डल हो, चाहे वह चन्द्र मण्डल हो, चाहे वह कोई भी लोक-लोकन्तर क्यों न हो, चाहे समुद्रों के गर्भ में हो चाहे समुद्रों के ऊपरी तल पर हो, परन्तु वह सब अपने में प्रजापति क्रियाशील हो रहा है। वही तो प्रजापति है।

प्रजापति

जो एक समय बेटा! माता श्वेतकेतु से हमने एक समय कहा हे माता! प्रजापति कहाँ रहता है? तो माता ने उत्तर दिया, क्या प्रजापति वहाँ रहता है, जहाँ माता रहती हैं, वहीं प्रजापति रहता हैं। तो मानो देखो, वह उन्होंने कहा कि माता को हम प्रभु क्यों कहते हैं? उन्होंने कहा-प्रभु ही वह प्रजापति है, उन्होंने कहा माता को हम गऊं क्यों कहते हैं? उन्होंने कहा गऊं ही तो प्रजापति हैं। उन्होंने कहा कि हम माता को ब्रह्मणां ब्रह्मे देखो, विद्या को स्वीकार करते हैं, उन्होंने कहा विद्या को मन्थन करने के पश्चात मानो जो ज्ञान की उपलब्धि होती है वही प्रजापति हैं। मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा कि प्रजापति जो हम योग को स्वीकार करते हैं, उन्होंने कहा योग के सन्निधान दोनों का मिलन होने से जिसकी प्राप्ति होती है, उसी का नाम प्रजापति हैं। मेरे पुत्रों! देखो, वह प्रजापति ही दृष्टिपात आने लगा मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने ज्ञान और विज्ञान हे ममत्वां ब्रह्मे हम तो तुम्हें माता स्वीकार करते हैं। उन्होंने कहा तो मेरे ही समक्ष प्रजापति विद्यमान रहता हैं, उन्होंने कहा हम यह मानो माता मानो देखो, कान्ति को कहते हैं, उन्होंने कहा जो ज्योति का आयतन हैं, अरे, वही तो प्रजापति है उन्होंने कहा हम तो प्रजापति याग को स्वीकार करते हैं। उन्होंने कहा याग में जो ब्रह्मा है मानो वही तो प्रजापति के स्वरूप में विद्यमान रहता हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया वार्त्ता प्रगट की तो माता ने निरूतर कर दिया। माता ने कहा हे माता! हम तो मोक्ष को प्रजापति कहते हैं, उन्होंने कहा जिससे भी मोक्ष होता है वही तो प्रजापति हैं। मेरे प्यारे! देखो, इसकी जब विवेचना करने लगे तो ऋषि अपने में शान्त हो गएं, मेरे प्यारे! देखो, प्रजापति को ले जा करके अपने देखो, याग में प्रतिष्ठित हो गएं, उन्होंने कहा क्या यह प्रजापति ही तो याग हैं। मेरे प्यारे! देखो, यह प्रजापति कहाँ पूर्णता में रहता हैं, उन्होंने कहा याग में रहता हैं, याग किसे कहते हैं। जितना भी संसार का सुकर्म है, मानव की अन्तरात्मा को अन्तर्हृदय से महानता प्राप्त होती हो चित्त प्रसन्न होता हो उस क्रिया का नाम मेरे प्यारे! देखो, वही तो याग कहलाता हैं। एक यज्ञमान बन करके अग्न्याध्यान में विद्यमान है। उनकी मानो धाराओं पर वह विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करके संसार को दृष्टिपात कर रहा है, वह विज्ञान के युग में चला गया हैं। विज्ञान में युग में उसकी प्रतिष्ठा हो गई हैं। तो वही तो मानो देखो, वही तो याग कहलाता हैं। याग में परिक्रमा हो रही हैं, जल का सिंचन हो रहा हैं, मानो पति पत्नी अपनी अपनी इच्छा पूर्ति के लिए याग कर रहे हैं, मानो वही तो याग हैं। राजा अपनी प्रजा को ऊँचा बनाने के लिए निर्भयता के लिए याग कर रहा है, मानो देखो, वह प्रभु का स्मरण करता हुआ जब याग करता हैं, तो वही तो याग कहलाता है। जो निर्भयता की प्रतिभा प्रदान करने वाला हैं, मेरे पुत्रों!

## याग एक सर्वांग पूजा

देखो, जब उन्होंने कहा कि अग्नि की धाराओं में सर्वत्र यागों का क्रियाकलाप निहित रहता हैं। यही तो याग कहलाता है। मानो देखो, उस पर मौन हो गएं तो मुनिवरों! देखो, वह प्रसंग आया कि क्या दर्शनां ब्रह्मा वृतं देवाः उन्होंने कहा याग तो दक्षिणा के रूप में विद्यमान रहता है। मानो देखो, दक्षिणा का अभिप्रायः हमारे आचार्यों ने, दक्षिणा की बड़ी विचित्र मानो व्याख्या की हैं, उन्होंने कहा जिस याग में, जिस क्रियाकलाप में याग समाहित होता, हो अरे, वह याग है, या मानो दक्षिणा हैं। तो उन्होंने वर्णन किया क्या याग में दक्षिणा है, दक्षिणा में याग हैं, इसका अभिप्रायः यह है क्या हे यज्ञमान! पुरोहित कहता हैं, हे यज्ञमान! तेरे हृदय में जितनी दूरिता हैं, जितनी त्रुटियां हैं, काम, क्रोध, लोभ, मोह की जो त्रुटियां हैं, तू उसे मानो देखो, यज्ञ रूपी इस देव पूजा में तू उसे भरण कर दे, मानो उसको समर्पित कर दे, जब तू उसको समर्पित करने वाला बनेगा तो मानो देखो, दक्षिणा का पूर्णतव अधिकारी बन जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, दक्षिणा की वार्त्ता आई दक्षिणा के लिए कहा कि मेरा दक्षिणा का अभिप्रायः केवल यही है, क्या यज्ञमान का हृदय सुगन्धियुक्त होता हुआ विचारों में महानता की ज्योति जागरूक होते हुए मानो देखो, वह जो दक्षिणा हैं, मुनिवरों! देखो, वही तो आचार्य का प्राण है, वही तो मुनिवरों! देखो, यज्ञमान की वेदी हैं, वही तो देखो, आचार्य का प्राण वही उसकी वेदी हैं, मेरे प्यारे! वेदी और प्राण दो नही हो सकते, दोनो एक ही सूत्र के मनके हैं। जैसे मन और प्राण मानो देखो, यह मन प्रकृति की छाया हैं, और प्राण शरीर में आत्मा की छाया हैं, इन दोनों का सन्निधान होना ही समन्वय होना ही मेरे प्यारे! देखो, इस शरीर में ओत-प्रोत होना है।

आओ, मेरे प्यारे! यह विशाल चर्चा मैं नही ले जा रहा हूँ, आगे वेद का आचार्य मनन करता हुआ कहता हैं, मननशील होता हुआ कह रहा हैं, क्या ब्रह्म ब्रहे लोकं ब्रह्मा वाचन्नमं ब्रह्मे कृतां मेरे प्यारे! देखो, आचार्य कहता है दक्षिणा से श्रद्धा का जन्म होता हैं मेरे प्यारे! देखो, दक्षिणामयी मानो देखो, श्रद्धामयी श्रद्धा किसे कहते हैं? श्रद्धा कहते हैं मेरे पुत्रों! देखो, जिससे अटूट समन्वय हो जाता है, जैसे मुनिवरों! देखो, सूर्य का चन्द्रमा का अपने में अकाटय समन्वय रहता हैं, पृथ्वी का जल का देखो, आकाश से उसका समन्वय रहता हैं। परमात्मा और भक्त का रहता हैं, जैसे पुत्र और पिता का होता है, वही समन्वय है मानो वह भी अकाटय है, जैसे पति पत्नी संसार के पश्चात अकाटय प्रवृत्ति में प्रवेश हो जाते हैं, तो मानो देखो, उसी का नाम श्रद्धा हैं। श्रद्धा का अभिप्रायः यह क्या श्रद्धा ही मेरे पुत्रों! देखो, जनमानस को जन्म देने वाली है। प्रजा ही मेरे प्यारे! देखो, जनमानस को महान और प्रतिभाशाली बना देती हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, श्रद्धामयी रहना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, दक्षिणा श्रद्धा में, और श्रद्धा मेरे प्यारे! देखो, श्रद्धा कहाँ? श्रद्धा का वाक् कहाँ रहता हैं? मेरे प्यारे! श्रद्धा का वाक् ही मानो हृदय में रहता हैं, मेरे प्यारे! देखो, हृदय ही अगम्य हैं, हृदय ही ज्योति है, हृदय ही मेरे प्यारे! परमात्मा से मिलान कराता हैं। देखो, मन की जितनी धारा है, सब हृदय में समाहित हो जाती हैं। हृदय में अगम्यता में प्राप्त हो जाती हैं। तो मेरे प्यारे! विचार क्या है, मानव देखो, हृदय ही परमात्मा के समीप जाने वाला एक यन्त्र है सब क्रिया इसमें समाहित हो जाती हैं तो वह यन्त्र है उस यन्त्र में देखो, ऋषिजन धारण करके बेटा! परमात्मा के आनन्द के लिए गमन करता है वह मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेता हैं। मेरे प्यारे! मैं कोई व्याख्याता नही हूँ, मैं कोई मानो विशेष विचार देने नही आया हूँ, केवल परिचय देने के लिए चला आता हूँ, और वह परिचय क्या है? हम मुनिवरों! देखो, उन मालाओं को अपने में धारण करें और मालाओं को जो धारण करता है वही बेटा! भक्त जन और मानवतव और मानवीय अपनी मानवीयता का वह दर्शन करता हैं।

तो आओ, मेरे प्यारे! मानवता का कौन दर्शन करता हैं, जो इन मनकों को एक माला के रूप में धारण कर लेता हैं, मेरे पुत्रों! देखो, आज का विचार अब हमारा समाप्त होने जा रहा है। आज के विचारों का उच्चारण

करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए आध्यात्मिकवाद में हम प्रवेश हो जाएं। आध्यात्मिकवादी बन करके हम परमात्मा के समीप चले जाएं, विज्ञान में रत्त हो जाएं, यह है बेटा! आज का वाक्, अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन ओ३म् देवाः आभ्यां रथं ..... दिनांक ०८ १० १९८६

# ५ याग के होता ०३ १२ १९८६

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महान है, और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। इसीलिए हमारे यहां प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा अथवा उसका वर्णन कर रहा है, उसके गुणों का गुणवादन कर रहा है। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहते हैं। प्रत्येक वेद का मन्त्र उसका गुणगान गा रहा है, उसके गुणों का वर्णन कर रहा है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा का गृह है, अथवा उसका आयतन है, और वह उसका सदन है। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की मानों महिमा का गुणगान गाते रहते हैं, अथवा उसके गुणों का वर्णन करते हुए हमारे आचार्यों ने बेटा! बड़ा वर्णन किया है। बहुत पुरातन काल हुआ जब बेटा! ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके उस परमपिता परमात्मा के गुणों का प्रायः वर्णन करते रहे हैं।

## परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है।

आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन कर रहा था मानो नाना प्रकार के मन्त्र इस प्रकार के आते हैं, जिनमें मानो उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा निहित रहती है, क्योंकि वह वहां अभ्योदय होने वाले हैं। तो आओ मेरे पुत्रों! हमारा वेद मन्त्र क्या कहता है। आज के हमारे वेदमन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का प्रायः गुणगान गाया जा रहा था जिसकी महिमा का गुणगान गाते हुए माना ऋषि-मुनि अपने में तपश्चर बन जाते है। और अपने को तपों में ले जाते हैं। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहते हैं। क्योंकि वह सर्वज्ञ है। कोई संसार की ऐसी वस्तु नहीं है। जिसमें वे परमपिता परमात्मा न हों। मानो देखो, समुद्रों की कोई तरंग ऐसी नहीं हैं। जहां वे परमपिता परमात्मा न हों। कोई वस्तु ऐसी नहीं हैं। इसीलिए मानव बेटा! जब इसमें आरूढ़ हो जाता है। क्या वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ हैं। तो मानव बेटा! किसी पापाचारों में परिणत नही होता है। मानो वह सदैव उस परमपिता परमात्मा की महती का अथवा उसके गुणों का ही वर्णन करता रहता है अथवा उसकी गाथा गाता रहता है।

मुनिवरों! देखो, आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में आओ बेटा! आज मैं तुम्हें याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के आश्रम में ले जाना चाहता हूँ। जहां बेटा! देखो, ऋषि मुनि अपने में मानो देखो, अपने में महानता का दर्शन करते रहे हैं, और इससे पूर्व काल में जब हम बेटा! वैशम्पायन ऋषि के द्वार पर जाते हैं। तो वहां नाना प्रकार की आभाओं का हम प्रायः दर्शन करने लगते हैं। तो आओ मेरे पुत्रों! देखो, वह वाक् मैंने कई काल में तुम्हें प्रायः प्रगट भी कराया है।

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन याग में बड़े परणित रहते थे और भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों में मानो उसके कर्मकाण्ड में, उसकी प्रतिभा में सदैव निहित रहे थे। मेरे परे दे एक समय महर्षि वैशम्पायन ऋषि महाराज, महाराजा अश्वपति के मानो वृष्टियाग करा करके, उसका पूर्णत्व मानो अपने में पूर्ण हो करके वह वहां से उन्होंने गमन किया। महाराजा अश्वपति ने कहा, कहो ऋषिवर! आज तुम कहां को गमन कर रहे हो? उन्होंने कहा प्रभु! याग पूर्णत्व को प्राप्त हो गया है, और वृष्टि भी हो गई है। अब मैं अपने आश्रम में अपने को गमन कराना चाहता हूँ। राजा ने कहा तो बहुत प्रिय! बेटा! राजा ने भिन्न-भिन्न मानो देखो, रूपों में उनकी आभा का दर्शन करते हुए,

मानो उनकी पत्नी ने उपस्थित हो करके और गऊ इत्यादि मुद्राओं को उन्होंने प्रदान किया और ऋषि ने वहां से बेटा! गमन किया।

## परमपिता परमात्मा का याग

वह भ्रमण करते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, आगे एक आश्रम था जो महर्षि विभाण्डक मुनि महराजा का आश्रम था विभाण्डक मुनि महाराज के बहुत आश्रम थे परन्तु एक आश्रम उनका उन्हें मार्ग में प्राप्त होता था। जब मुनिवरों! देखो, वह उनके समीप पंहुचें तो विभाण्डक जी ने ऋषि का स्वागत किया और यह कहा कहो भगवन! आज कहां से आपका गमन हो रहा है? उन्होंने कहा प्रभु! मैं आज ब्रह्मे वर्णं ब्रह्मा अस्वत प्रहे, आज मैं अश्वपति के यहां एक वृष्टि याग को पूर्ण करा करके अपने आश्रम के लिए मैं गमन कर रहा हूँ। उन्होंने कहा तो महाराज! विराजो। उन्होंने बेटा! ऋषि का अतिथि किया और अतिथि करने के पश्चात उन्होंने कहा भगवन! आप याग क्यों कराते हैं? उन्होंने कहा यागाम् ब्रह्मे लोकाम् मानो इसीलिए कराता हूँ कि यह सर्वत्र जो ब्रह्माण्ड है। मानो एक याग मंभ ही परिणत हो रहा है। परमपिता परमात्मा ने, सृष्टि के पिता ने इस संसार की जो रचना की है, मानो वह रचना में भी याग ही विद्यमान है। यह जो मानो देखो, मुझे दृष्टिपात आने वाला जो जगत है। यह एक प्रकार की यज्ञशाला है, मानो देखो, यहां याग हो रहा है। भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चलन हमारे प्रायः वैदिक साहित्य में हमें प्राप्त होता है। तो इस याग में मानो देखो, परमपिता परमात्मा स्वतः याग कर रहे हैं। उनकी यह यज्ञशाला मानो याग में ही परिणत हो रही है। जैसे मानो देखो, चक्र होता है, और जैसे मानो यह भी नहीं जैसे सूर्य है और सूर्य में नाना प्रकार के अरे रूपी जो किरणें हैं। इनमें भिन्न-भिन्न प्रकार के गुणों का वर्णन करती हुई, अपना भासती हुई मुनिवरों! देखो, संसार को प्रकाश में ले जाती हैं। इसी प्रकार मानो देखो, ऐसे ही परमपिता परमात्मा का यह जो ब्रह्माण्ड हैं। मानो देखो, यह एक प्रकार का याग हो रहा है। यहां जब भी याग की चर्चा आती है। तो मानो देखो, ब्रह्म रूप जो परमपिता परमात्मा हैं। उसके गुणों का वर्णन हो रहा है, यहां प्रत्येक आभा में मानव एक याज्ञिक बना हुआ है। याज्ञिक का अभिप्राय है कि जो मानव कर्तव्यवाद का पालन कर रहा है मानो अपने को सजातीय बना करके परमपिता परमात्मा की आभा में जो निहित हो रहा है, वह प्रायः एक याज्ञिक बना हुआ है।

मेरे पुत्रों! देखो, विभाण्डक मुनि महाराज उन वाक्यों को पान करके बोले कि प्रभु! वह जो परमपिता परमात्मा की जो  यज्ञशाला है मानो वह क्या है? मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा क्या जब मानों देखो, परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया तो वह महाराज ने अपनी एक यज्ञशाला का वर्णन किया। मुझे वह वाक् स्मरण आ रहा है। भगवन! एक समय मैं याज्ञवल्क्य महाराजा के यहां देखो, अध्ययन कर रहा था। मैं न्यौदा में अध्ययन करता हुआ अपने को सजातीय बना रहा था तो मानों देखो, एक समय हम सब ब्रह्मचारी जन विद्यमान हो करे बोले कि आचार्य से आज कुछ प्रश्न करेंगें और आचार्य से मानो दे हम अपने को ऊर्ध्वा में ले जाना चाहेंगें। मेरे प्यारे! देखो, इसमें कुछ विद्यार्थीगण, ब्रह्मचारी जिन्होंने एक मानो देखो, एक रूपक बनाया एक मानो आलांकारिक अपने रूप को बनाया। उनमें बेटा! देखो, एक यज्ञमान बना और एक होता बना मानो वह जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का मध्यरात्रि के मानो अन्तिम प्रहर में जब वह उनके समीप पंहुचें, तो वह निद्रा में तल्लीन थे परन्तु निन्द्रा से जागरूक हुए। उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम्हारा मानो इस समय आने का मेरे इस कक्ष में आने का क्या अभिप्रायः है? उन्होंने कहा प्रभु! हम इसीलिए आए हैं। क्या हम न्यौदा में मन्त्रों का अध्ययन कर रहे थे। और न्यौदा में मन्त्रों का अध्ययन करते हमारे समीप कुछ मानो प्रश्न है। उनका आप उत्तर दीजिए। उन्होंने कहा बहुत प्रिय, क्या प्रश्न है? उन्होंने कहा प्रभु! सबसे प्रथम यह प्रश्न है कि यह विद्यार्थी अथवा यज्ञमान है। यह यज्ञमान याग करना चाहते हैं। तो यज्ञमान का यह प्रश्न है, क्या यज्ञशाला में जो यज्ञमान विद्यमान होता है। तो मानो वह याग करना

चाहता है तो उस याग में कितने होता होने चाहिए? मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि बोले क्या जब यज्ञमान याग करना चाहेगा। तो इसके प्रश्नों का उत्तर भी देंगें। उन्होंने कहा नहीं भगवन! अभी हमारी शंकाओं का निवारण कीजिए।

## चौबीस होता

याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या याजम् ब्रह्म लोकाम् मानो यह जो यज्ञमान याग करना चाहता है। यह चौबीस से याग करने का अधिकारी है, चौबीस होता होने चाहिए। उन्होंने कहा प्रभु! यह चौबीस होता कौन-कौन से होते हैं। उन्होंने कहा मैं आध्यात्मिक रूप वर्णन करूं या भौतिक विज्ञान भौतिक रूप का वर्णन करूं? उन्होंने कहा कि महाराज! आप आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों प्रकार के यागों का वर्णन कीजिए, दोनों को उद्गीत रूप में गाईए। तो उन्होंने कहा कि यज्ञम् ब्रह्मा लोकाम् मानो देखो, यह जो यज्ञमान है। इसके जो चौबीस होता हैं, मानो देखो, आध्यात्मिकवाद में तो यह है, क्या दस इन्द्रियां हैं, दस प्राण हैं और मन, बुद्धि, चित और अहंकार है। यह चौबीस मानो होता कहलाते हैं। जब यज्ञमान याग करता है, तो यह चौबीस होता उसके समीप मानो देखो, उसकी वाणी को पवित्र बनाते रहें। उन्होंने ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु! यह विचार अभी हमारे मानो ध्यानाकर्षण नही हुआ हैं। हम इसको पुनः से जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि देखो, दस प्राण हैं, प्राणों में पांच प्राण, पाचं उपप्राण हैं। देखो, जैसे प्राण, अपान, उदान, समान और व्यान यह पांच प्राण कहलाते हैं। नाग देवदत्त, धनञ्जय कुरू और कृकल मानो देखो, यह उपप्राण कहलाते हैं। मानो पांचों ज्ञानेन्द्रियों हैं पांच कर्मेन्द्रियां हैं और मन और बुद्धि चित और अहंकार यह चतुष अन्तःकरण कहलाता है। मानो यह चौबीस हो जाते हैं तो इसी प्रकार यह जो हमारा मानव शरीर है। यह चौबीस खम्बों का स्तम्भ कहलाता है। परन्तु देखो, इसी प्रकार यह जो ब्रह्माण्ड है, यह भी चौबीस प्रकार के इसमें अरे लगे हुए हैं। यह भी चौबीस प्रकार के रूपों में वर्णित हो रहा है जिस प्रकार मानों देखो, सूर्य की नाना प्रकार की किरणे जब ऊर्ध्वा को ले करके गति करती हैं। तो मानो देखो, यह अरा बन जाता है। नाना प्रकार की किरणें अपने में मानो देखो, भासती रहती हैं।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने यह वर्णन किया, क्या चौबीस होता होने चाहिए। मेरे प्यारे! ऋषि ने भौतिक विज्ञान में प्रवेश करते हुए उन्होंने कहा क्या यह जो पंचीकरण हो रहा है। और पंचीकरण हो रहा है। और पंचीकरण में जो प्रकृति का जो विवाद बना हुआ है। वह उसको पंचीकरण अथवा विभाजन करने वाला है, यह जो विभक्त क्रिया हो रही है यह सृष्टि के प्रारम्भ से मानों क्योंकि प्रत्येक परमाणु में, एक-एक परमाणु में मानों विभक्त क्रिया विद्यमान है। जैसे मानो देखो, ब्रह्माण्ड-वेत्ताओं ने जब वैज्ञानिकों ने ऋषि-मुनियों ने अपनी स्थली पर उपस्थित हो करके मेरे प्यारे! उन्होंने जब अन्तर्हृदय में, आन्तरिक जगत में बेटा! उन्होंने प्रवेश किया अथवा बाह्य जगत को आन्तरिक जगत में ले गएं हैं। तो मानो उस परमाणु का जब विभाजन किया तो उसमें मानो देखो, ब्रह्माण्ड एक ही परमाणु में बेटा! निहित हो रहा है। एक-एक परमाणु में सृष्टि का पुनः पूर्ण रूपेण चक्र तुम्हें दृष्टिपात आयेगा। तो मेरे प्यारे! विचार-विनिमिय क्या महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों से कहा हे ब्रह्मचारियों! मानो देखो, यज्ञमान चौबीस होताओं से याग करता है।

उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! मेरे विचार में तो आ गया है, परन्तु यह मैं कैसे स्वीकार करूं क्या मानों यज्ञमान के चौबीस होता एकाग्रता हैं? उन्होंने कहा आध्यात्मिक और भौतिकवाद यही कहता है कि प्रत्येक इन्द्रियों के देवता प्रत्येक इन्द्रियों के स्वरूप को जानने वाला मानो देखो, यज्ञमान अपने जीवन को उन्नत बनाता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा ब्रह्मणे व्रताम देवाः यह चौबीस खम्बों वाला यह बाह्म जगत है, यही आन्तरिक जगत कहलाता है।

## सत्रह होता

## याग एक सर्वांग पूजा

मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् जब उन्होंने वर्णन किया, पुनः से ऋषियों ने ब्रह्मचारियों ने ऋषि से यह प्रश्न किया कि भगवन! हम यह जानना चाहते हैं, क्या यह यज्ञमान याग करने जा रहा है, इसके याग में कितने होता होने चाहिएं? तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने पुनः उत्तर दिया क्या इसके याग में सत्रह होता होने चाहिए। सत्रह होता कौन से होते हैं। मानों देखो, दस प्राण हैं, प्रकृति की तन्मात्राएं कहलाती हैं। इन्हें पंच महाभूत कहते हैं। तो बेटा! मन, बुद्धि यह सत्रह तत्त्वों का एक सूक्ष्म शरीर बनता है। हमारे यहां बाह्य जगत में भी जब चित के मण्डल में प्रत्येक वस्तु को दृष्टिपात किया जाता है। तो मानो वह अपने में ही नहीं मानो देखो, वह द्वितीयों में भी समाहित हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! विचार आता है क्या यह सूक्ष्म शरीर क्या है? मेरे प्यारे! देखो, जब यह आत्मा इस शरीर को त्यागता है तो उसे सूक्ष्म शरीर कहते हैं सूक्ष्म का अभिप्राय यह है, क्या जहां चित का मण्डल बना हुआ है। चित के मण्डल में एक आभा बनी हुई है। मेरे प्यारे! उसमें जन्म जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान होते हैं। मुझे बेटा! वह काल स्मरण आता रहता है, वैशम्पायन और विभाण्डक की चर्चाएं चल रही हैं। मेरे प्यारे! उन्होंने उदाहरण दे करके याज्ञवल्क्य ने ब्रह्मचारियों से कहा, क्या एक समय जब हम विद्यालय में जैसे तुम ब्रह्मचारी हो अध्ययन कर रहे हो ऐसे ही हम अध्ययन करते अपने गुरु आचार्य के समीप भ्रमण करते हुए एक समय मगध राष्ट्र में पंहुचें और मगध राष्ट्र में मानो देखो, जब हम और मेरे आचार्य भ्रमण कर रहे थे। तो रात्रि छा गई। जब रात्रि प्रवेश कर गई तो विचारा अब कहीं न कहीं विश्राम तो करना है, तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है कि हम एक कात्यायन के गृह में उनकी पत्नी विद्यमान थी। एक उनकी कन्या थी तो जब हमने हमें विश्राम किया तो उन्होंने नाना प्रकार के पदार्थों का पान कराया जब पान कराया तो उन्होंने कहा भगवन! हम यह जानना चाहते हैं, क्या, वह जो चित का मण्डल है इसमें कितने जन्मों के संस्कार विद्यमान होते हैं। क्या यह किसी काल में गणना किया है? तो महर्षि मानो देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य ब्रह्मचारियों से कहते हैं क्या मैं इनको नहीं जानता था, आचार्य भी नहीं जानते थे आचार्य ने इतना तो कहा कि इसके ऊपर विचार-विनिमय करेंगें। तो मेरे प्यारे! देखो, जब हम विचारने लगे, तो कात्यायन के गृह में यह प्रश्न किया गया और यह विचारा कि चित में कितने जन्मों के संस्कार रहते हैं। तो मानो देखो, पूज्यपाद गुरुदेव भी कोई उत्तर नहीं दे सकें।

मानो देखो, एक समय भ्रमण करते हुए मानो कुछ समय के पश्चात भ्रमण करते हुए हम दण्डक वनों में पंहुचें तो दण्डक वनों में महर्षि अंगिरस मुनि महाराज के मानो देखो, महापिता वे विद्यमान हो करके मानो चित के मण्डल को जानना चाहते थे। तो मानो देखो, अनुसन्धान कर रहे थे और विचार-विनिमय हो रहा था, विचार रहे थे कि हम अपने जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों को साकार रूप देना चाहते हैं। तो मानो देखो, जब वह साकार रूप का वाक् आया तो विचार बेटा! एक बड़ा विचित्र बन गया। कहते हैं-क्या देखो, अंगिरस मुनि महाराज के महापिता का नाम शोभनी अंगिरस कहलाता था तो महर्षि शोभनी मुनि महाराज के द्वार पर जब हम पूज्यपाद गुरुदेव, हम सब पंहुचें तो मानो देखो, वह सत्यमयी का पालन कर रहे थे, चित के मण्डल को जानते हुए पंचाग्नि के ऊपर अन्वेषण कर रहे थे। मेरे प्यारे! देखो, उन्हें बहुत समय अस्सी वर्ष हो गएं थे। मानो देखो, अस्सी वर्षों में उन्होंने बेटा! देखो, जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों के ऊपर टिप्पणियां की, विचार-विनिमय किया। तो ऋषि कहता है शोभनी मुनि ने यह कहा है, क्या मैं अब तक मानो एक लाख छियान्वें जन्मों के संस्कारों को जान सका हूँ। और न प्रतीत मानो देखो, इस चित के मण्डल में कितने संस्कार विद्यमान हैं। जिनके कारण से मानव का आवागमन बनता है, आना जाना बना करता है। तो मेरे प्यारे! क्योंकि जब तक आत्मा का चित का संस्कार बना रहेगा, चित्त का मण्डल बना रहेगा तब तक मुनिवरों! देखो, यह इसी प्रकार देखो, संस्कारों का जगत बनता रहेगा। तो मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है, आज, आज मैं विशेषता में न जाता हुआ याज्ञवल्क्य मुनि महराज ने अपने ब्रह्मचारियों से कहा

कि प्रभु! यह जो हमने कौतुक दृष्टिपात किया है। परन्तु देखो, जब हम वेद के वांगमय में प्रवेश करते हैं, क्रियात्मकता में प्रवेश करते हैं तो विचार आता है, क्या यह जो सूक्ष्म शरीर है यह चित्त के मण्डल में विद्यमान होते हैं जैसा शोभनी मुनि ने वर्णन किया है। शोभनी अंगिरस ने कहा है, क्या मैं बहुत से जन्मों के मानो क्रियाकलापों को दृष्टिपात करता रहता हूँ। मेरे प्यारे! ऋषि कहता है क्या कहीं-कहीं दर्शनों में वेद का मन्त्र तो यह कहता है क्या मानो देखो, करोड़ो जन्मों के संस्कार इस चित के मण्डल में विद्यमान होते हैं। इसी प्रकार यह जो हमारा सूक्ष्म शरीर है, मानो यह चित का मण्डल कहलाता है। यह चित के मण्डल में निहित रहता है। मानो देखो, इसीलिए यह जो मानो देखो, सूक्ष्म जब यह शरीर को त्यागता है जीवात्मा तो यह प्यारे! वेद का ऋषि कहता है क्या यह जो हमारा सूक्ष्म शरीर है, यह सत्रह तत्त्वों का माना गया है मानो देखो, इसी आभा में मानव को निहित रहना है।

## ग्यारह होता

आगे मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने जब यह उतर दि तो मुनिवरों! इतनें में ऋषियों ने कहा प्रभु! यह यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होता होने चाहिएं? मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा क्या इसमें, यज्ञ में कितने होता हों, मानो देखो, यज्ञ में ग्यारह होता होने चाहिए। ग्यारह का अभिप्राय क्या है।- पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां और मन और बुद्धि मानो देखो, यह मन ब्रह्मे बुद्धि नहीं मन रह जाता है। मानो देखो, यह सत्रह का एकादशो बन जाता है, एकादशो के द्वारा यज्ञमान होता बन करके जब याग करता है। तो इन्द्रियां का अभिप्राय बेटा! ग्यारह का अभिप्राय क्या, क्या प्रत्येक इन्द्रिय मुनिवरों! देखो, मन से बिन्धी रहनी चाहिए। मन का एकोकीकरण करने वाला हो, अनेकता में एकता को लाने वाला हो इसीलिए यह ग्यारवां मन कहलाता है। मानो दसो इन्द्रियां हैं यह जो दस इन्द्रियां हैं इनको मानो देखो, धारण करने वाला बन है। तो मन देखो, अब्रहे कृतं लोकाम् मानो देखो, वह उसमें निहित रहना चाहिए। जैसे ज्ञानेन्द्रियां हैं। जो मन से पिरोई हुई होनी चाहिए और मन के द्वारा मन का जितना साकल्य मेरे प्यारे! इन्द्रियों का साकल्य बना करके मन को सहित ले करके वह मेरे प्यारे! देखो, आहुति दे रहा है, अथवा याग कर रहा है ब्रह्मणे देवाम् ब्रह्म लोकाम् उसका अभिप्रायः यह है कि प्रत्येक इन्द्रियों का मानो साकल्य एकत्रित करना चाहिए। पांच ज्ञोनन्द्रियों का जो साकल्य है। बेटा! देखो, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द मुनिवरों! देखो, ब्रही जंमा जमना रूपम् ब्रह्मे मानो देखो, यह पांच बनते हैं सबसे प्रथम बेटा! देखो, रूप आता है, उसके पश्चात रस आता है, उसके पश्चात मानो देखो, घ्राण सुगन्ध आती है, सुगन्ध के पश्चात शब्द आता है। मेरे प्यारे! देखो, स्पर्श आता है, वह सब पंचीकरण कहलाने वाला है। जब बेटा! देखो, इन पांचों को सूक्ष्म तन्मात्राओं के रूप में जब हम ग्रहण करते हुए मानो देखो, अन्तर्हृदय में जो याग हो रहा है पुत्रों! यह जो मानो याग कर रहा है, साधक मुनिवरों! देखो, वह मानो देखो, ग्यारह के द्वारा होता ब्रह्मणे ब्रह्मा पंचम् ब्रही कृताम् मेरे प्यारे! देखो, वह ग्यारह होताओं से याग हो रहा है। कितना प्रिय याग हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, यह याग जब मुनिवरों! देखो, इसके ऊपर चर्चाएं होने लगी ब्रह्मचारियों से आचार्य कहते हैं, एक समय जब मानो इन ग्यारह के ऊपर शंका बनी तो मुनिवरों! देखो, आचार्य मुझे एक समय समुद्र के तट पर ले गएं, और पूर्णिमा के दिवस में मानो देखो, चन्द्रमा के में देखो, जल चन्द्रमा की आभा में रत्त होने जा रहा था वह पूर्णिमा का दिवस था मेरे प्यारे! पूर्णिमा के दिवस में समुद्रों में तरंगें ऊँची-ऊँची ऊभाग्रहत बन जाती हैं और मुनिवरों! देखो, वह चन्द्रमा सोम अपने में उन्हें धारण करने लगता है। जब वह धारण करता रहता है। मानो वही तो अमृत के देने वाला है। वही सौम्य कहलाता है, उसी को सोम रह कहा जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार जब वह देखो, इन पांचों इन्द्रियों का साकल्य बना करके हृदय रूपी यज्ञशाला में जब याग करते हैं तो बेटा! सूक्ष्म, वह महतत्व को जिसे हम कारण

लिंग कहा करते हैं, वह कारण लिंग दृष्टिपात आने लगता है। मेरे प्यारे! मग्न हो रहा है। तो विचार आता है, ऋषि कहते हैं ब्रह्मणे लोकाम् व्रतम् देवाः मेरे प्यारे! देखो, वह जो कारण मानो जिसे हम कारण शरीर कहते हैं। उसमें मुनिवरों! देखो, ज्ञान और प्रयत्न दोनों विद्यमान होते हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह दोनों विद्यमान हो करके ही तो यह एक क्रिया मां रूप बनता है। विचार आता है क्या, योगी जन इस प्रकार का मानो देखो, याग करते थे। मुनिवरों! देखो, पंचीकरण में याग को ऊर्ध्वा में गति कराना यह यज्ञमान का कर्तव्य होता है। यह परमपिता परमात्मा की चेतना में रत्त रहने वाला है। जब बेटा! यह अपने में निर्णय उन्होंने दिया निर्णयात्मक अपने जीवन को बनाते हुए महानता का प्रायः दर्शन होता रहता है। तो आओ मेरे प्यारे! देखो, ऋषि याग कर रहे हैं। ग्यारह होता बन करके प्रत्येक इन्द्रियों के ऊपर संयम करना है, और मन की इन्द्रिय बना करके विद्यमान करना है। क्योंकि मन ही तो इनको अपने में कटिबद्ध करने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार का अपना निर्णय दिया, अपना देखो, भाष्य रूपों में अपने को ले गएं तो बेटा! देखो, बड़ा एक विचित्र नृत्य बन गया।

## नौ होता

विचार आता है बेटा! देखो, यज्ञमान कहता है, क्या देखो, प्रश्न करने वाला कि महाराजा! यह ग्यारह का तो समूह हमने जान लिया परन्तु हम यह जानना चाहते हैं, यज्ञमान मृत्यु से पार होना चाहता है, और वह याग करने वाला है। उसके याग में कितने होता हों? उन्होंने कहा क्या, यज्ञमान जब याग करेगा तो मानो उस समय उसके याग में नौ होता होने चाहिए। उन्होंने कहा महाराज! नौ होता कौन से हैं? उन्होंने कहा नौ होताओं को जानना चाहते हो तो नौ होता मानम ब्रहे देखो, वह इस शरीर में दस द्वार कहलाते हैं। वह दस द्वार हैं, और उन दस द्वारों पर दस देवता विद्यमान हैं। वह दस द्वार हैं, और उन दस द्वारों पर दस देवता विद्यमान है। मेरे प्यारे! देखो, नौ ही द्वार कहलाते हैं। दशम द्वार तो एक मानो देखो, प्राण वृत्तियों में रत्त रहने वाला है। तो मानो देखो, नौ जो द्वार हैं, प्रत्येक इन्द्रियों के समीप मानो देवता विद्यमान हैं। वह जो देवतव याग हो रहा है। देवतव अपने को देवतव की आभा में निहित करा रहे हैं। तो मानो देखो, यह दस द्वार हैं दो नासिका के छिद्र, दो नासिका के द्वार हैं वह भी एक में मानो देखो एक चन्द्रमा कहलाता है। एक सूर्य कहलाता है, तो मानो देखो, दो नेत्र हैं एक जमदग्नि कहलाता है, एक विश्वामित्र कहलाता है। मानो देखो, हमारे यहां दो नासिका के छिद्र हैं एक में कश्यप् है एक में मानो देखो, एक में विश्वाकृतियों में विद्यमान हैं। जिसे विश्वामित्र रूपाम् अभ्योदय कहा जाता है। जिसे हम कश्यप् और वशिष्ठ कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, दो द्वार हमारे यहां देखो, श्रोत्रों के द्वार हैं एक को मुनिवरों! देखो, कौशिक कहते हैं। एक मेरे प्यारे! देखो, विश्वामित्र क्या एक मुनिवरों! देखो, प्रहे अश्वत्मच्छताम् वाचप्रह्चे लोकाम् मेरे पुत्रों! देखो, एक में शोभनी है, एक में मुनिवरों! देखो, भारद्वाज कहलाते हैं। वह भारद्वाज विद्यमान है, जो भरण करते हैं और उन्होंने कहा कि रसना के अग्रभाग को ही मुनिवरों! देखो, अत्रि कहते हैं। उसे अत्रि क्यों कहते हैं क्यों अति ग्रहण करने वाला है। यह मानो देखो, अति ग्रहण करता है। इसे अत्रि कहते हैं। यह रसना है, मुखारबिन्दु है अपने जीवन में देखो, संसार के भिन्न-भिन्न पदार्थों को यह पान कर जाता है। यह अत्रि कहलाता है, अति ही आहार करने वाला है। बेटा! देखो, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके यह जो अत्रि है। यह संसार को निगल जाता है। यह संसार को धारण करने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, मानव नाना प्रकार का जो पुरूषार्थ कर रहा है। वह केवल इसलिए क्योंकि अत्रि के लिए, यह जो अत्रि ऋषि विद्यमान है। यह बेटा! देखो, रसना के अग्रभाग में यही तो मुनिवरों! देखो, प्राण सखा को ले करके साथ में यह संसार को निगल जाता है। मेरे प्यारे! देखो, यह पितर की सम्पदा क्या, माता की सम्पदा क्या, अपनी सम्पदा क्या मुनिवरों! देखो, यह सबको निगल् जाता है। मेरे प्यारे! देखो, यह अत्रि है। तो विचार मुनिवरों! देखो, यह नौ द्वार कहलाते हैं। हमारे यहां एक उपस्थ और एक गुदा

बन करके यह नौ द्वार बन जाते हैं। उन्हीं द्वारों के द्वारा एक-एक देवता प्रत्येक द्वार पर विद्यमान है। मेरे प्यारे! एक-एक ऋषि विद्यमान रहता है। वाह मेरे प्यारे प्रभु ने कैसा अनुपम यह जगत रचाया है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब यह वर्णन किया तो ऋषि कहता है सम्भवम् ब्रह्मा ब्रह्म वाचन्नमम् ब्रहे लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या यह जो भरण करने वाला है। यह भारद्वाज है। मेरे प्यारे! देखो, इतना वाक् श्रवण करते हुए उन्होंने कहा धन्य है। प्रभु आप ने हमारी शंकाओं का निवारण किया है। मानो देखो, यह अति ग्रहण करने वाली मानो देखो, सप्त जिह्वा वाली जो शरीर में अग्नि प्रदीप्त हो रही है मानो देखे इसकी प्रतिनिधि कौन? यह मानो देखो, अत्रि बन रहा है, यह अधिक ग्रहण करने वाला है मेरे प्यारे! देखो, बाल्यकाल से ले करके वृद्धकाल तक यह परिश्रम करता रहता है। सर्वत्र परिश्रम के परिणाम को निगलने वाला है, मानो यह अत्रि ही तो कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, यह संसार की प्रतिभा में निहित रहने वाला है। वेद का आचार्य बेटा! बहुत ऊँची उड़ाने उड़ रहा है, वेद का मन्त्र अपने में सार्थक बना हुआ है।

## सात होता

मुनिवरों! देखो, आगे ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु! यह यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होता होने चाहिए? मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा ब्रह्मचारियों के प्रश्नों का उतर जब देने लगे, उन्होंने कहा सप्त ऋषि सप्त जिह्वायां ब्रह्मणे मानो देखा सप्त ऋषियों के द्वारा यह सात होता होने चाहिए, मेरे प्यारे! बाह्य जगत में भी सात ही होता बने हुए है। मेरे प्यारे! देखो, यह पंच महाभूत और मुनिवरों! देखो, चन्द्रमा और सूर्य मानो देखो, कहीं-कहीं द्यौ को भी लाते हैं और यह सब मुनिवरों! याग हो रहा है अपने में बेटा! सप्त होता बन करके याग करने वाले हैं।

## पांच होता

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा ब्रह्मणे ब्रहे ब्रहा कहा है हे भगवन! यह यज्ञमान याग रहा है। इसमें कितने होता हों? उन्होंने कहा पांच होता होने चाहिए। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा पांच होता क्यों? उन्होंने कहा यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड पंचीकरण में निहित हो रहा है। यह पंचीकरण ही तो कहलाता है। इसीलिए पांच होता होने चाहिए। पंचीकरण क्या है? मानो देखो, यह पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु देखो, अन्तरिक्ष यह पांच कहलाते हैं। यही तो मानो होता बन करके ब्रह्माण्ड को स्थिर कर रहे हैं। मेरे प्यारे! पंचीकरण से ही पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं, पंच महाभूत हैं मानो देखो, पंच ही प्राण ब्रहे पांचों ही प्राण कहलाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, यह संसार पंचीकरण में निहित हो रहा है। यह अपने में पंचीकरण हो रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह जो अपने में पंचीकरण हो रहा है, इसी में तो निहित रहने वाला अपने में देखो, अभ्योदय हो रहा है। तो मेरे प्यारे! विचार क्या कह रहा है? यह मानो देखो, गुरूतव और मुनिवरों! देखो, तरलतव और तेजोमयी इन तीन प्रकार के परमाणुओं को ले करके यज्ञमान क्या, बेटा! विज्ञानशाला में विज्ञानवेत्ता नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करता है। यह वैज्ञानिक बन जाता है। विज्ञान अपने में सार्थक माना गया है अणु और परमाणुओं में रत्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, यह पंचीकरण में देखो, गुरूतव को धारण करने वाला मेरे प्यारे! देखो, जितना तरलतव जगत है वह परमाणु अन्तरिक्ष में निहित रहने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, तेजोमयी यह जो जगत अग्नि है यह भिन्न-भिन्न रूपों में विद्यमान रहती है। बेटा! आज का विचार हमारा क्या कह रहा है? वेदमन्त्र क्या कह रहा है? बेटा! याज्ञवल्क्य मुनि महराजा ने कहा कि ये पांचों तो एक पंचीकरण है मानो देखो, जिनसे यह जगत रचायमान हो रहा है। जिनमें बेटा! निहित रह करके यह संसार अपने में निहित हो रहा है तो मेरे प्यारे! देखो, इस आभा में निहित हो करे ही तो मानव अपने जीवन को ऊँचा बनाता रहता है। विचार-विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो, यज्ञमान याग कर रहा है, पंचीकरण हो रहा है। पंच महाभूतों

में अपनी आभा को निहित कराने वाला है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है, क्या महाराज यह जो पंचीकरण भी मैंने जान लिया मैं चाहता हूँ। यह जो यज्ञमान याग कर रहा है, इसके याग में कितने होता होने चाहिए? सम्भवं लोकां वाचन्नमं ब्रह्मे कृतं वृत्याः उन्होंने कहा कि यह मानो देखो, यह तीन होता होने चाहिए। यह तीन होता हैं। बेटा! तीन होता कौन से हैं? वेद का आचार्य ने इसका वर्णन किया मंगलं ब्रह्मे वस्ताम् मानो तीन में क्या हैं? मेरे प्यारे! देखो, रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण कहलाते हैं मेरे पुत्रों! देखो, इसकी विवेचना तो हम कल करेंगें।

आज का हमारा वाक् अब समाप्त होने जा रहा है, ये चर्चाएं तो ब्रह्मचारियों को दी जाती हैं मानो देखो, ये शिक्षा याज्ञवल्क्य मुनि के आश्रम में दी जाती हैं। मेरे प्यारे! देखो, यही महर्षि वैशम्पायन ने यह कहा कि प्रभु जब मैं देखो, याज्ञवल्क्य मुनि के यहां विद्यालय में अध्ययन करता था और अध्यापन का कार्य क्या, अध्ययन करता रहता था चरणों में विद्यमान हो करे मानो देखो, यह चर्चाएं होती रहती थीं। ब्रह्मचारी याग कर रहे हैं, यागों में परिणत हैं। एक यज्ञमान है, एक होता है एक प्रश्नकर्त्ता है, इनका उतर देखो, पंचीकरण जहां वहीं देखो, सतोगुण, रजोगुण, और तमोगुण है ब्रह्म ब्रह्मे वाचो में निहित रहता है। यह चर्चाएं मैं कल करूंगा। आज का वाक् अब समाप्त होने जा रहा है।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय क्या, कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए इस परमपिता परमात्मा के मानो यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन और देखो, उसको अपने में ग्रहण करते चले जाएं। वे परमपिता परमात्मा महानता में गति करने वाला है यह है बेटा! आज का वाक् समय मिलेगा शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें। आज का वाक् समाप्त। आज मैंने बेटा! तुम्हें आध्यात्मिक चर्चाएं आध्यात्मिक यागों की चर्चाएं की हैं। समय मिलेगा शेष चर्चाएं मैं बेटा! कल तुमसे मानो वार्ता प्रगट करेंगें। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा अच्छा भगवन्! आनन्द शान्ति दिनांकः ३ दिसम्बर १९८६ रात्रि ८ बजे श्री देवराज अबरोल, के-३ लाजपत नगर-३ नई दिल्ली

# ६ तीन होता ०४ १२ १९८६

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे महिमावादी हैं, और जितना भी यह जड़ जगत, अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है, क्योंकि वह अनुपम है, विज्ञानमयी स्वरूप आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता जब आध्यात्मिक उड़ाने उड़ने लगते हैं, तो उस परमपिता परमात्मा को आत्मा में ही दर्शन, आत्मा में ही इसको अनुभव करने लगते हैं तो मानो वह जो परमपिता परमात्मा है, वह आत्मवेत्ता है, आत्मोमयी स्वरूप माना गया है। क्योंकि यह उसका गृह और सदन है इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को अपने अन्तर्हृदय में धारण अथवा उसका अनुभव करने लगते हैं, तो हमारा वेद का मन्त्र यह कहता है कि वे परमपिता परमात्मा महान है, क्योंकि मानव भिन्न-भिन्न प्रकार से शब्दों माला बनाता रहता है, और उस माला को अपने में धारण करता रहता है। तो इसीलिए आज हम, उस माला के मानो कुछ मनकों की चर्चा करने चले आते हैं। वह माला मानो जैसे नाना प्रकार के जो मनके हैं, वह एक सूत्र में पिरोएं हुए हैं, जैसे हमारा प्रत्येक वेदमन्त्र, ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है क्योंकि वेद की भिन्न-भिन्न ऋचाएं हैं, मानो उन ऋचाओं में मन्त्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार का ज्ञान और विज्ञान उसमें निहित रहता है। मानो जैसे यागों का कर्मकाण्ड, यह भी स्वीकार करके, यह तो हमें स्वीकार करना ही है कि ज्ञान, कर्म और उपासना वेदों के तीन विषय माने गएं हैं। मानो देखो, ज्ञान, कर्म और उपासना हमारे यहां ज्ञान कहते हैं जानने को, और कर्म कहते हैं उसके अनुसार कर्म करने को और उपासना कहते हैं उसके परिणाम अथवा उसका सदुपयोग करने को, मेरे प्यारे! देखो, यह ज्ञान, कर्म और उपासना मानी गई है। जैसे हमारे यहां मानो देखो, हिमालय से, गंगा का व्यवधान होता है। मानो हिमालय की कन्दराओं से स्रोत गमन करता है, और वह गमन करता हुआ वह पृथ्वी के मानो समतल भूमि में उसका आगमन होता है, तो उसे कृषक और वैज्ञानिक जन मानो देखो, जल का उपयोग करते हैं, तो कर्म किया गया, और कर्म के पश्चात मानो देखो, उसका उपयोग मेरे प्यारे! देखो, प्राण सत्ता के लिए मानव देखो, जल कृषक अपनी भूमि में अन्नाद को उत्पन्न करता रहता है। वही अन्नाद मेरे प्यारे! भिन्न-भिन्न रूपों में उसका रूपान्तर होता रहता है, अथवा उसकी महानता का प्रायः वर्णन, हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है।

तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, वेद का ज्ञान कर्म और उपासना उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की जो धाराएं हैं अथवा कहीं ज्ञान की हैं कहीं विज्ञान की हैं उस विज्ञान में भी भिन्न-भिन्न मानो देखो, जैसे गुरूतव है, तरलतव है, और तेजोमयी है और वायु और अन्तरिक्ष मानो देखो, उसके लिए अवान्तर भेदन माने गएं हैं। वह जो मानो देखो, इतने भेदों वाला वेदों में जो ज्ञान और विज्ञान है, उस विज्ञान को मेरे प्यारे! देखो, मन्त्रों में, बुद्धिमान मन्त्र के द्वारा उद्गीत गाता रहता है। और परन्तु देखो, ओ३म् रूपी सूत्र में उस, एक-एक मनके के ज्ञान और विज्ञान को उसमें पिरो देता है। मेरे पुत्रों! देखो, वह विज्ञान में रत्त हो जाता है।

तो परिणाम क्या मुनिवरों! देखो, वह जो वेद का जो अनुपम ज्ञान है, वह ज्ञान कर्म उपासना में निहित हो रहा है, उसी के गर्भ में सर्वत्र ब्रह्माण्ड को मानो मापने लगता है। तो आज मुनिवरों! देखो, उसी को मापने नही जा रहा हूँ, तो आओ, मुनिवरों! देखो, मैं ब्रह्मचारियों के समीप जाना चाहता हूँ, जहाँ हमारा एक-एक वाक् मेरे प्यारे! स्वर्णमयी माना गया है। जो उसका उपयोग करता है आज बेटा! ज्ञान, कर्म उपासना की चर्चांए चलीं, परन्तु उसके पूर्व मैं तुम्हें यह निर्णय कराना चाहता हूँ, क्या मुनिवरों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में, ब्रह्मचारी

जन अध्ययन कर रहे हैं, और अध्ययन करते हुए, मुनिवरों! देखो, अपने में अपनेपन को दृष्टिपात करते रहते हैं तो मुनिवरों! देखो, वही महात्मा वैशम्पायन ऋषि महाराज की चर्चा हो रही थी, और वैशम्पायन ऋषि महाराज, महर्षि विभाण्डक मुनि को यह निर्णय कराए रहे थे, क्या मैं याज्ञवल्क्य मुनि के आश्रम में मानो देखो, अध्ययन करता रहा हूँ, और उनके यहां ज्ञान और विज्ञान की बड़ी ऊँची-ऊँची उड़ाने उड़ी जाती है। क्योंकि हमारे यहां परम्परागतों से ही वेद का अध्ययन करने वाले, उसमें जो तरंगेंवाद है, अथवा उसमें जो एक तेजोमयीवाद है, वह मानव के समीप आता रहता है। जो मानव की प्रतिभा में निहित रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि अपने में बहुत ऊँची उड़ाने उड़ता रहा है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, मेरे प्यारे! देखो, जब पंच महाभूतों की कल्पना करते हैं, उनका वर्णन करते है। उन्होंने कहा है कि यह संसार में जब भी मानो देखो, विज्ञान अपने में सार्थक हुआ है, तो उन्होंने गुरूतव के ऊपर गुरूतव के ऊपर बेटा! उन्होंने अनुसन्धान किया है, गुरूतव से ले करके जब आगे जाता है तो तरलतव आता है, तरल परमाणुवाद आता है, मेरे प्यारे! देखो, तेजोमयी आता है। यह तेजोमयी और तरल ब्रह्मा मेरे पुत्रों! देखो, वायु गति कराता है, और अन्तरिक्ष में वह गति कर रहा है। तो मानो देखो, ये तीन प्रकार के परमाणुओं के ऊपर सर्वत्र विज्ञान अपने में अनुठा बना है। अनूठा बना रहता है क्योंकि विज्ञानवेत्ता अपने में विज्ञान की धाराओं में रत्त होने लगते है। तो नाना प्रकार के यन्त्रों को अपने में धारण करते हुए मेरे पुत्रों! वह ऊँची उड़ाने उड़ते हैं। तो आज मुनिवरों! देखो, इस सम्बन्ध में न जाता हुआ जब ऋषि ने ये पंच महाभूतों का वर्णन किया पंचीकरण की चर्चाएं की, तो ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु! यह ब्रह्मणे वाचो सम्भवा मानो देखो, यह पंचीकरण नही होता, पंचीकरण की आभा में मानो देखो, यह हमने जान लिया, क्या यज्ञमान जब याग करता है तो पांचों होताओं से याग करता है, परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कि तीन से कैसे याग होता है? मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इसका वर्णन करते हुए कहा कि पंच महाभूतों के पश्चात, तीन होताओं से यज्ञमान याग करता है। और वह तीन होता कौन से हैं? बेटा! तीन होता मानो देखो, वह कहलाते हैं जिसको हम सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण कहलाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, वह तीन के द्वारा वह आहुति दे रहा है, अथवा अपना याग कर रहा है, तो याग में परिणत होने वाला यज्ञमान, मानो तीन की विवेचना चाहता है, विवेचना क्या है? इसकी भगवन! उन्होंने कहा सतोगुण में मानो सत है तमोगुण में उत्पति का व्यवधान है रजोगुण में शासन है मेरे प्यारे! इसके भी भिन्न-भिन्न प्रकार के मानो स्वरूप माने गएं हैं बेटा! सत्य में भी मानो देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार के सत्य विवेचना सत्य की विवेचना होती रहती है, जैसे मानो देखो, एक मानव, सत्य उपदेश दे रहा है, और यह उसमें ज्ञान और विज्ञान मानो पिरोया हुआ, सत्य के साथ में, वह सत्य मुनिवरों! देखो, मानव के लिए सार्थक होता है। और जिस सत्य में मानव के मुनिवरों! देखो, मानव की त्रुटियों का वर्णन है, क्या हे मानव! तुमने यह त्रुटियां की हैं, परन्तु देखो, वह सतोगुण मेरे पुत्रों! देखो, वह आभ्युहुत में परिवर्तित हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जहाँ सत्य के उच्चारण करने से लाभ नही होता लाभ प्रदता नही होती, जैसे एक मानव ने जैसे हमारे यहां, जैसे महर्षि बाल्मीकि हुए हैं महर्षि बाल्मीकि का जीवन बाल्यकाल का त्रुटिमयी रहा है, परन्तु देखो, जो बाल्मीकि के तप उस मानो देखो, जो अतिथि है, उनका जीवन परिवर्तन हुआ उस जीवन की गाथा गाने से वह वास्तव में सत्य है परन्तु उच्चारण करने उसका आत्मबल सूक्ष्म बनता है। उस आत्मबल के सूक्ष्म बनने के कारण, वह सत्य सत्य नही कहलाता। मानो देखो, सत्य में भिन्नता आ गई, तो इसीलिए यहां मुनिवरों! देखो, इस सत्य में भी मानो देखो, कई प्रकार के भेदन आ गएं हैं, एक मानो देखो, वह सत्यवादी है, उसमें त्रुटियां की है, परन्तु उच्चारण करने वाला सत्य है, परन्तु लाभप्रद नही हैं। न वायुमण्डल के लिए है, न उस मानव के लिए, जिससे त्रुटि से आत्मबल का हृस होता है और जो उच्चारण कर रहा है वह भी मानो देखो, अपमान से कर रहा है, सत्य उच्चारण कर रहा है, परन्तु अपमान

उसके गर्भ में विद्यमान है, मेरे प्यारे! देखो, इस सत्य उच्चारण करने से मानव के जीवन की ह्रसता होती है मानव का जीवन मानो अपने में अनुभव करता है क्या तेरे इन वाक्यों से कोई लाभ नही है। वह अपमान में कह रहा है, वह अपमान को सत्य, सत्य क्रियाकलाप करने वाला सत्य में अपने को अपमान स्वीकार कर रहा है। मेरे प्यारे! दोनों ही मानव सत्य होते हुए मिथ्यावाद में परिवर्तित हो जाते हैं।

तो मेरे प्यारे! यह देखो, यह बड़ा विचित्र वाक् तुम्हें प्रगट कर रहा हूँ मेरे प्यारे! देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जब अपने आसनों पर विद्यमान हो करके अपनी वार्त्ता प्रगट करते रहते थे, अपना विचार देते रहते थे, उन विचारों में अपमान जनक वाक्य न होने से, वह सत्यमयी होता जहाँ प्रभु का दर्शन प्रभु के उच्चारण करने में मानो जब पुट लगी रहती है, वह सत्यमयी कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, वह सत्य अभ्योदय कहलाता है, जिसके ऊपर मानव बहुत अन्वेषण करता रहा है, विचार-विनिमय करता रहा है, तो विचार यह मुनिवरों! देखो, सत्य में ही मानो देखो, दो प्रकार होते हैं, एक वास्तव में तो तीन प्रकार होते हैं, परन्तु सत्य उच्चारण करना चाहिए, यहां इसमें कोई विरोध नही है, क्या सत्य नही उच्चारण होना चाहिए, सत्य में ही तो मानव को रहना चाहिए, मानव कैसे सत्य में रहता है? मेरे प्यारे! देखो, सत्य में मानव उस काल में रहता है, जबकि वह दर्शनों से गुथे हुए शब्द परमपिता परमात्मा की प्रत्येक शब्द में पुट लगी रहती है। मानो वह सत्य मानो सत्य कहलाता है और जिसमें अपमान में सत्य तो है, परन्तु उसमें अपमान विद्यमान हैं, तो उसके उच्चारण करने से मानो देखो, लाभप्रदता नही प्राप्त होती। तो विचार-विनिमय क्या? मेरे पुत्रों! देखो, मैं अपने विचारों को दूरी न ले जाता हुआ, विचार यह देता चला जा रहा हूँ, सम्भवं ब्रह्मे लोकां वाचाः मेरे पुत्रों! देखो, वह सत्य तो है, परन्तु देखो, उसमें जब लाभप्रदता है, किसी में नही हैं।

परन्तु देखो, इसी प्रकार दूसरा जो होता है, वह मानो देखो, रजोगुण में कहलाता है। रजोगुण किसे कहते हैं? बेटा! देखो, रजोगुण कहते हैं शासन को, जो मानो शासन करने वाला शासन युक्तता में मानो देखो, अशासन कर रहा है, और शासन में मुनिवरों! देखो, उसके में चरित्र की प्रतिभा निहित रहती है, और परमपिता परमात्मा का व्यवधान रहता है, क्योंकि परमपिता परमात्मा जहां सत्यवादी है वहाँ न्यायकारी भी है। इसीलिए मुनिवरों! देखो, न्यायकारी और सत्यता के ऊपर दोनों को विचारना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, वह जो सत्यं ब्रह्मवेत्ता वाचन्नमं कृतं लोको देवाः वेद का आचार्य कह रहा है, वेद का ऋषि कह रहा है, क्या मुनिवरों! देखो, वह जो रजोगुण भी मानो तीन प्रकार की क्रियाओं में निहित रहता है एक तो मानो देखो, सत्यमयी कहलाता है ब्रह्मे वाचन्प्रह्वा लोकां न्यायालय में विद्यमान हैं। न्यायालय में विद्यमान होने वाला, न्यायाधीश के द्वारा, जब मुनिवरों! देखो, वह अपनापन नही रहेगा, केवल न्याय विद्यमान हैं, अपनेपन की प्रतिक्रिया नही है, जो न्याय मुनिवरों! देखो, न्याय संगत होता है। जिस न्याय में अपनापन होता है, मानो जिस न्याय में, अपनी ममतामयी विद्यमान होती है, वह न्याय ही मुनिवरों! देखो, वह न्याय तो है, परन्तु देखो, वह न्याय केवल तमोगुण में परिवर्तित हो जाता है। वह न्याय तो है, परन्तु न्याय अपने में न्याय प्रबल नही कहलाता। मेरे प्यारे! देखो, राजा के लिए, ऐसा ही अपना पुत्र है, ऐसी ही प्रजा है, मेरे पुत्रों! जब वह न्याय कर सकता है। यदि उसमें न्याय की प्रतिभा में, एक वहाँ त्रुटियां विद्यमान होती हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, वह संहिता नही आती, उसमें तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, वह भी न्याय ही मुनिवरों! देखो, वह रजोगुण भी तीन प्रकार की प्रतिभा में निहित रहता है। मानो देखो, रजोगुण जब आता है, उसमें मन्यु आता है। तो वह लाभप्रद है, मेरे प्यारे! यदि क्रोध आ गया है, तो मुनिवरों! देखो, वह मानव के आत्मबल को सूक्ष्म कर देता है। अथवा मानव के शरीर में, जो अमृतमयी कहलाता है, वह मुनिवरों! देखो, जब क्रोध आता है अतितता में तो मुनिवरों! देखो, वह नाग प्राण है, उस नाग प्राण का ऊर्ध्वा मुख हो जाता है, और ऊर्ध्वा मुख हो करके वह मानव के अमृत को विष बना देता है, आन्तरिकता में विष बना देता है। मेरे प्यारे! देखो, वह विष नाना

प्रकार के रूग्णों के रूप में, मानव के समीप आता रहता है। तो विचार-विनिमय क्या, मुनिवरों! देखो, यह क्या बना, मुनिवरों! देखो, वह रजोगुण, हमारे लिए लाभप्रद है। विनाश का एक मूल बन रहा है, मानो मन्यु है, वह मन्यु अपने में स्वाभिमान को धारण करने वाला है। स्वाभिमान रजोगुण में एक सत्य की प्रतिभा उसमें निहित होती है। वास्तव में तो रजोगुण परन्तु देखो, इसी प्रकार यागां ब्रह्मे लोकां मेरे पुत्रों! देखो, न्याय की संगतिकरण में मानो देखो, यह जो रजोगुण अपने में एक प्रतिका कहलाता है।

जैसा मुझे स्मरण आता रहता है मेरे पुत्रों! देखो, रजोगुण की प्रतिभा मानो देखो, अपने में बड़ी विचित्र मानी गई है। जहाँ सतोगुण रजोगुण दोनों मिश्रित हो करके, मानो एक गृह में रहते हैं वह भी कहीं तक मुनिवरों! देखो, अपने में पवित्रतव होता है। जैसे मुझे स्मरण आता रहता है, महाराज अष्टावक्र का जीवन, महात्मा अष्टावक्र मुनिवरों! देखो, बड़े विचित्र थे वह मुनिवरों! देखो, माता के जब आँगन में मुनिवरों! देखो, क्रीड़ा करते रहते थे तो वह बड़े चंचल और वह मानो देखो, अपने में वृत कहलाते थे। मेरे प्यारे! देखो, माता उसे शिक्षा देती रहती देखो, वेदों का अध्ययन कराती रहती, बाल्यकाल में माता, वह सौभाग्यशाली होती है, जो माता बाल्यकाल में ही, अपने पुत्र को बेटा! वेद की प्रतिभा का ज्ञान कराने वाली है। मानो उसकी विवेचना करने वाली हो, वह माता प्रायः पवित्र हुआ करती है, उनके हृदय में मानो एक दाह और मानो देखो, एक विडम्बना होती है। तो मुनिवरों! देखो, विचार यह चल रहा है, क्या महात्मा अष्टावक्र माता की लोरियों के पश्चात माता उसे भिन्न-भिन्न प्रकार का उपदेश देती रहती थी। और कहती हे बालक! तुझे महान बनना है, मानो तुझे तमोगुण, रजोगुण, सतोगुण को जानना है। मेरे पुत्रों देखो, वह अपने में प्रसन्न होता रहता है। मुझे ऐसा स्मरण आता रहा है, क्या अष्टावक्र उसे कहते हैं, जिसमें आठ कुम्भ कहलाते हैं मानो देखो, जिसकी गाथा प्रचलित है। मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे एक समय प्रगट कराया क्या वर्तमान के काल में यह स्वीकार करते रहते हैं क्या सम्भवं ब्रहे वाचन्नमं ब्रीहि व्रतं क्या देखो, जब वह माता के गर्भस्थल में विद्यमान थे तो मानो उनके पिता प्रातःकालीन याग कर रहे थे, याग में अशुद्ध उच्चारण हुआ, तो ऐसा महानन्द जी ने मुझे वर्णन कराया, क्या तो वेद मन्त्रों का जैसे उद्घोष हुआ, तो वह अशुद्ध हो गया पितर से, तो माता के अन्तर्हृदय में बालक की प्रेरणा प्राप्त हुई, कि यह मन्त्र अशुद्ध है, मानो देखो, पिता ने इसका अपमान स्वीकार किया। मानो देखो, इसमें माता के पिछले विभाग में मानो देखो, अपने पगों से मानो देखो, अव्रत किया। तो मुनिवरों! देखो, तो मुनिवरों! देखो, उसके गर्भाशय में जो बालक था, वह आठ कुम्भ हो गएं परन्तु देखो, यह वाक् मेरे विचार में नही आता, मैं इसको स्वीकार नही कर रहा हूँ।

क्योंकि मुझे वह काल स्मरण है, जब अष्टावक्र जी माता-पिता की आज्ञा पा करके और वह भयंकर वन में जा करके उन्होंने तप किया। ऐसा मुझे स्मरण है क्या मुनिवरों! देखो, वह आठ मुनिवरों! देखो, आठ प्रतिक्रियाओं में चक्रों में रमण करने वाले थे। हमारे यहां यह आया है क्या आठ चक्रा नौ द्वारा मानो देखो, ऐसी अयोध्या पुरी है, यह जो हमारा मानव शरीर है इसको भी अयोध्या पुरी कहते हैं। एक अयोध्या पुरी वह है, जिस अयोध्या पुरी को, मेरे प्यारे! देखो, सतोयुग के काल में, वहीं मुनिवरों! देखो, स्वायम्भु मनु ने इस अयोध्या का निर्माण किया था मानो देखो, इसका निर्माण भी इसी प्रकार किया गया था नगरी का जैसे अष्टचक्र ओर नौ द्वार है जैसे मानव के शरीर का निर्माण यह मानो देखो, ब्रह्म पुरी मानी गई है। मेरे पुत्रों! देखो, इसमें नौ द्वार हैं अष्ट चक्र है तो अष्टावक्र जी इन नौ द्वारों को भी जानते थे, अंगों ओर उपांगों से जानते थे आठ चक्रों को भी जानते थे। मेरे प्यारे! देखो, इसीलिए उसका नाम अष्टावक्र कहलाता था। जब माता की लोरियों का पान करते थे, तो उस बालक का नाम श्वेनकेतु था वह श्वेनकेतु मानो देखो, मानो देखो, कहीं उसको सोमकेतु भी कहते हैं। बाल्यकाल का नाम तो यह, परन्तु जब वह तपस्या करने चले गएं तप में परिणत रहे तो मुनिवरों! देखो, अष्ट चक्रा नौ द्वारों वाली, जो

**याग एक सर्वांग पूजा**

अयोध्या पुरी में उन्होंने शरीर को जाना, तो उसी के सन्दर्भ में बेटा! देखो, उन्हें अष्टावक्र जी कहते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, जब वह अष्टावक्र राजा जनक की सभा से यह घोषणा हुई जैसे हमारे यहां याज्ञवल्क्य मुनि महाराज राज पुरोहित रहे हैं, और देखो, बुद्धिमानों की वह ब्रह्मयाग में वह परिणत होते रहे हैं, सभापतितव को वह ग्रहण करते रहे हैं, कहीं वह भी काल था जब जनक की सभा में अष्टावक्र जाते थे, और वह सभापतितव को अपनाते रहते थे।

एक समय बेटा! जब राजा जनक के यहां से यह घोषणा हुई क्या मुझे कोई ब्रह्मज्ञान करा दे, तो मानो देखो, सब ब्रह्मवेत्ता निहित हैं, विद्यमान है। तो मुनिवरों! देखो, कहीं से उनके शिष्य श्वेतु मुनि महाराज बेटा! देखो, महात्मा अष्टावक्र को यह गाथा वर्णन कराई, कि महाराज! आप भयंकर वन में विद्यमान है तपस्या कर रहे हैं आप तपों में निहित हैं मेरे पूज्यपाद है। हे प्रभु! राजा जनक ने यह घोषणा की है, क्या मुझे अश्वत होने से पूर्व, जो मुझे ब्रह्मज्ञान दे देगा देखो, वह प्रियतम है। मेरे प्यारे! देखो, वह जब श्रवण किया, तो उन्होंने कहा चलिए भगवन! तो मुनिवरों! देखो, महात्मा अष्टावक्र उनके शिष्य दोनों मानो गमन करने लगे, जब वह राजा जनक की मिथिला पुरी नगरी में पंहुचे, तो मुनिवरों! देखो, सभा विद्यमान हैं, ब्रह्मवेत्ताओं के आसन भिन्न हैं, ब्रह्मचारियों के आसन भिन्न हैं, बेटा! सभा में परन्तु शान्त मुद्रा हैं। मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा अष्टावक्र बोले कि समाज शान्त क्यों हैं? उन्होंने कहा कि भगवन! एक मचान बना हुआ है जो स्थली है उस पर आचार्य विद्यमान हो तो उन्होंने कहा कि मुझे ले चलिए मानो देखो, उस मचान पर जिस स्थान पर मुनिवरों! देखो, ऋषि विद्यमान हो गया, अब ब्राह्मणों में बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार का कौतुक हुआ और उन्होंने अपनी-अपनी चर्चाएं प्रारम्भ की क्या यह अष्टावक्र किस स्थान से ब्रह्मवेत्ता बन गया है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मवेत्ताओं ने भी कुछ ब्रह्मवेत्ता ऐसे थे जो अष्टावक्र को जानते थे। वह तो मौन रहे। परन्तु देखो, वह सम्भवं ब्रह्मा कृतं मेरे प्यारे! देखो, अष्टावक्र ने कहा कि हे ब्रह्मवेत्ताओं! तुममें इस प्रकार की क्रान्ति क्यों आई है? मैं इसको जान नही पाया हूँ। तो देखो, मुझे तो ज्ञान कराना है जो मुझे घोषणा हुई है मैं उस घोषणा के आधार पर राजा जनक मेरे से प्रश्न करेंगें मैं उसका उत्तर दूंगा, और जो तुम्हारे हृदयों में शंका हो उसका तुम निवारण करो। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा नम्रता से और आवेश में नही, तो मुनिवरों! देखो, राजा जनक ने जब अष्टावक्र के इन शब्दों को श्रवण किया तो मुनिवरों! देखो, राजा ने जा करके ऋषि के चरणों को स्पर्श किया, और ऋषि से कहा सम्भवं ब्रहे हे प्रभु! मैंने तो इसीलिए घोषणा कराई है, क्या आप मुझे भगवन! ज्ञान कराईए, मैं आप घोड़े पर अश्वत होने वाला हूँ अश्वत होने से पूर्व मुझे ब्रह्म ज्ञान दीजिए, उन्होंने कहा अष्टावक्र बोले कि हे राजन्! तुम्हें यह प्रतीत है, क्या जो जिज्ञासु ज्ञान और विज्ञान की अथवा ब्रह्म ज्ञान की जो निष्ठा रहता है, वह प्रथम उसे आचार्य को कुछ दक्षिणा देनी है, तुम्हें यह प्रतीत है क्या, जिस समय महर्षि भारद्वाज देखो, रेंगणी भारद्वाज जब दीक्षा देने से पूर्व तो मानो वह आचार्य के सम्मुख कुछ दक्षिणा ले करके पंहुचे। तो मुझे दक्षिणा दो उन्होंने कहा प्रभु! आप क्या चाहते हैं? दक्षिणा में! उन्होंने कहा जो मैं .... यह स्वीकार राजा स्वीकार कर लिया और कहा लीजिए भगवन! संकल्प किया, और संकल्प करके, जब अश्व पर सवार होने लगे। तो ऋषि ने कहा हे राजन! यह तो मन मेरा है, जिस मन की धारा से तुम मानो देखो, अश्व पर सवार होना चाहते हो, यह मन मेरा है, तुम कोई कार्य मेरी बिना आज्ञा के नही कर सकते। जब तुमने इसे मुझे दक्षिणा में प्रदान कर दिया, मेरे पुत्रों! देखो, राजा मौन हो गया। राजा ने ब्रह्मे वाचप्रह्वा कहा जैसे यह मन है ऐसे ही द्रव्य है, ऐसे वचन है, अब मानो देखो, मन, कर्म, वचन ये सब उसी में आ जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा भगवन! ब्रह्मे वाचप्रह्वा हे प्रभु! यह मन आपका है यह द्रव्य आपका है यह तन भी आपका है प्रभु मैंने इन्हें अर्पित कर दिया, संकल्प कर दिया उन्होंने कहा तो तुम्हें ज्ञान नही हुआ, मानो देखो, यह जो अश्व है, यह यही है और यह जो शरीर है यह तुम्हारा मानो देखो, भोग बन रहा है, और यह मन भी है मानो देखो, इनको यह स्वीकार करो क्या यह मन और

यह शरीर जो है यह मेरा नही हैं यह इदन्न मम है। जैसे वेद का मन्त्र कहता है, जैसे यज्ञमान यज्ञशाला में जब आहुति प्रदान करता है, तो इदन्न मम कहता है, वह कहता है, यह मेरा नही है प्रभु! जो मैं अर्पित कर रहा हूँ। मानो जो मैं अर्पित कर रहा हूँ, यह मेरा नही हैं। तो मानो देखो, यह इदन्न मम कहता है, और उसे आहुति प्रदान कर देता है अग्नि को। इसी प्रकार यह तुमने भी मुझे आहुति प्रदान कर दी है। यह आहुति इदन्न मम मानो इसमें तुम्हारा कुछ नही हैं। मानो जब इस प्रकार द्रव्य को, मन को और शरीर को जब इस प्रकार देखो, तुम इसे भोगतव्य की प्रवृत्ति से, जब तुम मानो त्याग पूर्वक इस संसार में जीवन व्यतीत करोगे, तो इसी का नाम ब्रह्म ज्ञान कहलाता है। मानो देखो, यह जो रचना है, यह सब प्रभु की है, मानो देखो, मन प्रकृति का है, और तुम्हारे शरीर में जो ब्रह्मवर्चोसि चेतन गति कर रहा है वह मानो देखो, वह ब्रह्म रूप कहलाता है। मुनिवरों! देखो, यह जो शरीर है, जो क्रीड़ा कर रहा है, यह प्राण सत्ता है यह वायु सतं ब्रह्मा यह मानो देखो, रात्रि यह गति तुम्हारी नही हैं मानो देखो, इसमें अन्तरात्मा विद्यमान हैं, जो इस शरीर को चैतन्य बना रहा है यदि मानो देखो, वह आत्मा अपने लोक को जाना चाहता है। तो शरीर का तुम्हारे का कोई रहस्य नही हैं मानो देखो, मन जब प्रकृति में चित्त के मण्डल से समन्वय होता हुआ, मानो देखो, जब यह प्राण के समीप गति के द्वारा जाता है ओर गति से जब विहीन होता है, तो यह मन तुम्हारा नहीं यह प्रकृतिवाद है मानो देखो, यह गतियां हैं, चेतना है, वह प्राणतव कहलाता है। तो हे राजन्! यह जो द्रव्य है मानो देखो, यह द्रव्य भी प्रभु का है, द्रव्य प्रभु का कैसे? मानो देखो, द्रव्य को त्याग करके तप करेगा, संसार में शरीर आता है, मानो द्रव्य का भोग भोगता है, या इसका दुरूपयोग कर लेता है, वह सब प्राणी संसार के इसको त्याग करके चले जाते हैं। जो भी जाता है, उसको त्याग करके जाता है। जो मानो देखो, जो भी जा रहा है, वह सब यहीं सब मानो देखो, पृथ्वी में परिणत हो रहा है। तो हे राजन! तुम्हें यह ज्ञान हुआ अथवा नही, क्या मानो देखो, यह द्रव्य क्या, संसार क्या सब यही रह जाता है तो मानो देखो, इसका नाम ब्रह्मज्ञान है। यह शरीर भी तुम्हारा नही, यह तो तुम कर्तव्य का पालन करने के लिए मानो देखो, राजा, जब राष्ट्र का पालन करता है, प्रजा का सुखद बनाने के लिए, वह प्रतिनिधित्व करने वाला है। यदि राजा अभिमान हो गया, राजा को ममता में परिणत हो करके, अति घनिष्टता में आ गया, तो उसका विनाश हो गया। यदि देखो, जहां राजा को यदि मृत्यु का भय हो गया, तो मानो देखो, वह राजा आत्म ज्ञानी नही बन सकता। इसीलिए बिना आत्म ज्ञानी के, राजा अपने राष्ट्र में न्याय नही कर सकता, और जब न्याय नही कर सकता तो न्यायाधीश नही रहेगा, तो मानो देखो, वह जो रजोगुण है, वह उमसें दूषितपना आ करके वह तमोगुण में परिवर्तित हो जाएगा। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब यह वाक् कहा, तो मुनिवरों! देखो, राजा अब ब्रह्मबेत्ताओं की सभा शून्य हो गई है। मेरे प्यारे अष्टावक्र ने कहा कि यह तन, मन, धन आपने मुझे दक्षिणा में प्रदान कर दिया है, मैं आज्ञा देता हूँ। कि अब तुम मानो देखो, इस राष्ट्र को भोगो। परन्तु त्यागपूर्वक, इदन्न मम् रूप में भोगतव्य बनो। और इनमें ब्रह्मे वाचा मन से क्रिया करो, परन्तु मन प्राण से पिरोया हुआ होना चाहिए। देखो, वह प्रकृतितव कहलाता है, और यह जो तुम्हारा शरीर है, इसको स्वीकार करो, कि आत्मा की चेतना से, क्रियाकलाप कर रहा है, आत्म चेतना में वह मानो देखो, वह जो चैतन्य है, उसे जानना है। उसे जान करके तुम अपने क्रियाकलापों में परिणत हो जाओ।

मेरे पुत्रों! देखो, जब महात्मा अष्टावक्र ने जब इस प्रकार उपदेश दिया तो बेटा! राजा देखो, मौन हो गएं और ब्रह्मवेत्ताओं में वह मेरे पुत्रों! देखो, वह सब मौन हो गएं मुनिवरों! देखो, वह अपनी मग्नता में, आभा में नियुक्त न रहे। तो परिणाम यह हुआ मुनिवरों! देखो, महात्मा अष्टावक्र ने यह ब्रह्मज्ञान दे दिया। बहुत सूक्ष्म रूपों में, ब्रह्म ज्ञान निहित रहता है। परन्तु उसकी व्याख्या नाना रूपों में परिवर्तित होती रहती है। तो मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, जो रजोगुण है, यह मानो देखो, राष्ट्र में मानव को परिवर्तित कर देता है। इनके विचार राष्ट्रीय

बना देता है, न्यायालय में विद्यमान हो जाता है, अधिकार पूर्वक अपना न्याय कर रहा है। मेरे प्यारे! परन्तु उसमें वह ममता, मोह और देखो, उसमें अज्ञान आ जाएगा तो वही न्याय, मेरे प्यारे! देखो, राष्ट्र के लिए, उसकी राष्ट्रीयता को नष्ट कर देता है। मेरे प्यारे! देखो, यह रजोगुण कहलाता है अब रहा बेटा! तमोगुण भी, तीन प्रकार के रूपों में निहित रहता है। वास्तव में दो ही रूप उसके माने गएं हैं मेरे पुत्रों! देखो, तमोगुण आया है किसी उद्देश्य के लिए, वह उद्देश्य पूर्ण हो गया वह रजोगुण मुनिवरों! देखो, सत्य में परिवर्तित होता है। मेरे प्यारे! देखो, यदि तमोगुण में यदि तमोगुण में, अति आ गई है, कामुकता आ गई है, मेरे पुत्रों! देखो, वही तमोगुण मुनिवरों! देखो, मानव को गद्देले में ले जाता है। अन्धकार में ले जाता है।

मुनिवरों! देखो, मुझे एक वाक् स्मरण आ गया है, वह बहुत पुरातन काल का बेटा! वाक् है एक समय बेटा! देखो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के पिता, मेरे पुत्रों! देखो, जिसको सुनेतं भावु ऋषि कहते थे, मेरे पुत्रों! देखो, भानु ऋषि एक समय अपने आसन पर विद्यमान थे, वह भानु ऋषि अपनी पत्नी से बोले क्या हे देवी! आओ, हम हमारी इच्छा यह है, कि कुछ अध्ययन करेंगें। प्रभु का चिन्तन करें। और यागों अपने जीवन को याज्ञिक बनाएं उन्होंने बेटा! देखो, वह स्वीकार करने लगे। ऐसा मुझे स्मरण है, क्या वह बहुत काल तक अपना तप करते रहे। मेरे प्यारे! देखो, तप करने के पश्चात उनके हृदय में यह वाक् आया, वेदोक्त क्या हे देवी! हम पुत्रेष्टि याग करना चाहते हैं। उन्होंने कहा बहुत प्रिय भगवन! परन्तु देखो, हम भयंकर वनों में रहते हैं, हम मानो तप करते हैं, आत्मा परमात्मा और प्रभु को मिलने की हमारी पिपासा रहती है, और उसके मध्य में आप पुत्रेष्टि याग करेंगें, यह भी वास्तव में हमारा एक कर्तव्य है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह दोनों ने मुनिवरों! देखो, वह दोनों ऋषि थे, दोनों भ्रमण करते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा अकेतु ऋषि के, राजा अश्वेतु राजा के द्वार पर पंहुचे। अश्वेतु राजा ने दोनो ऋषियों को स्वीकार करते हुए, उन्होंने बेटा! अपनी राजस्थली को त्याग दिया। जब त्यागने के पश्चात उन्होंने कहा कहो भगवन! आज कैसे गमन हुआ है? आप यदि तुम सूचना मुझे दे देते तो मैं तुम्हें वाहन में लाता। मेरे पुत्रों! ऋषि बोले, कि कोई वाक् नही राजन् मानो हमारा भी तो यह तपों में जीवन चल रहा है। हे प्रभु! हमारी एक इच्छा बन गई है, क्या हम बहुत समय से वेदों का अध्ययन कर रहे हैं, तप कर रहे हैं, हमारी यह इच्छा है कि हम पुत्रेष्टि याग करें। परन्तु देखो, राष्ट्रीय प्रतिभा, तमोगुण प्रतिभा में नही वेदों के वचन यह कहते हैं, वेदों के मन्त्र कहते हैं, क्या जब मानव देखो, पुत्रेष्टि याग करो, तो उस समय अन्धकार छाया हुआ हो, मानो देखो, सूर्य भी मानो देखो, सूर्य की किरण भी तुम्हें दृष्टिपात न कर सके, और मानो देखो, वहां देवत्वं, देवत्वं तो होने चाहिए परन्तु अन्धकार भूतं ब्रह्मे लोकां मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने यह कहा तो बहुत प्रियतम उन्होंने कहा तुम क्या चाहते हो ऋषिवर! उन्होंने कहा हमारे लिए एक आसन बनवाईए, उन्होंने बेटा! अपनी वाटिका में एक आसन का निर्माण कराया, और जब निर्माण कराया तो उनमें भोज्य इत्यादि ऐश्वर्य की सामग्री को एकत्रित किया। उसके पश्चात पुत्रों! देखो, उन्होंने देखो, एक पुत्रेष्टि याग किया। जब पुत्रेष्टि याग हुआ तो माता को मुनिवरों! देखो, वह कुछ समय के पश्चात महर्षि वशिष्ठ का जन्म हुआ। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज को दोनों पति पत्नी बेटा! शिक्षा देते रहते, दोनों मानो ब्रह्मज्ञान को परिणत कराते रहते, मुनिवरों! देखो, उन्होने कहा पत्नी बोली एक समय क्या भगवन! अब पुत्रेष्टि याग हो गया है अब यहां राजा की स्थली को त्याग देना चाहिए। क्योंकि राष्ट्रीय अन्न जो होता है, यह रजोगुण, तमोगुण में होता है, हो सकता है यह आगे चल करके हमारा यह जो पुत्र है यह कहीं तमोगुणी न बन जाएं। यह मानो देखो, सतोगुणी ही बनना चाहिए, यह तमोगुण, रजोगुण में सना हुआ नही होना चाहिए, रहा देखो, ऋषि ने वह वाक् स्वीकार कर लिया ऋषि ने कहा चलिए देवी! मेरे पुत्रों! देखो, उस बालक को उन्होंने ब्रह्मवेत्ता बनाने के लिए उन्होंने शिक्षा दी, तो मेरे प्यारे! देखो, वह तपो में ब्रह्मचारी रहता तो तुमने बेटा! दृष्टिपात किया होगा महर्षि

**याग एक सर्वांग पूजा**

वशिष्ठ मुनि महाराज का जीवन मेरे पुत्रों! देखो, तपों में रहता था, उनके जीवन में एक महानता का दर्शन मानो देखो, वह ब्रह्मे वाचप्प्रह्वा लोका देखो, वह रघुवंश में क्या उनके यहां मुनिवरों! देखो, महाराजा सगर से ले करके और यह उपाधि मुनिवरों! देखो, राष्ट्रीय उपाधि चली आई। क्या जो इस प्रकार का तप करता रहता था, वही वशिष्ठ मुनि बनता था। तो मेरे प्यारे! देखो, यह उपाधि क्यों, क्योंकि जो भी ऋषि तपस्या में परिणत होता, मेरे पुत्रों! देखो, जो मान से अभिमान से जो रहित हो जाता है। उसको ब्रह्म उपाधि प्रदान की जाती है, और वह जो ऋषि वशिष्ठ जिसे उपाधि प्रदान करते वही मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता बनता है। वही ब्रह्मनिष्ठ कहलाता है, मेरे प्यारे! देखो, यहां कई प्रकार के ऋषि होते हैं, जैसे ब्रह्मवेत्ता उसके पश्चात मुनिवरों! देखो, राजेश्वरी यागों में देखो, जैसे राजेश्वरी याग वह भी एक ऋषि कहलाता है। मुनिवरों! देखो, जो राजर्षि होता है। एक मानो देखो, वह ऋषि मुनि प्रवृत्ति को प्राप्त हो जाता है। मुनि प्रवृत्ति किसे कहते हैं, जैसे माता की लोरियों में बाल्य होता है, उसे न संसार का ज्ञान है, न माता का ही ज्ञान है, मानो देखो, वह ब्रह्म आत्मा में लीन होने वाला ब्रह्म में लीन हो जाता है। वह आत्मा परमात्मा में जब स्नेह कर लेता है। तो उसकी मुनि प्रवृत्ति बन जाती हैं। मेरे प्यारे! देखो, मैं बहुत दूर चला गया हूँ, अपने विचार देते-देते बहुत दूरी चला गया .....शेष अनुपलब्ध ०४ १२ १९८६

# ७ दो होता ०५ १२ १९८६

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का का पठन-पाठन किया, हमारे परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है, मानो एक-एक कण-कण में व्याप्त हैं, और वह गति का स्रोत माना गया है। तो आज हम उस परमपिता परमात्मा की, प्रायः महिमा का गुणगान गाते रहते हैं। प्रत्येक वेद मन्त्रों में, उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन आता रहता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं, और प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, जिस भी वेदमन्त्र के ऊपर तुम अनुसन्धान करना प्रारम्भ करोगे, उसी वेद मन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा एक अनन्तता में दृष्टिपात आती रहती है, इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को, अनन्तमयी और वेदमन्त्र कहता है, हे मानव! तू उसे अपना वरुण अथवा उसे वरने वाला बन। क्योंकि वह वरणीय है, हमारे यहाँ, परम्परागतों से बेटा! ऋषि-मुनि, जब इन वाक्यों के ऊपर अपना चिन्तन करते हैं, उसे अपना वरणीय बनाते हैं तो प्रायः मानव के हृदय में प्रायः एक महानता का दर्शन होता है। क्योंकि हम, उस अनुपम चेतना में, अपनी चेतना को रत्त कर देते हैं। और चेतनामयी मानव का जीवन, एक महानता का प्रायः दर्शन बना रहता है। तो विचार, यह हम उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बनाएं जैसे यज्ञशाला में मानो देखो, परमपिता परमात्मा ने, उस अपने को अपनी आभा में वरणीयता का दर्शन दिया है, जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में मानो देखो, पुरोहित का निर्वाचन करता है, वह ब्रह्मा का निर्वाचन करता रहता है, तो निर्वाचन की जो प्रणाली है, वह हमारे यहाँ, परम्परागतों से मानी गई है इसीलिए प्रत्येक मानव का निर्वाचन होना चाहिए, और उसकी योग्यता के अनुसार उसका निर्वाचन हो, राष्ट्र से ले करके मुनिवरों! प्रत्येक आभा में, जिसका जिसका जैसा भी मानो निर्वाचन होना है उसी योग्यता के आधार पर निर्वाचन होना चाहिए। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को, अपना वरणीय बना करके, वह पुरोहित के रूप में विद्यमान है। मानो देखो, पुरोहित अपने में महान है, पुरोहितां दिव्यां गतं ब्रह्मा तो हे मेरे प्रभु! वह महान देखो, वह पुरोहित है हमारा, हम उसको अपना पुरोहित बनाना चाहते हैं, अपने हृदय में उसे अपने में धारण करते हुए, मानो हृदय में अगम्यता की ज्योति को जागरूक करना चाहते हैं। जिससे बेटा! हमारा जीवन एक महान बन जाए।

आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है, यज्ञनं ब्रह्मा वाचस्प्रह्रे लोकां आज मैं बेटा! पुनः से तुम्हें याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ क्योंकि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ, नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे, और ब्रह्मचारियों को जब वह प्रातःकालीन उनके यहाँ याग का, क्रियाकलाप होता, तो आचार्य मध्य में विद्यमान हो जाते। अंग संग बेटा! ब्रह्मचारी विद्यमान हैं, क्योंकि वास्तव में आचार्य तो वही होता है, जो एक मानो जीवन में विद्यालय में बेटा! एक आचार सहिंता बनाता है, आचार संहिता किसे कहते हैं? आचार संहिता कहते है, जो अपने जीवन को मानो एक नियमबद्ध उसको बद्धित कर देता है। उसे कटिबद्ध कर देता है। तो मेरे प्यारे! हमारे यहाँ यह माना गया है कि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, याग के पश्चात ब्रह्मचारियों के मध्य में विद्यमान हैं, और ब्रह्मचारी भिन्न-भिन्न प्रकार का प्रायः प्रश्न करते रहते हैं, और आचार्य उसका उत्तर देते रहते थे ब्रह्मचारियों ने यह प्रश्न किया कि महाराज! हमारा तो वही प्रश्न है क्या यह यज्ञमान विद्यमान है, और वह ब्रह्मचारी है, वह श्रोत्रीय ब्रह्मचारी है, वह याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए, मेरे प्यारे! देखो, जब वह ब्रह्मचारी ने यह प्रश्न किया, क्या आचार्य ने कहा कि दो होता याग में रहने चाहिए, दो होताओं के द्वारा याग होता

है, क्योंकि याग होता ही जब यह जब है मानो दो रूप में यह जगत दृष्टिपात आता है मेरे प्यारे! देखो, शून्य बिन्दु हैं और उस बिन्दु में मानो देखो, क्रिया असुति है, इसीलिए मानो एक दूसरे से कटिबद्ध होने वाला यह जगत है, बेटा! जो द्वितीय बन गया है, दो होता याग कर रहे हैं, दो होता अपनी श्रद्धामयी, याग में लगे हुए हैं, मेरे प्यारे! हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के याग होते हैं हमारे यहाँ एक ब्रह्मयाग होता है, उस ब्रह्मयाग में, ब्रह्म का चिन्तन होता है।

मुझे वह काल स्मरण है, बेटा! जिस काल में मुनिवरों! देखो, एक समय अंगिरस ऋषि के, मन में यह जिज्ञासा जागरूक हुई, कि मैं ब्रह्मयागी बनूंगां मानो वह ब्रह्मयाग कैसे करते थे? अंगिरस ऋषि महाराज मानो देखो, रात्रि छा गई है अपनी आत्मा के प्रकाश में उस ब्रह्म का वह दर्शन करते हैं, मानो ब्रह्म का जब दर्शन होता ,है बेटा! वह अपने में यह घोषणा करते, कि मुझे ब्रह्म का दर्शन हो रहा है, मेरे प्यारे! अपने हृदय में ही घोषणा हो रही है, बाह्य जगत में घोषणा की आवश्यकता नही होती। जब मानव में शुद्धिकरण हो जाता है, आत्मबल बलवती हो जाता है, उस समय आत्मा की क्रिया, मानव के जीवन के क्रियाकलाप में प्रायः बेटा! आत्मीयता की सुगन्धि आनी प्रारम्भ हो जाती है, और वह सुगन्धि ही तो मेरे प्यारे! देखो, एक मानो देखो, घोषणा है, उस सुगन्धि का नाम ही घोषणा है। जैसे यज्ञमान याग कर रहा है, और याग में वह साकल्य भिन्न-भिन्न प्रकार का, मानो देखो, साकल्य उसमें प्रदान कर रहा है, यज्ञमान के मानो साकल्य में, मानो तीन प्रकार के पदार्थ होते हैं, एक पदार्थ मानो पुष्टिकारक होता है, एक सुगन्धित होता है, और एक रोगनाशक होता है, वे तीन प्रकार के साकल्य तीन प्रकार का साकल्य अग्नि में प्रदान किया जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब वह यज्ञमान जब याग करता है, तो सुगन्धित अन्तरिक्ष में बेटा! सुगन्धि को भरण करना चाहता है। और अशुद्धियों को शान्त करना चाहता है। मेरे प्यारे! रोग नाशक की सुगन्धि शान्त होती है, जो पंचीकरण मानो देखो, वायुमण्डल के क्षेत्र में, जब मानो देखो, रोगनाशक परमाणु भ्रमण करेंगे तो यह स्पर्श अवश्य करेगा मेरे प्यारे! देखो, उसका भी निराकरण हो जाता है उसके पश्चात मुनिवरों! देखो, पुष्टिकारक जिससे मानव पौष्टिक बनता है मानव सुगन्धि होना चाहता है। मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस समय महाराज दिलीप जी ने मानो महान तपस्या करी, मानो नन्दिनी के पिछले भाग में, और उसके मन में यह कल्पना थी, कि मैं मेरा राष्ट्र महान बन करके एक पुत्र का जन्म होना चाहिए। तो महाराज दिलीप जी के जीवन में पौष्टिकता की सूक्ष्मता थी, तो मानो देखो, वशिष्ठ इत्यादि मुनियों ने, उसी प्रकार का साकल्य एकत्रित किया, जो पौष्टिकता को मानो देखो, बलवती मानव के जीवन को बलवती बनाने वाला हो, पुष्ट करने वाला हो, तो मेरे प्यारे! देखो, उन औषधियों के द्वारा जब याग हुआ, तो ऐसा मुझे स्मरण है, कि छह माह तक, पति-पत्नी मानो याग में लगे रहते, छह माह के पश्चात, वह याग सम्पन्न हो गया। मेरे प्यारे! उसे हमारे यहाँ पुत्रेष्टि पौष्टिक वाचक याग कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, उसी राजा से उसी याग के फलस्वरूप से बेटा! रघु का जन्म हुआ। तो मेरे प्यारे! विचार यह है कि मुनिवरों! देखो, मैं उच्चारण करता हुआ दूरी चला गया हूँ, याग के कर्मकाण्ड में तो जाना नही चाहता हूँ।

ब्रह्म की छाया

विचार यह चल रहा था मंगलं ब्रीहि वर्णसुता तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से यह प्रश्न किया, क्या यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता हों? तो ऋषि ने उत्तर दिया दो से आहुति देनी चाहिए। दो होता होने चाहिए, यज्ञ में मेरे प्यारे! देखो, दो होता कौन से हैं? मेरे प्यारे! देखो, मन और प्राण दोनो हैं, एक-दूसरे के सखा हैं, मेरे पुत्रों! देखो, यह जो मन है, यह प्रकृति की छाया है, अथवा प्रकृति का एक सूक्ष्मतम तन्तु हैं, और यह जो प्राण है, मेरे पुत्रों! देखो, यह ब्रह्म की छाया माना गया है। आत्मा की छाया, शरीर में प्राण बन करके प्राण दस रूपों में

विभक्त हो जाता है और वही प्राण मेरे प्यारे! बाह्य जगत में वनस्पतियों के रूप में, मानो जितने लोक-लोकान्तरों को गति दे रहा है, एक यह प्राण है, और उस प्राण का नाम, वह ब्रह्म की छाया है। तो यह दो होता बने हैं, जो संसार को मानो क्रिया रूप दे रहे हैं, क्रिया रत्त कर रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो, यही तो दो होता हैं, जो याग कर रहे हैं, और याग में परिणत हो करके, मेरे पुत्रों! यागां भवितां लोकाः वही तो भव्यता को प्राप्त होने वाला यज्ञमान कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, दो होता है, आहुति दे रहे हैं मुनिवरों! देखो, प्राण क्रिया की आहुति दे रहा है, मन साकल्य की आहुति दे रहा है, और यदि देखो, साकल्य है, क्रिया नही है, तो बेटा! देखो, गति नही है। तो मुनिवरों! देखो, साकल्य प्रदान नही किया जाएगा। यदि मानो देखो, गति है, और देखो, वह साकल्य नही है, तो साकल्य जब भी मुनिवरों! देखो, अधूरेपन में दृष्टिपात आता है, तो विचार यह कि साकल्य का मूलक तो मन है और क्रिया का मूलक बेटा! देखो, प्राण माना गया है यह प्राण सखा को ही योगी जन जब योगाभ्यास में परिणत होते हैं तो मानो देखो, यही तो मुनिवरों! प्राणों में मन में लये हो जाते हैं आज मुझे बेटा! पुनः से अष्टावक्र का जीवन पुनः से स्मरण आ रहा है। कल, बेटा! हमने कुछ अष्टावक्र की चर्चाएं की, आज भी पुनः से स्मरण आ रहा है, जब बेटा! देखो, महाराज अष्टावक्र, राजा जनक को ज्ञान दे करके, ब्रह्मज्ञान करा करके, और उन्होंने अपने आसन को त्यागा, त्याग करके मुनिवरों! देखो, वह भंयकर वनों में, चले गएं भयंकर वनों में वह मानो देखो, वह याग कर रहे थे, वह आध्यात्मिक याग में लगे हुए थे, और वह दोनों होताओं को जागरूक कर रहे थे। हे होताओं! जागरूक हो जाओ, मानो देखो, अदिति आ गया है।

तो मुनिवरों! देखो, जब यह वाक् उच्चारण कर रहे थे, तो उन्होंने याग का प्रारम्भ किया मानो देखो, अष्टावक्र के एक शिष्य बोले कि-प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि आपने जो राजा को, जनक को इस प्रकार का ज्ञान दिया है वह ज्ञान हमें कदापि भी प्रगट नही किया। तो उन्होंने कहा हे पुत्र! विद्यमान हो जाओ, उनके द्वारा देखो, पांच ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे, ब्रह्मज्ञान का उन ब्रह्मचारियों का नाम सुकेता, रोहिणीकेतु, सोमवृत्तिका और यज्ञदताः और व्रहे मानो देखो, यह पांच ब्रह्मचारी थे जो अध्ययन कर रहे थे, उन्होने जब यह प्रश्न किया, कि महाराज! आप ने हमें कदापि वर्णन नहीं किया, इन वाक्यों का, जो राजा जनक को आपने ज्ञान कराया है। उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारियों! जब तुम सुयोग्य बन जाओगे, तुम्हे अधिकार मानो कर्तव्य के साथ मानो प्राप्त हो जाता है। अधिकारी मानव को बनाया नही जाता है अधिकारी वह बनता है और देखो, आचार्य योग्यता के आधार पर उसे ज्ञान करा देता है यह आचार्यों की मानो प्रमुखता रही है, जब शिष्य अधिकारी बनता है जैसे राजा का निर्वाचन होता है, और मानो देखो, ऋषि ब्रह्मचेत्ता विद्यमान हो करके, यह मस्तिष्कों का अध्ययन करने मात्र से यह निर्णय दे देते हैं, क्या यह राष्ट्र का अधिकारी है, अथवा नही। इसी प्रकार ब्रह्मचारियों को जब उन्हें अधिकार प्राप्त हो जाता है। सुयोग्य हो जाते हैं, अधिकार प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! ब्रह्मचारियों ने वह वाक् स्वीकार कर लिया, उन्होंने कहा तो प्रभु! हमें ज्ञान दीजिए।

उन्होंने कहा कि दो होताओं के द्वारा याग हो रहा है, मानव के शरीर रूपी जो यज्ञशाला है, इसमें मन और प्राण दोनो ही अपना याग कर रहे हैं, दो होता के द्वारा याग हो रहा है, वही मानव के शरीर में है वही ब्रह्माण्ड में दृष्टिपात आता है। मेरे प्यारे! देखो, एक समय, जब कुछ ब्रह्मचारीजन अध्ययन करते हुए, महाराजा अष्टावक्र से बोले कि-प्रभु! क्या इसमें बाह्य जगत भी है, उन्होंने कहा बाह्य जगत क्यों नही होता? यह जो प्रकृति का तन्तु है मन यह मानो देखो, विभक्त क्रियाओं को निर्वाचित करने वाला है, मानो यह विभाजन करता है, इस संसार का आज जितना भी यह लोक-लोकान्तरवाद है, अथवा इसमें प्राण अपनी गतियां दे रहा है, प्राण सूत्र में यह सब पिरोएं हुए हैं, मानो देखो, एक माला बन जाती है, यह माला ऐसे बनती है, जिस प्रकार माला अपने में माला बन

करके मानव अपने में धारण कर लेता है। तो बेटा! वह भिन्न-भिन्न प्रकार के मनकों के रूप में दृष्टिपात आते हैं, यदि हम यह दृष्टिपात करने लगे, क्या जब योगीजन लघु मस्तिष्क में प्रवेश करता है, जब ये लघु मस्तिष्क में जाता है तो लघु मस्तिष्क में प्रवेश होते ही, मानो देखो, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर बेटा! एक मस्तिष्क में दृष्टिपात आने लगते हैं, मानो देखो, लोक-लोकान्तरों का क्रियाकलाप एक समय बेटा! ऐसा मुझे स्मरण है क्या एक समय एक योगी ने यह कहा क्या मैं अपने अनुभव में, लघु मस्तिष्क में जब प्रवेश हुआ तो मुझे कुछ ऐसा दृष्टिपात हुआ, जैसे मंगल लोक में एक भयंकर क्रांति आ गई है। मानो देखो, ऋषियों ने कहा महाराज! यह कैसे जाना जाए, क्या देखो, मंगल लोक में क्रांति आ गई है? मुनिवरों! देखो, उन्होंने उन ऋषि के द्वारा एक यन्त्र विद्यमान था, और यन्त्र में चन्द्र लोक की चन्द्रमा की मानो देखो, मंगल की चन्द्रमा में होती मुनिवरों! देखो, तरंगे आती हैं और वह तरंगे मुनिवरों! देखो, उनके यन्त्रों में दृष्टिपात आ रही थी। उन तरंगो में, बेटा! देखो, एक महान, एक क्रियाकलाप हो रहा है, जो एक प्राणी प्राणी को रक्त में मानो देखो, परिणत कर रहा है। तो मुनिवरों! देखो, यह उनका वाक् सिद्ध हो गया, क्योंकि विज्ञान अपने में अनूठा बना रहता है, विज्ञान मानो परम्परागतों से ही, निहित रहा है, मानव के मस्तिष्कों में तो बेटा! वह विज्ञान मानो एक दूसरे लोक-लोकान्तरों तक की यात्रा करना, उनके कौतुक को प्रगट करते रहते थे, तो मेरे प्यारे! देखो, यहाँ ऋषि-मुनि अपने योगाभ्यास में परिणत होते रहे हैं। तो आज बेटा! मैं इस सन्दर्भ में, विशेषता में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ मैं वह अष्टावक्र वाली चर्चा कर रहा हूँ, पांचो ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहे हैं, मेरे प्यारे! देखो, अध्ययन करते हुए उन्होंने एक समय कहा-प्रभु! हमें आप कुछ निर्णय कराईए उन्होंने कहा क्या निर्णय चाहते हैं? उन्होंने कहा यह जो दो होता है, उनके नामोकरण क्या हैं? उन्होंने कहा एक विभक्त करने वाला एक विभक्त होने वाला है मानो देखो, मन का विभाजन होता है और उसका प्राण का विभाजन होता है और मन उसको विभक्त करता है और दोनो का देखो, स्वरूप एक ही रूपों में रत्त रहता है एक ब्रह्म की छाया है तो एक प्रकृति की छाया है दोनों के विभाजन का नाम ही बेटा! यह मानव शरीर कहलाता है दोनो का मिलान हो जाए दोनो का एकोकीकरण हो जाए तो मेरे प्यारे! देखो, एक सूत्र में हो करके मानो देखो, वह मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है। तो मुनिवरों! देखो, दोनो का विभाजन का नाम ही संसार है, दोनो के विभक्त क्रिया का नाम ही यह जगत बाह्य और आन्तरिक माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, दोनो का विभाजन, दोनो का मिलन कैसे हो यह कैसे जाना जाए? मेरे प्यारे! देखो, दोनो का निराकरण करना ही हमारे जीवन की एक प्रतिभा मानी गई है।

आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, उन्होंने कहा चलो अष्टावक्र जी बेटा! देखो, पांचों ब्रह्मचारियों को ले करके भ्रमण करने चले गएं वह मुनिवरों! देखो, मगध राष्ट्र में पंहुचे, जब मगध राष्ट्र में पंहुचे तो मुनिवरों! देखो, वहाँ जब देखो, रात्रि छा गई, रात्रि के समय वह एक समय रात्रि में ब्रह्म वाचा करते हुए बेटा! वह एक कात्यायान के गृह में पंहुचे कात्यायान ने कहा आईए भगवन! कात्यायान उनका स्वागत किया, और कात्यायान और उन्होंने जब भोज इत्यादि कराया, तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने एक प्रश्न किया क्या महाराज! मेरे यहाँ तुम्हारा अन्नाद है, वह अन्नाद मानो देखो, कैसे मानो मेरे द्वार पर आया? क्या आज मैं मानो देखो, कारण बना हूँ, निमित बना हूँ, कि तुम्हे भोज करा रहा हूँ, और यह मेरा नही है, यह तुम्हारा ही है। मानो यह मेरे गृह में कैसे आया? और वह मुनिवरों! देखो, वह अष्टावक्र बड़े आश्चर्य में हुए, उन्होंने ब्रह्मचारियों से कहा कि ब्रह्मचारियों! तुम जानते हो इस विषय को? उन्होंने कहा-प्रभु! हम नही जानते। उन्होंने कहा तो यह कात्यायन के प्रश्न का तो उत्तर देना ही होगा कैसे दिया जाए मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा गुरूदेव आप तो जानते ही हैं उन्होंने कहा इस समय मैं भी इस प्रश्न के उत्तर को नही दे सकता क्योंकि मैं जानता नही हूँ, मेरे प्यारे! जब उन्होंने पुनः प्रश्न किया कि महाराज!

हमारे प्रश्न का उत्तर दीजिए उन्होंने कहा अवश्य देंगे मेरे प्यारे! जब रात्रि समय विश्राम करने के पश्चात मानो ब्रह्मचारीजन और आचार्या अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करके और वह याग करने लगे तो, उस समय यागां ब्रह्म वाचोः असुतम् ब्रह्मा उन्हें मानो एक आकाशवाणी अन्तर्हृदय से हुई, और उन्होंने कहा कि यह अन्नाद मानो देखो, इनके द्वारा कैसे आया मेरे प्यारे! देखो, यह इसका उत्तर उन्होंने दिया क्या मानो तुम्हारा, हमारा संस्कार है। और जहाँ जिसका संस्कार होता है, मानो देखो, वही उसकी साकल्य सामग्री होती है। मेरे प्यारे! देखो, कात्यायानन को कुछ-कुछ देखो, विचारों में आया, क्या संस्कार है और संस्कार के साथ मानो उसका साकल्य विद्यमान है। मेरे प्यारे! देखो, उत्तर तो बन गया परन्तु देखो, शान्ति स्थापित नही हुई। उन्होंने कहा-प्रभु! वाक् तो तुम्हारा यथार्थ है, परन्तु देखो, मेरे हृदय में शान्ति की स्थापना नही हुई है, मैं शान्ति चाहता हूँ, मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा यह कैसे? क्या गृह संस्कार मानो देखो, इसका जो साकल्य है, वह दोनो एक रूप है याह द्वितीय रूप हैं उन्होंने कहा कि यह जो मानं ब्रह्मे यह जो संस्कार है, यह तो मानव के प्रारब्ध की उपलब्धियां कहलाते हैं और जो मानो देखो, ब्रहे सम्भवं ब्रह्मा गृह में मानो देखो, मिलन होता है वह भी मुनिवरों! देखो, उसकी आभा रूप में प्राण और म नही माने जाते हैं क्योंकि संसार में मन और प्राण का यह प्राण यह जड़वत है यह ब्रह्माण्ड है मानो देखो, इसी में तो सर्वत्र रत्त हो रहा है।

मेरे प्यारे! देखो, उनके विचार में तो कुछ-कुछ आया वहाँ से उन्होंने गमन किया कि-भगवन! हम इसका मन्थन करेंगे इस विषय को वास्तव में हम जानते नही है, इसका हम मन्थन करेंगे। तो मेरे प्यारे! देखो, वह अष्टावक्र जी अप्रतम देवो कि हे ब्रह्मचारियों! जब कात्यायान ने प्रश्न किया है कात्यायान के गृह में जो प्रसंग हमारे समीप आया इसके ऊपर विचार करना चाहिए मेरे प्यारे! देखो, संसार में जितना भी मिलन है जितनी भी विचारधाराएं हैं उनका एक-दूसरे से जब समन्वय होता है मानो देखो, मिलन होता है तो उसी का नाम संस्कार कहा जाता है वह संस्कारित किया जाता है। जैसे मानो देखो, हमारे मस्तिष्क में एक मुनिवरों! देखो, ध्वनि होती है, और ध्वनि को देखो, जो उसको श्रवण करता है, उस ध्वनि में से शब्दों का निकास करता है, तो मानो देखो, वह वहाँ एक ब्रह्म वाचो एक व्याकरण बन जाता है। ब्रह्मवाचो व्याकरण बन जाता है, और उस व्याकरण को ले करके मानो देखो, एक ध्वनि को निर्माणित करता है और ध्वनि को जान करके उसी से मानो शब्दों की रचना हो जाती है मानो देखो, वह जो रचना है वह संस्कार है या वह प्राणतव ध्वनि मानी गई है मेरे प्यारे! देखो, यह प्राण की ध्वनि है और मन उस ध्वनि को विभक्त कर रहा है रचना में ला रहा है इसीलिए शब्दों की रचना हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, यह बड़ा विचित्र एक गहन वाक् मानव के समीप आता रहा है, मुनिवरों! देखो, जब यह विचार आया कि व्याकरण मानो देखो, ध्वनि से इसका प्रसारण होता है, मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल स्मरण है जिस काल में, ऋषि-मुनि बेटा! एक-एक वेदमन्त्र को ले करके, बेटा! अपने में अनुसन्धान, अन्वेषण करते रहे हैं, विचार-विनिमय करते रहे हैं, जिन विचारों को ले करके बेटा! ऊँची से ऊँची उड़ाने उड़ते रहे हैं।

मेरे पुत्रों! देखो, महाराज अष्टावक्र और ब्रह्मचारियों ने इस निराकरण में मेरे प्यारे! देखो, अपने में वाचो सम्भवे ब्रह्वा मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा कि इसी का नाम ज्ञान है, अष्टावक्र ब्रह्मचारियों से बोले क्या इस ज्ञान को इस साधना को अपने में धारण करना चाहिए जिससे मानव ध्वनि में यह लोक-लोकान्तरों की ध्वनि को और गतियों को जानता रहे। मेरे प्यारे! देखो, लोक-लोकान्तरों में जब प्रवेश करते रहते हैं, तो लघु मस्तिष्क और बाह्य जो ब्रह्माण्ड है, इसका दोनो का समन्वय करते हैं मानो देखो, यह विचारते हैं, कि एक लोक, कितनी दूरी पर एक लोक विद्यमान है उसके मध्य में क्या है? तो बेटा! देखो, ऋषि कहते हैं कि उसके मध्य में द्यौ है, वह जो द्यौ है वही तो मानो देखो, प्राण सत्ता एक दूसरे में मानो पिरोएं हुए रहती है। और एक दूसरे की ऊर्ज्वा को मानो देखो,

एक दूसरे में प्रसारित करती रहती है। जैसे मानो देखो, यह सूर्य है, और यह चन्द्रमा है, मानो देखो, चन्द्रमा अपने में मानो देखो, वह चन्द्रवाती नही कहलाता, सूर्य से नाना प्रकार की ऊर्ज्वा चलती है, चन्द्रमा से ऊर्ज्वा चली, और दोनों ऊर्ज्वा का जब समन्वय हो गया, तो मेरे प्यारे! देखो, वही अमृता बन करके, वह अमृता कहलाती है। वह अमृता बन करके बेटा! वही तो अमृत को प्रदान करने वाला है। मानो देखो, वह सूर्य अपनी ऊर्ज्वा को ले करके, चन्द्रमा में प्रवेश हो जाता है। चन्द्रमा मानो अपनी ऊर्ज्वा को ले करके, रात्रि के गर्भ में आ जाता है। रात्रि अपनी ऊर्ज्वा को ले करके, नाना प्रकार की वनस्पतियों की आभा में परिणत हो जाता है। नाना प्रकार की जो वनस्पतियां है, वह मेरे प्यारे! देखो, वह सोम बन करके कोई मानो देखो, अन्ना अमृता बन करके, मेरे पुत्रों! देखो, वही तो रसों का एक स्वादन बन जाता है। वही तो मुनिवरों! देखो, मानव के समीप आ करके, उसे वह अमृत जान करके, पान करता है। तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, एक-दूसरे से एक-दूसरे का समन्वय है।

जैसे मानो मैं आज तुम्हे एक अदभुत एक वाक् प्रगट करूं एक समय बेटा! मुझे स्मरण है कहीं भ्रमण करते हुए बेटा! देखो, हम अंगिरस ऋषि के द्वार पर पंहुचे, तो महर्षि अंगरिस मुनि महाराज अपने जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों को जानने में लगे हुए थे, मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने आसन दिया, विराजामन हो गएं, तो कन्दमूल इत्यादि दिए उन्होंने अतिथि किया। अतिथि करने के पश्चात हमने प्रश्न किया क्या महाराज! क्या कर रहे हो? उन्होंने कहा मैं अमृत को पान कर रहा हूँ। मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा कि अमृत कैसे? क्या मानो मैं उन संस्कारों को जान रहा हूँ, जो आज से मानो मैंने देखो, लाखो वर्षों पूर्व लाखो जन्मों पूर्व से अपने में जो क्रियाकलाप किया था, वह क्रियाकलाप मानो वायु मण्डल में गति कर रहा है, और द्यौ लोक में वह प्रवेश हो रहा है, और वह मेरे मस्तिष्क में मानो तरंगे बन करके आ रहा है, जिससे मैं उन संस्कारों को जानने में लगा हुआ हूँ। बड़ा अदभुत वाक् ऋषि ने प्रगट किया, मानो हम शान्त हो गएं उन्होंने देखो, हमने एक प्रश्न किया कि महाराज! आप मानो लोक-लोकान्तरों के सम्बन्ध में ही जानते हो उन्होने कहा एक दूसरे लोक को, मानव कैसे जानता है? क्योंकि मानव के चित्त के मण्डल में लघु मस्तिष्क में, मानो उनकी तरंगे विद्यमान होती है, और उन तरंगो को तरंगो से समन्वय करता हुआ, उन तरंगो से तरंगो से मिलान करता हुआ मानो देखो, अपनी तरंगों का लघु मस्तिष्क से समन्वय करते हुए बेटा! उसको साकार रूप दे देता है।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने बड़ा एक अदभुत वाक् प्रगट किया वेद का ऋषि अंगिरस कहता है क्या महाराज! मैं अपने संस्कारों में जानने में लगा हुआ हूँ। मेरे प्यारे! देखो, मुझे कुछ स्मरण ऐसा है क्या महर्षि अंगिरस मुनि महाराज ने मुनिवरों! देखो, लगभग अस्सी वर्ष उन्होंने तप किया, और तप क्या करते थे? मेरे प्यारे! वायु का सेवन करते थे, वायु में शीतली प्राणायाम करते थे, और शीतली प्राणायाम करके उससे अपने उदर की पूर्ति करते थे। मेरे प्यारे! देखो, उनसे वह संस्कार, संस्कारों को जानने में लगे हुए थे, उन्होंने बेटा! अस्सी वर्ष के अनुभव में, मानो उन तरंगो को जानते-जानते चित्त के मण्डल में बेटा! देखो, उन्होंने दो लाख जन्मों के संस्कारों को बेटा! उन्होंने साक्षात्कार किया। तो बेटा! यह कैसा अदभुत जगत है, इसके ऊपर विचारना है, मानो बहुत गम्भीरता से मनन करना है क्योंकि मनन करने वाला यह ब्रह्माण्ड है प्रभु की जो रचना यह बड़ी अदभुत है इसीलिए प्रभु का गुणगान गाना हमारे लिए अनिवार्य है मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार अपनी विवेचना प्रगट की अपना वाक् प्रगट किया तो हम मानो मौन हो गएं और मौन हो करके वहाँ से हमने गमन किया मानो देखो, वह प्रातःकालीन देखो, ब्रह्मयाग में क्या देव याग में लगे रहते थे देवयाग एक ऐसा याग है जिसके ऊपर अनुसन्धान करता-करता मानव लोक-लोकान्तरों की यात्रा करने लगता है मानो उस विज्ञान को जानने लगता है।

मेरे प्यारे! देखो, मैं विशेष न देता हुआ विचार केवल यह क्या मुनिवरों! देखो, मैं दो की विवेचना कर रहा

## याग एक सर्वांग पूजा

था यह संस्कारों को कैसे जागरूक करता है? कैसे याग को करता है मेरे प्यारे! देखो, मन और प्राण का दोनों का एकोकीकरण करने में लगा रहता है। तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है, क्या मैं यागां ब्रह्म लोकां क्या यज्ञमान जो याग करता है उसके दो होता हैं दो होताओं के द्वारा वह याग कर रहा है याग करना चाहिए। क्योंकि दो होता है मानो एक मनस्तव है, एक प्राणतव है। मेरे प्यारे! एक ब्रह्म की छाया है। तो एक प्रकृति कर छाया है दोनो का एकोकीकरण करना मोक्ष की पगडण्डी है, दोनो का विभाजन हो जाना, यह संसारीय जगत है। मेरे प्यारे! देखो, इसमें नाना प्रकार का विज्ञान भी विभक्त क्रिया में लगा हुआ है।

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब बेटा! साधक अपने में साधना में परिणत है, जो मुनिवरों! देखो, भौतिक विज्ञानवेत्ता, अपने में भौतिक विज्ञान में लगा हुआ है, और भौतिक विज्ञानवेत्ता बेटा! देखो, कहाँ ले जाता है, आध्यात्मिक विज्ञान तो अन्धकार से रहित हो जाता है, आलंकारिक वाक्यों को अलंकार रूप में स्वीकार करता है, जैसे बेटा! मैंने तुम्हे कई काल में, वर्णन कराते हुए कहा है वर्णन करते हुए कहा है कि हम अपने स्वरूप को जब हम जान लेते है तो अन्धकार हमसे भिन्न है, साहित्य हमसे भिन्न है, विचारधाराओं में जो यौगिक अलंकार है, वह बेटा! देखो, आत्मा में समर्पित हो जाता है। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! देखो, मैं आज मैं अलंकारों की चर्चा नही करूंगा। क्योंकि विचार केवल यही है कि हम दो होताओं के द्वारा याग करें, बेटा! जब यज्ञमान अपना याग करता है, साकल्य प्रदान करता है, श्रद्धामयी घृत की आहुति देता है मानो वह सर्वांग पूजा कर रहा है देवताओं की सर्वांग पूजा हो रही है मुनिवरों! देखो, अग्नि का वह जल का पूजन कर रहा है, अग्नि में साकल्य का विभाजन कर रहा है, अग्नि विभक्त करने वाली है बेटा! उसका सूक्ष्म रूप बना देता है मेरे प्यारे! देखो, इतना विशाल अपने में मानो देखो, यागों की विस्तृत विवेचना की गई है, आचार्यों ने, बहुत अनुसन्धान किया है, आज मैं उस अनुसन्धान में तो जाना नही चाहता हूँ।

मैंने इससे पूर्व काल में, वर्णन करते हुए कहा था बेटा! देखो, महाराज अष्टावक्र जब विद्यमान थे, एक समय प्रातःकालीन वह याग कर रहे थे तो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी यज्ञदत ने कहा प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ क्या वेद में अभी-अभी आप ने एक मन्त्र उच्चारण किया है यज्ञाम् ब्रह्मा स्वाहाः वृतम आत्मा रथं ब्रह्मे कृतं वेद का वाक् कहता है कि यह जो यज्ञ है यह आत्मा का शरीर है, और मानो देखो, यह आत्म तत्त्व से शरीर से जो यज्ञमान स्वाहाः कहता है वह यज्ञ की आत्मा माना गया है, तो मानो देखो, यागां ब्रह्मे यह याग की आत्मा का प्रसंग कैसे आता है? उन्होंने कहा तुम नही जानते मानो देखो, यह पूर्व काल में प्रगट कर चुकं हैं, जब मानव याग करता है, तो एक ध्वनि उत्पन्न होती है और उस ध्वनि के साथ में वह कहता है स्वाहा क्योंकि उसका हृदय से सम्बन्ध है, क्योंकि वाणी ही अग्नि है, और मानो देखो, पदार्थ रूप में अग्नि भी अग्नि है जब दोनो अग्नियों का मिलान होता है तो एक ध्वनि उत्पन्न होती है उसे स्वाहा कहते हैं। क्या प्रत्येक वस्तु के स्वाहा का अर्थ है, प्रशंसा करना है। और देवताओं का उसके गर्भ में, एक आह्वान होता है आह्वान करता है वह कहता है आईए स्वाहाः कहते हैं मानो देखो, मैं आपका स्वागत कर रहा हूँ मैं आपको मानो अपने हृदय में धारण करना चाहता हूँ। तो मुनिवरों! देखो, जो मानव जिसको अपने हृदय में धारण करता है, वह धारयामि बना करके बेटा! वही हृदय की आत्मा, वही मानो देखो, यज्ञ की आत्मा माना गया है।

मेरे पुत्रों! देखो, एक समय यह प्रसंग हुआ ऋषि-मुनियों में, क्या संसार की पृथ्वी की नाभि क्या है? मेरे प्यारे! ऋषि-मुनियों में यह प्रसंग हुआ, क्या इसकी नाभि क्या? तो आचार्यों ने कहा क्या यह पृथ्वी की नही मानो इस ब्रह्माण्ड की नाभि ही याग माना गया है। मानो देखो, नाभि ही याग है। देखो, नाभ्यां देवं ब्रह्मा वह मध्य ही याग है। तो जितना भी मानव सुकर्म करने में लगा रहता है, सुक्रियाकलापों में रहता है, मेरे प्यारे! देखो, वह

क्रिया, इस सर्व संसार की, अथवा ब्रह्माण्ड की आत्मा, ब्रह्माण्ड की नाभि माना गया है। क्योंकि नाभि का अभिप्रायः है, मध्य तो मेरे प्यारे! देखो, मध्यं ही हृदयं ब्रह्मा मानो देखो, वही तो नाभि कहलाया गया है तो इसीलिए पृथ्वी की नाभि याग है मेरे प्यारे! पृथ्वी की नाभि ही याग है जिसको हम विचारना चाहते हैं तो मेरे प्यारे! विचार क्या हम उस नाभि में प्रवेश करना चाहते हैं जिस नाभि से हमें अमृत प्राप्त होता है यह बेटा! देखो, प्रसंग कितना विचित्र आ जाता है मानो देखो, एक शब्द के उद्बुध होते ही प्रसंग उत्पन्न हो गया मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में जब बाल्य होता है, तो नाभि के द्वारा ही चन्द्रमा से अमृत आता है। मेरे प्यारे! देखो, वह अमृत कैसे आता है, मुनिवरों! देखो, तेजोमयी की तरंगे बेटा! वह शीतलता में परिणत हो जाती हैं। वह चन्द्रमा में सम्मिलन करती हैं, क्योंकि चन्द्रमा का सम्बन्ध समुद्रों से होता है, समुद्रों से जलों का उत्थान होता है, और जल और देखो, चन्द्रमा की जो कान्ति मानो देखो, दोनो का मिश्रण हो करके तरंगे बन करके, मेरे प्यारे! देखो, माता के रसना के निचले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी है। उस नाड़ी का सम्बन्ध मानो माता की पुरातत नाम की नाड़ी से है, पुरातत नाम की नाड़ी का सम्बन्ध मुनिवरों! देखो, पंचम नाड़ी से है, पंचम नाड़ी माता की लोरियों मे से गमन करती हुई माता की नाभि से समन्वय हो करके बाल्य हम जैसे शिशु जब गर्भ में होते हैं। जब दोनो का समन्वय हो जाता है, तो अमृत प्रदान किया जाता है, वह अमृत कहाँ-कहाँ से आता है, बेटा! यह कितना विचित्र उस मेरे प्यारे प्रभु का विज्ञान है। आज जब हम प्रभु के विज्ञान पर विचरण करते हैं, तो बेटा! कोई शब्द ऐसा नही आता, जो मानो देखो, हम उसको अपने से दूरी कर दें। मेरे पुत्रों! देखो, विचार आता है, एक-एक वाक् जब हम विचारते रहते हैं, तो नाभि क्या? हुई बेटा! देखो, इस संसार की यज्ञ की नाभि है। यज्ञ ही नाभि है।

मेरे पुत्रों! देखो, नाभ्यां ब्रह्मा बालक की नाभि बेटा! देखो, मध्य माना गया है, माता की नाभि ही मध्य माना गया है, मेरे पुत्रों! देखो, जिससे यागों की रचना होती रहे। भिन्न-भिन्न रूपों में बेटा! याग हो रहा है, आज मैं उसका प्रसंग विशेष गम्भीरता में तुम्हें नही ले जा रहा हूँ। यह बेटा! बहुत गम्भीर मैंने अपने इन वाक्यों को लग गया हूँ, विचार केवल यह है कि आज हम अपने मानवीयतव को मानो देखो, उसी में ले जाएं मुनिवरों! देखो, माता का नाभि बालक का नाभि दोनो का समन्वय हो करके बेटा! अमृत को प्रदान किया जा रहा है। वह याग हो रहा है। उसमें केवल दो होता हैं, एक माता होता है, एक देवतव चन्द्रमा होता है, जो अमृत दे रहा है, जिसके द्वारा अमृत जा रहा है। जो पान कर रहा है, मेरे प्यारे! देखो, वह याग माना गया है, बेटा! यह कैसा अनुपम जगत है, कैसा उस मेरे प्यारे प्रभु की रचना है।

आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष चर्चा तो तुम्हें देने नही आया हूँ विचार केवल यह कि मानो दो का मानो दो में ही जगत समाहित हो रहा है। यदि दो का एकोकीकरण हो जाए, तो मुनिवरों! देखो, मानव का मोक्ष हो जाए, और मानव अपने प्रभु से मिलन करके मेरे पुत्रों! देखो, उसी में रत्त हो जाता है। तो इसीलिए मुनिवरों! देखो, मानव का यागाम ब्रह्मे याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में विराजामन हो करके ब्रह्मचारियों को बेटा! यह शिक्षा दे रहे थे और उच्चारण कर रहे थे कि दो से यज्ञमान याग करे, इसके दो होता हैं। बेटा! मन और प्राण मानो देखो, दो होता हैं। असुतम् ब्रह्मे मेरे पुत्रों! देखो, दो होता हैं, ब्रह्मा और उद्गाता उद्गीत गा रहा है, मानो देखो, ब्रह्मा उसके कौतुक को दृष्टिपात कर रहा है। और यज्ञमान को मानो दोनो मिलन हो करके दोनो एक आहुति बना करके बेटा! देखो, यज्ञमान के समीप जा करके और मुनिवरों! देखो, यज्ञमान उसका स्वाहाः कह देता है। तो मेरे प्यारे! देखो, दो यज्ञमान देखो, वह उद्गाता और ब्रह्मा दोनो एकोकीकरण करके यज्ञमान को ला करके बेटा! वह याग कर रहे हैं। मेरे पुत्रों! देखो, मैं विशेष चर्चा देना नही चाहता हूँ। यह तो बड़ा विशाल बन है, बेटा! मैं तो बन में आ गया हूँ, और ऐसे भंयकर बन में आ गया जहां मानव तरंगे ही तरंगे दृष्टिपात आ रही हैं। मार्ग दृष्टिपात नही आ रहा है।

**याग एक सर्वांग पूजा**

तो मेरे प्यारे! देखो, विचारों का विचार मानो देखो, यह बन है, इस बन को मैं विशेषता न दे करके केवल विचार क्या आज बेटा! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा क्या दो के द्वारा बेटा! याग हो रहा है, दो होता है, यज्ञमान को इसी के द्वारा याग करना है। मेरे पुत्रों! देखो, जब यज्ञमान प्रसन्न हो गया ब्रह्मचारियों ने ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और यह कहा कि-प्रभु! धन्य है, आपके हृदय में कितना आगाध गम्भीर ज्ञान विज्ञान विद्यमान है। आप तो बड़े मानो देखो, महान हैं याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के चरणों को स्पर्श किया उन्होंने कहा कि नहीं स्पर्श ब्रहे यह तो सब ऋषि-मुनियों की देन है, यह तो अष्टावक्र जैसे महापुरूषों से मानो देखो, यह शिक्षाएं प्राप्त होती रहती हैं। तो बेटा! देखो, विचार हमारे यहाँ क्या मुनिवरों! देखो, दो से यज्ञमान याग करेगा, तो इससे यागाम् ब्रह्मा यागाम् लोकाः तो इस याग के ऊपर बेटा! देखो, बहुत गम्भीरता से मानव ने इस संसार में अध्ययन किया है। ऋषि-मुनियों ने एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके वेद का अध्ययन वेद के मन्त्रों को दृष्टा बन करके एक-एक मन्त्र के ऊपर अध्ययन किया। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए, विचार केवल यह चल रहा है, क्या दो से बेटा! यज्ञमान याग करेगा और वह आध्यात्मिकवाद भी उसमें आ गया, भौतिक विज्ञान भी आ गया बेटा! आध्यात्मिकवाद यह कि मन और प्राण का दोनों का एकोकीकरण करना है, प्रभु से मिलन करना है, मेरे प्यारे! बाह्य जगत में अग्न्याधान हो रहा है। यज्ञमान याग कर रहा है तो मुनिवरों! देखो, वह शुद्धि अपने विचारों की मानो देखो, साकल्य के साथ में वेद मन्त्रों की पुट लग करके वह अपनी मानो सात्विक स्वाहाः विचार को बेटा! देखो, द्यौ लोक में प्रदान कर रहा है। द्यौ लोक से इस संसार का शुद्धिकरण होता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह विचार आज का अब हमारा समाप्त होने जा रहा है, आज के विचारों का अभिप्रायः क्या है? क्या मुनिवरों! देखो, दो के आश्रित हो करके यह दो का जगत है, चाहे पृथ्वी मण्डल में चले जाओ, चाहे चन्द्रमा में चले जाओ, चाहे मंगल में चले जाओ, मानो चाहे शुक्र इत्यादि किसी भी लोक में चले जाओ, सूर्य लोक में क्यों न चले जाओ, परन्तु मानो देखो, सबमें दो के रूप में यह संसार तुम्हें दृष्टिपात आयेगा। जहाँ तृतीयवाद आ जाएगा वही मानो देखो, दोनो की प्रवृत्तियों में भिन्नता आ जाती है, मेरे प्यारे! देखो, उसमें तृतीयवाद आते ही मानो विरोधाभास आ जाता है, वह विरोधाभास न रह करके दो होताओं से हम अपना याग करें। मन और प्राण को दोनो को एक सूत्र में लाने का प्रयास करें। मेरे प्यारे! देखो, कल मुझे समय मिलेगा तो एक प्रसंग और रह रहा है। इस मानो माला का इस माला का एक मनका और है, जिसको मेरे पुत्रों! देखो, एकोकीकरण यज्ञमान ने यह प्रश्न किया क्या महाराज प्रश्नकर्त्ता ने यज्ञमान को मध्य में कहा कि हे ऋषिवर! यज्ञमान याग करना चाहता है। कितने होता हों, उन्होंने कहा होता एक होना चाहिए। तो एक कहा प्रश्न कल उच्चारण करेंगे आज का विचार बेटा! यह समाप्त होने जा रहा है। कल समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मानाः वाचन गतौ सर्वा आभां दधि वाचन्नमाः ओ३म् सर्वाणि वसौ मां गताः। दिनांक ०५ १२ १९८६

# ८ एक होता ०६ १२ १९८६

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, उस पवित्र वेदवाणी में उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह हमारा वरणीय है, वह विज्ञानमयी स्वरूप है, मानो वह एकोकी में गति करने वाला है, इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की, प्रायः महिमा का गुणगान गाते रहते है क्योंकि जब उसकी रचना के ऊपर विचार-विनिमय प्रारम्भ करते है तो उसका एक अनूठा ऐसा ज्ञान और विज्ञान है, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक, मानव अनुसन्धान करता रहा है और उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर, भिन्न-भिन्न प्रकार की टिप्पणियाँ करता रहा है। परन्तु उसका ज्ञान और विज्ञान इतना नितान्त माना गया है कि कोई भी वैज्ञानिक उसके ज्ञान और विज्ञान को माप नहीं सकता। क्योंकि वे सीमा में आने वाला नहीं है, उसे कोई, मानो सीमाबद्ध भी नहीं कर सकता, क्योंकि जहाँ मानव अपने में वैज्ञानिक स्वीकार करता हुआ और विज्ञान के वांगमय में जब प्रवेश करता है तो विज्ञान इतना अनूठा बन जाता है, क्योंकि विज्ञान उस ब्रह्म का आयतन है, सदन है, गृह है। तो जो जिसका गृह है वह उसमें समाहित हो रहा है इसीलिए वह मापा नहीं जाता, उसका कोई मापदण्ड भी नहीं है।

## कृत्य कर्म की पुनः प्राप्ति

परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र जहाँ उस परमपिता परमात्मा के उस माला और मनको की जहाँ चर्चाएं होती रहती है बेटा! मैंने तुम्हें कई कालों में मानो नाना प्रकार के मनको की चर्चाएं की है और उन मनको की चर्चाएं क्या है, एक ब्रह्म सूत्र में उसे पिरोना है, क्योंकि मानव जब माला को अपने में धारण कर लेता है, तो वह मुनिवरों! देखो, एक अनूठा बन जाता है। प्रत्येक वेदमन्त्र में मानो शब्दों की ध्वनि है और उस ध्वनि में, उसमें मानो देखो, ध्वनि भी कहीं पिरोई हुई है ध्वनि का भी कोई सूत्र है। बेटा! जो उसमें पिरोई हुई है। उस पिरोई हुई के नाते मानो ब्रह्मे वर्णासम्भवाः वेद की आख्यिका कहती है, उस माला को हमें धारण करना है। जैसे बेटा! एक-एक परमाणु में ब्रह्माण्ड है, एक-एक शब्द में चित्र है। मानो उसका चित्र है और उसके क्रियाकलाप भी विद्यमान है और उसकी मुनिवरों! देखो, वह कहाँ समाहित होता है, कोई तो कहता है, कि याग की, अग्नि की तरंगों में रहता है। मैं यह कहा करता हूँ, बेटा! वह अन्तरिक्ष में रहता है, मानो शब्द और उसका क्रियाकलाप। इसीलिए हमारे आचार्यों ने बड़ी एक विचित्र वाक् प्रगट करते हुए कहा है कि मानव को कोई ऐसा क्रियाकलाप नहीं करना चाहिए जो अन्तरिक्ष में मानो उसकी जहाँ स्थिति हो जाती है, जहाँ वह मानो समाहित हो करके पुनः से, उसी के समीप आता है और वह उसको भोगतव्य में लगा देता है। तो बेटा! मैं आज इस सम्बन्ध में कोई तुम्हें विचार देने नही आया। आओ, बेटा! आज मैं तुम्हें याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ जहां महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहां बेटा! नाना प्रकार के यागों में मानव तन्मय रहा है, बेटा! मानो मैं उसी रूपक में जाना चाहता हूँ जहां एक मानव अपना एक अलंकार बना लेता है उस अलंकाकिर विवेचना में बेटा! आज मैं तुम्हे ले जाना चाहता हूँ, मुनिवरों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ब्रह्मचारियों के मध्य में विराजमान हैं और ब्रह्मचारियों के मध्य में वह ब्रह्मचारियों से वह प्रातःकालीन ब्रह्मयाग के पश्चात जब देव पूजा करने लगे देव याग में परिणत होने लगे और वह भी सम्पन्न जब हुआ तो ब्रह्मचारियों से कहते हैं कोई ब्रह्मचारी प्रश्न कर सकता है तो मुनिवरों! देखो, जब ऋषि ने यह वाक् कहा तो ब्रह्मचारियों ने अपना रूपक बना, उन्होंने एक अलंकार और वह प्रश्नों की एक सूची बनाई।

तो मुनिवरों! देखो, उन ब्रह्मचारियों ने यह प्रश्न किया कि भगवन! ब्रह्मा वाचप्रह्वा वर्णाप्रह्वे व्रत्तम् हे प्रभु!

## याग एक सर्वांग पूजा

हमारा यही प्रश्न है, कि मानो देखो, यज्ञमान याग करना चाहता है, इससे मानो कितने होताओं से याग होता है? मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, मानो चौबीसवें मनके से ले करके, उन्होंने बेटा! देखो, दो होताओं तक मानों देखो, उसकी गणना में लगाया। अब बेटा! देखो, ऋषि कहता है कि हे ब्रह्मचारियों! यह प्रश्न तुम क्यों कर रहे हो? क्योंकि तुम इसी प्रसंग में बहुत समय से लग रहे हो, तो तुम ऐसा प्रश्न क्यों कर रहे हो? मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारियों ने कहा-प्रभु! हमारी यह इच्छा रहती है कि प्रत्येक मानवीय क्रियाकलाप को जान लेना चाहिए। तो प्रभु! हम सदैव यह निर्णय करते रहते है, अपने में भी विचार-विनिमय करते रहते है। क्योंकि यह जो मानव का शरीर है और यह ब्रह्माण्ड है मानो ब्रह्माण्ड को और शरीर को, ये मापा है और दोनों का एकोकीकरण माना गया है। परन्तु देखो, यह सूक्ष्म है और यह ब्रह्माण्ड बहुत अनन्त में है। इस ब्रह्माण्ड में ऐसे-ऐसे मानो देखो, गणना करते-करते, गणना का भी समापन हो जाता है। जब हम प्रभु के राष्ट्र में, अथवा उसके विज्ञान में जब हम लोक लोकान्तरों में प्रवेश करते है, तो गणना भी शून्य पर चली जाती है। गणना का भी अपना कोई रहस्यतम नहीं माना गया है।

### एक होता से याग

तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा-एकां ब्रह्मा वर्णं प्रह्रे लोकाम् आचार्यों ने यह कहा-हे ब्रह्मचारियों! एक ही होता याग करता है। एक ही होता होना चाहिए। मेरे प्यारे! बड़ा विचित्र वाक् है। एक ही होता से कैसे याग होता है? मेरे प्यारे! देखो, एक ही ध्वनि से याग होना चाहिए, अब ध्वनियों में भी भिन्न-भिन्न प्रकार की तरंगें होती है। भिन्न-भिन्न प्रकार के उनके स्वर, व्यंजन होते हैं। परन्तु यह कैसे माना जाए? परन्तु याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा-हे ब्रह्मचारियों! तुम एक पंक्ति लगा लो, उस पंक्ति में विद्यमान हो जाओ, अब मानो जितना मैं जानता हूँ उतना वर्णन करूँगा। मैं यह नहीं कहता कि सर्व रूपेण, मैं उसकी विवेचना कर सकूँगा, परन्तु मैं जितना जानता हूँ उतने वाक् प्रगट करूँगा, क्योंकि मानव का मस्तिष्क भी अनन्तता की उड़ान उड़ने लगता है। मेरा मस्तिष्क भी वहीं तक मानो उड़ान उड़ता रहता है, जहाँ तक मैं उसे जानता हूँ। इससे आगे भी जानने वाला, यह जगत अनन्तता में दृष्टिपात आता रहा है। ऋषिवर, ब्रह्मचारी प्रसन्न हो गएं और उन्होंने बेटा! एक पंक्ति लगाई, उस पंक्ति में विद्यमान हो गये, यज्ञशाला, देखो, विद्यालय में यज्ञशाला है, उस यज्ञशाला में याज्ञवल्क्य मुनि महाराज विद्यमान है, अंग संग मानो देखो, ब्रह्मचारियों की पंक्ति लग गई है, उन्होंने कहा-कि एक होता याग में होना चाहिए। तुम्हें यह प्रतीत है कि यह याग क्या है?

### मन का एकोकीकरण

मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारियों से कहा-कि जितना भी संसार का मानो सु में क्रियाकलाप है, उस सर्वत्र का नाम मानो देखो, याग माना है। यागां रूद्रं भवा सम्भव प्रह्वा वेद का वाक् कहता है कि यह सब याग है। यदि माला में से सूत्र को निकास लिया जाए तो मानो देखो, मनके रह जाते है उनका कोई अस्तित्व नहीं रहता, वह माला नहीं बनेगी। मानो मैंने तुम्हें कई काल में, माला की चर्चाएं की है मेरे प्यारे! देखो, एक ही माला को एक ही धारण कर रहा है जैसे सूर्य नाना पृथ्वियों को धारण कर रहा है, परन्तु सूर्य एक है, यदि उसमें से सूत्र को निकास लिया जाए, तो इस पृथ्वी का कोई महत्व नहीं रह पाता। मेरे प्यारे! देखो, इसलिए वह एकोकीकरण है और एक ही होता है। मानो देखो, याग करने वाला यज्ञमान याग कर रहा है, यज्ञशाला में विद्यमान है। यदि यज्ञशाला में से अग्नि को निकास लिया जाए, तो याग का कोई महत्व नहीं रहता। मेरे प्यारे! देखो, याग अपने में याग नहीं रहेगा, सुगन्ध नहीं रहेगी, सुवास नहीं रहेगी मानो साकल्य का भी जड़वत रूप बन जाएगा। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि कहते है-कि वह जो परमपिता परमात्मा है मानो साधक विद्यमान है और वह साधक, जब साधना करता है तो मानो देखो, एकोकीकरण को ले करके करता है। मेरे पुत्रो! देखो, जब वह साधना में परिणत होता है, साधना करता है,

## याग एक सर्वांग पूजा

कहीं मानो देखो, एकोकीकरण जब, साधक का हो जाता है तो मन एकाग्र हो जाता है और मन के एकाग्र होने पर मानो देखो, मन कहीं एकाग्र हो करके कहीं समाहित होता है, उसका एकोकीकरण बन जाता है। और एकोकीकरण जब बन जाता है तो वह मानो बेटा! मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है। तो मानो देखो, एकोकीकरण है। एक ही होता बना हुआ है, मानो देखो, जो मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कराता है।

### त्रैतवाद

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने अपने विचार देते हुए कहा, अपना वक्तव्य देते हुए कहा, कि एक लोक है उस लोक के साथ में, नाना प्रकार के लोक उससे सहायता ले रहे है। परन्तु देखो, वह माला बन जाती है, उस माला को एक लोक धारण करता है। मानो देखो, वह जो माला बन गई है, वह माला एक है, यदि उसमें से लोक को पृथक् कर दिया जाए, तो वह माला, माला नहीं रहेगी, मानो देखो, वह बिखर जाएगी। उसका अपना अस्तित्व नहीं रह पाता। तो मेरे प्यारे! देखो, एकोकीकरण है यह संसार में, मुझे स्मरण आता रहा है हमारे यहाँ उपादान, निमित्त मानो देखो, यह अपने में रूद्रम् अशुद्ध माना गया है जैसे बेटा! देखो, हमारे यहाँ एक निर्माणवेत्ता है, एक निर्माण होने वाली वस्तु है, और एक उसको मानो देखो, ग्रहण करने वाला है। तो यह त्रैतवाद हो गया। मानो देखो, हमारे यहाँ महर्षियों ने बेटा! इसके ऊपर भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार दिए है, मानो देखो, सांख्यवेत्ता ऋषि कहता है, हमारे यहाँ सांख्य सिद्धान्त सर्वोपरि रूप में माना गया है। ऐसा बेटा! मुझे स्मरण आता रहा है क्या, सांख्य ऋषि मानो देखो, द्वापर के काल में भी हुए है और सांख्य त्रेताकाल में भी हुए है और सांख्य, ऋषि बेटा! सतोयुग के काल में भी हुए है। परन्तु यह ऐसा क्या है सांख्य, बेटा! देखो, यह सांख्य हमारे यहाँ एक उपाधि मानी जाती है, और वह जो उपाधि है वह सांख्य है, जो त्रैतवाद के ऊपर अपनी टिप्पणियाँ करता रहता है और साधारण प्राणियों के लिए क्या, सर्वत्रता में मानो देखो, एक निर्माण होने वाली, एक निर्माण करने वाला और एक उसको अपने में ग्रहण करने वाला, उसका भोगता बन जाता है। तो यह त्रैतवाद माना गया है। इसको तृतीय में परिणत कहते है।

परन्तु देखो, जब इसके ऊपर गम्भीरता से विचार होता है यदि मानो देखो, उसमें से निर्माणवेत्ता को, हम दूरी कर देते है तो मानो देखो, दोनों का कोई अस्तित्व नहीं रहता। मेरे प्यारे! दोनों का अस्तित्व शून्यवत् भी मानो एक शून्य बन जाएगा और एक मानो देखो, इसके समीप पहुँच जाएगा। परिणाम क्या मुनिवरों! देखो, एकोकीकरण मानो देखो, एक होता है जो निर्माण करता है, उसकी इच्छा, इच्छा वाले की इच्छा को पूर्ण कर रहा है। तो मानो देखो, एकोकीकरण हो गया। वह एक होता है मानो देखो, इसको याग रूप में, हम एक ही होता के द्वारा स्वाहा कहते है।

### तीस लाख पृथ्वियाँ

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, मानो देखो, सूर्य नाना प्रकार के मानो देखो, अपने में ऊर्ज्वा को प्रदान करने वाला है, नाना प्रकार की जो किरणें है वह मानो देखो, अपने-अपने क्रियाकलापों में रत्त है, उसी सूर्य की ऊर्ज्वा से मानो देखो, पृथ्वी में, पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थों का जन्म हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, नाना प्रकार के खनिज, रत्न और देखो, निर्माणित हो जाते है। परन्तु देखो, एक ही सूर्य है, यदि सूर्य की दाह, ऊर्ज्वा समाप्त हो जाए, तो बेटा! देखो, वह निर्माण, निर्माण नहीं रहेगा। मुझे कुछ ऐसा स्मरण है बेटा! वैज्ञानिकों के कथनानुसार महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! देखो, जब अनुसन्धान होने लगा, तो तीस लाख पृथ्वियों तक वैज्ञानिकों ने जाना और तीस लाख पृथ्वियों की मानो देखो, जहाँ वह पिरोई हुई थी, माला के रूप में मुनिवरों! देखो, उनको धारण करने वाला यह सूर्य कहलाता है। और यह सूर्य मानो तीस लाख पृथ्वियों की माला

बना करके, अपने में धारण कर रहा है। मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे यह वर्णन कराया कि अभी जो वर्तमान का काल है, वर्तमान के वैज्ञानिकों ने मानो तेरह लाख पृथ्वियाँ जानी है।

## सूर्य मण्डल की विशालता

परन्तु मैं यह कह रहा हूँ कि पूर्व जो अतीत का काल चला गया है। मानो उस काल के वैज्ञानिकों ने तीस लाख पृथ्वियाँ जानी है और तीस लाख पृथ्वियों को मानो देखो, उनकी माला बना करके, सूर्य अपने में धारण कर रहा है। सूर्य इतना विशाल मण्डल है, जिसमें तीस लाख पृथ्वियाँ समाहित हो जाती है मानो देखो, इनको धारण करने वाला, एकोकीकरण कौन? सूर्य है। यदि सूर्य पृथ्वियों के मध्य में से दूरी कर दिया जाए, तो मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वियों का मानो इनका क्रियाकलाप समाप्त हो जाएगा, कोई धारण कर रहा है, उस धारणवेत्ता को, मानो सूत्र को हमें स्वीकार करना होगा। मेरे प्यारे! देखो, इस सूत्र को जब हम अपने में सूत्रित करते है तो विचार आता है यह कैसा अनुपम है, मेरे पुत्रां! देखो, इस सन्दर्भ में और भी नाना प्रकार की चर्चाएं मानो एकोकीकरण की आती है, मानो वह जो चेतनामयी, जो सर्वज्ञ है, सर्वशक्तिमान है जो मानो देखो, कोई वस्तु, कोई परमाणु ऐसा नहीं, जहाँ वह चेतना न हो, जो चेतना एक है, परन्तु उसको धारण करने वाले मानो अनेकता में परिणत रहते है। परन्तु वह भी एकोकीकरण आता है हमारे यहाँ एक ही होता है जिसको प्रायः हम धारण करने लगते है।

## भगवान राम व भरत की राष्ट्रीय चर्चा

बेटा! मुझे वह काल स्मरण आ रहा है आज, जब भगवान राम मानो लंका को विजय करने के पश्चात् मेरे प्यारे! देखो, कहीं अयोध्या में एक सभा हुई थी, उस सभा में मुनिवरों! देखो, नाना ऋषिवर विद्यमान है जिसमें महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज और महर्षि विभाण्डक, महर्षि वैशम्पायन, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धी और मुनिवरों! देखो, महर्षि विश्वेश्वर और वरुणकेतु विभाण्डीवृत्तिका मेरे पुत्रों! देखो, नाना ऋषि-मुनियों का एक समाज और नाना राजा भी, जिसमें महाराजा शिव, मेरे प्यारे! देखो, हिमालय में जो राष्ट्र का पालन कर रहे थे, वह भी मानो देखो, इस सभा में विद्यमान हुए तो मानो देखो, यह विवाद होने जा रहा था, जब दोनों का, यह मानो देखो, राम और भरत का, दोनों का विवाद था और वह विवादों में मानो देखो, उनका यह संघर्ष चल रहा था, कि आप राष्ट्र को मानो देखो, भोगतव्य बनाओ और मैं मानो देखो, इससे मैं मुक्त हो जाऊँ। राम कहते थे कि नहीं भरत! इस राष्ट्र का अधिकार मुझे नहीं है, मैं इसके अधिकार को अभी ग्रहण नहीं करूँगा।

## कर्तव्य के लिए राष्ट्र

मेरे पुत्रों! देखो, अब ऋषि-मुनियों की सभाओं में यह प्रसंग आया कि राम को राज करना चाहिए अथवा नहीं। तो मेरे प्यारे! क्योंकि उनका यह कथन है कि मैं इस अयोध्या के राष्ट्र का, अब मुझे अधिकार नहीं है जहाँ मानो देखो, माता मलदाल्सा जैसी, पुत्रां को जन्म दे करके, पाँच वर्ष के ब्रह्मचारी को ऋषि बना सकती है, आज मानो देखो, मेरे में वह शक्ति कहाँ है? मैं मानो देखो, इतना पारायण नहीं हूँ मैं अप्रतं ब्रह्मा मैं राष्ट्र को नहीं भोग सकता। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि ने और भी नाना चर्चाएं की। परन्तु देखो, इसमें महर्षि प्रवाहण जी ने यह कहा कि राम! तुम्हे राज्य भोगना चाहिए। उन्होंने कहा-प्रभु! क्यों? क्योंकि राष्ट्र को, कोई न कोई इसको क्रियाकलाप में लाएगा, यह भोगना नहीं है इसमें तो मानव को सात्विक मार्ग लेना है। मानो राष्ट्र का पालन तो वहीं होता है, जो सत्य मार्ग देता है, राज्य का अधिकार किसी प्राणी को नहीं है संसार में, क्योंकि यदि उसमें कर्त्तव्यवाद की भावना नहीं है यदि उसमें अहिंसा परमोधर्म की भावना नहीं है, मानो देखो, वह मानव को मानवता नहीं दे सकता तो उसे राष्ट्र का अधिकार नहीं होता, मानो देखो, उन्होंने कहा-कि आप सर्वज्ञता में जानने वाले है, आप इस राष्ट्र को मानो देखो, भोगतव्य क्या, इसको कर्त्तव्यवाद में लाने का प्रयास कीजिए, मेरे प्यारे! देखो,

## याग एक सर्वांग पूजा

भगवान राम ने इन वाक्यों को पान करते हुए, प्रवाहण जी के वाक्यों को पान करके वह मौन हो गये। और प्रवाहण जी भी मौन हो गये।

मेरे प्यारे! बारी-बारी से सब ने यह कहा कि राष्ट्र का अधिकार होना चाहिए, जब वशिष्ठ मुनि ने यह कहा-कि राष्ट्र तो वास्तव में राजा का कोई न कोई तो अधिकारी इसका बनेगा। मेरे प्यारे! राम ने कहा-कि भगवन! आप अपने अन्तर्हृदय से माता अरुंधती और आप दोनों यह उच्चारण कर दो कि मैं राष्ट्र का, अयोध्या में पालन करूँगा तो मैं अवश्य कर पाऊँगा। परन्तु वे दोनों मौन हो गये।

महाराजा शिव उपस्थित हो करके बोले-कि महाराज! राम को कोई अधिकार नहीं है राष्ट्र का, मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने क्यों कहा? महर्षियों ने कहा-ऐसा आप ने क्यों कहा है? उन्होंने कहा-मैंने यह इसलिए कहा है क्योंकि ये अभी-अभी लंका को विजय करके आए है, और जब भी मानो कोई किसी राष्ट्र को विजय करता है तो उसमें रजोगुण, तमोगुण की भावना बलवती हो जाती है और जहाँ राजा में रजोगुण और तमोगुण बलवती होता है वहाँ वह राजा अपने राष्ट्र में, प्रजा का पालन नहीं कर सकता है। मेरे प्यारे! यह वाक् बड़ा महत्वपूर्ण था। मुनिवरों! देखो, राम अपने मन ही मन में बड़े हर्षध्वनि कर रहे थे, शिव ने कहा-कि अभी-अभी इनको मानो देखो, तप करना चाहिए और जब तप करेंगे तो मानो देखो, इनका एकोकीकरण होगा। तो मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् राम ने स्वीकार कर लिया, ऋषि-मुनियों ने भी मानो देखो, अपनी एक ही वाणी से, सभी ने उनका समर्थन किया। परन्तु भरत को यह कहा गया कि मानो जैसे तुम यहाँ विद्यमान हो, ऐसे ही तुम राष्ट्र के लिए क्रियाकलाप करते रहो।

### भगवान राम द्वारा बारह वर्ष का तप

तो मेरे प्यारे! मुझे ऐसा स्मरण है कि राम बारह वर्ष के लिए मुनिवरों! देखो, भयंकर वन में चले गएं और दण्डक वनों में जा करके उन्होंने बेटा! देखो, एकोकी ईश्वर का चिन्तन करना प्रारम्भ किया मानो देखो, वह एक होता के द्वारा मानो वह याग करने लगे और याग का नाम ही मुनिवरों! देखो, तप है। क्योंकि इन्द्रियों का साकल्य जैसे मानव का हृदय है, मानो के हृदय में भी एक ही होता बना हुआ है, मेरे पुत्रों! देखो, मानव की जैसे मानव के नेत्र, नाना प्रकार के रूप को लाते है उनकी सबकी स्थिति बेटा! हृदय में समाहित हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, हृदय में समाहित है, शब्द आते है तो वह भी हृदय में है, मेरे प्यारे! देखो, ध्वनियाँ आ रही है, वे हृदय में है मुनिवरों! देखो, नाना सुगन्ध आ रही है वह भी हृदय में है। वह इतना नाना प्रकार के रसों का स्वादन कर रही है इसकी भी स्थिति हृदय में विद्यमान है। यदि मानव के शरीर से हृदय को निकास लिया जाए तो बेटा! देखो, याग समाप्त हो जाएगा। वेद का आचार्य कहता है यदि हृदय में हृदय नहीं रहेगा, क्योंकि इस हृदय का सम्बन्ध परमात्मा के हृदय से होता है। जब यह मानो देखो, मोक्ष की पगडंडी को ग्रहण कर लेता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने, जब अपना निराकरण किया, ब्रह्मचारी चरणों में ओत-प्रोत हो गये। उन्होंने कहा-धन्य है, प्रभु! मेरे पुत्रों! देखो, मानव के हृदय में ही, नाना प्रकार के उद्गारों का जन्म होता है। बेटा! देखो, हृदय में श्रद्धा होती है और हृदय में ही दक्षिणा होती है, और हृदय में याग होता है और, हृदय में ही प्रजापति के भाव होते है और हृदय में ही मेरे पुत्रों! देखो, गन्धर्व मण्डलों की गणना होती है और हृदय में ही मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार के सौर मण्डलों की गणना, मानव करने लगता है। तो हृदय कैसा विशाल है? जब हम परमात्मा के हृदय से और अपने हृदय को मापने लगते है तो बेटा! हृदय से हृदय का जब मानो समन्वय होता है, तो उसी को बेटा! एकोकीकरण कहते है। उसी को हम बेटा! देखो, मोक्ष की आभा में निहित कर देते है, उसी एकोकीकरण का नाम ही तो मोक्ष कहा गया है। मानो देखो, एकोकी एक से अनेकता का जहाँ प्रश्न आता है और एकता में मोक्ष नहीं होता, मोक्ष मानो अनेकता को एक सूत्र में लाने से, मनका बनाने से ही मानो देखो, मोक्ष की पगडण्डी प्राप्त होती है एकोकी हृदय हो जाता है।

## अभिमान में मृत्यु

मुनिवरों! देखो, चाक्राणी ने यहीं तो आ करके यह कहा था, जब ऋषि ने यह कहा था-कि हे चाक्राणी! तुम अति प्रश्न करोगी, तो तुम्हारा मस्तिष्क नीचे गिर जाएगा, तब मानो देखो, उन्होंने हृदय की वार्त्ता को प्रगट किया, हृदय अगम्यता में लाने का प्रयास किया, तो मानो देखो, हृदय पर आ करके ही, ऋषि ने यह कहा था तुम्हारा मस्तिष्क नीचे गिर जाएगा, मेरे प्यारे! क्योंकि हृदय का हृदय से समन्वय होता है और हृदय के आगे जो मानव प्रश्न करता है, वह निरुत्तर हो जाता है, मौन हो जाता है। और मुनिवरों! देखो, यदि वह अप्रतम् देखो, उससे उत्तर नहीं बन पाता, बुद्धिमान से भी तो मुनिवरों! देखो, प्रश्न कर्त्ता को अभिमान आ जाता है, अभिमान ही बेटा! मृत्यु कहलाती है।

## प्रलय का स्वरूप

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि यहाँ आ करके मौन हो जाता है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यह कहा-कि यह प्रसंग मानो देखो, हमारे यहाँ मानो देखो, प्रायः आता रहता है। जब मैं सौर मण्डलों में प्रवेश करता हूँ, सौर मण्डलों में से आकाशगंगा को निकास लिया जाए, तो मानो देखो, सौर मण्डल नहीं रहेगा, सौर मण्डलों में से यदि मानो प्राणप्रहे व्रतं देवाः मुनिवरों! देखो, एकोकीकरण को निकास लिया जाए, तो सौर मण्डल भी नहीं रहेगा। यदि आकाशगंगा में से मानो अवन्तिका को निकास लिया जाए, तो मुनिवरों! देखो, वह आकाशगंगा न रहेगी, अवन्तिका को निकास लिया जाए तो मेरे प्यारे! देखो, वह अब्रह्म ब्रहे वाचन्नमं ब्रहे कृतम् मुनिवरों! देखो, अवन्तिका का विनाश हो जाएगा और अवन्तिका के पश्चात् मानो देखो, निहारिका भी नहीं रहेगी। मेरे प्यारे! देखो, प्रलय का स्वरूप बन जाता है। मैंने तुम्हें कई काल में यह वाक् प्रगट किया है, कई कालों में इसकी चर्चाएं की है। यहाँ बेटा! गणना भी शून्य में चली जाती है। तो विचार विनिमय क्या, आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, मैं बेटा! व्याख्या नहीं देने आया हूँ, मैं न व्याख्याता हूँ, केवल परिचय देने के लिए चला आता हूँ यह तो मैं परिचय देता रहता हूँ, यदि एक-एक लोक लोकान्तरों के, क्रियाकलापों की चर्चा की जाए, तो बेटा! देखो, विज्ञान अपनी आभा में मानो गति करने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय क्या, देखो, वेद के ऋषि ने एकोकीकरण की चर्चा की, मैं राम की चर्चा कर रहा था।

## तप का स्वरूप

बेटा! राम जब तप करने चले गएं तो मानो देखो, तप किसे कहते है विचार आता है प्रत्येक मानव तप के ऊपर संयम करता रहता है तप को पुकारता रहता है। बेटा! तप कहते है, इन्द्रियों के संयम का नाम। मुनिवरों! देखो, तप कहा जाता है। इन्द्रियों के ऊपर जब संयम किया जाता है तो मानो मन, कर्म, वचन उसके साथ होते हैं। प्रत्येक इन्द्रिय के और मुनिवरों! देखो, इन्द्रियों का जो साकल्य है, उस साकल्य को एकत्रित करके मुनिवरों! देखो, जो हृदय रूपी यज्ञशाला में, बेटा! याग करके जो स्वाहा कह रहा है, वह बेटा! तप कर रहा है, वह तपोमय माना गया है। तपं हृदयाणि गच्छतं ब्रह्मे लोकां तपा वर्णोऽस्ते। मेरे प्यारे! देखो, उसका नाम तप है। तो राम मुनिवरों! देखो, बारह वर्ष के लिए, दण्डक वनों में चले गएं और उन्होंने प्रत्येक इन्द्रिय के ऊपर, संयम करते हुए उन्होंने बेटा! तप किया और जब उनका हृदय निर्मल और स्वच्छ बन गया मानो देखो, पुनः से, जब बारह वर्ष समाप्त हो गये, बारह वर्ष का अनुष्ठान मेरे प्यारे! देखो, कुछ वायु सेवन करते, कुछ जल पान करते, इन बारह वर्षों के अनुष्ठान में मानो कुछ अन्नाद भी पान करते थे। मेरे प्यारे! देखो, वह वायु का सेवन भी मुनिवरों! देखो, शीतली प्राणायाम के द्वारा, तो यह राम ने बारह वर्ष का तप किया तो बेटा! वह पवित्र बन गये।

## तप से राष्ट्र

## याग एक सर्वांग पूजा

एक समय जब वह तप कर रहे थे, तप का समापन होने वाला था, अनुष्ठान तो मानो देखो, एक समय महाराज शिव और पार्वती दोनों मानो भ्रमण करते हुए मुनिवरों! राम के आसन पर, दण्डक वनों में पहुँचे। मुनिवरों! देखो, राम ने विचारा, इतना निर्मल स्वच्छ हृदय बन गया उनको देवता स्वीकार करके उनके चरणों की वन्दना की, चरणों को स्पर्श करके बोले-कि प्रभु! आईए, विराजिए। मेरे प्यारे! वह विराजमान हो गये। महाराज शिव से कहा कि महाराज! आप तो मेरे मानो प्राणदाता हो, प्राण के मानो प्रेरक हो, मुझे आप ने प्रेरणा दी और ऋषि-मुनियों के मध्य में यह कहा कि इसे तप करना चाहिए, तो प्रभु! अब यह निर्णय दीजिए, कि मेरा तप पूर्ण हुआ अथवा नहीं, मेरी इच्छा तो यह हो रही है कि मैं मोक्ष को, मैं मानो देखो, अपने को प्रभु को अपनाना चाहता हूँ, वह अपने प्रभु में ही लीन होना चाहता हूँ, इस संसार के नाना प्रकार के विडम्बनावाद में मेरी प्रबल इच्छा रही है। मुनिवरों! देखो, महाराजा शिव ने कहा-कि नहीं, देखो, तपस्वी ही राजा होते है। यदि राजा के यहाँ से, हृदय से, तप को निकास लिया जाता है तो राजा का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। तो हे राजन्! तुम्हारा तप ही तो राज करता है। तुम्हारा तप ही तो मानो देखो, समाज को, राष्ट्र को एकोकीकरण कराता है। और यदि तप ही नहीं रहेगा, केवल अपना स्वार्थवाद रह जाएगा और तप नहीं रहेगा तो देखो, वह तप, वह स्वार्थवाद उस राजा को ऐसे निगल जाता है जैसे मानो देखो, प्रातःकाल का सूर्य रात्रि को निगल जाता है। मानो ऐसे ही निगल जाता है। तो मानो ब्रह्मे वाचा आप तपस्वी बने है, यह प्रजा का, राष्ट्र का बड़ा सौभाग्य है मानो देखो, आप राज्य का पालन कीजिए। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने बहुत कहा-कि मैं तप करने, मेरा तपों में मन हो गया है मेरा मन स्थिर हो गया है। उन्होंने कहा-मन स्थिर हो करके ही राष्ट्र का पालन किया जाता है। और जिनके मनो में चंचलता रहती है वह राष्ट्र का पालन नहीं कर सकते।

## जनता में जनार्दन

मेरे प्यारे! देखो, राम के प्रत्येक शब्द को, मुनिवरों! देखो, महाराजा शिव ने मानो देखो, मध्य में से दो-दो भाग कर दिए, प्रत्येक शब्द के। मुनिवरों! देखो, आगे राम ने कहा-प्रभु! यह संसार मानव के साथ नहीं जाता है, मैं तप के लिए मानो तप मेरे लिए क्या, कि मैं प्रभु का और मेरा दोनों का एकोकीकरण हो जाए? उन्होंने कहा-हे राम! प्रभु से एकोकीकरण करना भी चाहिए। परन्तु देखो, समाज में, जनता में, जनार्दन रहता है। अपने को समाज में परिणत कर लो, अपने को पिरो लो और प्रत्येक क्षण मानो देखो, जनता में जनार्दन का अनुभव करो और अनुभव करके मानो देखो, प्रजा को शिक्षा दे करके, राष्ट्र को ऊँचा बनाओ।

## दो प्रकार के प्राणी

मेरे प्यारे! देखो, राम का वह शब्द भी मानो समापन हो गया, उन्होंने कहा-दो प्रकार की विचारधारा वाले प्राणी सृष्टि के प्रारम्भ से रहे है, एक जनता में जनार्दन को दृष्टिपात करने वाला और एक ब्रह्म में समाधिष्ट होने वाला। मानो जो जनता में जनार्दन को दृष्टिपात करता है वह मानव मुनिवरों! देखो, उसमें उसकी स्थिति हो जाती है। तो मुनिवरों! देखो, वह समाज के मनां को विजय करके, वह प्रभु को प्राप्त हो सकता है। उसका एकोकीकरण हो जाएगा और वह जो जनता में, जनार्दन को मानो देखो, जो ब्रह्म में समाधि है वह भी प्राण और मन को एकाग्र किया जाता है ऐसे ही जनता जनार्दन में किया जाता है। परन्तु देखो, जब तुम्हारी प्रतिभा एक महान बन करके ब्रह्म में समाधिष्ट होने लगेगी, तो ब्रह्म तो तुम्हें प्राप्त होना ही होना है। चाहे जनता में जनार्दन हो, चाहे ब्रह्म में समाधि हो। दोनों प्रकार से तुम्हारे जीवन की प्रतिभा महान बनेगी। बेटा! राम ने जब मानो देखो, कई दिवस, यह विचार, उनके चलते रहे, कई दिवस चले।

परन्तु राम अन्त में मौन हो गएं और शिव के चरणों की वन्दना की, उन्होंने कहा-धन्य है प्रभु! मेरे प्यारे!

## याग एक सर्वांग पूजा

देखो, राम ने ऋषि-मुनियों का मानो देखो, समाज एकत्रित किया, तो बेटा! हमारे विचारों का अभिप्रायः यह, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज यही कहते है कि यदि मानव से मानव की अच्छाईयाँ और कर्त्तव्य को और तप को यदि निकास दिया जाए तो मानव मानव नहीं रहेगा। मेरे प्यारे! राष्ट्र-राष्ट्र नहीं रहेगा, तो विचार क्या, मुनिवरों! एक होता हो, हम अपने मानव जीवन को एकोकीकरण बना करके एक ही सूत्र में अपने को स्वीकार करें। मेरे प्यारे! देखो, जब मानव विवेचना करता है, जब मानव विचारता है कि मानव मानव की रक्षा कर रहा है प्राणी प्राणी की एकोकीकरण में मानो रक्षा कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जलचर में रहने वाले प्राणी, जो जल में वास करने वाले है, वायु में गति करने वाले, मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी पर रेंगने वाले, जितने भी प्राणी है जितनी भी योनियाँ है वह एक दूसरे की सहायक बनी हुई हैं, एक दूसरे में उनका क्रियाकलाप मानो विभक्त हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, यदि उनमें एक दूसरे की प्रतिभा, भावना को एकोकीकरण में नष्ट कर दिया जाए, तो मेरे प्यारे! देखो, यह संसार, संसार नहीं रहेगा। तो वह एकोकीकरण है, एक ही होता है, उसी के द्वारा बेटा! याग हो रहा है।

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने ब्रह्मचारियों को, ऐसी शिक्षा प्रदान कर रहे है। मुझे तो बेटा! ऐसा प्रतीत हो रहा है, जैसा आज मैं मानो देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में, हम सब विद्यमान हैं। ऐसा मानो प्राप्त हो रहा है, अनुभव कर रहा हूँ। मेरे पुत्रां! क्योंकि उनकी शिक्षा मानो इतनी महान और विचित्रता में रही है कि ब्रह्मचारी नत मस्तिष्क हो जाते है।

तो विचार-विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! मैं आज विशेष चर्चा नहीं दूँगा, केवल परिचय क्या है, तो एकोकीकरण का परिचय है मानो देखो, हम एक को अपने से दूरी कर देते है, जैसे गणना है, गणना जब प्रारम्भ होती है तो एक से प्रारम्भ होती है, एक से गणना का प्रारम्भ होता है। यदि एक ही न उच्चारण किया जाएगा, तो गणना, गणना नहीं रहेगी। तो मेरे प्यारे! देखो, हम एकोकीकरण करने के लिए तत्पर है। मुनिवरों! देखो, नमं ब्रह्मा वर्णा ब्रहे अस्सुतं देवाः धृतं लोकाम्, तो मेरे प्यारे! आज का विचार, हमारा क्या, हम परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणगान गाते हुए, अपने में बेटा! महानता की आभा में रत्त हो जाए, मेरे प्यारे! मुझे एक वाक् स्मरण आ रहा है, मानो देखो, जो बहुत पुरातन काल का वाक् है, मेरे प्यारे! मनु वंशलज का यह वाक् है, मनु राज्य में मानो देखो, स्वयम्भू मनु महाराज के काल का, यह समय मानो देखो, उस काल की ये चर्चा हैं उसमें एक राष्ट्र के लिए अलंकार भी है और राष्ट्र के लिए गाथा रूप में भी है।

### स्वायम्भू मनु काल का वर्णन

मेरे प्यारे! देखो, जो मैंने पूर्व काल में भी इसका निराकरण अथवा वाक् उच्चारण किया। मेरे प्यारे! देखो, राजा के राष्ट्र में एक महापुरुष रहते थे, वे महापुरुष मानो देखो, नग्न रहते थे, कोई वस्त्र नहीं था तो मानो देखो, हमारे यहाँ पुरातन काल से ही, कई प्रकार के देखो, जिज्ञासुओं की मानो देखो, कई प्रकार की धाराएं मानी गई है। परन्तु एक धारा यह भी थी कि नग्न रहते थे, कोई वस्त्र नहीं मानो देखो, प्रभु के राष्ट्र में अन्तरिक्ष को वह मानो देखो, अपना ओढ़न, पृथ्वी को अपना आसन और अग्नि की मानो अपना तेजोमयी, जल को अपना देखो, पिपाद, तरलतव मानो पदार्थ है और देखो, वायु जो प्राणों के सहित गति करने वाली है, तो जब नग्न रहते थे, तो एक समय राजा अपने मंत्रियों सहित भ्रमण कर रहे थे। जब भ्रमण कर रहे थे, तो उन्होंने दृष्टिपात किया कि मेरे राष्ट्र में ऐसे द्रव्यहीन प्राणी रहते है जो मानो नग्न है, वस्त्र भी नहीं है। मुनिवरों! देखो, उन्होंने अपने मन्त्री से कहा-जाओ, मन्त्रीजन मानो तुम कुछ मुद्रा ले जाओ, और साधु को अर्पित करके आओ। मेरे प्यारे! देखो, जब वे मन्त्री जी मुद्राएं ले करके पहुँचे। उन्होंने कहा-राजा ने, कुछ मुद्राएं दी हैं, उन्होंने कहा क्यों? उन्होंने कहा-कि इस दीन को दे दो, मेरे राष्ट्र में कोई ऐसा प्राणी नहीं है जो नग्न रहता है, वस्त्र भी जिसके द्वारा न हो। उन्होंने कहा-राजा से कहो,

## याग एक सर्वांग पूजा

ये किसी दीन को दे दो। मेरे प्यारे! देखो, मन्त्री राजा के समीप पहुँचे और राज से कहा-कि महाराज! ये कहते है कि किसी दीन को दे दो। महाराजा ने विचारा, कि ये मुद्रा सूक्ष्म है। उन्होंने और देखो, विशेष मुद्राएं दी और जब वे मन्त्री वहाँ पहुँचे तो उन्होंने पुनः भी यही उत्तर दिया, किसी दीन को दे दो। उन्होंने पुनः जब आ करके राजा से कहा-राजा ने बड़े आश्चर्य में मानों बहुत-सी मुद्राएं ले करके राजा स्वयं उनके समीप पहुँचे।

राजा ने कहा-लो, महाराज! यह मुद्रा स्वीकार करो, उन्होंने कहा-मैं क्यों? ये किसी दीन को दे दो। राजा ने कहा-प्रभु! मेरे राष्ट्र में आप से दीन कोई नहीं है। उन्होंने कहा-महाराज! मैं तो राजाओं का भी राजा हूँ, मैं तो धिराजों का भी धिराज हूँ। उन्होंने कहा-महाराज! क्यों? तुम मानो जब धिराज हो, तो सेना कहाँ है? उन्होंने कहा-सेना की मुझे आवश्यकता नहीं, क्योंकि मेरा मन विकृत्त नहीं होता है। और मानो देखो, मेरा कोई शत्रु नहीं है संसार में, जिनका कोई शत्रु होता है उनको सेना की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा-तो तुम्हारे द्वारा द्रव्य कहा, राष्ट्र को संचालित करने के लिए? उन्होंने कहा-कि जब मेरी इच्छा होती है तो मैं इन पर्वतों का स्वर्ण बना लेता हूँ और इनके स्वर्ण से मेरा राष्ट्र चलता है। मेरे प्यारे! राजा को यह विश्वास हो गया और उनके मन में यह आया कि यदि ऐसा न होता तो यह द्रव्य को स्वीकार कर लेता।

मेरे प्यारे! देखो, राजा अपने राष्ट्र में पहुँचे और राष्ट्र में जा करके उन्होंने विचारा कि यदि मैं इस महाराज, साधु से कुछ स्वर्ण का निर्माण करा लूँ, तो मेरा राष्ट्र स्वर्ण-पति बन जाएगा। मेरे राष्ट्र में स्वर्ण हो जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, मध्य रात्रि में देखो, राजा भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो, ऋषि के समीप पहुँचे। महात्मा से कहा-भगवन! मेरी इच्छा यह है कि आप मानो मेरा स्वर्ण बना दीजिए। मेरा राष्ट्र स्वर्ण-पति बन जाएगा। तो महात्मा कहते है, राजन्! बोलो, दीन तुम हो या मैं। अब मुनिवरों! देखो, साधु ने जब यह वाक् कहा, तो राजा ने यह स्वीकार कर लिया, कि भगवन! दीन तो मैं ही हूँ। उन्होंने कहा-तुम मेरे द्वारा नित्यप्रति आया करो, मैं तुम्हारा स्वर्ण अवश्य निर्माणित कर दूँगा। मेरे प्यारे! देखो, राजा नित्यप्रति उनके समीप आने लगे, उन्होंने कहा-राजन! संसार में तपों में जीवन रहना चाहिए, यदि मानव के शरीर से तप को दूरी कर दिया जाए, तो मानव देखो, शून्य शीतल बन जाता है। जैसे अग्नि में से तेज, जल समाप्त कर दिया जाता है तो अग्नि, अग्नि नहीं रहती।

इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, उन्होंने उपदेश देना प्रारम्भ किया। मुनिवरों! देखो, कुछ समय के पश्चात् राजा विवेकी बन गए, महात्मा की भांति, जब वे विवेकी बन गए, तो मुनिवरों! देखो, एक समय, उन्होंने अपने योग के बल से, उनके हृदय का और अपने हृदय का दोनों की तुलना की, दोनों का हृदय तपोमय बन गया है। देखो, मेरा हृदय और राजा का हृदय दोनों तप में हो गएं हैं। मानो देखो, तपोमयी अग्नि जागरूक हो गई है। मानो ज्ञान रूपी, विवेक रूपी, अग्नि जागरूक हो गई है। महात्मा ने एक समय मध्य रात्रि में कहा-हे राजन्! आज मेरी इच्छा ऐसी है कि मैं आज तुम्हारे राष्ट्र को, मैं स्वर्ण-पति बनाना चाहता हूँ। महात्मा के वाक् पान करके, राजा ने कहा-भगवन! जो स्वर्ण आप मेरा बनाना चाहते थे वह स्वर्ण मेरा बन चुका है।

मेरे प्यारे! देखो, जब वह एकोकीकरण, एक ही आहुति से यज्ञमान याग करता है तो उसका एकोकीकरण हो जाता है और वह कहता है मेरा स्वर्ण बन चुका है। तो मुनिवरों! देखो, राजा ऋषि के चरणों में ओत-प्रोत हो गया। तो मेरे पुत्रों! विचार विनिमय क्या है इन वाक्यों का, आज मुनिवरों! देखो, हमारा जीवन एकोकीकरण होना चाहिए, जब तक एकोकीकरण नहीं होगा तब तक मानव के जीवन में शान्ति और परमशान्ति का जन्म नहीं हो सकता। परमशान्ति का जन्म तब ही होता है जब यह हमारा एकोकीकरण हो जाता है। आज का हमारा यह वाक् क्या कह रहा है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! ब्रह्मचारियों को शिक्षा दी और यह कहा कि धन्य है प्रभु! अब यज्ञमान एक ही होता से याग करेगा। मेरे प्यारे! देखो, आज का वाक् अब समाप्त होने जा रहा है।इसकी विवेचना

तो बहुत कुछ है परन्तु देखो, संक्षेप में इसकी चर्चाएं की हैं। समय मिलेगा तो बेटा! शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मा ना वाचन गताः आ पाः। ओ३म् जनिता माः वरुणाः। अच्छा भगवन्! आज्ञा ६.१२.१९८६ के-३, लाजपत नगर, नई दिल्ली

# ९ सर्वांग पूजा ०७ १२ १९८६

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा, एक सूत्र मात्र हैं, मानो देखो, जैसे यह संसार एक ही सूत्र में पिरोया हुआ से दृष्टिपात आता है। तो वे परमपिता परमात्मा, वह अनूठा सूत्र है, जिसके ऊपर, मानव बेटा! परम्परागतों से अनुसन्धान अथवा अन्वेषण करता रहा है। और यह विचारता रहा है कि यह जो ब्रह्माण्ड है, मानो इसको कौन धारण कर रहा है? जब ये वाक् आता है कि कौन धारण कर रहा है तो अपनी-अपनी आभा में, सर्वत्र ब्रह्माण्ड सर्वत्र अपने में ही अपने को धारण कर रहा है, यह शब्द बड़ा एक, वैदिकता से गुथा हुआ क्या अपने को अपने में ही धारण कर रहा है। मानो जैसे नाना प्रकार के, प्रायः लोक-लोकान्तरों की चर्चाएं आती रहती है। एक दूसरे की मालाएं की चर्चाएं आती रहती हैं हमने बहु पुरातन काल में अपना वाक् निर्णय देते हुए कहा था, क्या यह संसार एक दूसरे में पिरोया हुआ है, मानो देखो, एक लोक, एक पृथ्वियाँ हैं, ये नाना रूपों में मानो देखो, एक दूसरे में अभ्योदय हो रहा है, जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से बेटा! अनुसन्धान अथवा अन्वेषण करता रहा है, जब हम इन विचारों में प्रवेश होते हैं, जैसे सूर्य अपने में पिरोया हुआ है और सूर्य के अन्तर्गत मानो ये पृथ्वियाँ पिरोई हुई है। तों मुनिवरों! देखो, एक आभा में जगत दृष्टिपात आता है, प्रायः ऐसा नही है, क्या यह संसार मानो देखो, लोक उसके आश्रित तो इस प्रकार है क्योंकि ऊर्ज्वा प्राप्त हो रही है एक दूसरे की ऊर्ज्वा में ऊर्जित हो रहा है। और वह जो ऊर्ज्वा में प्राप्त होने वाला है। मानो वही तो अभ्योदय होता रहता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! पुत्रों! जैसे मानव में, पंच क्रियाएं हो रही हैं, इसी प्रकार लोक-लोकान्तरों में भी मानो पंच क्रियाएं, उस समय बेटा! देखो, प्रगति करती रहती हैं। एक पंचीकरण है, परन्तु वह तो एक दूसरे की माला, उसी में बनी हुई, जैसे मानव है, मानव का यदि संसार में कोई सहयोग नही हैं, दूसरे प्राणियों का सहयोग नही प्राप्त होता जब तब वह संसार के क्रियाकलापों को नही कर पाता। इसी प्रकार मानो पृथ्वी के गर्भ से जो नाना प्रकार के व्यंजनों का जन्म होता है उन जन्मों की लिए नाना प्रकार की आवश्यकताएं, सहयोग की होती है। जैसे सूर्य मानो देखो, गुरूतव को पृथ्वी को अपने में धारण कर रहा है, और एक नही नाना पृथ्वियों को धारण कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह पृथ्वियाँ या कोई भी लोक-लोकान्तर हों, जब तक वह अपने में प्रकाश नही ले पाता, जब तक उसे दूसरे लोक-लोकान्तरों का सहयोग न हो। यहां सहयोग का प्रसंग है, यहां कोई प्रसंग नही है कि अपने में अपने देखो, यहां वेद का वाक् पूर्व ही उच्चारण कर चुका है, क्या वह अपने में अपने को ही दृष्टिपात कर रहा है। जैसे एक मानव मानो देखो, अपनी स्थली पर विद्यमान है, वह मिथ्या उच्चारण कर रहा है, अशुद्धता में सुकर्म कर रहा है, परन्तु अपने में अपनेपन की आभा को प्राप्त होते रहते हैं। मानो इसी प्रकार, मानव अपने जीवन में, अपनी आभा में रत्त होना है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, क्योंकि मानव अपने में मानो देखो, दृष्टिपात हो रहा है, प्रत्येक प्राणी इसी प्रकार है, प्रत्येक लोक-लोकान्तर इसी प्रकार है, जहाँ तक विज्ञान के वांगमय में, हम प्रायः प्रवेश होते हैं, तो विज्ञान तो अपने में बड़ा अनूठा माना गया है। मानो एक परमाणु अपनी आभा में गति कर रहा है, उस परमाणु का दूसरे परमाणु से जब मिलन होता है, तो मानो देखो, उसमें गुरूतव भी आ जाता है, तरलतव भी आ जाता है, और तेजोमयी भी आ जाता है, और उसी में मेरे पुत्रों! देखो, गति का संचार हो जाता है। परिणाम मानो देखो, वह परमाणु अपने में जब एकोकी रूप में रहता है तब तक मुनिवरों! वह परमाणु है परन्तु

## याग एक सर्वांग पूजा

जब तक वह दूसरों से मिलन मानो सहयोग प्राप्त होना होता है तो वही परमाणु बेटा! मानो स्थूल के रूप में दृष्टिपात आता है। जैसे लोक-लोकान्तर हैं, वह भी एक स्थूल रूप में दृष्टिपात आते हैं जैसे मानव का एक शरीर है, जब उसका निर्माण होता है तो मानो देखो, एक एकोकीकरण रहता है, माता के गर्भ में एकोकीकरण में हैं, परन्तु जो-जो उसे परमाणुओं का अथवा पञ्च महाभूतों का सहयोग प्राप्त होता है शिशु को देवताओं का अथवा पंच महाभूतों का मानो देखो, उससे उसकी ऊर्ध्वा शरीर का निर्माण होने लगता है। मेरे पुत्रों! देखो, वह विशाल बन जाता है, निर्माण होता-होता बेटा! जो परमाणु परोक्ष रूप में थे, जो मानो तरंगें परोक्ष रूप में थीं, वह समन्वय होते-होते, मेरे पुत्रों! देखो, माता के गर्भस्थल में, स्थूल रूप धारण कर लेता है। चाहे वह पृथ्वी का गर्भ हो, चाहे जननी माता का गर्भ हो, चाहे मुनिवरों! देखो, किसी भी लोक-लोकान्तरों के गर्भ में चले जाओ वहाँ केवल एकोकीकरण में मानो केवल चर्चाएं चल रही थी तो वहाँ मुनिवरों! देखो, अपने में अहोकृत होता रहता है।

तो परिणाम क्या, परमाणु का बेटा! एक-एक का सहयोग, मानो देखो, तरंगों के रूप में, आभा के रूप में देखो, शिशु को प्राप्त हो गया है। वह स्थूल बन गया है। मानो नेत्रों वाला बन गया है, वह श्रोत्रों वाला बन गया वही मेरे पुत्रों! देखो, संसार के क्रियाकलापों में रत्त हो रहा है। तो परिणाम जैसे हमारे यहां अग्नि है, अग्नि काष्ठों में रहती है परन्तु देखो, जब अग्नि काष्ठ में रहती है। वह मेरे प्यारे! परोक्ष रूप में है मानो कोई मानव यह निर्णय नही दे रहा है, कि वह अग्नि है परन्तु वह दाह भी नही कर रही है वही अग्नि जब अग्नि का सहयोग मानो देखो, जब दूसरों का सहयोग प्राप्त होता है, तो अग्नि प्रचण्ड हो जाती है, इसी प्रकार प्रत्येक लोक-लोकान्तर बेटा! बिना सहयोग के, क्रियाकलापों में परिणत नही हो रहा है। उसमें गुरूतव भी है, तरलतव भी है, तेजोमयी भी है, गति भी प्राप्त हो गई है अवकाश भी प्राप्त हो रहा है। मानो जब तक यह नही प्राप्त होते, तब तक वह अपनी आभा में गतिशील नही होती है, इसी प्रकार मानव, जब साधना में परिणत होता है, तो साधना में मुनिवरों! देखो, वहाँ भी सहयोग की आवश्यकता है, वहाँ सहयोग केवल, एक क्रिया का सहयोग प्राप्त होता है, वह क्रिया मुनिवरों! देखो, गति का, जब हमें सहयोग प्राप्त होता है, तो मन को गति में संचालित कर देते हैं। उसमें संलग्न कर देते हैं तो मुनिवरों! देखो, वह अपने में गतिशील हो जाता है मानो देखो, गतिशील हो करके वही अपने में अपने अकृत्तियों को धारण करता हुआ, मेरे पुत्रों! देखो, वह अपने में मनस्तव केवल प्राणतव वही मानो देखो, एक परमपिता परमात्मा का जो हृदय है, उस हृदय में, हृदय का समावेश करके ही, मेरे पुत्रों! देखो, उसी में वह रत्त हो जाता है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना नही, मेरे प्यारे महानन्द जी का एक मुझे प्रेरणा प्राप्त हो रही है, कुछ याग के सम्बन्ध में कहा जाएं इनका याग के ऊपर बड़ा बल रहता है। मानो प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में भी याग की बड़ी सूक्ष्म विवेचना आती रहती है। आज मैं याग के सम्बन्ध में मानो देखो, यह विवेचना करने चला हूँ, कि यह संसार, एक प्रकार यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। जो आज मैं विवेचना दे रहा हूँ, हमारी जो विवचेना है, वह केवल याग रूप में ही मानी गई है। क्योंकि जब संसार का प्रत्येक परमाणु अपने में अपनेपन में रत्त हो रहा है तो मुनिवरों! देखो, वही तो अपने में अभ्योदय हो रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, जहाँ यागां ब्रह्मे आज हम याग के सम्बन्ध में विवेचना करने के लिए चले हैं, मानो एक समय मुझे स्मरण आ रहा है बेटा! एक समय देखो, भ्रमण करते हुए, मानो अपने आश्रम से बेटा! महर्षि कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि महाराज मुनिवरों! देखो, वह अपने में सब में याग कर रहे थे। तो जब वह याग में परिणत हो रहे थे, तो मुनिवरों! देखो, याग के कर्मकाण्ड में कर्मकाण्ड को दृष्टिपात करने लगे, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह कहा कि तुम यह जो याग कर रहे हो, क्रियाकलापों में लगे हुए हो, इसका क्या अभिप्रायः है? तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने ये कहा कि याग मानव के लिए

## याग एक सर्वांग पूजा

ऐसी एक सर्वांग पूजा है, अथवा विज्ञान से गुथी हुई है। जिसको मानो करने के पश्चात, मानव की अन्तरात्मा में प्रसन्नता की तरंगें उद्बुद्ध हो जाती हैं, अथवा महानता में गति करने लगती है, तो इसी प्रकार मैं भी जो याग कर रहा हूँ मैं अनुष्ठान कर रहा हूँ, याग का द्वितीय रूप बेटा! एक अनुष्ठान भी माना गया है याग का मानो देखो, द्वितीय रूप हमारे यहां यज्ञ भी कहा गया है। उसी को संगतिकरण के रूप में उसी को मेरे पुत्रों! देखो, पितर याग के रूप में परिणत किया गया है। परन्तु विचार यह क्या, मुनिवरों! यह सर्वांग पूजा कैसे हैं तो मुनिवरों! देखो, जब महर्षि शिकामकेतु मुनि महाराज से, यह प्रश्न किया किसी आचार्य ने क्या यह जो तुम याग कर रहे हो, इसका क्या अभिप्रायः है? उन्होंने कहा मैं सर्वांग पूजा कर रहा हूँ, मैं अपने हृदय की उदगारता प्रगट कर रहा हूँ, मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान जल का संचार करता है, जल के संचार में जल की पूजा का व्यवधान है। मुनिवरों! देखो, जब अग्न्याध्यान करता है, श्रद्धामयी घृत की आहुति देता है। उसका श्रद्धामयी याग हो गया, अग्नि प्रचण्ड हो गई है। मानो उसे सहयोग प्राप्त हुआ, यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में कहता है हे प्रभु! हे देवताओं! तुम भी मानो मुझे सहयोग दो, जिससे मैं देवतव बन करके मानो जैसे अग्नि विभाजन कर रही है, परमाणु का विभाजन कर रही है, तरंगों को ले करके वही शब्द बन करके देखो, जो अन्तरिक्ष का एक स्वरूप है एक रूप माना गया है मानो देखो, उसे ले करके तरंगों को, वह जब अग्नि गति कर रही है, अभ्योदय हो रहा है, तो मानो देखो, उसी प्रकार, मैं भी अपने में ऐसा ही चाहता हूँ, क्या मैं भी दूसरों के लिए इदन्नमम् केवल अपने लिए नही मैं केवल त्यागपूर्वक जीवन को संसार में चाहता हूँ, मैं द्रव्य का साकल्य, साकल्य को अग्नि में ध्यान करता हुआ, मानो देखो, मैं पूजा कर रहा हूँ। उसमें जल है, आपोमयी जैसे मानो देखो, जल ही तो पिण्ड बनाता है, जितना भी पिण्ड बनता है, चाहे वह पृथ्वी के रूप में है, चाहे वह सूर्य के रूप में है, चाहे वह लोक-लोकान्तरों के रूप है, परन्तु यह पिण्डमयी, चाहे मानव शरीर का प्राणी मात्र का, जो पिण्ड बनता है, वह आपो से ही तो बनता है, मानो यह आपो ही तो माता के गर्भ में, बालक को अपने में धारण करता हुआ यह आपो ही तो ज्योति कहलाती है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, वह याग की आभा में रत्त होना चाहता हूँ यज्ञमान मानो तीन आभा में देखो, जल का संचार करता है, वह सबसे प्रथम पूर्व से आना में प्राचीदिक में वह जल का संचार करता हुआ, मानो देखो, प्राचीदिक में संचार करता है, और उदीचि में वह जब मानो देखो, उसका संचार करता है तो परिवर्तम मेरे प्यारे! जैसे पृथ्वी से, पृथ्वी रूपी एक यज्ञशाला है, और उसके अन्तर्गत मानो देखो, जल का व्यवधान है, वह जल अपने में प्रतियां कर रहा है जल के द्वारा जो तरंगें उत्पन्न होती है, वह जल अपने में संचय कर लेता है। वही जल मानो देखो, पालन का सूचक कहलाया गया है तो इसीलिए देखो, यज्ञामन मानो देखो, वह अग्निध्यान करके वह जल का व्यवधान करता है। जल का संचार करता है, मेरे प्यारे! देखो, वह जो यागां ब्रह्मा मुनिवरों! देखो, वह जो जल है, वह इसकी पूजा का अभिप्रायः उसकी यथोचित मानो देखो, उसका सत्कार उसका उपयोग लिया जा रहा है। मेरे प्यारे! देखो, उसी में अग्नि प्रचण्ड हुई, तो गुरूतव परमाणु मानो साकल्य बना करके, आहुति दी गई हैं वह भी मानो देखो, आपो से पिण्ड बन गया, वह अग्नि से पिण्ड का रूप धारण कर लेती है, वही यज्ञशाला में पिण्ड बना करके मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्माण्ड की यज्ञमान एक कल्पना करता रहता है। तो आज मैं विशेषता में न जाता हुआ केवल यह वाक् प्रगट कर रहा हूँ कि यह संसार मानो देखो, सर्वत्र याग में विद्यमान हैं, हे प्रभु! तेरा यह अनूठा याग हो रहा है। हे प्रभु! तेरा यह उद्गाता बन करके उद्गीत गा रहा है। यज्ञमान बन करके स्वाहाः कह रहा है, मानो देखो, ब्रह्मा बन करके, मानो वेद की आभा, उनकी तरंगों को अपने में धारण कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, अध्वर्यु द्रव्य का स्वामी बन करके, वह कुबेर कहलाता है। मुनिवरों! देखो, इसी प्रकार, अग्नि उनका सबका विभाजन करके, देवताओं को प्रदान कर देती है। तो मेरे पुत्रों! यह सर्वांग पूजा है, क्योंकि जहाँ भी तरंगें जाती है वही

## याग एक सर्वांग पूजा

मुनिवरों! देखो, उसके क्रियाकलाप उसके शब्द जाते हैं हमारे यहां जब विज्ञान के वांगमय में मानो प्रवेश होता है विज्ञान की तरंगों में जाता है तो मानो देखो, रथी बन करके, अपने में रथप्रवाहणं ब्रहे वही तो रथ है।

मेरे प्यारे! देखो, जो भगवान राम के जीवन में आता है, मैंने कई काल में तुम्हें वर्णन कराया है मेरे प्यारे! देखो, एक समय भगवान राम का वही प्रसग है जब वह तप के लिए चले गएं तपों में मानो देखो, दण्डक वनों में वह याग करने लगे, याग करते एक समय महर्षि कागभुषुण्ड जी, मानो उनके समीप आए, और लोमश और श्वेनकेतु मुनि महाराज ये तीनों महापुरूष, महान तपस्वी होते हुए मुनिवरों! देखो, उनके द्वार पर पहुचे, तो राम प्रातःकालीन मानो याग कर रहे थे, तो मानो नेत्रों में आभा उत्पन्न थी। मानो यागों की दृष्टिपात हो रही थी तो मानो मुझे कुछ ऐसा स्मरण है पुत्रों! मानो वह अपने अन्तर्हृदय का और बाह्य जो अग्नि का हृदय है, दोनों का समन्वय करते हुए वह जो मानो देखो, वह जो चित्रों स्वाहा शब्द उच्चारण किया जा रहा था, उसमें जो चित्र था, उसमें मानो जो तरंगें थी, वह अग्नि की तरंगों पर विद्यमान हो करके, वह मानो अन्तरिक्ष में लय होती हुई, और वह रथ बन करके, राम को दृष्टिपात आता था। क्योंकि राम जहाँ, मानो एक धिराज थे, वहाँ योगी भी थे, योगेश्वर मानो जो अनुष्ठान करते हुए मेरे पुत्रों! देखो, अपने में महान तो महर्षि कागभुषुण्ड जी भी जब शान्त मुद्रा में विद्यमान हुए, तो राम ने कोई वाक् नही प्रगट किया वह मौन हो करके उस चित्र का दर्शन करते रहे, वह मौन हो करके मन की विकृतियों को नही होने दिया, वह देखो, जो गति है, जो प्राण है, जो प्रकृति के सर्वत्र रूप को अपने में धारण कर रहा है, अपने में रूद्र वासा, वह अपने में बना रहा है। तो मानो देखो, उसका वह दिग्दर्शन करते रहते थे। तो राम अपने में मानो कितने अनुष्ठानवादी थे, तो वह बेटा! देखो, अनुष्ठान किए हैं यागाम् ब्रह्म लोकां वह याग करते रहते थे, मानो याग में अपने पितरों का दर्शन करते रहते थे मानो वह अनुष्ठान जब हृदयग्राही होता है।

तो मुनिवरों! देखो, एक समय राम जब याग कर रहे थे तृतीय चतुर्थ दिवस में तो बेटा! देखो, एक साम भूनि ऋषि महाराज भ्रमण करते हुए, मुनिवरों! देखो, वह विद्यालय से अपने उन्होंने यह संकल्प किया, आज मैं राम के समीप जाऊंगा, और राम के द्वार पर जा करके उनका अनुष्ठान दृष्टिपात करूंगा। मेरे प्यारे! देखो, जब सामभूनि ऋषि महाराज, राम के वहाँ पंहुचे तो वह नेत्रों को ब्रीहित करते हुए, अन्तर्मुखी याग में सुगन्ध और देखो, बाह्य जगत को अपने में दृष्टिपात कर रहे थे। तो मेरे प्यारे! जब सामभूनि ऋषि महाराज ने जा करके, याग में आहुति देना प्रारम्भ किया, जैसे अग्नि में आहुति दी, तो सामभूनि ऋषि महाराज और वरतेन्तु का किसी वाक् पर कोई मानो संघर्ष हुआ था, उस संघर्ष में क्योंकि दोनों सहपाठी थे विद्यालय में अध्ययन करते थे, तपस्वी थे तो सामभूनि के हृदय में वरतेन्तु के प्रति एक द्वेष की मात्रा थी। तो मानो देखो, वह बनी रही, हृदय में और उनके हृदय में यह वाक् आया कि तेरा तप जब ऊर्ध्वा में पंहुचेगा, जब यह मानो देखो, इसका तप किसी कारण से हम खण्डित कर पायेंगें, तो जब यह विचार आया सम्भवं लोकां वाचन्नमं ब्रह्मे वायु सम्भूति लोकां तो जब यह वाक् आया, तो सम्भव व्रतां तो मेरे प्यारे! मुझे ऐसा कुछ स्मरण है क्या वह जैसे आहुति दी तो यज्ञ में बेटा! वह आहुति बेटा! मानो देखो, अशुद्ध दृष्टिपात हुई राम को अन्तर्मुखी आभा में जब वह अशुद्ध दृष्टिपात होने लगी, तो मेरे प्यारे! देखो, उस आभा में रतता में ग्रीहिणी लोकां देवं ब्रह्मा वाचन्नमं ब्रीहि कृतं तो मेरे प्यारे देखो, उसी आभा में वह रत्त रहा, भगवान राम ने कहा क्या देखो, नेत्रों को अग्रणीय करते हुए, क्या ऋषिवर हे ब्रह्मचारी! तुमने बिना आज्ञा के आहुति देना प्रारम्भ किया, क्या तुम्हारी ये चिन्तामय रजोगुण में तुम्हारी जो आहुति है वह मानो देखो, अन्तरिक्ष में मेरे तुम इस यज्ञशाला के लिए सुयोग्य नही हो। तो मुनिवरों! देखो, सामभूनि ऋषि महाराज ने, राम के चरणों को स्पर्श करते हुए, कि-प्रभु! मैं वास्तव में, मैं अशुद्ध हूँ, प्रभु! मानो देखो, वह उनकी प्रतिभा समां ब्रहे वाचन्नमं ब्रह्मा वायु सम्भूति लोकां मेरे प्यारे! देखो, पुनः से शुद्धिकरण हुआ शुद्धिकरण के होने से, मुनिवरों! देखो,

उसकी आभा में रत्त रहा। तो मुनिवरों! विचार-विनिमय क्या, आज का वेद वाक् यह कहता है मुनिवरों! धाराएं यह कहती है, कि मानव को विचारना है कि हम अपने में मानो महानता का प्रायः दर्शन करते रहें, महानता की प्रतिभा में हम रत्त रहें, तो बेटा! देखो, ऐसा मुझे प्रायः स्मरण आता रहा है, तो आज का विचार यह क्या कह रहा है, मुनिवरों! देखो, आज का वाक् यह कहता है कि याग में शुद्धिकरण अभ्योदय महानता की ज्योति में प्रायः मानव को रत्त होना चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार क्या, मैं याग के सम्बन्ध में क्या याग अपने में अनूठा एक विज्ञान है, अनूठा एक क्रियाकलाप है, जिसमें मानव सदैव रत्त रहा है, अब मैं अपने विचारों को यहीं मानो समापन कर रहा हूँ, अब मेरे प्यारे महानन्द जी दों विचार व्यक्त करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् देवां गतं ब्रह्माः वायु सम्भवाः गणं महा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ज्ञान और विज्ञान की बड़ी अनूठी उड़ाने उड़ रहे थे, मानो विज्ञान अपने में आभा में, रहा है और विज्ञान की धाराओं में मानव सदैव रत्त होता रहा है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने, अभी-अभी यह वाक् प्रगट करते हुए कहा, क्या उन्होंने कृतं विज्ञान और विज्ञान से गुथा हुआ याग और याग भी देखो, महापुरूषों के द्वारा उन्होंने ये विवेचनाएं दी। महापुरूषों का इस पर कितना अधिपथ्य रहा है, यागों पर कितना अधिपथ्य रहा है, तो उस अधिपथ्य को जानना चाहिए। मेरा तो सदैव विचार, यह बना रहता है क्योंकि मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से, कई काल में यह कहा है, क्या मेरा अन्तर्हृदय तो यज्ञमान के साथ रहता है, जिस गृह में द्रव्य का यज्ञ के द्वारा सदुपयोग होता है उस यज्ञमान का जीवन सदैव अखण्डता की ज्योंति में मानो ज्योतिवान होता है। ऐसा मेरा सदैव विचार रहता है। मेरी जो भावना है, वह यज्ञमान के साथ है। हे यज्ञमान! तेरा जीवन सदैव महान और क्रियाओं में लगा रहे, और तू मानो देखो, आत्मीय कार्यों में रत्त होता हुआ मानो द्रव्य का सदुपयोग हो जाएं। द्रव्य का सदुपयोग होना ही यह लक्ष्मी का रूप धारण करती है, और लक्ष्मी ही मानो देखो, उसके द्वार से कदापि नही जाती, और जिनके गृहों में द्रव्य का दुरूपयोग होता है, उनके गृहों से मानो लक्ष्मी चली जाती है। वह मानो देखो, लक्ष्मी का और उस मानव की शत्रुता हो गई है, वह शत्रुता ही उसके जीवन को नष्ट कर देती है।

तो परिणाम यह है कि आज मेरे इन विचारों का की हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और मानो तेरे द्रव्य का सदैव सुदपयोग होता रहे, देवताओं की हवि बनता रहे, वही तो देवता देखो, शुद्धिकरण करते हैं, संसार का इस मानो ज्योतिमयी बना देते हैं। जीवन को तो आज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी भगवान राम की यह चर्चाएं कर रहे थे, कागभुषुण्ड जी का भी इन्होंने नामोच्चारण किया, परन्तु यह जो वर्तमान का काल है, इसमें तो मानो मुझे बड़ा एक अन्धकार दृष्टिपात आ रहा है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में वर्णन करते हुए कहा कि-प्रभु! इस संसार की प्रतिभा का विमोचन कैसे होगा, तो मानो पूज्यपाद गुरुदेव ने जब भी उच्चारण किया तो एक अन्धकारमयी क्रान्ति की चर्चाएं की हैं। परन्तु वह भी रक्तोमयी क्रान्तियां, परन्तु देखो, आज मैं भी उस रक्तमयी क्रान्ति की चर्चाएं, पूज्यपादों से कराता रहा हूँ, परन्तु वह, अपने में एक धीमी-धीमी अग्नि प्रचण्ड हो रही है, इस अग्नि का मानो देखो, जो द्वेषाग्नि है, मैंने कई काल में यह वर्णन करते हुए कहा है, कि राष्ट्र जब ऊँचा होता है, तो राष्ट्र मानो देखो, इसका निराकरण कर देता है, राष्ट्र में देखो, यह जो रूढ़िवाद है, ईश्वर के नामों पर जितना भी रूढ़िवाद है, ये रूढ़िवाद प्रायः समाप्त हो जाना चाहिए, और रूढ़िवाद उस काल में समाप्त होता है जबकि राजा का, राष्ट्र का सात्विक विचार हो, राजा का आहार और व्यवहार पवित्र हो जब तक आहार और व्यवहार में पवित्रता नही आयेगी, तब तक वह रूढ़िवाद को, वह जानेगा नही रूढ़िवाद को वह सान्त्वना नही दे सकता। जब मानो देखो, उसका एकोकीकरण किसी भी रूढ़िवाद में, देखो, विज्ञान और धर्म और विज्ञान और मानवता जिसमें निहित रहती है, वही विज्ञान अपने में अनूठा, वही विचार और वही मानो देखो, धर्म

और मानवीयता को ऊँचा बनाता है। धर्म को, मानव ने एक खिलवाड़ बनाया है आधुनिक काल का जो जगत है, महाभारत काल के पश्चात, का वह एक मानव धर्म को खिलवाड़ बना करके उसको अग्रणीय बना करके और वह देखो, उसमें रक्त का पान कर रहा है, रक्त की धारा बना रहा है, क्यों बना रहा है? क्योंकि उसमें राष्ट्रीयता की भावना, ईश्वर की भावना नही हैं। जब ईश्वरीय भावना आ जाती है, क्या मुझे ईश्वरीय पापाचार में परिणत नही होना है, ईश्वर तो एकोकीकरण है, वह तो एकोकीकरण में आता है, तो वह सब मानो देखो, उसके अन्धकार नष्ट हो जाते हैं, अन्धकार नष्ट जब तक नही होते, जब तक उसके द्वारा स्वार्थ और राष्ट्र की भावना रहती है राष्ट्रीयता की भावना रहनी चाहिए, परन्तु वह जो स्वार्थपरता है, वह विनाश का कारण है, विनाश का मूल है, राम के समय की चर्चा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कर रहे थे। दो समय हो गएं हैं, मानो राष्ट्र को दोनों विधाताओं ने खिलवाड़ बनाया, राष्ट्र को मानो देखो, स्वीकार नही किया, भरत कहता है मैं राष्ट्र को नही चाहता हूँ, राम कहता है मैं वन में तपस्या करने जा रहा हूँ, मानो देखो, यह कैसा विचित्र, विचारों का जगत है, परन्तु आधुनिक काल में यह कि मनुष्य संसार का नष्ट हो जाएं, परन्तु तेरी पद की लोलुपता समाप्त न हो जाएं, आज का समाज, राम के समाज से, जब हम तुलना करते हैं, तो एक बड़ा विचित्र जगत दृष्टिपात आता है। राम, केवल मानो देखो, तरंगों को आहार, उनका कितना सूक्ष्म रहता था। आधुनिक काल का प्राणी जब तक प्राणी सुरा और सुन्दरी और मानो देखो, दूसरे के रक्त का पान नही कर लेता जब तक वह राष्ट्रवेत्ता नही कहलाता, यह मानो देखो, कितना अन्तर्द्वन्द्व आ गया है इस अन्तर्द्वन्द्व को समाप्त करने के लिए मानव को त्याग और तपस्या की पुनः की आवश्यकता है। जब तक त्याग और तपस्या नही होगी, जिस भी काल में मानव ने त्याग और तपस्या में मानव चला गया है, उसी काल में जन समूह पवित्र बन गया है। जन समूह एक दूसरे को नष्ट करने से मानो देखो, अपने में ही अपने को दृष्टिपात करने वाला रहा है। और जब त्याग और तपस्या समाप्त हो जाती है, केवल रसना का स्वादन रह जाता है, उपस्थ का स्वादन रह जाता है, मानो देखो, वह मानव वह समाज कुछ समय के पश्चात, वह अग्नि का काण्ड बन करके रहेगा।

तो विचार-विनिमय क्या जब हम महापुरूषों की राष्ट्रों की कल्पनाएं करते हैं, वह कल्पना मात्र ही नही है, परन्तु वह एक सार्थिकता के रूप में दृष्टिपात आती रहती है, आज जब मैं यह कहता हूँ, मानो देखो, राम याग कर रहा है, देखो, अयोध्या में प्रत्येक प्राणी याग कर रहा है, राष्ट्र का, आधुनिक काल में देखो, राष्ट्र की जब यह चर्चा आती है, कि याग हों, तो मानो वह कहते है। कि यह एक अपवाद है, अपवाद उच्चारण करके शान्त कर देते हैं, क्योंकि मानव ने अपने को जाना नही है, अरे, जब प्रभु ने जब यह अनूठा याग रचा है, तेरा मानव शरीर, इसमें आहुति दी जा रही है, तेरे उदर की पूर्ति हो रही है, इन्द्रियाँ मानो देखो, पंचाग्नि बन करके उसी में तो वह साकल्य ले करके अपने को बलिष्ठ बनाती रहती है, तो इस प्रकार का विचार जब मानव के समीप आते हैं, तो मानव महानता की ज्योतिमयी प्रवेश करने लगता है। तो विचार-विनिमय क्या आज मैं विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ, केवल यह कि मानव को महान बनना है, आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से मानो इतना उदगार उद्गीत गाने के लिए तत्पर है, यागों का देखो, याग का याग सदुपयोग याग में क्रियाकलाप एक महान और देखो, उसकी परम्पराई जो रूद्रता है, वह उसको जान करके मानो देखो, अग्न्याध्यान में रत्त हो जाएं, द्रव्य का सदुपयोग हो जाएं, जिससे वायुमण्डल में देखो, वह परमाणु छा जाएं, वायुमण्डल पवित्र हो जाएं, गृह में परमाणु छा जाएं, गृह पवित्र बन जाएं तो ऐसा मानो देखो, हमारा सदैव विचार रहता है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी उच्चारण करते हुए, मानो कागभुषुण्ड जी की चर्चाएं की अभी देखो, वर्तमान के काल में साहित्य में विकृतता होने के कारण मानो कागभुषुण्ड जैसों को पक्षी की उपाधि प्रदान की

जाती है इसीलिए कागा थे, परन्तु इसीलिए देखो, कागा ऋषि का हमारे हृदय में उनका कितना आदर, कितनी, महानता का हम दर्शन करते रहते हैं मानो देखो, वह बाल्यकाल से ही, तपों में परिणत रहते और उनका आयु बड़ा दीर्घ बनाया, उन्होंने अनुष्ठान किए यागों में वेद के मर्म को जानने वाले। तो मानो देखो, ऐसे विचार जब महापुरूषों पर आते हैं, तो यह समाज मानो देखो, साहित्यिक दृष्टि से, आलांकारिक दृष्टि से तो देखो, विचित्र कहा जा सकता है। परन्तु देखो, जब इसको साहित्यिक रूप में मापने का प्रयास करते हैं तो साहित्य में दूषितपना आ जाता है। तो इसीलिए मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पानी हैं, मैं पुनः से देखो, उसी स्थली पर, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, मेरी ऐसी कामना रहती है याग मानो देखो, अपनी स्थलियों में विचित्र बना रहे और यागां ब्रह्मे लोकां यागप्रहे पूज्यपाद गुरुदेव कहा करते हैं कि याग तो अपने में अनूठा है, विज्ञान की उपलब्धियां, मानो देखो, याग के द्वारा उत्पन्न हुआ करती है, विज्ञान और याग दोनों एक ही सन्तुलना वाले हैं, दोनों का जब मिलान होता है, तो आध्यात्मिक विज्ञान, याग के सम्बन्ध में इनके विचार बड़े गम्भीर है याग के सम्बन्ध में, उन्होंने संसार को भी याग माना है हम सब स्वीकार करते हैं कि यह संसार एक यज्ञशाला के रूप में क्रियाकलाप हो रहा है, यह याग हो रहा है, जिस यागां भविते लोकां जिस याग में प्रत्येक प्राणी अपनी-अपनी देखो, स्वाहाः याग की आहुति दे रहा है, परन्तु मैं आज विशेष चर्चा नही, केवल मैंने बहुत पुरातन काल में, मैं अपने-अपने विचार देता रहता हूँ, समय-समय पर। मानो विचार मेरा क्या है? मानो देखो, याग उसे कहते हैं जहाँ किसी का तिरस्कार नही होना चाहिए मानो देखो, सबको पूजा की दृष्टि से दृष्टिपान करें, तो वह याग हमारा सम्पन्नता को प्राप्त होता है। जैसा अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव प्रगट कर रहे थे, महाराजा युधिष्ठिर की चर्चा कर रहे थे, महाराजा युधिष्ठिर ने महाराजा शिशुपाल को, बहुत प्रार्थना की और यह कहा कि हे राजन! यह याग मानो सम्पन्न होने जा रहा है, यह सम्पन्न हो गया। इसमें किसी प्रकार की मानो क्रूरता नही होनी चाहिए। परन्तु देखो, वह जो निर्वाचन है, वह होता ही इसीलिए है, क्या एक मानव क्रूर बन जाता है। तो उसको शिक्षा दी जाएं शिक्षा को स्वीकार न करे तो उसका वध कर देना चाहिए। ऐसा मानो देखो, अब्रहे देखो, यह महाराज इन्द्रप्रस्थ में देखो, यह वही पवित्र भूमि है, जहाँ महाराज युधिष्ठिर ने राजेश्वरी याग किया था आज मानो देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार से नाना प्रकार के उस काल से इस भूमि पर नाना प्रकार का देखो, परिर्वतन हुए हैं, नाना परिवर्तन हुए हैं, इस भूमि पर मानो देखो, मेरी पुत्रियों के सतीत्व भी हनन किए गएं हैं, और भी देखो, राष्ट्रीय आभा में देखो, नाना प्रकार का परिवर्तन होता रहा है। मानो देखो, आज कुछ और परिवर्तन है, इससे पूर्व कोई और परिवर्तन है, परिवर्तन ही होता रहता है। क्योंकि प्रकृति का यह स्वभाव बना हुआ है, तो आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कोई वाक् उच्चारण करने वाला नही हूँ। केवल यह कि हे यज्ञमान! मेरे हृदय की यह कामना रहती है, कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, तू अपने में पवित्र बन करके मानो देखो, अग्न्याध्यान करता है। यह अग्नि ही संसार का जीवन है। यह अग्नि का विभाजन कर रही है, परमाणुओं का और विभाजन करके मानो यही वायुमण्डल का शोधन कर देती है। जैसा इसमें पदार्थ दोगे, उसी पदार्थ का विभाजन करके यह वही क्रिया में लाने वाला है। और तो विज्ञान मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने बहुत से प्रगट किए हैं, आज मैं उन विचारों में न जा करके केवल यही कि यज्ञमान को मैं अपने हृदय की कामना उच्चारण करने के लिए अब मैं पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे महानन्द जी ने अपने दो शब्द उच्चारण किए जिनका हृदय मानो हृदयमुक्त हो करके अपनी वार्त्ता प्रगट करते रहते हैं। कोई वाक् नही यह समाज परिवर्तनशील होता ही रहता है, यह कोई ऐसा वाक् नही है, प्रकृति का एक-एक परमाणु अणु अपने में परिवर्तित होता रहता है। तो यह आज का वाक् अब मैं अपने देखो, जैसा महानन्द जी ने कहा है हे यज्ञमान! मेरा हृदय भी मानो यही कहता रहता है

कि शुभकामना में रत्त रहें। आज का विचार अब समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन ओ३म् देवाः माणाहं त्वा रथं आभ्यां गताः मां हृदयश्चमा देवं रथाःओ३म् दधि सर्वं भविता रेवं गताः। दिनांक ०७ १२ १९८६

# १० महात्मा कपिल मुनि का आश्रम ०४ १२ १९८७

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जा रहा था। क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्रों में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का वर्णन आता रहा है। क्योंकि वह वेदमन्त्र, मानव को अन्धकार से प्रकाश में ले जाने वाला एक कुञ्ज कहलाता है मानो वह ज्ञान की कुञ्जी है, जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, विचार-विनिमय होता रहा है। तो इसीलिए हमें प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान की महिमा और ज्ञान और विज्ञान में ले जाने के लिए सदैव तत्पर रहता है। जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, भिन्न-भिन्न प्रकार की धाराओं में, और भिन्न-भिन्न प्रकार का ज्ञान और विज्ञान, प्रायः-हमें वैदिक साहित्य में प्राप्त होता रहा है। क्योंकि मानव परम्परागतों से अन्वेषण कर रहा है, अनुसंधान कर रहा है, और यह मनोनीत भावना रहती है कि हम अपने में मानो देखो, अपनेपन और अपना ही ज्ञान और विज्ञान हमें प्रायः प्राप्त हो रहा है। और उसी को हमें जानना है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना में, तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, विचार केवल यह, कि प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा के गुणों का बखान कर रहा है, और वह मानव को उसमें चिन्तन करना है और मानवीयता को अपने में लाने के लिए सदैव तत्पर रहना है। क्योंकि प्रत्येक मानव मानवता चाहता है, प्रत्येक मानव के हृदय में मानो एक मानव दर्शन की पिपासा रहती है और यह विचारता रहता है कि मैं मानव दर्शन में जाने के पश्चात, मानवीयता मेरे समीप आ जाए, भद्रता आ जाए, अभद्रता समाप्त हो जाए। तो बेटा! ऐसी मनोनीत इच्छाएं होती है, और प्रत्येक मानव के हृदय में, ये विचार रहता है कि अन्धकार मेरे समीप न आ जाए, क्योंकि अन्धकार में मृत्यु है, और प्रकाश में जीवन है। तो इसलिए मानव को जीवन में महान बनने के लिए तत्पर रहना चाहिए, परन्तु आज मैं बेटा! तुम्हें विशेषता में तो ले जाना नहीं चाहूँगा, आज मैं तुम्हें एक एक ऐसे आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जहां बहुत परम्परागतों से ही, साहित्य अपरोक्ष होने से, साहित्य की महान विचारधारा प्रायः हमें प्राप्त होती रहती है। मेरे पुत्रों! मैं आज तुम्हें ऐसे आसन पर ले जाना चाहता हूँ जहां ऋषि-मुनि परस्पर अपनी विवेचना करते रहे, और वह विवेचना का फलस्वरूप बड़ा विचित्र माना गया है।

तो मुनिवरों! देखो, आओ मैं आज तुम्हें एक ऐसे आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जहां बेटा! ज्ञान और विज्ञान की भी चर्चाएं होती रही है, मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण है, महर्षि कपिल मुनि का आश्रम, महर्षि कपिल मुनि महाराज का विद्यालय कहना चाहिए, और वह आश्रम भी कहलाता है। महर्षि कपिल मुनि महाराज का विद्यालय बड़ा भव्य था, जिसमें मानो धर्नुविद्या का, ब्रह्मचारी नृत्त करते रहे हैं। क्योंकि हमारे यहां, भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का वर्णन, प्रायः आता रहता है, और वह वर्णन शैली बड़ी विचित्र मानो देखो, धर्नुम ब्रह्मे कृतं वह धनुर्याग अपने में बड़ा विचित्र माना गया है। महात्मा कपिल मुनि महाराज अपने आश्रम में बेटा! वह धनुर्याग की कल्पना करते रहते थे, अथवा चिन्तन और मनन करते रहते थे, और राष्ट्रीय क्या ब्रह्मवेत्ता सर्वत्र मानो उनके आश्रम में विद्यमान हो करके, और पवित्रतम विद्या का अध्ययन करते रहे है।

तो मेरे प्यारे! मैं नाना प्रकार के यागों की चर्चा करते हुए, हमारे यहां बेटा! देखो, धनुर्याग का बड़ा वर्णन आता रहा है कपिल मुनि के यहां भी धनुर्याग होता रहा, और भी राजा ऋषि-मुनियों के यहां, नाना प्रकार के यागों का वर्णन हमारे यहां वैदिकता में प्राप्त होता रहता है। आओ मेरे पुत्रों! देखो, मैं तुम्हें, कपिल मुनि के आश्रम में बेटा! एक समय भारद्वाज मुनि जा पहुंचे क्योंकि महर्षि भारद्वाज मुनि का जीवन बड़ा महान, तो महात्मा कपिल

## याग एक सर्वांग पूजा

मुनि के यहां नाना ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहे थे, मानो उनके अध्ययन की शैली परिवर्तित हो गई, और मुनिवरों! देखो, वह ब्रह्मचारी, उनके यहां, नाना प्रकार की विद्या का अध्ययन करते रहे, महात्मा कपिल मुनि महाराज धनुर्याग में बड़े पारायण, मानो जय और विजय दो ब्रह्मचारी थे, जो उनके यहां अध्ययन कर रहे थे। मानो जय और विजय दोनों, बड़े पारायण मानो अपने में धनुर्याग को जानते थे, धनुर्याग का अभिप्राय यह है कि क्या यह ब्रह्मचारियों का खिलवाड़ माना जाए, तो मेरे प्यारे! देखो, वह अपने में जय और विजय बड़े पारायण थे, अस्त्रों शस्त्रों की विद्या में बड़े पारायण रहते, मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा सगर को एक अश्वमेध याग करना था। मेरे पुत्रों! उन्होंने श्रृंगार से गुथा हुआ, वह अश्व को उन्होंने त्याग दिया। हमारे यहां अश्वमेध याग का यह नियम माना गया है, अमृतां ब्रह्मे ब्रह्मसम्भवा मानो अश्व को त्यागा जाता है और जो कोई उसे सुन्दरता में प्राप्त करके मानो उसे स्थिर करने का गृह होता है तो उन्होंने यह घोषणा की, सम्भवे ब्रह्मणां ब्रह्ममृतम कृतं देवाः मेरे पुत्रों! यह जो धनुर्याग है यह अपने में बड़ा पारायण और भी भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन प्रायः साहित्य हमें प्राप्त होता रहा है। तो महात्मा महर्षि कपिल मुनि महाराज के ब्रह्मचारियां ने उस जय और विजय दोनों ने, उस मानो देखो, घोड़े को जो गुथा हुआ, राजा सगर के यहां से त्यागा हुआ, उसको जय और विजय ब्रह्मचारी ने दोनों ने स्थिर कर दिया, और आश्रम में नियुक्त किया तो मुनिवरों! देखो, कुछ समय के पश्चात, जब अश्व कहीं दृष्टिपात नहीं हुआ, तो राजा सगर ने अपने सेना और सेना नायकों से कहा स्वाञ्जन अहे वृत्तम अश्वा जाओ हे! तुम जाओ अपने में पूर्ण हो कही भी अश्व प्राप्त हो जाए तो उसे गृह में वास करो। मेरे पुत्रों! देखो, वह राजा सगर के सुखमंजस के शब्दों को पान करने के पश्चात, वह मुनिवरों! देखो, जब भ्रमण करने लगे, तो पृथ्वी पर कहीं उन्हें प्राप्त नहीं हुआ। बड़ी चिंताम ब्रह्मे-कृतं ब्रह्मचारियों को उस समय महान चिन्ता हुई, और चिन्ता का गृह चिचित्र माना गया है। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने अपनी सेना से कहा, जाओ अश्व को लाओ, तो वह भ्रमण करते हुए, पुनः महात्मा कपिल मुनि महाराज के यहां, ब्रह्मचारियों के मध्य में, मेरे पुत्रों! देखो, वह अश्व विद्यमान है। सेना नायकों ने क्रोधाग्नि में परिणत हो करके, मुनिवरों! देखो, उन्हें नष्ट करने के लिए विचारा, वह सेना बड़ी विचित्र मानो देखो, उनसे संग्राम होने लगा। तो जय और विजय तो बड़े वैज्ञानिक थे, क्योंकि धनुर्याग का अभिप्राय जहां अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या का, मानो अभ्यस्त हुआ, वह अभयस्त तो मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है, क्या महाराजा जय और विजय ने दोनों ने उसको विजय कर लिया। विजय करने के पश्चात मानो वही ब्रह्मचारी जब पुनः आए, तो मानो विचारधारा पुनः बन गई। सम्भूति ब्रह्मण ब्रह्मे कृतं संगो कृता वर्णासुता श्रुति ने वाक् उच्चारण करते हुए उन्होंने कहा कि सम्भव्य ब्रहे हे सेनाओं! तुमने अभद्र व्यवहार किया। मानो देखो, उनकी बहुत-सी सेना को नष्ट कर दिया। जब सेना नष्ट हो गई, तो उन्होंने अश्व नहीं प्रदान किया। अश्वां ब्रह्मे मेरे पुत्रों! देखो, इसी वाक् को ले करके वह तो निधन हो गएं। ब्रह्मचारी अपने में मानो अध्ययन और अभयस्त होना उनका एक कर्तव्य माना गया है।

तो मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है क्या वह अश्वां ब्रह्मे कृतं ब्रीही वाचन प्रह्वा विश्वचप प्रहा मेरे पुत्रों! देखो, ऐसा स्मरण आता रहता है, जैसे नवीनता हो, और विचित्रता दोनों अपनी स्थलियों में नियुक्त हो गई है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जय और विजय दोनों ब्रह्मचारी विज्ञानमय होने के फलस्वरूप यह हुआ, कि देखो, महाराज की सर्वश सेना मानो नष्ट हो गई। अब मुनिवरों! राजा सगर के मन में यह आया क्या सेना समाप्त हो गई है, उनसे अश्व को कैसे लाया जाए? मेरे पुत्रों! देखो, उनका एक पुत्र था सुखमंजस, वह बोले हे पितरो सम्भवा चलो, हम गमन करते है अश्व को लेने के लिए। मेरे पुत्रों! वह भ्रमण करते हुए, पाताल पुरी में पहुंचे। जहां महर्षि कपिल मुनि महाराज का वह विद्यालय था, महर्षि कपिल ब्रह्मचारियों को शिक्षा दे रहे थे, ब्रह्मचारी को ओज और तेज की उत्पति के लिए उपदेश, अमृतमयी तुल्य मानो चरणामृत पान कर रहे थे। मेरे पुत्रों! ब्रह्मण ब्रह्मा कृतं राजा सगर

और सुखमजंस दोनों में वहां से गमन किया। भ्रमण करते, उस स्थली पर आ गए, जिस स्थली पर उनकी सेना का निधन हो गया था। महात्मा कपिल मुनि महाराज से उनका मिलन हुआ, महात्मा कपिल बोले कहो राजन! स्वच्छनं ब्रहे कस्वचलता हे राजन! भम्रताम ब्रह्मे राजा सगर ने कहा प्रभु! हम अश्व को आप से भिक्षा के रूप में अपने में प्राप्त चाहते है। हे प्रभु! हमारा अश्व प्रदान कीजिए। अश्वमेध याग कर रहे है, वह अश्व हमें प्रदान कीजिए। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम! परन्तु ऐसा यह क्यों हुआ? राजन! महाराजा सगर ने कहा कि यह सम्भो यह साम भूक कहलाते है, और इन्हें ब्रह्मचारियों को सुन्दर लगा, मानो अश्व को अपने यहां और तुम्हारी सेना ने यहां घृष्टता की। इसीलिए वह मृत्यु को प्राप्त हो गए। मानो देखो, राजा सगर और सुखमंजस दोनों ने यह कहा प्रभु! अब हमें हमारा अश्व प्रदान कीजिए। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। परन्तु यागां यागं ब्रह्मणे ब्रहे कृतं स्वाअन्म ब्रीही कृता मानो देखो, हम उसे अश्व को, अपने यहां ले जाना चाहते है, और अश्वमेध याग करे। अश्वमेध याग करना हमारा कर्तव्य है।

तो मेरे प्यारे! ऐसा स्मरण आ रहा है क्या वह यागां ब्रह्मणं लोकां वाचं सम्भवीतो का वाचा मानो देखो, राजा सगर को यह उपदेश महात्मा कपिल ने दिया। कपिल ने कहा हे राजन! स्वातं ब्रह्मा मानो यह जो तुम्हारी सेना है, इन्होंने यहां अभद्र व्यवहार किया उसी अभद्र व्यवहार का परिणाम जय और विजय ने दोनों ने, अपनी अस्त्रों-शस्त्रों से तुम्हारे राज, विश्वनीय मानो देखो, इनको सबको नष्ट कर दिया। क्योंकि हमारे यहां नाना प्रकार की विद्या का अध्ययन होता रहा है। हमारे यहां धनुर्याग का अभिप्रायः भी यही है, क्या नाना प्रकार की विद्या का अध्ययन होता रहता है। यहां मानो देखो, अस्त्रों-शस्त्रों के ऊपर क्या लोकों की यात्रा भी हो सकती है। अग्नेयास्त्र ऐसा एक अस्त्र है जिसको प्रहार में लाने के पश्चात तुम्हारी सेना सर्वत्र नष्ट हो गई। मानो देखो, अस्त्रों शस्त्रों की विद्या का इतना प्रभुतव रहा है। मेरे प्यारे! देखो, पातालपुरी में उसी विद्या के अध्ययन के लिए, मानो देखो, सर्वत्र जय और विजय बड़े पारायण थे। मेरे पुत्रों! देखो, महात्मा कपिल ने कहा राजन! हे सर्वश्च ब्रह्मा आज देखो, तुम्हारी यह सेना नष्ट हो गई है, अश्व को आपने अपना लिया है। परन्तु हमारी इच्छा यह है कि तुम्हारे राष्ट्र में अभिमान नहीं होना चाहिए। यह जो अभिमान की प्रवृत्तियां है, धर्म और राष्ट्र सर्वत्रता का विनाश कर देती है। मेरे पुत्रों! देखो, महात्मा कपिल ने कहा इसलिए राजन! हम प्रायः अपने में महान बनना चाहे, परन्तु महानता जब आती है जब मानव में आत्मिक बल होता है और आत्मिक बल उस काल में होता है जबकि वव तपश्चर हो और तपस्या उसे प्राप्त होती है मानो जो अपने में धैर्यवान रह करके और प्रभु की प्रतिभा को निहारता रहता है, और एक-एक कण-कण में प्रभु को निहारता हुआ सागर से पार होने का प्रयास करता है। महात्मा कपिल ने कहा कि राजा भी वही होता है, जो तपस्वी होता है, सबमें प्रथम अपने साम्राज्य अपने राष्ट्र अपने शरीर रूपी राष्ट्र का जो साम्राज्य है, वह राजन! पवित्र और महान होना चाहिए। क्योंकि राजा जब तपश्चर होता है तो उसके यहां से जो भी क्रियाकलाप मानो प्रारम्भ होता है, उस क्रियाकलाप को अपने में अपनाने वाला बन जाता है और हे राजन! जो तपस्वी राजा होता है मानो उसके यहां इस प्रकार मृत्यु नहीं हुआ करती न ऐसा प्रतीत होता है, क्या यह भी अभद्रता है, जानना एक अभद्रता कहलाती है। मेरे पुत्रों! महात्मा कपिल ने कहा राजन! अश्व तुम्हारा है। यह राष्ट्र भी तुम्हारा है। यह वित भी तुम्हारा है। परन्तु देखो, इसके ऊपर अनुसंधान किया जाए। गम्भीरता से विचारने से मानव के जीवन में, एक कृतिका का जन्म हो जाता है राजन! और वही तपस्वी राजा, समाज को ऊंचा बना देता है, और वह समाज जब ऊंचा बनता है, उसकी प्रवृत्तियों में एक महानता का जन्म हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, महात्मा कपिल ने यही कहा, हे राजन! तेरे राष्ट्र में पवित्रता होनी चाहिए। अश्वमेध याग से पूर्व, क्योंकि अश्वमेध याग तो अन्तिम चरण कहलाता है। मानो देखो, वहां तुम्हारा व्रत समाप्त हो गया है, मेरे पुत्रों! रायां ब्रह्मणा कृतं

## याग एक सर्वांग पूजा

राजन्! तुम्हारे राष्ट्र में तपस्या और राष्ट्र अप्रतम मानो इस प्रकार सेना नष्ट नहीं हुआ करती है, जो तपश्चर राजा होता है। क्योंकि उसके यहां मानवता, एक मानवीय कृतियों में रत्त करती रहती है। अवग्रता उसके यहां नहीं होती, और जब यह दोनों नहीं होती, देखो, समाज और राष्ट्र दोनों ऊंचे बन जाते है। हे राजन! यह एक हमारा विचार है, जिन विचारों में एक महा कृतिका ओत-प्रोत हो रही है, महात्मा के वाक् पान करने वाले मानो देखो, सर्वत्र ब्रह्मचारीजन जय और विजय भी वही विद्यमान थे।

मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है क्या राजा सगर और उनके पुत्र असमंजस को वह अश्व महात्मा कपिल ने प्रदान कर दिया और यह कहा कि तुम्हारे राष्ट्र में पवित्रतव होना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, उस वाक् को पान करने के पश्चात, ब्रह्मण्ड ब्रहे कृता ब्रह्माण्ड की कल्पना जहां होती हो, महाराजा कपिल मुनि के आश्रम में, बेटा! ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे। वहां आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान, दोनों का प्रायः अध्ययन होता रहा है। विचार आता है, कि भौतिक विज्ञान क्या है? और आध्यात्मिक विज्ञान क्या है? मेरे पुत्रों! भौतिक विज्ञान तो उसे कहते है, भौतिक विज्ञान में एक विशालता होती है, और भौतिक विज्ञान उसे कहते है जहां अणु और परमाणु को ब्रह्मास्त्र, अग्नेयास्त्र, इन सर्वत्र अस्त्रों को जाना जाता है परन्तु वह राष्ट्र का एक नृत्त है। मेरे पुत्रों! देखो, वही तो भौतिक विज्ञान है, और आध्यात्मिक विज्ञान वह है, जो मानव अर्न्तमुखी मौन हो जाए, और वह मौन हो करके प्रभु का चिन्तन करने वाले हो, वह अन्त में मुनिवरों! देखो, मुक्ति के आंगन में प्रवेश कर जाते हैं सम्भवं ब्रह्मा देव प्रहा मानो देखो, राजा के यहां, दोनों प्रकार का विज्ञान होना चाहिए, राष्ट्र जब ही ऊंचा बनता है। राष्ट्र में जब ही महानता आती है। महात्मा कपिल मुनि महाराज का यह उपदेश पान करते हुए, अन्तर्हृदय राजा का बड़ा विभोर हो गया। महाराजा सुखमंजस उनके पुत्र ने कहा राजन! प्रस्थानं ब्रहे अब हमें प्रस्थान करना चाहिए।

मेरे पुत्रों! देखो, पिता और पुत्र दोनों अश्वमेध, अश्व को ले करके, घोडे को ले करके उन्होंने गमन किया। मेरे प्यारे! अश्वमेध याग हुआ और राजा और वह याग भी मानो महर्षि कपिल मुनि महाराज की अध्यक्षता में हुआ। महात्मा कपिल अपने में बड़े गृह स्वेत मेरे पुत्रों! मैं आज विशेष चर्चा नहीं करूंगा, याग की चर्चा मैंने कई काल में यह प्रगट भी की है। परन्तु महात्मा कपिल मुनि महाराज के यहां, ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे, ब्रह्मचारी अपने में महानता का दर्शन करते रहे है। मेरे पुत्रों! वही महानता जीवन को ऊंचा बना देती है, वही धारा तो ऊंचा बनाती है, जो आंतरिक, बाह्य जगत दोनों से जिसका समन्वय रहता है। तो मेरे प्यारे! हम आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान दोनों को लाना चाहते है। दोनों को, मुनिवरों! देखो, मानव परमात्मा की धरोहर स्वीकार करके, हमें उसका पालन करना है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, दूरी न चला जाऊं, महात्मा कपिल मुनि महाराज की चर्चा जय और विजय ने दोनों ने राजा सगर की सेना को नष्ट कर दिया। मेरे पुत्रों! देखो, राजं ब्रहे अस्त्रों-शस्त्रों का विद्या उनके यहां धनुर्याग का अभिप्रायः जहां यह अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण होता हो, जहां ब्रह्मचारी अध्ययन करते हो, उसी को क्रियात्कता में लाने का प्रयास करते रहे है। तो मेरे पुत्रों! देखो, उस आभा में वह चिन्तन और मनन करते हुए, अपने मानो अश्व को ले करके वह अपने राष्ट्र में पहुंचे। परन्तु कपिल मुनि महाराज ने बहुत-सी वार्त्ताएं प्रगट कराई। महात्मा कपिल मुनि महाराज का जीवन पाताल पुरी में, ब्रह्मचारियों के मध्य में व्यतीत होता था। मेरे पुत्रों! देखो, उनका याग सम्पन्न होता है, वह ब्रह्मवेदनी ब्रह्मा ज्ञानान्सते ब्रह्म ज्ञान ही तो मानव को ऊंचा बनाता है, जानाति जन्म ब्रह्म कृतं मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या कि हम प्रभु की प्रतिभा, अथवा उसका जो विज्ञान है, वैदिक साहित्य में उसको साकार रूप बनाना यह हमारा कर्तव्य है। साकार रूप बनाना ही हमारी प्रतिष्ठा कहलाती है। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार यह है कि राजा सगर, हमारे यहां याग बड़ा महत्वपूर्ण रहा है, राजा सगर ने इस याग की

प्रशंसा करते हुए, अपने विचारों में कौन-सा उद्घोष प्रदान किया है, वह उद्घोष सम्भोतत कहलाता है। परन्तु देखो, विचार यह है कि अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या को पान करना, हमारे यहां कपिल मुनि महाराज यही किया करते थे, और भी नाना प्रकार के यागों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में होता रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, याग के सम्बन्ध में बहुत अनन्य चर्चाएं हो चुकी है, समय आता रहेगा हम उद्गीत रूपों में गाने का प्रयास करेंगे मेरे पुत्रों! देखो, राजन्नं ब्रह्मा सम्भवा बेटा! राजा ने यह घोषणा कर दी, परन्तु उसी घोषणा के आधार पर अश्वमेध याग का, क्रियाकलाप प्रारम्भ हो गया। मेरे पुत्रों! देखो, राजा को यह परन्तु कपिल मुनि महाराज दोनों प्रकार के यागों में पारायण थे, मानव को मानव दर्शन में ले जाना, भौतिकता को भौतिकवाद में ले जाना ऊर्ध्वा में गति करने वाला ऊर्ध्वम कहलाता है। बड़ा विचित्र आभायुक्त है। मेरे पुत्रों! आभां ब्रह्मा कृतो सम्भवं ब्रह्मा लोकाम् जहां आध्यात्मिकवाद की चर्चाएं, आत्मा का ज्ञान और विज्ञान याग की प्रतिभा बड़ी विचित्रतव मानी गई है। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार क्यू हमारे यहां परम्परागतों से भिन्न-भिन्न प्रकार के, यागों का चयन होता रहा है। और वह यागां ब्रह्मे जिससे मानव अपने आत्मतव को वह एक देखो, भोजनालय में प्रवेश करता है मानो देखो, वही तो उनका क्रियाकलाप और विचित्रता में हमें दृष्टिपात आता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, राजा सगर ने भी, याग के लिए अपना क्रियाकलाप बनाया, महात्मा कपिल मुनि महाराज के यहां आध्यात्मिकवाद और भौतिक याग, दोनों होते रहे है। महात्मा कपिल मुनि महाराज के, यंत्रों में विद्यमान हो करके, समुद्र की रसातल पर, समुद्र की आभा में रत्त होते रहे। और देखो, समुद्रों का जो विज्ञान है, उनके समीप रहा। परन्तु राजा महात्मा कपिल मुनि महाराज के यहां, ऐसे-ऐसे यंत्र उन्होंने निर्माणित किए थे, जय और विजय बेटा! एक समय यंत्रों में विद्यमान हो करके, और उन्होंने वहां से गमन किया ब्रह्मे ऋतो सम्भवा त्रिपादां त्रिवर्धनं, निवर्णनं ब्रह्मे कृतं तो मेरे प्यारे! देखो, महात्मा कपिल मुनि महाराज के यहां, आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों की, दोनों एक रूप में लाने के लिए सदैव तत्पर रहे है। मेरे पुत्रों! मैं आज विषय को विशालता में ले जाना नहीं चाहता हूँ, विचार केवल इतना ही है, कि वह जय और विजय दोनों, अपने यंत्रों में विराजमान हो करके मंगल में पहुंचे और मंगल में मानो देखो, उन्हें एक समय ऐसा कौतुक हुआ, क्या जय और विजय के समीप दोनों के यहां, जब वह कृतियों में रत्त होने लगे तो वह कृत्या शुभ वाचन्नं ब्रह्मे वह यंत्र को त्याग करके, मानो वहां से गमन किया। मेरे पुत्रों! देखो, वहां के वैज्ञानिकों ने, मंगल के वैज्ञानिकों ने जब यन्त्र को अंकित करने लगे, तो वह बड़ी आयु वाला था। मानो वह वायु का भण्डार, शिरोधार्य श्वञ्जन्म ब्रीह्मे मेरे पुत्रों! देखो, वह अपने पृथ्वी मंडल पर आ गएं, और यान उनका वही मानो अदृश्य हो गया। मानो ऐसे-ऐसे यंत्र, प्रायः निर्माणित होते रहे है, मंगल में जाना, मंगल से चले आना, विज्ञानं प्रह्मो सहो कृताम् जय और विजय ने बेटा! देखो, लोक-लोकातंरों का भ्रमण भी किया। जय और विजय अपने में बड़े अद्वितीय थे, बड़े महानता का कृत करते रहते थे। तो वह महानाम प्रभो सम्भवा कृता महात्मा कपिल मुनि महाराफ के आश्रम से जय और विजय दोनों, एक समय बेटा! शुक्र की यात्रा से आ रहे थे। वह शुक्र की यात्रा में जब विश्वस्त हो गया, तो मुनिवरों! देखो, वह उसी यंत्र में, अपने को वृत करते हुए, मानो अपने जैसी वार्त्ता को उन्होंने स्वीकार किया। मुनिवरों! देखो, बुद्ध में, मंगल में, शुक्र में लोक लोकातंरों की यात्रा होती रहती थी। उस यात्रा का फलस्वरूप बड़ा विचित्र बन गया। मेरे पुत्रों! विचार हमारा यह चल रहा है विचार यह प्रारम्भ हो रहा है कि हमारे यहां देखो, धनुर्याग प्रायः होता रहा है। धनुर्यागों के यंत्रों में विद्यमान हो करके, वह ब्रह्मचारी अपने में खिलवाड़ स्वीकार करके बेटा! लोकों की यात्रा करते रहे। आज मैं विशेष चर्चा नहीं तो उन्होंने महात्मा देखो, राजा सुखमजंस, उनके पिता सगर को भी अपना यंत्र दृष्टिपात कराया। मानो देखो, इस प्रकार का हमारा धनुर्याग, महात्मा कपिल मुनि महाराज के यहां होता रहा, आकाशवाणी आती रहती, उन आकाशवाणियों में विद्यमान हो करके, अपने में नृत्त करते रहे। मेरे प्यारे!

## याग एक सर्वांग पूजा

देखो, विज्ञान अपने में बड़ा अनूठा और विचित्र माना गया है। राजा सगर ने भी बेटा! देखो, उसी प्रकार का याग कराया, जिस याग में वह सफलता को प्राप्त हुए। तो मेरे पुत्रों! देखो, प्रभु का विज्ञान कितना बिखरा हुआ है। मैं विचारों को लाने के लिए आया हूँ, कि मंगल में यात्री जा रहा है, प्रभु का जो रचाया हुआ जगत हूँ, जो अगाध समुद्र के तुल्य है, उसमें से मानो विज्ञान की बहुत-सी वार्त्ताओं को ले करके, वह अपने में विज्ञानवेत्ता बन जाता है। बड़ी विचित्रतम ब्रह्मा कृतं यागां रुद्रो भवा सम्भवे लोकां मेरे पुत्रों! देखो, उनके यहां, एक प्रकार का विज्ञान नृत्त होता रहा, यातायात लोकों में निर्माणित कर दिया, यह सर्वत्र उनका एक नृत अन्तिम ब्रह्मे सम्भवा, कैसी विचित्रता बेटा! मुझे दृष्टिपात आ रही है। आज मैं वैदिक साहित्य की चर्चा जब करता हूँ, तो हृदय गद गद हो जाता है, वह हृदय ग्राही बन जाता है।

मेरे पुत्रों! आज का यह उपदेश क्या कह रहा है, आज का यह वाक् यह कह रहा है, कि मानव कितनी उड़ाने उड़ता रहा है, कितनी विचित्र धाराओं को अपनाता रहा है। आज मुनिवरों! देखो, मैं उस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ, केवल यह कि महात्मा कपिल मुनि महाराज के दो वैज्ञानिक जय और वियज बुद्ध, मंगल इत्यादि दोनों लोकों में और भी लोक लोकांतरों की यात्रा करके अपने आश्रम में प्रवेश हो गएं। यंत्र को त्याग दिया है, पृथ्वी पर आ गए है। मेरे पुत्रों! देखो, विज्ञान बड़ी पराकाष्ठा पर रहा है, और विज्ञान में जाना कोई आश्चर्य नहीं है, परन्तु विज्ञान अपनी स्थलियों में विज्ञान रहना चाहिए। तो मेरे पुत्रों! देखो, राजा सगर ये अपने अश्व को ले करके राष्ट्र में अश्वमेध याग के लिए तत्पर होने लगे, महाराजा भी अपनी स्थलियों में रत्त अस्सुता विचार मेरे पुत्रों! देखो, यह कि सर्वत्र मानो देखो, अमृतं ब्रह्मे राष्ट्र की चर्चा तो अश्वमेध याग की चर्चा, तो मैं कल करूंगा। आज का विचार यह कि परमपिता परमात्मा का अनन्त विज्ञान है। बिखरा हुआ परमाणु है, अणु है, उसी को मुनिवरों! देखो, वह मानव जान करके उसको साकार रूप में लाने का प्रयास करता है। परन्तु विज्ञान तो प्रभु की ही धरोहर है। अणु और परमाणु तो प्रभु की धरोहर है, उसको जान करके वैज्ञानिक मिलान करा देता है, और वह उसका मिलान होते ही, मानो देखो, वह उसका रूपांतर भी हो जाता है। तो विचार मेरे पुत्रों! प्रभु का यह अनूठा जगत है, विज्ञान उसकी परमात्मा की नही माता अब्रहे सम्भवम ब्रह्मे ये आचार्यों की धरोहर है। परमात्मा की धरोहर स्वीकार करके, जब उसका उपयोग करता है, तो उसको विज्ञान मृत्यु से पार हो जाता है। और जब विज्ञान अभिमान से करता है, तो मृत्यु के आंगन में प्रवेश कर जाता है। मेरे पुत्रों! विचार यह कि परमात्मा की धरोहर को हम उसे अपने सीमित रहे उसका विचार करते हुए अपने इस सागर से पार हो जाना चाहिए। मेरे पुत्रों! आज का विचार यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हम इस संसार सागर से पार होना चाहते है। मेरे पुत्रों! आज का विचार यह कि हम परमपिता परमात्मा के, अनूठे ज्ञान और विज्ञान को विचार-विनिमय करके, इस सागर से पार हो जाना चाहिए। मेरे पुत्रों! यह आज का विचार अब समाप्त होने जा रहा है। आज के विचारों का अभिप्रायः यह कि कपिल मुनि के आश्रम में धनुर्याग और विज्ञान कितना महान और विचित्र कहलाया गया। मेरे पुत्रों! देखो, विश्रामं बहो सम्भवा विश्वस ब्रह्मा कृतं वेद सम्भव ब्रह्मा तो बेटा! देखो, हमें याग से प्रतिष्ठित हो जाना चाहिए, और परमात्मा के बिखरे हुए विज्ञान को साकार रूप देना चाहिए। यह हमारा कर्तव्य है, तो मैं बेटा! शेष चर्चा तो इसके आगे कल ही प्रगट करूंगा, आज का विचार तो केवल इतना उच्चारण कर रहा है, कि हम, अपने विचारों की एक भूमिका बनाते चले, और वह भूमिका बड़ी विचित्रता में रही है। परन्तु आज का यह वाक अब समाप्त होने जा रहा है, कल समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे। आज का समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन बेटा! मैं कल राजा सगर अश्वमेध याग की चर्चा करूंगा। परन्तु आज तो कपिल मुनि के आश्रम की कुछ चर्चाएं की है। परन्तु समय मिलेगा शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे।

परन्तु आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पाठन-पाठन। के-३, लाजपत नगर, दिनांक : ०४ । १२ । १९८७।

# ११ संसार रूपी यज्ञशाला ०५ १२ १९८७

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे अनन्तमयी है, और जितना भी यह जड़ जगत, अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है, हमारे यहां, वैदिक साहित्य में, परमपिता परमात्मा की जड़ और चैतन्यवत में स्वीकार किया गया है। हमारे यहां चेतना का अभिप्रायः जो ज्ञान और प्रयत्न से युक्त रहने वाला जगत है, उसे चेतन कहा जाता है। परन्तु जो ज्ञान से शून्य है, चाहे वह गतिवान भी हो, परन्तु ज्ञान और प्रयत्न से जो शून्य है, वह एक मानो जड़वत कहा जाता है। तो इसीलिए जड़ में और चैतन्यवत् में मानो वह मेरा प्रभु विद्यमान रहता है। परमपिता परमात्मा एक अनन्तमयी, मानो इस ब्रह्माण्ड का नियंता व निर्माण करने वाला है। परन्तु वह पिण्ड वर्णन ब्रीह्वी सम्भवा वेद का वाक् कहता है कि पिण्ड का वह प्रतिनिधि है। मानो ये जड़ और चैतन्यवत में दोनों में ही विद्यमान है। इसीलिए हमारे यहां प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है, जिस भी वेदमन्त्र के ऊपर, तुम विचार-विनिमय प्रारम्भ करोगे, मानो उसमें अनन्तमयी ब्रह्माण्ड की प्रतिभा का प्रायः वर्णन होता रहता है। हमारे ऋषि-मुनियों ने, एक-एक वेदमन्त्र को ले करके, इस ब्रह्माण्ड को मापने का प्रयास किया। परन्तु जब तक वह संसार को निहारते रहे, संसार मापना प्रारम्भ कृति असम्भवा मानो ब्रह्माण्ड को मापते रहे, और जब मानो इस ब्रह्माण्ड की प्रतिभा, अपने में लुप्त होने लगी तो मानव का विचार और उसकी भी धारा सान्तवना को प्राप्त होने लगी। अन्त में बेटा! मानव मौन हो गया, विचारने से प्राण सखा और मनस्तव को दोनों को मापने का प्रयास किया। परन्तु वह तपस्या के द्वारा प्राण सत्ता के द्वारा संकल्पोमयी प्राण के द्वारा, उस ब्रह्माण्ड को मापने का प्रयास किया। परन्तु मापते-मापते बहुत दूरी चले गएं, अन्त में बेटा! देखो, वहां भी मौनता आ गई, और वह मौन क्यों हो गएं? क्योंकि जिस रस का कोई वर्णन नहीं कर सकता, जब मानव रसास्वादन में प्रवेश कर जाता है। तो मुनिवरों! देखो, उसका वर्णन करने में वह असमर्थ हो जाता है। इसीलिए ऋषि-मुनि मानो एक वेदमन्त्र को ले करके अन्वेषण करना प्रारम्भ करते है, और उस पर अनुसंधान करते-करते प्राण और मन एक सूत्र में प्रवेश हो जाते है, तो संसार का वर्णन करना, उनके लिए असम्भव हो जाता है।

मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें गम्भीर, क्षेत्रों में नहीं ले जाऊंगा, केवल यहां ऋषि मुनियों का, नाना प्रकार का वाद विवाद और उनकी विचार धाराएं प्रारम्भ होती रही है। जब मैं विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करता हूँ तो ये संसार बेटा! एक अनुपम विज्ञानमयी दृष्टिपात आने लगता है। मानो जब मैं उस संसार के याग रूपी संसार के सम्बंध में या मानो देखो, एक आभा में ऋषि कुल में जब प्रवेश करता हूँ, तो वहां एक अनूठा जगत, एक अनूठा आदर्श हमारे समीप आना प्रारम्भ हो जाता है। मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें ऐसे विचित्र विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ, जहां विद्यालय में नाना प्रकार का विचार-विनिमय होता रहा है, जहां मानो लोक-लोकातंरों की प्रायः मानो उड़ान उड़ी गई है। और एक दूसरे ब्रह्माण्ड को मापने का प्रयास भी किया। परन्तु उसमें जाने के लिए, यातायात और अपनी प्रतिभा को भी मानो उज्ज्वल रूपों में लाने का प्रयास किया। बेटा! जब मैं उस क्षेत्र में प्रवेश करता हूँ, तो मानो उस क्षेत्र की वार्त्ताएं और ऋषि-मुनियों के विद्यालय में प्रवेश करते है, तो बेटा! एक अनूठा जगत, एक अनुपमता में हमें दृष्टिपात आने लगता है। आओ! मेरे पुत्रों! देखो, मैं तुम्हें महर्षि कपिल मुनि महाराज की जहां चर्चा कर रहा हूँ वहां बेटा! जय और विजय की भी चर्चा हो रही थी। बेटा! यहां राजा सगर और उनके पुत्र

## याग एक सर्वांग पूजा

सुखमजंस की चर्चा हो रही थी, परन्तु आज मैं उस साहित्य में, तुम्हें प्रवेश न कराता हुआ, केवल इनकी विचार धाराओं को प्रगट करने के लिए आया हूँ, जो विद्यालय में प्रायः, ब्रह्मचारी आचार्यों से नाना प्रकार का प्रसंग ले करके, और उनके चरणों में आते-प्रोत होते रहे हैं। मानो यही गाथा, यही रूप में महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में भी, प्रायः प्रसंगवत आता रहा है, और यही विचारधारा ब्रह्मचारी महर्षि कपिल मुनि महाराजा के आश्रम में भी, प्रायः होती रही है। जहां बेटा! महर्षि कपिल मुनि महाराज के यहां, धनुर्याग का वर्णन आता है, भौतिकवाद का वर्णन आता है, भौतिकवाद की चर्चाएं आती है, वहां बेटा! देखो, आध्यात्मिकवाद भी बड़ा पारायण में, पारायण रहा है। और उस आध्यात्मिकवाद में, मानव सदैव प्रवेश करता रहा है।

मेरे पुत्रों! एक समय महर्षि कपिल मुनि महाराज और मुनिवरों! महर्षि गौतम और जय और विजय दोनों ब्रह्मचारी जो उनके यहां नाना प्रकार के अणु और परमाणुओं को एक दूसरे में मिलान करने का प्रयास करते रहते थे, अथवा यंत्रों का भी प्रायः निर्माण होता रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, एक समय जय और विजय और वरतेन्तु ब्रह्मचारी और व्रेतकेतु मेरे पुत्रों! देखो, उस समय वैशम्पायन मुनि भी मानो देखो, उनके कुछ सहपाठी विद्यालयों में अध्ययन करते रहे, महर्षि कपिल मुनि महाराज से, जय ने एक प्रश्न किया, क्या महाराज! हम यह जानना चाहते है, कि मानव नाना प्रकार के यागों में परिणत रहता है, और जब हम वेद का अध्ययन करते है, तो यागों का बड़ा वर्णन आता रहता है। प्रभु! हम याग के सम्बन्ध में कुछ जानना चाहते है? महर्षि कपिल जी ने कहा कि जो इच्छा हो ब्रह्मचारी! वह प्रश्न करो, और जितना हमने अध्ययन किया है, जितना जाना है, वास्तव में तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर हम दे संकेगे। तुम्हारे मानो जो भी तुम्हारे हृदय में, विचार धारा उपलब्ध होती है, और उसमें किसी प्रकार का अन्तर्द्वन्द्व है तो उसका हम वर्णन करेंगे। यदि जानते होंगे तो। क्योंकि ऋषि-मुनियों में बेटा! अभिमान नहीं हुआ करता है, जितना मानव आध्यात्मिकवाद में तप जाता है, और भौतिक विज्ञान को जान लेता है वह मेरे प्यारे! देखो, निरभिमानी बन जाता है। अभिमान उनको होता है, जो आध्यात्मिकवाद में तपा नहीं है, और भौतिक विज्ञान को कुछ जाता है, उसमें पूर्ण रूपेणता नहीं है, तो उसमें प्रायः अभिमान जागरूक हो जाता है, और वही अभिमान उनका मनोनीत मानो देखो, मन की जो विचारधारा है, उसको सूक्ष्म बना देता है, और आत्मा का जो प्रकाश है, मानो देखो, वह प्रकाश अभिमान रूपी आवरणों से वह शांत हो जाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया कि हे ब्रह्मचारियों! तुम प्रसन्न करो, तो उन्होंने कहा प्रभु! हम आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करना चाहते है, और हम इस संसार रूपी यज्ञशाला को जानना चाहते है, यह संसार रूपी याग संसार ब्रह्मे कृतं इसमें ब्रह्मणा ब्रहे मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु! इस संसार को जानना चाहते है, इसमें कौन होता है? कौन उद्गाता है? कौन अध्वर्यु है? और कौन मानो यज्ञमान बन करके साकल्यों के द्वारा होता याग कर रहे है। कौन ब्रह्मा बना हुआ है? मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि कपिल मुनि महाराज ने कहा, कि इस संसार रूपी यज्ञ को तुम क्यों जानना चाहते हो? उन्होंने कहा प्रभु! यह मानव के हृदय में प्रायः पिपासा जागती रहती है, क्या वह इस संसार की प्रत्येक वस्तु को जानना चाहता है, जब आचार्य के समक्ष मानो समीप विद्यमान हो करके ब्रह्मचारी इस संसार को और देखो, दर्शनोक्त और वेदोक्त वाक्यों को मानो उन अपने आचार्य के समीप लाता है। और वह विजातीयता को शांत कर देता है सजातीय को सजा देता है। तो हे प्रभु! हम सजातीय को सजाना चाहते है, हमारे अन्तर्हृदय से जो तरंगे उत्पन्न होती है, उन तरंगों के आधार पर, हम इस संसार को जानना चाहते है। प्रत्येक मानव के हृदय में यह मानव आशंका बनी रहती है, वह प्रत्येक रूप में बेटा! इस संसार को जानना चाहता है, क्योंकि पिण्ड और ब्रह्माण्ड की, प्रायः एक ही रचना मानी गई है, और जो मानो यह ब्रह्माण्ड इतना विस्तार पूर्वक है, जिसमें नाना प्रकार के लोक-लोकातंरों की माला बनी रहती है, गुरूतव की

माला भिन्न है, मानो देखो, द्यौ से वाककृत लेने से उनकी माला भिन्न कहलाती है, एक-एक लोक-लोकातंरों की भी माला बन जाती है, जैसे मानो देखो, मनके है, वह एक सूत्र में पिरोएं जाते है, और वह सूत्र में पिरोते ही मानो देखो, माला का रूप धारण कर लेते है। इसी प्रकार जब ब्रह्मसूत्र में, प्रत्येक मानव की प्रवृत्तियां पिरोई जाती है तो मानो देखो, उसकी माला बन जाती है। तो प्रभु! यह भी तो एक मानो देखो, मन की और सूत्र का एक समन्वय कहलाता है, जो एक दूसरे में ओत-प्रोत है।

मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा प्रभु! एक समय मानो हम अपने पितर के द्वारा, हम एक मगध राष्ट्र में पहुंचे थे, तो वहां मानो देखो, वहां रात्रि हो गई, तो कात्ययान के गृह में हमारा वास हुआ, तो हमने कात्ययान के यहां, प्रातः कालीन कात्ययान के गृह में याग होता था जब याग होने लगा तो उन्होंने अपने एक आचार्य से महर्षि सुधन्वा से यह प्रश्न किया क्या महाराज! इस याग को हमने किया है यह मानो इसके मनके क्या है? और सूत्र क्या है? जिस सूत्र में यह याग पिरोया हुआ है, और यह याग मानो द्यौ लोक में, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, द्यौ लोक में प्रवेश करता है, मानो देखो, उसको हम जानना चाहते है, तो मानो देखो, सुधन्वा ऋषि ने उत्तर दिया, परन्तु वह बन नहीं पाया, वह कात्यायन के गृह में रहने वाला, गृहणी को शान्ति की स्थापना नहीं हुई, तो मानो देखो, हमारे वह प्रसंग आज स्मरण आ रहा है। हम भगवन! उस सूत्र को, उन मन को जानना चाहते है, मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने प्रश्न ब्रह्मणे ब्रहे जब आचार्य का धनुर्याग का याज्ञिक मानो जब यह आचार्य से प्रश्न कर रहा है, तो कपिल मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम एक पंक्ति में विद्यमान हो जाओ। आज मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए उद्यत हूँ। तुम क्या उस द्यौ लोक को जानते हो जिस द्यौ लोक की तुम चर्चा करते हो, मेरे प्यारे! सुधन्वा ने कहा प्रभु! आप के चरणों में विद्यमान हो करके वेद के मन्त्रार्थ से यह सिद्ध हुआ है, क्या उस द्यौ लोक को हम जानते है, जिस द्यौ लोक में मानो देखो, जिसमें द्यौ प्रवेश कर जाती है। जिसमें मानो देखो, जैसे मानव का हृदय है मानव का हृदय भी द्यौ कहलाता है। जैसे मानो देखो, मानव के नेत्रों में, संसार के चित्रों को लिया है, और घ्राण ने मन्द सुगन्ध को लिया है और त्वचा ने प्यार और प्रीति को लिया है, रसना ने रस को लिया है, मानो श्रोत्रों ने मानो शब्द को लिया है, इस सर्वत्र की मानो देखो, स्थिति कहा रहती है वह सर्वत्र मानो देखो, हृदय में समाहित हो जाते है इसी प्रकार यह जो द्यौ है मानो देखो, यह जो पञ्चीकरण जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है प्राण से ले करके, द्यौ देखो, वर्ण ब्रहे मानो देखो, वह अन्तरिक्ष से ले करके द्यौ ब्रह्मा और वह देखो, प्राणं ब्रह्मे वायु और देखो, तेजोमयी गुरूतव तरलतव मानो देखो, ये सर्वत्र एक मानो आभा में पिरोएं हुए है, यह एक मानो देखो, द्यौ में समाहित हो जाते है। इसीलिए सूर्य जिसको हम हमारे यहां उदयन कहा जाता है, जो उदय होने वाला है, प्रातः कालीन जब सूर्य उदय होता है, तो उदय हाते ही, मेरे पुत्रों! देखो, उदं ब्रह्मा उदगं ब्रह्मे, वह द्यौ से उसका समन्वय हो जाता है, और द्यौ से जहां समन्वय हुआ, बेटा! देखो, सूर्य अपनी ऊर्ज्वा को ले करके, मानो देखो, उस ऊर्ज्वा को अपने में पिरो लेता है, और संसार को ऊर्ज्वा दे करके प्रकाशमान बना देता है, इसी प्रकार यह द्यौ में ब्रह्मा मानो देखो, वह उसको अपने में धारण करता है, इसीलिए हमारे यहां, द्यौ अवृत कहलाया जाता है।

तो हे ब्रह्मचारी! मेरे विचार में यह आता है, कि यह जो जगत है इस सूत्र और देखो, यह मानो तुम यज्ञशाला को जानना चाहते हो इस संसार रूपी याग को कौन कर रहा है? मानो देखो, समय पर सब वस्तुएं उदय हो जाती है, उदय हो करके, अपने क्रियाकलापों में तत्पर हो जाते है। मानो देखो, सूर्य अमृत देता है, चन्द्रमा देखो, सूर्य प्रकाश देता है, चन्द्रमा अमृत देता है, उसका समन्वय चन्द्रमा से रहता है, और सूर्य का समन्वय द्यौ से रहता है, मानो देखो, जैसे देखो, पृथ्वी गुरूतव का समन्वय मेरे प्यारे! देखो, अवृत्तियों से रहता है, और

## याग एक सर्वांग पूजा

देखो, इसी प्रकार प्रीती का समन्वय मेरे पुत्रों! देखो, हृदय ग्राही कहलाता है। और चित्रं ब्रह्मा वह चित्रों को लेता हुआ, मेरे पुत्रों! देखो, वह अग्नि तेजोमयी है, और देखो, जल तरलमयी कहलाता है, और पृथ्वी गुरूतव कहलाती है। इसी प्रकार मानो देखो, वायु गतिवान बन करके, और ये सर्वत्र मानो अन्तरिक्ष में समाहित हो जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, परमाणु तीन है, गति करने वाली वायु है, और देखो, जिसमें गतिवान हो करके वह अन्तरिक्ष कहलाता है, मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि कहता है, हे ब्रह्मचारियों! इसी प्रकार मानं ब्रह्मे लोकां वाचप्रद्वे वृत्ति वेद का वाक् कहता है, कि वह अपने में मानो देखो, गतिवान हो रहा है। इसी प्रकार आचार्यों ने वर्णन किया है, वेद के वांगमय में, जब प्रवेश किया गया, तो वेद का एक मन्त्र जब स्मरण आता है, वेद का मन्त्र कहता है, ब्रह्मण ब्रद्वे वाचप्रद्वा द्यौम ब्रद्वा यज्ञमाना सुतम प्रद्वा वृत्ति मेरे प्यारे! वेद का ऋषि कहता है क्या आत्मा ही उस समय यज्ञमान कहलाता है आत्मा ही यज्ञमान कहलाता है। जो उसका धिपति कहलाता है मेरे प्यारे! देखो, वह अप्रतम् ब्रह्मा वे परमपिता परमात्मा, इस यज्ञशाला का, संसार रूपी यज्ञशाला का, बेटा! देखो, ब्रह्मातव को प्राप्त करता है। वह ब्रह्मा बन जाता है, और यह पंच महाभौतिक जो मानो देखो, आकार है, जैसे देखो, वायु उद्गाता बनता है, अग्नि ऊध्वर्यु बन जाता है, मेरे प्यारे! देखो, उद्गाता अध्वर्यु और देखो, वह अग्नि पुरोहित बन जाता है, वह अग्नि पुरोहित कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, आपोमयी ज्योति, जहां वह अध्वर्यु है, वहां वह पुरोहित भी है। मेरे पुत्रों! देखो, जहां आपोमयी ज्योति बन करके, वह ज्योतिवान बन करके मानो देखो, वह प्रकाश का द्यौतक है, वही गुरूतव को अपने में धारण करने वाला है। तो मेरे प्यारे! विचार क्या हुआ, क्या वायु उद्गाता है उद्गीत गाने वाली है, मेरे प्यारे! देखो, अध्वर्यु अग्नि है, जो मानो द्रव्य का भण्डार कहलाता है मेरे प्यारे! देखो, आपोमयी हिरण्यं ब्रह्मा वह जो आपोयमी है वह मानो देखो, जहां अग्नि पुरोहित है, जहां अग्नि उद्गाता है, वहां पुरोहित भी बनती है। उद्गीत गाने वाले को उद्गाता कहते है। अध्वर्यु को, अध्वर्यु जो उदगं ब्रह्मा वर्णन ब्रहे मेरे प्यारे! जो उद्गीत गाता है, वह वायु के रूप में भी है, वह अग्नि के रूप में भी विद्यमान है। मेरे पुत्रों! एक दूसरे से इनका सर्वत्रता का एक संगठन मानो समन्वय रहता है। और वह समन्वय ही एक दूसरे को दर्शाता रहता है। यहां बेटा! देखो, उद्गीत गाने वाला, वायु सिद्ध हुआ, और मुनिवरों! देखो, अध्वर्यु के आसन पर मेरे पुत्रों! देखो, यह आपोमयी ज्योति बन जाता है, और पुरोहित अग्नि बन करके, मेरे पुत्रों! देखो, द्रव्य साकल्य का, जितना साकल्य है वह मानो गुरूतव बन करके, एक दूसरे में समाहित हो करके, बेटा! वह अग्नि जो पुरोहित है, मानो देखो, जो अग्नि अतिथि भी कहलाती है, जो अग्नि देवताओं का मुख कहलाता है, उसमें बेटा! देखो, उसमें समर्पित कर देते है, जब उसमें समर्पित कर देते हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मा का स्थली है वह ब्रह्मा बेटा! इस संसार रूपी याग का धिपति कहलाता है, वह मानो देखो, याग में परिणात रहता है, वह इसका धिपति बन करके मानो देखो, ऊर्ध्वा को प्राप्त करा रहा है।

विचार विनिमय बेटा! मैं कोई विशेष चर्चा देने नहीं आया हूँ, मैं कोई व्याख्यता नहीं हूँ, केवल विचार-विनिमय देने के लिए आया हूँ, क्या यह संसार रूपी यज्ञशाला क्या है? मेरे प्यारे! देखो, यही पृथ्वी के गर्भ में विद्यमान हो करके, नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों की उपलब्धि करा देता है, यही बेटा! अन्तरिक्ष में, जब गमन करता है परमाणु अपनी स्थलियों से द्वितीय स्थलियों पर गमन करते है। वही, मेरे पुत्रों! देखो, प्राणवर्धक कहलाते है, वह प्राण का संचार करते रहते है। मेरे पुत्रों! देखो, वही आभा, जब आगे ऊर्ध्वा में, द्यौ में प्रवेश करती है, वही परमाणु जब द्यौ में प्रवेश करते है, तो बेटा! उसी को सूर्य अपने में धारण करता हुआ, उदयन बन करके, मानो देखो, वह भास्कर, भास्कर अपने स्वरूप को धारण करता हुआ, मानो देखो, वह भासता रहता है, ऊर्ज्वा को प्रदान करता रहता है। तो मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, आचार्य ने यह कहा, महर्षि ने यह वर्णन किया, मंगलम् ब्रह्मा व्रतम देवा मेरे प्यारे! महर्षि गौतम ने महर्षि कपिल मुनि महाराज और आदि ऋषियों

की वार्त्ता को ले करके, उन्होंने उदधृत करके विचार दिए, और महर्षि कपिल मुनि महाराज ने कहा, हे ब्रह्मणत्व! हे वाचम ब्रह्मणो वृतम देवा! हे ब्रह्मचारियों! तुमने यह जान लिया क्या यह संसार रूपी यज्ञशाला क्या है, इसमें बेटा! देखो, इसी प्रकार, यह भव्य जगत कहलाता है। ऐसे ही मानव का शरीर भी, एक प्रकार की यज्ञशाला है, हमारे ऋषि-मुनियों ने आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद दोनों का मानो समन्वय किया है। दोनों का मिलान किया है, दोनों को समन्वय करके, उन्होंने आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद को बेटा! देखो, परस्पर, दोनों का समन्वय करते हुए कहा है कि इस मानव शरीर को आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद से बेटा! इसका समन्वय किया। उन्होंने यह तो ब्रह्माण्ड संसार की विचारधारा प्रगट की कि बेटा! देखो, इसमें आत्मा यज्ञमान है, परमपिता परमात्मा ब्रह्मा है, और मुनिवरों! देखो, अग्नि अध्वर्यु है, और वायु उद्गाता है, मेरे पुत्रों! देखो, आपोमयी ज्योति, मानो देखो, उसके वृत्यम देखो, उसके पुरोहित के रूप में धारण कर रही है। मेरे पुत्रों! देखो, जैसे पृथ्वी है गुरूतव इत्यादि ये आगे मानो देखो, उद्गाता क्या यह मानो होता बन करके बेटा! आहुति दी जा रही है उनकी स्थिति द्यौ लोक को प्राप्त हो जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, इसी प्रकार मानव के शरीर की विचारधारा को देखो, उन्होंने आध्यात्मिकवाद से इस ब्रह्माण्ड को मानो समन्वय में करने का प्रयास किया।

मेरे पुत्रों! देखो, जब इसका समन्वय करने लगे, तो आज का वेद का मन्त्र क्या कह रहा था वेद का मन्त्र कह रहा था, जगतं ब्रह्मे वाचा प्रह्वे वृत्तं वायु सम्भवम ब्रह्मा वारणासुति मंगलं ब्रह्मे आत्मा लोकां वाचा मेरे प्यारे! देखो, इसी का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा क्या यह मानो देखो, जो हमारा मानवीयतव है यह जो शरीर है, इसमें भी भिन्न-भिन्न प्रकार के होता बने हुए है, जो आहुति दे रहे है, लाते है आहुति प्रदान कर देते है, उसी साकल्य को ले करके, सूक्ष्म रूप बना करके, प्राण सखा मानो देखो, उसको अपने में निगल जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, एक दूसरे में पिरोया हुआ, जगत दृष्टिपात आता है। मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने महर्षि कपिल जी ने कहा, क्या यह देखो, चौबीस मानो देखो, चौबीस खम्बो वाला चौबीस खम्बो वाला यह मानवीय शरीर कहलाता है। बेटा! इसमें चौबीस स्तम्भ है, जैसे एक मानव गृह का निर्माण करता है, और गृह के निर्माण के लिए वह स्तम्भ बनाता है, इसी प्रकार मानव के शरीर में भी मानो देखो, स्तम्भ माने गएं है, और वह मुनिवरों! देखो, चौबीस कहलाते है, ये चौबीस मुनिवरों! देखो, चौबीस स्तम्भों का भवन कहलाता है, यह यज्ञशाला कहलाती है, भवन भी क्या यह यज्ञशाला है इस यज्ञशाला में विद्यमान हो करके मेरे पुत्रों! देखो, एक याग हो रहा है एक प्राण सखा विद्यमान है, मनस्तव है, आत्मतव है, मेरे पुत्रों! देखो, यहां एक भव्य याग हो रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, इसका वर्णन करते हुए, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने भी वर्णन किया, और यही वर्णन, महर्षि कपिल मुनि महाराज ने किया, यही मुनिवरों! देखो, उद्दालक गोत्र में, शिकामकेतु की विज्ञानशाला में अथवा उनके याज्ञिक भवन में भी इसी प्रकार का वर्णन आता रहा है, मेरे पुत्रों! देखो, यही वर्णन महर्षि भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में, उन्होंने बेटा! अपने यहां वर्णन किया है। यही वर्णन मानो महर्षि कपिल मुनि महाराज के यहां भी उन्होंने वर्णन किया, क्या यह चौबीस खम्बों वाला मानव भी यह एक शरीर है, एक प्रकार की यज्ञशाला है। मेरे पुत्रों! देखो, जब ये चौबीस खम्ब कौन से हैं? जिसमें बेटा! याग हो रहा है, मेरे पुत्रों! देखो, एक प्राण के दस भाग हैं, प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, नाग, देवदत, कुरु, धनञ्जय और कृकल मानो यह देखो, दस प्राण कहलाते हैं। पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, यह इन्द्रियां कहलाती हैं। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार बेटा! यह चौबीस खम्बों वाला एक मानव शरीर रूपी यज्ञशाला कहलाती हैं। मेरे पुत्रों! जिसमें भव्य यज्ञ हो रहा है, याग हो रहा है, मुनिवरों! देखो, मानव इसमें विद्यमान हो करके, जब आत्म चिन्तन करता है तो ये बेटा! उसे प्रतीत होने लगता है। यही यज्ञशाला में विद्यमान हो करके, मुनिवरों! देखो, आत्मवेत्ता, अपने में आत्म चिन्तन करता रहता है। मानो खम्बों को चिन्तन में लाता रहता है। मेरे

## याग एक सर्वांग पूजा

पुत्रों! देखो, जब यह प्रसंग महर्षि कपिल मुनि महाराजा ने वर्णन किया, मुनिवरों! देखो, मन, बुद्धि, चित्त अहंकार उन्होंने वर्णन करते हुए कहा, कि यह चतुष अन्तःकरण कहलाता है, इस अन्तःकरण की भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रवृत्तियां मानी गई हैं, अभिव्यक्ति मानी गई हैं। जैसे बेटा! देखो, मन का सबसे प्रथम मन आता है। मन, मेरे पुत्रों! देखो, कितना विशाल है यह मन मित्र और शत्रु बन करके रहता है, यह मन मानो देखो, मन यह सम्पर्क से आता है, यह मन प्रकृति का सूक्ष्मतम तन्तु कहलाता है। मेरे पुत्रों! जहां आत्मा का प्रकाश, इसे प्राप्त हुआ, तो वह अपना विराट रूप धारण कर लेता है। यह विभाजन का केन्द्र बन जाता है। संसार का जितना विभाजनवाद है, वह विभाजनवाद चाहे लोक-लोकान्तरों के रूप में हों चाहे मुनिवरों! देखो, मानव के मस्तिष्क के रूप में हों, यह सब मानो देखो, मनस्तव अपने में विभक्त करता रहता है। मेरे पुत्रों! देखो, एक पंक्ति में अपने कुटुम्ब की एक पंक्ति बन जाती है। उस पंक्ति में निर्णय लेने वाला आत्मा का प्रतिबिम्ब आया, और यह मन जागरूक हो करके प्राण की गति मिली मुनिवरों! देखो, यह विभाजन करना प्रारम्भ कर देता है। यह मानो पुत्र है, यह पुत्र वधु है, यह पिता है, महापिता है, यह मानो देखो, एक नवीन कुटुम्ब का निर्माण करने लगता है। मेरे प्यारे! आचार्यों ने अपने सहपाठियों के मध्य में विद्यमान हो करके यह नाना प्रकार का विभाजन करता रहता है। इसी प्रकार जब बेटा! यह और ऊर्ध्वा में गति करता है, तो मुनिवरों! देखो, यह मेधा को साथ में ले लेता है। ऋतम्भरा को संग में अर्पित करता हुआ बेटा! एक लोक-लोकान्तरों की माला को गिनने लगता है। उसमें गणना में लाता रहता है, प्राण सूत्र में उसको पिरोया हुआ, यह मन की स्वीकार कर लेता है। मेरे प्यारे! देखो, गृह का निर्माण करने लगता है। यह राष्ट्रवाद का निर्माण करने लगता है, और राष्ट्रवाद में मानो देखो, किस प्रकार की युक्तियां होनी चाहिएं, यह सर्वत्र मानो देखो, मनस्तव अपने में निर्माणित करने लगता है। बेटा! यह कैसा अनुपम मानो मेरे प्यारे प्रभु का यह जगत है, बेटा! आज मैं इसकी महतता के ऊपर अपना विचार देने लगूं, तो बेटा! अन्तरात्मा मानो गदगद हो जाता है। और हम यह कहते रहते हैं कि प्रभु तेरी रचना कितनी अनुपम है, माता के गर्भस्थल में रचना हो रही है, बेटा! कैसी रचना है, यह मन बेटा! देखो, जब चार प्रकार की बुद्धियों को ले करके गमन करता है, बेटा! देखो, बुद्धि से दृष्टिपात करता है, मेधावी मानो संसार का निर्माण करने लगता है, ऋतम्भरा जान करके मौन हो जाता है, और मुनिवरों! देखो, मेधावी बन करके मुनिवरों! देखो, प्रभु के मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करने लगता है। तो विचार आता है, बेटा! यह बुद्धि भी अपने मानो देखो, मनस्तव से, उसका समन्वय रहता है, उसका मानो देखो, वृत रहता है, स्वप्नवत में चला जाता है, तो एक नवीन ही रचना इसकी रचता है स्वप्नवत में बेटा! अन्तःकरण में, सूक्ष्मतम मानो तन्तु होते हैं, और उन्हीं मानो देखो, सूक्ष्म संस्कारों को, यह आत्मा के प्रकाश में, मानो देखो, अपने क्षेत्र में जा करके, बेटा! देखो, स्वप्न को धारण करके यह मानो एक नवीन संसार बना लेता है, राष्ट्रवादी बन जाता है। देखो, द्रव्यहीन हो जाता है। द्रव्यपति बन जाता है। अश्वपति बन जाता है। सूर्य की यात्रा में संलग्न हो जाता है वाह रे कैसा तेरा अनुपम मानो देखो, यह जगत है प्रभु! मेरे प्यारे! देखो, मनस्तव की भी रचना देखो, स्वप्नवत में होती है। पत्नी नही होती, पत्नियों के निर्माण कर लेता है। पति नही होते पतियों का निर्माण हो जाता है। गृहों का निर्माण हो जाता है। यह कैसा बेटा! कहां तक वर्णन किया जा सकता है, यह तो बड़ा अनूठा एक जगत है, ब्रह्माण्ड है, इसके चिन्तन में बेटा! जब हम गम्भीर मुद्रा में मुद्रित होते हैं, तो यह जगत दृष्टिपात आता है। यही बेटा! देखो, जब मेधावी क्षेत्र में प्रवेश करता है, नाना लोक-लोकान्तरों की माला बना लेता है, कहीं मानो देखो, ध्रुव मण्डलों में चला जाता है, कहीं मानो देखो, पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश कर जाता है, कहीं सूर्य लोक में गमन करने लगता है, तो कहीं आरुणि मण्डल में चला जाता है, कहीं बेटा! देखा बृहस्पति मण्डल में प्रवेश हो करके, यह कहीं आकाश गंगाओं के बेटा! सौर मण्डलों को गणना में लाने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, यह नाना

निहारिकाओं का निर्माण कर लेता है, अरे देवतं ब्रह्मा कैसा अनूठा बेटा! यह ब्रह्माण्ड मुझे दृष्टिपात आता है, मानो यह सब मनस्वत अपने में रचनाकार क्योंकि यह प्रकृति का सूक्ष्मतम तन्तु होने से, बेटा! यह निर्माणित करने लगता है। बेटा! लोक-लोकान्तरों को मापने लगता है, मापा नही जाता परन्तु मापने लगता है।

मेरे प्यारे! देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ केवल विचार यह, कि मुनिवरों! देखो, यह उसके पश्चात, संसार को जान करके, अपने हृदय रूपी मानो देखो, उस चित्त के मण्डल में ब्रह्मणां ब्रह्मा कृतं उस मानो देखो, चित्त के मण्डल में, जिस हृदय अगम्य कहते हैं बेटा! हृदय में सब समाहित हो जाता है, बेटा! देखो, बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी इसमें प्रवेश कर जाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह इसी प्रकार मन, बुद्धि और चित्त की मानो देखो, करोड़ों-करोड़ों के जन्म के संस्कार निहित रहते हैं।

बेटा! मुझे वह काल प्रायः स्मरण आता रहता है कपिल जी कहते हैं क्या एक समय मानो देखो, हिमालय की कन्दराओं में पंहुचा, तो हिमालय की कन्दराओं में बेटा! देखो, श्वेत्ता ब्रह्मवेत्ता, श्वेतं ब्रह्मवेत्ता ऋषि महाराज मानो देखो, दद्दड़ गोत्रीय एक समय मानो देखो, मौन रह करके पिचासी वर्ष का मौन किया, और वह अपने अन्तःकरण में जो जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार थे, बेटा! वह मन और प्राण का दोनों का समन्वय करके अपने चित्त के मण्डल में बेटा! अपने जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों को निहारने लगे तो बेटा! देखो, इनमें लाखों वर्ष के जन्मों के संस्कारों को जानने का प्रयास किया, तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या यह मानो देखो, चित्त के मण्डल में संसार निहित रहता है। मानो देखो, जैसे मानव अपने व्रतं ब्रह्मणा मानो देखो, नाना जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान होते हैं। तो बेटा! मेरे प्यारे! देखो, महात्मा कपिल जी कहते हैं, ब्रह्मचारी से हे ब्रह्मचारी! मानो तुम मेरे वाक्यों को श्रवण कर रहे होगे, वेद का ऋषि कहता है, वेद का मन्त्र कहता है, मनस्तं प्रम्हा चित्रं रथं वाचन्नम ब्रह्वे मानो देखो, वही तो चित्त का मण्डल कहलाता है, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार देखो, चित्त के पश्चात अहंकार आता है। जिससे ये परमाणु एक दूसरे में समन्वय हो जाते हैं, एक दूसरे में मिलान हो जाता है, एक दूसरें में सुगठित हो जाते हैं, जिससे मानो देखो, ये पिण्ड बनता है। जिससे मानो देखो, ये पिण्ड की वृत्तियां बनती हैं। मेरे प्यारे! देखो, यह परमाणुवाद ही तो है, और यह परमाणुवाद क्या, बिना अहंकार के बिना तेजोमयी के मानो देखो, इसका मिलान नही होता, इसका पिण्ड नही बनता, इनका पिण्ड तब ही बनता है, बाह्य जगत में मानो पर्वतों का पिण्ड बन जाता है, पृथ्वी का पिण्ड बन जाता है। लोक-लोकान्तरों के पिण्डाकार बन जाते हैं, यह कैसे बनते हैं? मानो देखो, बिना अहंकार को इसको कोई एक दूसरें में समन्वय करने वाला नहीं।

तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार-विनिमय क्या यही मानो देखो, वृतं ब्रह्मणां देखो, चित्त और अहंकार की प्रवृत्तियों में रत्त हो करके यह मानो देखो, यह चतुष अन्तःकरण कहलाता है, यही अन्तःकरण है बेटा! जब देखो, यह मन यह मन सबके मूल में रहता है, यह प्रकृति के सूक्ष्मतम तन्तु कहलाता है, मन के आश्रित रहते हैं। बेटा! मन का यह विचित्र एक ब्रहा कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, यही सम्भवं ब्रहे वायु सम्भवा लोकां वेद का आचार्य आगे कहता है सम्भूति ब्रह्मणां ब्रहे मेरे प्यारे! देखो, यह मन जब यह मन मुनिवरों! देखो, सुषुप्ति में चला जाता है, तो मन, बुद्धि में, बुद्धि चित्त में, और चित्त अहंकार में समावेश हो करके बेटा! देखो, उसको निद्रा अवस्था कहते हैं। वह निन्द्रित हो जाता है। तो वह बेटा! देखो, उस समय प्राणं आत्मां ब्रह्मा कृतं वाचन्नमं ब्रह्मे, वेद का आचार्य कहता है, कि देखो, उस समय यह प्राण ओर आत्मा ही जागरूक रहते हैं, जो मुनिवरों! देखो, शरीर को स्थिर किए मानो देखो, एक अस्वति कहलाती है। मेरे प्यारे! देखो, मन अपनी सुषुप्ति में चला गया है।

तो विचार क्या बेटा! मैं यह ऐसे विचित्र विचार में चला गया हूँ, ऐसे अगाध वन में चला गया हूँ, जहां बेटा! देखो, मुझे मार्ग प्राप्त नही हो रहा है। केवल विचार यह कि अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है, बेटा! अनन्तमयी, यह

विचार का एक क्षेत्र कहलाता है।

आओ मेरे प्यारे! यह मानो यह चतुष अन्तःकरण कहलाता है, यहां मुनिवरों! देखो, यह पांच प्राण हैं, और पांच ज्ञानेन्द्रियां और पांच कर्मेन्दियां हैं, मेरे पुत्रों! देखो, इन्हीं में रत्त रहता है। रत्त रह करके मुनिवरों! देखो, आगे हमारे ब्रह्मणं यह सत्रह रूपों में वर्णित हो जाते हैं यह चर्चा तो बेटा! मैं तुम्हें कल ही प्रगट करूंगा, आज का वाक् हमारा क्या कहता है, महात्मा कपिल ने कहा है, महात्मा कपिल जी ने कहा ब्रह्मणं ब्रहे व्रतां हे ब्रह्मचारी! हे ब्रह्मचारियों! यदि तुम जानना चाहते हो, संसार को तो मानो देखो, यह जो हमारा मानवीय जगत है, मन, बुद्धि चित्त अहंकार ये चतुष अन्तःकरण, जो मैंने अभी तुम्हें वर्णन कराया है, इस वर्णन शैली में, मानो देखो, पिण्ड और ब्रह्माण्ड की, दोनों की एकता का बना हुआ है, ये दोनों जब एक सूत्र में सूत्रित हो जाते हैं, तो मानो बेटा! देखो, अपने में प्रवेश करता हुआ, ब्रह्माण्ड के अन्तर और बाह्य दोनों मानो जगत को जानने के लिए, वह तत्पर हो जाता है। दोनों में अपने को समावेश कर लेता है। मेरे पुत्रों! देखो, आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान का अपने में जब समन्वय होता है, तो वही विज्ञान बेटा! समाज के लिए आनन्द युक्त है ओर वही आध्यात्मिक विज्ञान बेटा! मोक्ष की पगडण्डी के लिए परिवर्तित कर देता है।

तो आओ मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ, आज मैं तुम्हें कोई व्याख्ता नही हूँ, केवल परिचय देने के लिए आया हूँ, और परिचय क्या है? जो वेद का मन्त्र कह रहा है, परिचय क्या है? मानो देखो, परिचय बेटा! देखो, विद्यालयों में जो ब्रह्मचारी अपने में अध्ययन कराते रहें हैं, अपनी वृत्तियों में रत्त कराते रहे हैं, तों बेटा! उसी में वह रत्त ओर उसी में अभ्योदय होता रहता है तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि बेटा! हम ब्रह्माण्ड को मापते रहें, विचारते रहें, चिन्तन करतें, तो बेटा! देखो, अपनी आनन्दमयी अपनी आनन्द धाराओं का हमारे यहां विद्यालयों में जहां अणु, परमाणु मुनिवरों! यागों का निर्माण होता रहा है धनुर्याग करतें रहें हैं वहीं बेटा! देखो, आध्यातिमक याग की प्रवृत्तियां भी रही हैं, आध्यात्मिकवाद में भी मानो प्रवेश होता रहा है तो यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। मेरे पुत्रों! देखो, प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। मानो जितना भी यह जड़ जगत और चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। यह है बेटा! आज का वाक्, अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं तुम्हें कल प्रगट करेंगें। अब वेदों का पठन-पाठन होगा। ओ३म् ब्रह्म गताः रथा इन्द्रा गायन्त्वा वाचश्णां ब्रीहि गन्धर्वा वाया ओ३म् जिष्णु रथप्रां मनु विशौ शनाः वायाहाम्। दिनांक : ०५-१२-१९८७, के ३, लाजपत नगर।

# १२ उदगान विद्या ०६ १२ १९८७

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना जो यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं हैं मानो याग उसका आयतन है उसका गृह है उसका सदन है मानो वह उसी में वास कर रहा है इसीलिए वे परमपिता परमात्मा हमारा पुरोहित है हम उसे अपनी पराविद्या को जानने के लिए उस महान देव की उपासना करते रहते हैं और हमारे मन की यह प्रबल इच्छा होती है क्या उस परमपिता परमात्मा को साक्षात करते हुए अपना पुरोहित स्वीकार करते हुए पराविद्या का अध्ययन करें क्योंकि पराविद्या जब तक नही हमारे समीप आ नही पाती जब तक हम उस देव का जो विद्या का भण्डार है, जो विद्यामयी कहलाते हैं, जब तक हम उसका आश्रय न लें लें। तो इसीलिए वे परमपिता परमात्मा पुरोहित कहलाते हैं, मानो जैसे राजा के राष्ट्र में पुरोहित का अपना बड़ा महत्व माना गया है, जिस प्रकार यज्ञशाला में यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में पुरोहित का निर्वाचन करता है, तो मानो वह पुरोहित कहलाता है। तो परमपिता परमात्मा प्रायः हमारे पुरोहित है, मानो उसी की महत्तता और उसी की आभा में हम सदैव निहित रहते हैं। इसीलिए वे परमपिता परमात्मा, पराविद्या के जानने वाले हैं, और पराविद्या को जानने के लिए मानव परम्परागतों से अन्वेषण अथवा अनुसन्धान करता रहा है। और यह विचारता रहा है, कि मैं परमपिता परमात्मा की अनुपमता को जानता हुआ, मैं पराविद्या का गामी बनना चाहता हूँ, पराविद्या में रत्त रहना चाहता हूँ।

तो मेरे प्यारे! वे परमपिता परमात्मा पराविद्या को प्रदान करने वाले हैं, इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की अनुपमता को जानने वाले बनें। हमारे यहां परम्परागतों से ही, आचार्य जनों ने, भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ी हैं। और वह उड़ाने बड़ी विचित्र रही हैं। मानो एक वेदमन्त्र को ले करके, उन्होंने अपना अनुसन्धान प्रारम्भ किया, और वही अनुसन्धान, मानवीयता को ऊँचा बनाता रहता है।

आओ मेरे पुत्रों! मैंने वह वाक्, कई काल में पूर्व भी प्रगट किए हैं, आज भी मुझे पुनः से स्मरण आ रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, एक समय अकाल की प्रवृत्तियां, वायुमण्डल में प्रबलता को प्राप्त हो गई। हमारे यहां दो प्रकार से, भिक्षुक आता रहा है, अकाल आता रहा है, एक अतिवृष्टि में और एक अनावृष्टि में। मेरे पुत्रों! देखो, अनावृष्टि और अतिवृष्टि में दोनों में ही संसार मानो अपने में वृत्तियों से विहीन हो जाता है, और द्रव्य से भी हीन हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, एक समय मानो देखो, भयंकर पण अकाल आ गया। और जब पण अकाल आ गया, तो महर्षि अर्द्धभाग अपने आसन पर विद्यमान थे, ये पृथ्वी जल मग्न हो गई। अन्न नही रहा। मानो देखो, कि ऐसा पण अकाल हुआ, कि अन्नाद भूतप्रह्णा, अन्न का बड़ा अभाव हो गया। मेरे प्यारे! देखो, वह जब वह कई समय हो गएं, कई दिवस हो गएं, तो महर्षि अर्द्धभाग की धर्मदेवी, बेटा! अन्न से पीडित हो गई। अन्न नही रहा जब अन्न नही रहा तो प्राण जाने लगे, जब प्राण सखा जाने लगे, तो मुनिवरों! देखो, देवी ने कहा हे स्वामीतव! मेरे प्राणों का अन्त होने वाला है, प्राण सखा, इस शरीर से जा रहे हैं, मेरे प्राणों की रक्षा करो। महात्मा अर्द्धभाग ने विचारा, कि अन्न कहां प्राप्त हो सकता है बेटा! उन्होंने वहां से गमन किया, और भ्रमण करते हुए, जब वह एक भयंकर, मानो वन में पंहुचे, तो वहां एक हाथीवान मेरे पुत्रों! वह मा का पान कर रहे थे, उड़दों का पान कर रहे थे। महर्षि अर्द्धभाग ने भिक्षा में देहि ऐसा शब्द जब उच्चारण किया। तो हाथीवान ने विचारा कि मेरे प्राणों की तो रक्षा हो गई है। दूसरे प्राणों की भी रक्षा करनी चाहिए। मेरे पुत्रों! उन्होंने उनमें, से उड़दों का उन्हें भिक्षा के रूप में प्रदान किया। मुनिवरों! महात्मा अर्द्धभाग ने उसको स्वीकार कर लिया, हाथीवान ने कहा कि

महाराज! मैं जल भी आपको प्राप्त करा सकूं, आज्ञा दीजिए,

महात्मा अर्द्धभाग ने कहा कि तुम शूद्र हो। जब मुनिवरों! देखो, अर्द्धभाग ने उसे शूद्र कहा, तो गाड़ीवान मानो देखो, हाथीवान ने कहा हे प्रभु! मैं जब आपको अपने झूठें उड़दों का पान करा रहा हूँ, वह आपने स्वीकार कर लिए, और मुझे स्वीकार की आज्ञा न दे करके, मुझे शूद्र का, शब्दों वर्णा उच्चारणाति ब्रहे, आपने उन शब्दों का उच्चारण किया, मुझे शूद्र कहा है। महात्मा अर्द्धभाग ने कहा हे हाथीवान! प्रकृति का और दर्शन शास्त्रों का एक नियम बना हुआ है, क्या जो मानो स्वतः परिश्रम कर सकता है, जो वस्तु बहुतायात में है, और उसे स्वतः ले सकता है, उसे दूसरों का आश्रित नही होना चाहिए। मेरे पुत्रों! महात्मा अर्द्धभाग ने कहा मैं मानो देखो, अन्न तो है नही वह प्राणों की रक्षा के लिए अनिवार्य है, परन्तु जल बहुतयात में हैं, इसीलिए मैं तुम्हारा आश्रित क्यों बनूं? तुम मुझे अपना आश्रित बनाना चाहते हो तो इसीलिए मैंने आपको शूद्र कहा है। जो संसार में दूसरों का आश्रित रहता है अपनी प्रवृत्तियों का आश्रित रहता है या मनों से मानो देखो, रसना का आश्रित रहता है, वह शूद्र की कोटि में परिणत किया जाता है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने यह वाक् कहा, क्या इसीलिए मानव को प्राकृतियों में नही रहना चाहिए वह दूसरे का आश्रित नही रहना चाहिए। महात्मा अर्द्धभाग के उन वाक्यों को स्वीकार कर लिया, हाथीवान प्रसन्न हो गएं, उन्होंने कहा प्रभु! सत्य है वह वहां से मा को ले करके वहां से बेटा! प्रस्थान किया। जब भ्रमण करते हुए अपने आश्रम में पंहुचे, तो बेटा! उनकी पत्नी मानो देखो, व्याकुल हो रही है, उन्होंने बेटा! वह अन्नाद, उन्हें प्रदान किया। उन्होंने उसको पान किया, तो उनके प्राणों की रक्षा हो गई। उन्होंने कहा-देवी! महात्मा अर्द्धभाग ने कहा-देवी! कल मानो देखो, मैं महाराजा अश्वपति के यहां एक याग होना है, मैं उस याग में देखो, मुझे उद्गाता बनना है, उद्गीत गाना है, और जो मुझे वहां से प्राप्त होगा, उसका अन्नाद कहीं से भी मुझे प्राप्त हो मैं उसे तुम्हें प्रदान करूंगा। मेरे प्यारे! देखो, वह महात्मा अर्द्धभाग अगले दिवस, वहां से आश्रम को त्याग करके बेटा! भ्रमण करते हुए, वह महाराजा अश्वपति के यहां पंहुचे। तो महाराजा अश्वपति के यहां बेटा! यज्ञशाला का निर्माण हो गया है, सब पात्र विद्यमान हैं, मेरे प्यारे! देखो, वह व्रतं और यज्ञशाला में जो आसन है, वह उद्गाता का आसन शून्य है, वह मुनिवरों! देखो, उद्गाता के आसन पर, विद्यमान हो गएं, जब वह उद्गाता के आसन पर विद्यमान हो गएं, तो मुनिवरों! देखो, राजा बड़े आश्चर्य में हो गएं, और उनके जो पुरोहितां ब्रह्मे देखो, जो मानो होतागण वह भी आश्चर्य में हो गएं, जिसने किसी की आज्ञा नही ली है, और यह स्वतः अपने आसन पर विद्यमान हो गया है।

## उदगाता

मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा अश्वपति बोले कि महाराज! आपका परिचय क्या है? उन्होंने कहा प्रभु! मेरा परिचय है, कोई ऐसा विशेष परिचय नही हैं, मैं केवल देखो, उद्गाता के आसन के पर विद्यमान हूँ। मैं मानो देखो, केवल उद्गीत जानता हूँ, वेदों के सम्बन्ध में, मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा, कि मैं हे ऋषिवर! तुम्हारा परिचय जानना चाहता हूँ? उन्होंने कहा मुझे संसार के प्राणी मुझे मानो अर्द्धभाग के नामों से नामोकरण करते रहते हैं, उच्चारण करते रहते हैं, इसीलिए मेरा नाम अर्द्धभाग है। मेरे प्यारे! देखो, कुशु गोत्र में मेरा जन्म हुआ है। तो मेरे प्यारे! देखो, राजा ने कहा बहुत प्रियतम। तो हे भगवन! तुमने यह जो उद्गाता का आसन ग्रहण किया है, उद्गाता किसे कहते हैं? उन्होंने कहा प्रभु! उद्गाता उसे कहते हैं जो उद्गीत गाता है, जो वेदों का गान गाता है, उसे उद्गाता कहते हैं, इसीलिए मैं उद्गाता हूँ और मैंने अपना आसन ग्रहण कर लिया है उद्गाता का। तो इसीलिए मैं उद्गीत गाने के लिए उद्यत हूँ। उन्होंने कहा क्या यह भी हमने जान लिया, परन्तु यह उद्गाता कौन होता है? उन्होंने कहा उद्गाता वह होता है, मानो देखो, जो उद्गीत गाता हुआ, अन्तरात्मा से प्रसन्न हो करके, जो यज्ञमान की वाणी को पवित्र

बनाता है, जो मानो देखो, होताओं के सहित वह यज्ञमान की वाणी को पवित्र बनाता है, तो मैं वह उद्गाता हूँ, उन्होंने कहा यह भी यथार्थ है, परन्तु हे ऋषिवर! उद्गाता कौन होता है? उन्होंने कहा उद्गाता, जैसे मानव के शरीर में, आत्मा विद्यमान होती है। और आत्मा बिना यह शून्यतव को प्राप्त होता है, इसी प्रकार उद्गाता के बिना यज्ञमान की यज्ञशाला शून्यता को प्राप्त हो जाती है। मैं उद्गाता हूँ, मेरे पुत्रों! राजा ने कहा हे ऋषिवर! उद्गाता बाह्य जगत में, इस यज्ञशाला का अधिपति कौन मानो बाह्य जगत में कौन इसका उद्गाता है? मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा प्रभु! यह जो मुझे दृष्टिपात आ रहा है, ये बाह्य जगत तो प्रायः है ही परन्तु देखो, इस बाह्य जगत का स्वामीतव, नेतृतव करने वाला सूर्य कहलाता है। जैसे परमपिता परमात्मा के यहां, मानो देखो, सूर्य का समन्वय भी, मानो देखो, वृत्तियों में रत्त होता हुआ, चन्द्रमा से उसका समन्वय होता है, और चन्द्रमा ही मानो देखो, रसों का स्वामीतव है इसीलिए उद्गाता स्वरों से गाता है, रसमयी गाता रहता है, इसीलिए मानो देखो, सूर्य इसका अधिपति है। सूर्य प्रकाश में, अमृतमयी और वही अमृतमयी मानो देखो, रसों का स्वादनं जो रसों को देने वाला जो चन्द्रमा है, मेरे प्यारे! देखो, वही चन्द्रमा, हमें रसों का प्रदान करने वाला है, उन्हीं रसों से, हम अपनी वाणी को, ओजस्वी बनाते हुए, मानो देखो, उद्गाता के रूप में विद्यमान हैं। मेरे पुत्रों! देखो, राजा ने कहा ऋषि से कहा हे ऋषिवर! तुम्हारा वाक् यथार्थ है। परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ, कि उद्गाता कौन है? मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, कि उद्गाता जैसे सूर्य की नाना प्रकार का सूर्य का प्रकाश आता है, और उस प्रकाश का समन्वय मानो देखो, वायु से होता है, वायु में प्राण सत्ता मानो देखो, गति है, और वही गति, मानो देखो, जब एक दूसरे से समन्वय होता है, तो वह गान गाती है, वह शब्दों का उद्गीत गाती रहती है। मानो देखो, उस समय वही वायु ही उद्गाता कहलाती है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, ऋषि ने कहा ब्रहे कृतं राजा ने कहा प्रभु! यह भी हमने स्वीकार कर लिया, परन्तु अब हम यह जानना चाहते हैं, क्या भगवन! उद्गाता कौन है? जो उद्गीत गाता रहता है। उन्होंने कहा हर समय उद्गीत गाने वाला उद्गीत गाने वाला अग्नि है, उद्गीत गाने वाला अग्नि के समन्वय अग्नि का जब समन्वय वायु से होता है, तो सदैव उद्गीत गाया ही जाता है, और वही उद्गीत है मानो जिसका मानव के जीवन से, महान सम्बन्ध कहलाता है। मेरे पुत्रों! राजा ने कहा यथार्थ है। उन्होंने कहा प्रभु! यज्ञशाला का उद्गाता कौन है? उन्होंने कहा यज्ञशाला का उद्गाता मानो शब्द है, और शब्द ही उद्गाता की प्रतिभा कहलाती है, वही शब्द मानो देखो, जब अग्नि से समन्वय करता है, तो अग्नि के मानो देखो, परमाणुओं से ले करके, वही शब्द, अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो जाता है। वही शब्द, मानो देखो, किसी न किसी रूप में, पुनः परिणत होता है। शब्द ही मानो यज्ञशाला का उद्गाता कहलाया गया है।

## वेद का उदगीत

मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा अश्वपति तो मौन हो गएं, तो उनकी देवी उपस्थित हुई और मुनिवरों! देखो, महाराजा अश्वपति की देवी का नाम श्वंधना वाचप्रमाणं ब्रह्मे स्वस्ता मानो देखो, उनकी पत्नी का नाम स्नेह था। वह स्नेह लतं ब्रह्मा वह स्नेह उपस्थित हो करके बोली कि प्रभु! आप यज्ञशाला में उद्गाता के आसन को, प्रायः तुमने ग्रहण किया हैं मैं यह जानना चाहती हूँ, क्या यह जो तुमने आसन ग्रहण किया है, यह क्यों किया है? उन्होंने कहा मातेश्वरी। ब्रह्मा हे यज्ञमानश्च सम्भवा मैंने इसीलिए ग्रहण किया है, क्योंकि मैं उद्गाता हूँ, और उद्गीत जानता हूँ, वेदों के उद्गीत को जानता हूँ। उन्होंने कहा वेद का उद्गीत क्या है? उन्होंने कहा वेद का उद्गीत प्रकाश है, मानो देखो, वेद से ही प्रकाश होता है मानो देखो, जैसे सूर्य प्रातःकाल का प्रकाश है इसी प्रकार वेदरूपी सूर्य वेद प्रकाश में रहता है। मैं मानो देखो, उस प्रकाश में रत्त रहने के लिए तत्पर रहता हूँ। मेरे पुत्रों! यज्ञमान देवी ने कहा प्रभु! हे ऋषिवर! आप यज्ञशाला में उद्गाता क्यों बनें हैं? उन्होंने कहा मैं इसीलिए बना हूँ, क्योंकि मैं अपनी वाणी का आत्मा

से समन्वय चाहता हूँ। और आत्मा का समन्वय, ज्ञान से चाहता हूँ, और ज्ञान का सम्बन्ध मानो देखो, ज्ञान से ही मानव की उदगीत गाता है। इसीलिए मैं उद्गाता हूँ। मेरा सम्बन्ध, परमपिता परमात्मा से आनन्तमयी पगडण्डी से होना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, देवी ने पुनः कहा हे प्रभु! आप यज्ञशाला में विद्यमान हैं, परन्तु देखो, उद्गाता किसे कहते हैं? यज्ञ का उद्गाता कौन है? मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा क्या यह जो यज्ञशाला है, ये मानो देखो, यज्ञं ब्रह्मा यह यज्ञवेदी एक प्रकृति के रूप में विद्यमान रहती है। जैसे माता के गर्भस्थल में, नाभि को यदि यज्ञशाला के रूप में स्वीकार किया है। माता की नाभि से ही बाल्य को अमृत प्राप्त होता है, इसी प्रकार यज्ञशाला में मानो देखो, जो साकल्य अथवा प्रदान किया जाता है अथवा अग्नि के मुख में वह उसकी तरंगें बन करके, वायुमण्डल में प्रसारित होती है। वही जब प्रसारित होती हैं, तो मानो वही तरंगें हमें अमृतमयी अमृत को बहाने वाली हैं, अमृत को हम प्राप्त करते रहते हैं, और वही मानो देखो, उद्गीत गाने वाला, उसी का तो उद्गीत गाता है। मेरे पुत्रों! देखो, वह अपने में देवी ने विचारा, कि ये महापुरूष तो मानो महा बुद्धिमान है, तर्कयुक्त अपने उत्तर देता रहता है। परन्तु देखो, पुनः देवी ने कहा प्रभु! मानो देखो, यह जो हमने यज्ञशाला का निर्माण किया है, इस निर्माण की आभा में, कौन अध्वर्यु कहलाता है? उन्होंने कहा यह जो तुमने निर्माण किया है, यह निर्माण मानो देखो, अन्तर्हृदय से किया है, और अन्तर्हृदय ही उसका उद्गाता है क्योंकि हृदय से ही तो तरंगों का जन्म होता है, हृदय से ही मानो देखो, उदगार आते हैं, हृदय का समन्वय मानव की वाणी से क्या मनस्तव से होता है। मनस्तव से सम्बन्ध वाणी से होता है इसीलिए वाणी ही तो उद्गीत गाती है, और वह जो वाणी है वही मानव को देखो, पवित्र और महान बना देती है।

मेरे प्यारे! देखो, वह राजलक्ष्मी ने पुनः कहा प्रभु! यह भी मैंने स्वीकार कर लिया है। परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ, कि यह जो यज्ञशाला का, हमने प्रायः निर्माण किया है, इसका उद्गाता कौन है? कौन उद्गीत गा रहा है? मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि इसका उद्गीत जो तुमने यज्ञशाला का निर्माण किया है, अन्तर्हृदय से किया है, मनस्तव से किया है, इसमें मानो देखो, अग्नि जब काष्ठों में रहने वाली, अग्नि समन्वय से जब प्रचण्ड हो जाती है। मानो देखो, जब वह अग्नि अपने स्वरूप को धारण कर लेती है, तो उस अग्नि का समन्वय, मानो देखो, प्रत्येक गृह से बाल्यों से होता है जैसे देखो, कोई भी मानव अपने गृह को ऊँचा बनाने के लिए तत्पर है, माता-पिता यज्ञमान यह चाहता है, मेरे गृह में रहने वाला सन्तान मानों पवित्र बन जाए। तो उस पवित्रत का नाम ही उदगाता कहलाया गया है मानो देखो, वह अपने में उद्गीत गाता है। माता-पिता माता पिता के आचरणों को मानो देखो, उनकी प्रतिभा को अपनाने के लिए, उन्हीं के यहां, जब सन्तानों का जन्म होता है तो वही सन्तान मानो देखो, माता-पिता के आचरणों को ग्रहण करने वाला, वह ग्रहण जब ग्रहण किया जाता है, वही उद्गाता के रूप में परिणत हो जाता है, और वही अमृतमय बन करके, गृह को पवित्र बना देता है।

मेरे प्यारे! देखो, वह राजलक्ष्मी ने धन्यवाद करते हुए कहा प्रभु! चलों यह तो वेदलोक की चर्चा हुई, परन्तु देखो, इस उद्गाता का, परलोक से क्या समन्वय रहता है? वह परलोक किसे कहते हैं? देखो, यह संसार है परन्तु परलोक किसे कहा जाता है। तो उद्गाता ने, महात्मा अर्द्धभाग ने कहा क्या हे देवी! जब मैं आचार्य कुल में अध्ययन करता था, तो क्योंकि हमारा जीवन बन गया, हम विद्या में पारायण होने लगे, परन्तु देखो, जब ये आत्मिक जगत की चर्चा तो आत्मा का प्रभु से समन्वय मानो देखो, सर्वत्र जगत को समेट करके, हम एक मानो ज्ञान रूपी अग्नि को जब अपनाते हैं, तो वही अग्नि मानो देखो, द्यौ के रूप में प्रगट हो जाती है। और वह द्यौ के रूप में प्रगट हो करके, द्यौ में ये लोक, मध्य लोक दोनों लोक मानो देखो, उसमें समाहित हो जाते हैं, और जब समाहित हो जाते हैं, तो द्यौ से मानो अभ्योदय होता है, जब द्यौ का उद्गीत गाता है, अध्वर्यु तो मानो देखो, वह परलोक की पगडण्डी

कहलाती है। वह परलोक की पगडरडी है जिसको प्राप्त करने के पश्चात, मानव के जीवन में, एक महानता का दर्शन होता है। तो मेरे पुत्रों! विचार-विनिमय क्या, मैं विशेषता में नही मानो देखो, मैं गृह लक्ष्मी ने यह स्वीकार कर लिया कि यह उद्गाता तो बड़ा विचित्र है। मानो देखो, यह प्रत्येक रूप से इसका उत्तर दिए जा रहा है, यह महान है, परन्तु देखो, जैसे सूर्य और चन्द्रमा दोनों का समन्वय हो करके, भी उद्गीत गाया जाता है रात्रि मानो देखो, अहिल्या बन करके गान गाती हुई वह रात्रि अहिल्या के रूप में परिणत रहती है। मेरे पुत्रों! हमारे वैदिक साहित्य में, अहिल्या के भिन्न-भिन्न प्रकार के पर्यायवाची शब्द कहलाए जाते हैं मानो देखो, अहिल्या नाम हमारे यहां देखो, पृथ्वी को कहा जाता है। अहिल्या नाम रात्रि का है, अहिल्या नाम, मेरे पुत्रों! देखो, प्रवृत्तियों का है, अहिल्या नाम मुनिवरों! देखो, सम्भूति वृत्तियों को कहा जाता है, तो विचार क्या मेरे पुत्रों! देखो, यहां विस्तार रूप में नही, अहिल्या नाम रात्रि का है, और चन्द्रमा जब गौतम मानो देखो, वह चन्द्रमा को जहां, चन्द्रमा कहते हैं, वहां गौतम भी कहते हैं। वह गौतम मानो देखो, अहिल्या रूपी रात्रि से समन्वय करता है, तो इसके अन्धकार रूपी श्रृंगार को, अपने में धारण कर लेता है। तो वह रात्रि प्रकाशमय बन जाती है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, जो अन्धकार और प्रकाश का दोनों का समन्वय करने वाली सत्ता उसका नाम अहिल्या कहा जाता है। जैसे पृथ्वी के गर्भ में, प्रवेश होने से यह प्रतीत हुआ, कि ये पृथ्वी अहिल्या है। जो भूमि मानो अन्न उपजाऊ के सुयोग्य है, उसके अन्न उपजाऊं नही किया जा रहा है, यदि उससे अन्न उपजाऊं किया जाएं, तो मानो देखो, वह अहिल्या, नाना प्रकार के रूपों को धारण करने वाली है। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार, आज मैं अहिल्या के सम्बन्ध में विचार नही दे रहा हूँ, मानो इन्द्र नाना सहस्रों भगों वाला बन जाता है, और गौतम ब्रह्मा चिन्यां भू वर्णनं प्रह्वा व्रते मेरे पुत्रों! देखो, जब इन्द्र का प्रवेश होता है, इन्द्र का आगमन होता है, तो मुनिवरों! देखो, यह चन्द्रमा मानो देखो, चिन्हयां अकृतं ये मानो देखो, एक अपने में चिन्हवादी बन जाता है। तो विचार-विनिमय क्या मैं बेटा! तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ, मैं व्याख्याता नही हूँ, केवल परिचय देने के लिए चला आता हूँ, बेटा! देखो, राजा का याग प्रारम्भ हो गया, राजा ने यह स्वीकार कर लिया, और देवी से यह कहा कि देवी कहो उद्गाता का उन्होंने कहा उद्गाता पवित्र है। तो मुनिवरों! देखो, इसीलिए हमारे यहां यज्ञ इत्यादि क्रियाकलापों में, मानो पाण्डितव विशाल विचित्र सुर वालों को, जो वाणी से उद्गीत गाने वाला है, उसी को निर्धारित करते हैं, उसी को मानो पर्दापण कराते हैं।

तो विचार-विनिमय क्या यह बेटा! यह वाणी ही उद्गाता है, यह वाणी ही पवित्रता को धारण करती रहती है, तो आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेष अप्रतं ब्रह्मा मानो देखो, वह यज्ञ प्रारम्भ होता रहा सांयकाल तक यज्ञ का प्रारम्भ रहा याग की प्रतिभा स्वाहा, उद्गाता उद्गीत गाते रहे, और वह मुनिवरों! देखो, यज्ञमान की वाणी को पवित्र बनाते रहे अन्तर्हृदय से, अन्तर्हृदय को बाह्य जगत में, बाह्य जगत में अन्तर्जगत में, बेटा! देखो, वह सदैव अप्रत ब्रह्माः वह अपने में प्राप्त कराते रहे हैं।

तो इसीलिए बेटा! देखो, वह याग जैसे ही सम्पन्न हुआ, तो राजा ने यज्ञमान ने, उद्गाता इत्यादियों को कुछ मुद्राएं दी, वह मुद्राओं को ले करके बेटा! अपने गृह में पंहुचे अपनी देवी से कहा-देवी! मैं तो हे देवी! मैं तुम्हारे लिए अन्नाद ले करके आया हूँ, उन मुद्राओं का अन्न ले करके, देवी के प्राणों की रक्षा की। तो मेरे पुत्रों! देखो, संसार जो प्राणों की रक्षा करता है जो प्राणों को प्राण कहता है प्राण को प्राण देता है। मेरे पुत्रों! देखो, वह महान कहलाता है। विचार क्या हमारे यहां वैदिक साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार की पवित्र विद्याओं का वर्णन आता रहा है। जैसे दीपावली मानो देखो, स्वर है, जैसे मनोरित मानो स्वर कहलाता है इसी प्रकार और भी भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरों का वर्णन आता रहा है। आज मैं बेटा! देखो, मैं गान गाना नही चाहता हूँ, विचार केवल यह कि मुनिवरों!

देखो, एक संकल्पोंमयी, एक गान गाया जाता है, और उसको उदगाता गाता रहता है, यज्ञशाला में बेटा! वह समय मानो देखो, वह विचार तो बड़े गम्भीरतम कहलाते हैं। तो आज का विचार समाप्त अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् दधिमा रथं वाचां रथि मणं व्रत्यां लोकाः रथं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, यज्ञ के ऐसे स्वरूप का वर्णन कर रहे थे, मानो देखो, जिसमें मानव अवर्चनीय हो जाता है, कोई शब्द आगे उच्चारण करने सुयोग्य नही रह पाता है। मानो देखो, इसका हृदय और हृदय से मानो देखो, इसका जो अध्ययन है। वह प्रायः बड़ा विचित्र रहा है जब यह विद्यालय में प्रायः हमें अध्ययन कराते रहते थे तो इनके अध्ययन की शैली भी बड़ी विचित्र रहती थी, एक-एक शब्द के गर्भ में प्रवेश हो जाना और उस शब्द में मानो देखो, सर्वत्र दिवस समाप्त हो जाता था। आज मैं इनके विचारों को तो कुछ टिप्पणी या अपने विचारों को तो देना नही चाहता हूँ, केवल विचार यह देने के लिए, आज मैं आया हूँ, क्या जहां यह हमारी आकाशवाणी जा रही है, वहां मानो देखो, एक याग सम्पन्न हुआ है, मेरा अन्तरात्मा याग के सम्बन्ध में, प्रायः सदैव मैं, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन कराता रहता हूँ, क्योंकि मेरा अन्तरात्मा मेरा जो हृदय है, वह यज्ञमान के साथ रहता है, और मैं यह कहता रहता हूँ, कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। हमारे यहां पुरातन काल, में जब मानो देखो, हमारा वह काल विद्यालय का काल था तो उस समय हमें यह शिक्षा देते रहते थे कि गुरुजन, क्या तुम प्रातःकालीन सांयकाल अपने ब्रह्मचर्य की रक्षा करने के लिए तुम याग करो तो मानो देखो, हम याग करते थे, हमने एक समय अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह प्रश्न किया कि महाराज! ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए याग का क्या समन्वय है? उन्होंने कहा कि क्या जब तक मानव अपने व्यापक हृदय विचारों हृदय में विचार नही बना लेता मानो देखो, वह विचार व्यापक विचारों का नाम ही मानो एक याग है और अग्निहोत्र करना मानो की अग्नि सर्वत्र विचारों का एक सर्वत्र विचारों का मानो मुख कहलाता है। हमारे मुखारबिन्दु में भी अग्नि ही शब्द मानो द्यौ के समन्वय से, जैसे अग्न्याध्यान करता है, ऐसे ही हमारे शरीरों में, जब वाणी का तालु का समन्वय होता है, तो दों के मिलान से ही, वाणी और शब्दों का मुनिवरों! देखो, जन्म होता है। मेरे पूज्यपाद गुरुओं ने, हमें यह वर्णन कराया क्या, यह वाणी ही अग्नि है, इस वाणी से ही याग करना है मानो देखो, वाणी को हम शब्द रूप में हृदय रूपी यज्ञशाला में, प्रायः याग करते हैं, जिससे सुगन्ध आ जाएं। हमारे यहां सुगन्ध का अभिप्रायः दो रूपों में माना गया है। एक तो मानो देखो, ब्रह्मचर्य की सुगन्धि, मानो देखो, ब्रह्म और चरी का दोनों का मिलान, मिलाना ही ब्रह्म और वर्चोसि और ब्रह्मचारी कहलाता है। जो प्रत्येक श्वास को श्वास रूपी मनके को जो ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है मानो देखो, वह याग कर रहा है वह ब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य का पालन कर रहा है। तो ब्रह्मचरिष्यामि ब्रह्मे मानो यह पूज्यपाद गुरुदेव, यह उपदेश देते रहते थे इसीलिए मैं यह कहा करता हूँ, हे यज्ञमान! तुम्हारे हृदय में सदैव पवित्रता का जन्म होता रहे, और तुम्हारा हृदय से हृदय का समन्वय होना चाहिए, मेरा अन्तरात्मा तो सदैव यज्ञमान के साथ रहता है। यज्ञमान कौन होता है? जो याज्ञिक होता है। मानो देखो, ब्रह्मचारी सर्वत्र मानो देखो, छात्र छात्रिकाएं, सब अध्ययन करते रहते थे। पुरातन काल में, जब मैं पुरातन काल में जाता हूँ, तो सबसे प्रथम, ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी कहलाते थे, उसके पश्चात मानो देखो, जब आगे काल आया तो छात्र छात्रिका बन गएं, जब आगे काल आया, तो विद्यार्थी मानो एक शब्द रह गया, विद्यार्थी रूप बन गया और देखो, जब आगे काल आया तो मानो देखो, वह पठन-पाठन करने वाले पाठयक्रम में प्रवृत्ति को लाने वाले मानो देखो, वृत्त कहलाते है।

तो विचार क्या मानो देखो, शब्दों की, जब एक-एक शब्द देखो, घटित होता रहा है, वही शब्द मानो देखो, ब्रह्मचर्य से शून्य बन गया है, वही शब्द आधुनिक काल में जब आता हूँ। तो वही शब्द ब्रह्मचारियों के क्या विद्यार्थी

रूप में मैं उच्चारण करने लगूं तो मानो देखे विद्यार्थी रूप में, वह अपने मानो देखो, ब्रह्मचर्य से शून्यता को प्राप्त होता चला जा रहा है। यह जब विद्यालयों में, जब ब्रह्मचर्य से ब्रह्मचारी शून्य हो जाता है, ब्रह्म का चिन्तन नही करता, चरी को जानता नही, तो मानो देखो, वह अपने मानवीय जीवन का, ह्रस करता हुआ, वह मानवीय जीवन की प्रवृत्ति तो नष्ट होती जा रही है। तो विचार-विनिमय क्या, जब मैं मानो पुरातन काल के जब हमारा काल था हमारे काल में प्रायः देखो, गुरुओं के चरणों में विद्यमान हैं आज का जगत मानो देखो, विद्यार्थी के मानो देखो, वह विद्यार्थीयों के चरणों में विद्यमान रहता है, विचार देखो, द्वितीय बन गया है। विचार यह अकृत बन गया है देखो, ब्रह्मचारी क्या, विद्यार्थी क्या, पठन-पाठन करने वाला, आसन पर नियुक्त रहता है, जहां आचार्य रहता था, वहां आज का विद्यार्थी रहता है। वहां आधुनिक जगत का विद्यार्थी रहता है, और वह अपने को द्रव्य के देखो, वशीभूत हो करके, आचार्यां का देखो, नम्रता से उनका स्वागत न करना ही, मानो देखो, उसकी अन्तरात्मा का ह्रस होता जा रहा है।

तो विचार क्या जब आत्मा का विद्यार्थीयों की आत्मा का, ह्रस तो राष्ट्रीय पद्धति भी मानो देखो, उसी में ह्रसता को प्राप्त हो जाती है। इसीलिए हमारे यहां विद्यालयों में तो राष्ट्र का निर्माण होता है, विद्यालयों में ही ब्रह्मचारियों का निर्माण होता है, आचार्य के चरणों में विद्यमान हो करके इसीलिए मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी हमें प्रगट करा रहे थे, नाना प्रकार की वार्त्ताओं में ले जा रहे थे, आज मेरा जो अन्तरात्मा है मैं आगे संसार की कुरीतियों में या संसार के उस अग्नि काण्ड में मैं जाना नही चाहता हूँ, मैं तो केवल यही चाहता हूँ, मेरा अन्तरात्मा यही चाहता है, हे यज्ञमान! मेरा अन्तरात्मा सदैव तुम्हारे अन्तरात्मा के साथ रहता है, मेरा अन्तरात्मा सदैव यह पुकारता रहता है, हे यज्ञमान! तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। द्रव्य का दुरूपयोग नही होना चाहिए, जिस गृह में द्रव्य का दुरूपयोग होता है, एक समय मानो देखो, द्रव्य उस प्राणी को त्याग देता है, और जब द्रव्य का सदुपयोग होता है। तो वह द्रव्य ममतव बन करके मानो देखो, उसके संग को नही त्यागता, मैंने बहुत पुरातन काल में वर्णन करते हुए पूज्यपाद गुरुओं ने तो बहुत वर्णन किया है। परन्तु मुझे जब वर्णन करने का क्या संसार को दृष्टिपात करने का सौभाग्य देखो, जहां लक्ष्मी हैं, वही धर्म है, और जहां धर्म है, वहीं लक्ष्मी है, एक दूसरे के पूरक हैं, और जहां धर्म नही हैं, वहां लक्ष्मी अपने आसन से दूरी चली जाती है, तो इसीलिए विचार आता रहता है, मैं यह उच्चारण करता रहता हूँ कि पूज्यपाद गुरुदेव को तो मैं बहुत-सी वार्त्ताएं अग्रणीयता में लाता रहता हूँ, प्रभु का यह जगत है। तो आज का विचार क्या मैं अपने मानो देखो, उदगारों से हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, इसके साथ मैं अपने विचारों को विराम दे रहा हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने बहुत प्रिय शब्दों में अनुमोदन किया। विचार दिया विचारों का अभिप्रायः क्या है? क्या आज हम उस परमपिता परमात्मा को अपना पुरोहित स्वीकार करते हुए, और विद्या का अध्ययन करते हुए पठन-पाठन की पद्धति पवित्रतव रहनी चाहिए यह आज का वाक् अब समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं ब्रह्म वा या गायन्त्वा माणां आ पा रथं ब्रह्म मणां। ओ३म् यशां यशो गायन्त्वा मा नां वायु गताः। दिनांक ०६ ११ १९८७

# १३ तपस्वी बनने की प्रेरणा १४ ०१ १९८९

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं, हमारे यहाँ ये जो जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है ये प्रायः दो प्रकार का जगत है एक जड़ है तो दूसरा चैतन्यवत माना गया है। हमारे यहाँ जड़ और चेतना के सम्बन्ध में परम्परागतों से ही, भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार अथवा उसमें ही कृति असुत होता रहा है, हमारे यहाँ चेतना के सम्बन्ध में यह कहा गया है, कि जहाँ ज्ञान और प्रयत्न है वहाँ चेतना का स्वरूप माना गया है। और जितना भी यह पिण्ड है, मानो उसमें गति प्रायः है यदि ज्ञान और प्रयत्न नही है तो वह सर्वत्र जगत मानो एक जड़वत माना गया है। जड़वत की आभा में सदैव निहित रहा है, तो जहाँ ज्ञान और प्रयत्न है वह ज्ञान भी मानो चेतनावत माना गया है और जो ज्ञान और वैज्ञानिक ज्ञान और मानो प्रयत्न से शून्य है, वही जगत हमारे यहाँ, जड़वत के रूप में स्वीकार किया गया है। हमारे ऋषि-मुनि, परम्परागतों से ही, मानो अनुसन्धान करते रहे हैं, और नाना प्रकार का विचार-विनिमय करते हुए अपने में प्रतिभाषित रहे हैं, और अपनी आभा में सदैव निहित रहे हैं।

तो आओ मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हे जड़ और चेतना के सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया विचार-विनिमय केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहते हैं क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और वह उसी के गर्भ में मानो सर्वत्र ब्रह्माण्ड अपने में निहित हो रहा है मानो उसी के गर्भ में विद्यमान है वह हिरण्य गर्भ कहा गया है तो इसीलिए उसी के गर्भ में सर्वत्र ब्रह्माण्ड अपने में नृत्त कर रहा है तो आओ मेरे पुत्रों! मैं आज तुम्हें विशेष विवेचना देने नही आया हूँ, आज का हमारा वाक् ये प्रारम्भ हो रहा था, क्या यज्ञनं ब्रह्मणं ब्रह्वा सम्भव लोकां वेद का वाक् कहता है हे मानव! जितना भी संसार का यह सुकर्म है अथवा क्रियाकलाप है, वह सर्वत्र एक यज्ञमयी स्वरूप माना गया है। तो हम उस परमपिता परमात्मा के, अमूल्य जगत को सदैव विचार-विनिमय करते रहते हैं। क्योंकि हमारे यहाँ ऋषि-मुनि, इस याग के सम्बन्ध में बड़ी ऊंची-ऊंची उड़ाने उन्होंने उड़ी हैं, और इस संसार का नाम सदुपयोग की और और इसके रूपण ब्रह्मा दुष्ट विचार दुष तरंगे मानो अन्तरिक्ष में हो जाती हैं इसके ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहे हैं और ऊँची उड़ाने उड़ते रहे हैं तो आओ, मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें वेद का एक वाक् आ रहा था, मृत्युजं ब्रह्मणं यागा संसार का जितना भी क्रियाकलाप है, चाहे वह याग के रूप में हो, चाहे वह अनुष्ठानों के रूप में हो, परन्तु सर्वत्र मानव के उसके पिछरले भाग में, एक उद्देश्य होता है, और वह उद्देश्य जब यह होता है, कि मृत्युं ब्रह्मा, मैं मृत्यु से पार हो जाऊं, मृत्यु से पार होने का वह प्रयास करता रहता है। तो मुनिवरों! देखो, प्रत्येक मानव के हृदय में, ये आकांक्षा बनी रहती है, क्या मैं मृत्यु से पार हो जाऊं। मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए। तो जितने भी हम अनुष्ठान करते हैं सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक जितने भी क्रियाकलाप हैं, वह मानो यागों के रूप में सदैव परिणत रहे हैं, अनुष्ठानों के रूप में परिणत रहे हैं, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में बेटा! देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी के हृदय में, ये आकांक्षा उत्पन्न हुई थी, कि मैं मृत्यु को विजय करना चाहता हूँ। तो मानो उन्होंने बेटा! नाना प्रकार के अनुष्ठान किए, एक अनुष्ठान नही, दो नही मानो नाना प्रकार के अनुनष्ठान किए, उन अनुष्ठानों का अभिप्रायः उसके गर्भ में यही था, कि मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए। बेटा! विचार-

विनिमय यह करना है कि मृत्यु कहते किसे हैं? प्रत्येक मानव यह आकांक्षा में लगा रहता है, कि मृत्यु क्या है? तो वैदिक आचार्यों ने यह कहा कि अन्धकारां ब्रह्मो सम्भवा ब्रह्मा कृतं लोकां मानो देखो, वह मृत्यु से अन्धकार से जो प्रकाश में चला आता है वह मृत्यु से विजय कर लेता है। और जो प्रकाश को त्याग करके अन्धकार में परिणत हो जाता है, वह मृत्यु को प्राप्त होता रहता है। तो इसीलिए वैदिक आचार्यों ने अपना मन्तव्य यह दिया है इस सम्बन्ध में तो क्या यदि मृत्यु को हमें विजय करना है, तो हमें अन्धकार को त्यागना होगा और प्रकाश को लाना होगा तो विचार आता है कि यह प्रकाश क्या है? और अन्धकार क्या है? मेरे प्यारे! देखो, इदं ब्रह्मा वैदिक ऋषियों ने इस सम्बन्ध में कहा है कि ज्ञान मानो प्रकाश है, और अज्ञान अन्धकार कहा गया है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें विशेष विवेचना तो देने नही आया हूँ, केवल सूक्ष्म सा परिचय देने के लिए आया हूँ, और वह परिचय यह है कि हमें मृत्यु से पार होना है। बेटा! हमें इस संसार को और इस संसार रूपी यज्ञशाला को विचारना है, मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में यह निर्णय देते हुए कहा था, क्या संसार में प्रत्येक मानव अपने में जानकारी के लिए प्रयास करता रहता है। ज्ञान और विज्ञान के भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ता रहता है। क्योंकि उसके हृदय में एक ही आकांक्षा है, क्या मुझे प्रकाश हो जाएं, एक मानव बेटा! देखो, पृथ्वी से अपनी उड़ाने उड़ता है, नाना लोक-लोकान्तरों का गमन करता है। लोक-लोकान्तरों में जब गमन करता है, तो मानो यह जानने के लिए की मैं संसार को जानूं। परन्तु एक मानव अपने विद्यालय में विद्यमान हो करके नाना प्रकार के यागों में परिणत हो जाता है, और वह याग करता है, और वह अपने में विचारता है, कि मैं ब्रह्मवर्चोसि बन जाऊं। परन्तु ब्रह्मवादी बन करके मैं अपनी मृत्यु से और मधु विद्या को पान करने वाला बनूं।

तो आओ मेरे पुत्रों! ऋषि के एक आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जहाँ ऋषि-मनि अपने में बड़ा भव्य विचार-विनिमय करते रहे हैं। मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहा है, जिस काल में बेटा! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा! अपने आसन पर विद्यमान हैं, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज मानो देखो, ब्रह्मचारियों के मध्य में प्रातःकालीन वह याग करने के लिए तत्पर हुए, और वह जब याग करने लगे तो मानो देखो, ब्रह्मचारी अंग-संग विद्यमान हैं। अपनी पंक्तियां लगाए हुए हैं, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा ब्रह्मणे वाचप्रमाणं तपो वर्णासुता मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने एक आख्यिका वेद की प्रगट की, और यह कहा कि हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें मानो देखो, अग्नेय बनना है, हे ब्रह्मचारियों! देखो, तुम्हें तपस्या और महानता में परिणत होना है। क्योंकि प्रत्येक मानव यहाँ तपस्या करने के लिए आया है, और यहाँ मानव ही नही प्रत्येक मानव देखो, तप रहा है, ऊर्ज्वा ले रहा है तप करके अमृत दे रहा है, उस अमृत को जो पान करने वाले जन हैं। वह मृत्यु और अन्धकार से रहित हो जाते हैं। प्रकाश में चले जाते हैं। हे ब्रह्मचारियों! आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है, न्यौदा में तपं हिरण्यं तपं ब्रह्मा तपं सूर्याणि गच्छतं ब्रह्मणे लोकां मानो देखो, यहाँ वेद का वाक् कहता है क्या हे मानव! तू तपस्वी बन, और तप करने वाला बन। तप कहते हैं उग्र क्रिया को तो मानव में देखो, महानता में परिणत हो करके जब उग्र क्रियावादी बन जाता है। तो वह तपस्वी बन जाता है। मानो देखो, तप किसे कहते हैं? वेद के आचार्यों ने कहा है कि प्रातः काल से ले करके सांयकाल तक सूर्य तपता रहता है, और वह ऊर्ज्वा देता है, प्रकाश दे रहा है, और उसी प्रकाश में अपने में मानो देखो, अपने प्रकाश में रत्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब चन्द्रमा अपनी कान्ति के द्वारा अमृत देता है, समुद्रों से उसका समन्वय हो करके मानो देखो, वह पृथ्वी तो क्या पृथ्वी के गर्भ में माता के गर्भस्थल में मानो सर्वत्रता में वह अमृत प्रदान करता रहता है।

आओ मेरे प्यारे! हमें अमृत को प्राप्त करना है, अमृत को पाना है, और अन्धकार ब्रह्मे अज्ञान को त्यागना है, तो मेरे पुत्रों! जब ऋषिवर इस प्रकार उपदेश देने लगे तो ब्रह्मचारी बड़े प्रसन्न हुए, परन्तु उन्होंने कहा वायु

अपने वेग में गमन कर रहा है। परन्तु वह प्राण दे रहा है, अभ्योदय कर रहा है, मुनिवरों! देखो, एक अग्नि अपनी ऊर्ज्वा दे रही है, धीमा-धीमा उष्णा बनाने के लिए तत्पर रहती है, मानव उसी में रत्त हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, यह प्रत्येक प्राणी मात्र का एक-एक परमाणु तप रहा है। मेरे प्यारे! एक-एक परमाणु में ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आ रहा है।

मुझे स्मरण आता रहता है, मेरे पुत्रों! महर्षि भारद्वाज एक व्रतकेतु ब्रह्मचारी थे, ब्रह्मचारी ने व्रेतकेतु ने एक वृत्ति नाम के परमाणु का जब विभाजन किया उसको विभक्त किया तो उसमें बेटा! देखो, एक-एक परमाणु एक-एक तरंगो में से सर्वत्र ब्रह्माण्ड का दर्शन होता है, तो मेरे प्यारे! एक-एक आभा में ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है, हम एक-एक शब्द में ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करते रहते हैं। तो आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ, विचार केवल यह प्रगट कर रहा हूँ, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा! अपने आसन पर विद्यमान हैं, और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने नाना प्रकार की आख्यिका प्रगट की। परन्तु ब्रह्मचारी बोले कि आप जो तपों की विवेचना करते हैं, ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे वृत्तियों में। उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! प्रायः ऐसा ही है, क्योंकि विद्यालय में आचार्य तपता है, तो विद्यालय ऊँचा बनता है, यदि विद्यालयों में मानो आचार्य महान बनता है, तो ब्रह्मचारी पवित्र बनते हैं। मेरे प्यारे! देखो, राजा के राष्ट्र में राजा तपस्वी होता है। तो प्रजा भी तपस्वी होती है। माता-पिता के गृह में यदि माता-पिता विचारवान हैं। गृह स्वामी और गृह स्वामिनी बड़े पवित्र हैं। तो देखो, उनके बाल्य बालिका भी पवित्रतव को प्राप्त होते हैं। तो आज मैं इस सम्बन्ध में विचार न देता हुआ, याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि हे ब्रह्मचारियों! आज का वेद का मन्त्र कहता हैं, तपं हिरण्यं तपं दिव्यां देवाः तपो यह संसार तपायमान है। इसीलिए हम तपस्वी बनना चाहते हैं। मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब यह वाक् कहा तो ब्रह्मचारी उनके मनों हृदय की वार्त्ता को जान गएं। उनमें से मुनिवरों! यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! आप चाहते क्या हैं? आपके मनों का हृदय क्या कह रहा है? उन्होंने कहा हे भगवन! हे ब्रह्मचारियों! मेरी इच्छा यह है कि मैं तप करने जा रहा हूँ। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। हे प्रभु! विद्यालय में आचार्य यदि तपस्वी बनता है, तो विद्यालय पवित्र बना करते हैं, माता-पिता आचार्य मानो देखो, सर्वत्र एक तपों में रहने चाहिएं। यह तो हमारा सौभाग्य प्रभु! आप तप करने के लिए जाईए। मेरे प्यारे! जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया, तो ब्रह्मचारियों ने मानो देखो, उनसे यह कहा कि-प्रभु! आप तप करने जाएं, तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ब्रह्मचारियों से आज्ञा पा करके और यह कहा कि यह विद्यालय पवित्र बना रहे। आचार संहिता पवित्र बनी रहे ऐसी मेरी कामना अब मैं तप करने जा रहा हूँ। मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वहाँ से अपने विद्यालय को त्याग करके बेटा! भ्रमण करने के लिए और भंयकर वन में जा पंहुचे, भंयकर वनों में बेटा! एक स्थली पर विद्यमान हो करके वह मानो कुछ विचार-विनिमय करने लगे। मेरे प्यारे! इतने में उनके समीप एक व्रतेन्तु ब्रह्मचारी उनके समीप आ गएं। व्रतेन्तु ब्रह्मचारी ने कहा कहो ऋषिवर! आप कैसे चिन्तन कर रहे हैं? एकान्त स्थली में उन्होंने कहा कि मैं तप करने जा रहा हूँ, और तप की मीमांसा मैं जानता नही, तप किसे कहते हैं? क्योंकि वेद में आया है, और वह न्यौदा में मन्त्र उद्गीत गाते हैं, कि तप करना चाहिए। अब मैं तप करने जा रहा हूँ विचार आता है कि तप किसे कहते हैं? मेरे प्यारे! देखो, व्रतेन्तु ब्रह्मचारी ने कहा, हे प्रभु! तुम्हें यह प्रतीत है, कि आप तो मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता हैं, और ब्रह्मनिष्ठ होने से आप मानो इन दोनों देवियों को भी सन्तुष्ट करना आपका कर्तव्य है। उन्होंने कहा मैंने जब मानो बारह वर्ष का तप किया था, जब मैंने दोनो पत्नियों को सन्तुष्ट कर दिया था। अब मेरी दोनो पत्नी बड़ी प्रसन्न हैं, मानो वह तप के लिए मुझे आज्ञा देती रहती हैं, वह स्वयं तपस्वी हैं, और जो स्वयं तपस्वी होता है, मानो वह दूसरों को तप के लिए आग्रह करता है, इसीलिए मैं तप करने जा रहा हूँ। मेरे प्यारे! बहुत प्रियतम। उन्होंने कहा तो तप की मीमांसा तो तुम पूर्व ही जानते हो, जब तुमने

अनुष्ठान किया है, और तप किया है। याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि-प्रभु! यह तो वास्तव में मैं जानता हूँ, परन्तु उसके पश्चात भी मानो संसार में प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। इसीलिए दूसरों से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए, मानव में किसी प्रकार का दोषारोपण या घृणात्मक नही होना चाहिए, न प्रतीत किससे हमें क्या वस्तु प्राप्त हो जाएं, एक समय तुम्हें प्रतीत होगा, जब मैं पूज्यपाद अध्ययन करता था, तो अध्ययन काल में, मानो आचार्य ने एक समय मेरे पितर ने कहा चलो अमृतं आचारं ब्रहे मानो देखो, उन्होंने ये प्रार्थना ककि चलो आज हम मगध राष्ट्र का भ्रमण करेंगे। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने इस वाक् को स्वीकार कर लिया, और वह भ्रमण करते हुए, मुनिवरों! देखो, मगध राष्ट्र में पंहुचे, और पूज्यपाद गुरुदेव के सहित और हम मगध राष्ट्र में पंहुचे, तो हमने कात्यायन के गृह में वास किया और वास करने के पश्चात, गृह स्वामिनी ने यह कहा पूज्यपाद गुरुदेव से क्या ये पितर कितने होते हैं? तो पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा पितर बहुत होते हैं। मानो जो भी शिक्षा देते हैं, वह सर्वत्र पितर होते है, और जड़वत में भी मानो देखो, जितना भी यह जड़ जगत हैं, और जड़ जगत में जो क्रियाकलाप हो रहा है, वह सर्वत्र मानो एक प्रकार का सर्वत्र एक पितर कहलाते हैं, मानो देखो, वायु हमारा पितर कहलाता है, मानो ये जगत सर्वत्र एक पितर के रूप माना गया है। हम जब इस प्रकार अपनी विचित्र कल्पना करते हैं, और विचित्रता में प्रवेश करते हैं, तो मानो ये सर्वत्र एक पितर तुल्य एक जगत है। मेरे प्यारे! देखो, पितश्चं वाचश्तं ब्रह्मा वायु रेवकेतु ब्रह्मणे लोका मेरे प्यारे! देखो, पितरों की विवेचना करते हुए, आचार्यों ने कहा, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा कि माता सबसे प्रथम पितर है पिता भी पितर है। आचार्य भी पितर है। मानो देखो, यह जो पंच महाभूत हैं, पृथ्वी है, अग्नि है, आपो है, और मानो यह वायु हैं, अन्तरिक्ष है, सर्वत्र मानो पितर कहलाते हैं। और इन्ही पितरों की विवेचना करते हुए बेटा! देखो, उन्होनें पितर भी ब्रह्मा आचार्यों ने यह विवेचना की तो कात्यायन के गृह में गृहस्वामिनी ने कहा कि-प्रभु! यह पितर क्यों हैं? उन्होंने कहा पितरों की एक ही विवेचना है, क्या जो हमें देते हैं, शिक्षा रूप में, या हमें अपने हृदय से हृदयग्राही बनाते हैं मानो यह सब देवता जन और पितरजन कहलाते हैं मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार पितरों की विवेचना करते हुए, ऋषि ने जब यह वर्णन किया, तो मानो देखो, कात्यायन के गृह में, कात्यायन ने पुनः यह प्रश्न किया, क्या यह पितरों का पितर कौन है? तो उन्होंने कहा कि पितर का पितर मानो देखो, एक चेतना है, जो संसार में संसार को स्थिर किए रहती है, वह चेतना कहलाती है, वे परमपिता परमात्मा पितरों का पितर है। इसीलिए हम उसी को अपना पितर स्वीकार करके, अपने मानो जीवन को ऊँचा बनाएं। तो मुनिवरों! देखो, इस प्रकार भारद्वाज ने, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस प्रकार बेटा! कात्यायन के गृह में और अपने पितरों की विवेचना करते हुए, मानो देखो, व्रतेन्तु बड़े प्रसन्न हुए मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी व्रतेन्तु ने महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से यह कहा हे प्रभु! मैं इसीलिए आया हूँ कि मेरी यह कामना है मेरी यह इच्छा है क्या मैं देखो, शिकामकेतु मानो उद्दालक गृह में प्रवेश करना चाहता हूँ मैं वहाँ विद्या को ग्रहण करना चाहता हूँ मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और व्रतेन्तु ब्रह्मचारी अपने में वार्त्ता प्रगट करते हुए याज्ञवल्क्य मुनि महराज ने भ्रमण करते हुए वह मुनिवरों! देखो, उद्दालक गोत्र में प्रवेश हुए और उद्दालक गोत्र के ऋषियों ने शिकामकेतु उद्दालक ने उनका स्वागत किया और उनके चरणों की वन्दना की और चरणों की वन्दना करते हुए कहा कहो भगवन! कैसे हमारे आसन को तुमने पवित्र किया, व्रतेन्तु ब्रह्मचारी ने कहा-प्रभु! मैंने यह श्रवण किया है, कि तुम याग के कर्मकाण्ड में लगे हुए हो, और तुम मानो पितरों का दर्शन करते रहो। मैं भी अपने पितरों का दर्शन करना चाहता हूँ। आपकी सेवा के पश्चात मेरे प्यारे! देखो, उस समय, जब व्रतेन्तु ने यह कहा तो मुनिवरों! देखो, उद्दालक गोत्र के शिकामकेतु उद्दालक ने कहा कि ये मानो यह कैसे हो सकता है? मैंने तो विज्ञान को एक पक्षीय जाना है एक ही स्वरूप में जानने का प्रयास किया है और तुम अपने पितरों का दर्शन करना चाहते

हो, तो ये मुझे बड़ा आश्चर्य आ रहा है, मैं इसे कैसे दर्शन करा सकूंगा? उन्होंने कहा-प्रभु! मैं तो इसी अभिलाषा से आपके द्वार पर आया हूँ, आपके चरणों की वन्दना करने के लिए प्रभु हे प्रभु! यह देखो, यागज्ञवल्क्य मुनि महाराज तो ब्रह्म की चर्चा करते है, सदैव ब्रह्म में वह तल्लीन रहते हैं ऐसे महापुरूष के समीप मानो देखो, इन्होंने मुझे यह वर्णन कराया, क्या उद्दालक गोत्र में बड़ा विज्ञान और अपने पितरों का दर्शन किया जाता है, उन्होंने कहा यह तो यथार्थ है, परन्तु तुम्हारे पितरों का कैसे दर्शन होगा, उन्होंने कहा यह तो हमारी मानो इच्छा है, यह तो आपको कराना ही होगा प्रभु! तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने उनके पितरों का दर्शन कराने के लिए, यह कहा कि तुम मेरे यहाँ बारह वर्ष तब तप करो। उन्होंने कहा प्रिय! ऐसा ही होगा।

तो मुनिवरों! व्रतेन्तु ब्रह्मचारी, तप करने लगे, और तप क्या मुनिवरों! देखो, वह निराहार मानो प्रातःकालीन याग की समिधा याग का साकल्य वह भंयकर वनों से लाते थे और ला करके मुनिवरों! देखो, वह यज्ञशाला में परिणत करते थे मेरे प्यारे! देखो, ज बवह दोनों देखो, शिकामकेतु उनकी पत्नी शकुन्तका जब दोनो मुनिवरों! देखो, याग करते थे तो याग मे से मानो वह परमाणुवाद को जानने का प्रयास करते रहे, तो बेटा! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है, व्रतेन्तु ब्रह्मचारी मानो देखो, जब छह  माह हो गएं, इस प्रकार सेवा करते हुए और याग की समिधा और याग का साकल्य ला करके और ऋषि-मुनियों के क्रियाकलापों को दृष्टिपात करते रहते थे। तो छह माह के पश्चात मानो देखो, भयंकर वनों में जो औषधियां थी उन साकल्यों को वह लाते थे, वह साकल्य मानो अपने गुणों का वर्णन करने लगे और वह साकल्य मुनिवरों! देखो, कैसा गुणो का वर्णन, क्या हे ब्रह्मचारी! व्रतेन्तु मानो देखो, हमारे में इन गुणों का महत्व है। मानो देखो, हमारे में यह गुण है, इतनी प्राण सत्ता है, तो मुनिवरों! देखो, वह बड़े प्रसन्न हुए, मेरे प्यारे! देखो, जब यज्ञशाला में अग्नि में वह अपने स्वरूप में प्रवेश करते, समिधा के रूप में, साकल्य के रूप में तो मुनिवरों! देखो, इन्द्र के यहाँ से जो उन्हें कामधेनु गऊ प्राप्त हुई थी। उसके द्वारा वह याग करते थे, मानो देखो, इसी प्रकार विज्ञान बड़ा महत्वदायक है। मेरे प्यारे! एक समय जब वह देखो, सात माह हो गए सप्तम माह में मुनिवरों! देखो, उन्होंने इस ब्रह्मचारी को एक स्थली पर विद्यमान कराया, वह विराजमान हो गएं, व्रतेन्तु देखो, तुम्हारे पितरों का तुम्हें दर्शन हो रहा है। मानो देखो, याग में जो उन्होने यन्त्रों को जानने का प्रयास किया, तो बेटा! व्रतेन्तु ब्रह्मचारी से मानो सत्रवें महापिता का मुनिवरों! देखो, उन्हे दर्शन होने लगा। और उसके क्रियाकलाप उनकी प्रतिभा उनमें दृष्टिपात आने लगी। मेरे प्यारे! देखो, शकुन्तकेतु बोली क्या हे ब्रह्मचारी! तुमने यह जाना है, क्या मानो देखो, यह विज्ञान कितना महत्वदायक है, याग के माध्यम से याग के परमाणुवाद से विज्ञान का जन्म होता है, और विज्ञान अपनी स्थलियों में बड़ा विचित्र रहा है। तो मानो देखो, उस समय व्रतेन्तु ने कहा-प्रभु! यही तो मैने अब तक अध्ययन किया है, मैंने बारह-बारह वर्ष के मानो चार अनुष्ठान किए हैं, और उन अनुष्ठानों में मैं याग वायुमण्डल और मानो शब्द विज्ञान के ऊपर मैं अपना अधिपथ्य करता रहा हूँ। परन्तु मैं अब यह विचार मेरे हृदय में आया है कि उद्दालक गोत्र बड़ा विचित्र गोत्र है, उद्दालक गोत्र में नाना वंशलज हुए हैं, उन वंशलजों में बड़े-बड़े वैज्ञानिक और विज्ञानवेत्ता हुए हैं, विशाल से विशाल वैज्ञानिक मानो उनके क्रियाकलाप मानो उनके मैं दर्शन करने के लिए आया हूँ। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने बारह वर्ष तक उन्होंने बेटा! देखो, एक वर्ष तक इस प्रकार का अनुष्ठान किया, और बारह वर्षों तब उन्होंने उनके अनुभव की चर्चाएं की, मेरे पुत्रों! देखो, दोनो पति पत्नी प्रातःकालीन याग करते साकल्य के द्वारा उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी व्रतेन्तु! आओ तुम्हें हम अपने पितरों का दर्शन कराते हैं, मेरे प्यारे! देखो, वह विज्ञानशाला हैं, जो यज्ञ के माध्यम से विराजमान हो गएं यज्ञशालाओं का जिन्होंने निर्माण किया और उन यज्ञशालाओं में, मेरे प्यारे! देखो, वह जो यन्त्रशालाओं में उन्होंने वह अपने यन्त्रों में अपने पिता महापिता पड़ पिता, मानो अपने पिताओं के दर्शन कराने लगे, तो उनके

द्वारा, तो उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! यह जो अग्नि है, यज्ञशाला में यह बड़ी महत्वपूर्ण होती है, इस अग्नि के द्वारा यज्ञमान के मानो देखो, शब्द को ले करके अन्तरिक्ष में गमन करते हैं। यह मानो देखो, जो शब्द है, इसमें सर्वत्र आभा विद्यमान होती है, मानो देखो, जैसे स्वाहा उच्चारण करता है, यज्ञमान तो उस समय जब वह स्वाहा कहता है, तो अन्तर्हृदय से कहता है अन्तर्मुखी हो करके कहता है जब वह द्यौ लोक का ध्यानावस्थित हो करके कहता है, तो मानो उसके सर्वत्र क्रियाकलाप, द्यौ लोक में ये अग्नि अपन धाराओं पर विद्यमान कराके, बेटा! द्यौ में प्रवेश करा देती है। आज मैं बेटा! बड़े गम्भीर रहस्यों में तो ले जा रहे हैं। परन्तु यह बड़ा विचार का विषय है, यह बड़ी अनुभवी ब्रह्मा बेटा! देखो, विज्ञान की बड़ी एक उपलब्धि है, इस विज्ञान के माध्यम से शिकामकेतु उद्दालक मुनि महाराज ने अपने यन्त्रों के द्वारा मुनिवरों! देखो, अपने पिता, महा पिता पड़ पिताओं के दर्शन कर रहे हैं जो संसार में नही हैं, परन्तु उनके जो क्रियाकलाप हैं, उनका भी दर्शन हो रहा है, तो बेटा! देखो, उन्होंने व्रतेन्तु ब्रह्मचारी को अपने पचासवें महापिता तक उन्होंने दर्शन कराया। और उन्होंने कहा ये पचासवें मेरे महापिता है, इनका मुझे दर्शन हो रहा है, और यह मानो देखो, अग्नि की धाराओं में मानो देखो, द्यौ में ये सब विद्यमान हो जाते हैं। मेरे प्यारे! कैसा मेरे प्यारे प्रभु का यह विज्ञानमयी जगत है, जब मैं इस विज्ञानमयी जगत के ऊपर, विचार-विनिमय करता हूँ, तो मेरा अन्तरात्मा गद्-गद् हो जाता है। और मैं यह कहता हूँ, प्रभु! तू कैसा अनुपम है, तू कैसा जड़ और चेतनता में रत्त रहने वाला है, कोई स्थली ऐसी नही है, जहाँ प्रभु तेरा वास नही होता, अब हमे तेरा विचार-विनिमय भी करते हैं तो हमारा अन्तर्हृदय पवित्रता में परिणत हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह प्रभु का कैसा विज्ञान है, तो महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने देखो, ब्रह्मचारी व्रतेन्तु से कहा हे व्रतेन्तु! यह मानो पितरों का दर्शन होना पितरों में हमे प्रवेश करना, पितरों को जानना और उनके क्रियाकलाप कैसे प्रातः काल में जो शिक्षा दे रहे हैं, कैसे मानो प्रातः काल में वह ब्रह्मयाग कर रहे हैं, देव पूजा कर रहे हैं, पितर याग कर रहे हैं, उस हमारे सब पितर जन मानो देखो, कैसे भव्य और देखो, मार्मिक मृत्यु को विजय करने वाले ये पितर कहलाते हैं। तो मेरे प्यारे! आज मैं कोई विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, मैं तो एक परिचय देने के लिए चला आता हूँ, और वह परिचय यह है, कि हम परमपिता परमात्मा की महती, अनुपमता उसका जड़ और चैतन्य जगत दोनों को जानना है, दोनों स्वरुपों को जानना है हम जब परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में प्रकाश में रत्त हो जाएंगे जहाँ अन्धकार हमारे समीप नही रहेगा। तो मेरे प्यारे! देखो, यह विचार, आज मैं तुम्हें इसीलिए प्रगट कर रहा हूँ क्या हे मृत्यु से विजय होने वाले हे मानव! तू देवता बन करके मृत्यु को विजय कर, और तू मानो देखो, द्यौ में प्रवेश हो जा। तो मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार जब अपने तपोमयी जीवन को महान और विकृतियों में रत्त मानो प्रकाश में ले जाएगा तो अन्धकार स्वतः समाप्त हो जाता है उनका आथित्य समाप्त हो जाता है तो मेरे प्यारे! व्रतेन्तु ब्रह्मचारी ने एक वर्ष तक उसकी सेवा की, और विज्ञान को जानते रहे जब उन्हें एक वर्ष हो गया, तो एक समय जब बेटा! देखो, उन्होंने विराजमान हो करके, उन्होंने उनके नाना पितरों का दर्शन कराया या देखो, यन्त्र के माध्यम से, मानो देखा वह वैज्ञानिक यन्त्र और मुनिवरों! देखो, अपने सौवें महापिता का भी दर्शन कराया उन्होंने कहा ये मेरे सौंवे महापिता है, उनका दर्शनं अन्नाद भूतं ब्रह्मा तो मेरे प्यारे! देखो, व्रतेन्तु ने एक वाक् कहा, हे प्रभु! मैं एक वाक् जानना चाहता हूँ व्रतेन्तु ने जब ऐसा कहा तो शिकामकेतु उद्दालक बोले कि हे प्रभु! उच्चारण करो उन्होंने कहा-प्रभु! यह जो हमारा उद्दालक और तुम्हारा यह जो वंशलज चल रहा है, यह मानो देखो, तीन हजार पाचं सौ इक्कसठ के वंशलज हुए हैं, मानो देखो, तुम्हारे इस वंशलज में इस प्रकार के विज्ञानवेत्ता नही हुए हैं, परन्तु देखो, एक उद्दालक गोत्र का जो निकास हुआ है, वह मानो हरिकेतु मानो हरितत गोत्रों से इसका निकास हुआ है, और वह जो निकास है, इसमें इक्कसठ हजार पांच सौ इक्कतालीस के लगभग वंशलज समाप्त हुए, परन्तु उनमें भी कोई इस प्रकार का

विज्ञानवेत्ता नही हुआ। परन्तु देखो, वह जब इस प्रकार देखो, हरितत गोत्रों का जो निकास हुआ है, वह वायु गोत्र से हुआ है, और वायु गोत्र में मानो इक्कतर हजार पांच सौ इक्कसठ के लगभग मानो इस प्रकार के वंशलज हुए हैं, परन्तु इनमें भी कोई ऐसा ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मवेत्ता बहुत हुए परन्तु विज्ञानवेत्ता नही हुआ, भौतिक विज्ञान को कोई महत्व नही मिला, मानो देखो, वायु गोत्रों का जो निकास हुआ है। वह मानो देखो, वह हरि के द्वारा हुआ और वह हरि गोत्र में लगभग मानो देखो, लाखों वंशलज हुए हैं इन्हें कोई ऐसा नही हुआ, परन्तु देखो, इस प्रकार देखो, अमृतं देखो, हरिवाची गोत्रों में इनका जो निकास हुआ वह ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से हुआ है, और अथर्वा गोत्रों में बहुत से वंशलज हुए हैं, परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ, प्रभु यह विज्ञान मानो कहाँ से तुम्हें प्राप्त हुआ? किसने तुम्हें प्रेरणा दी है। तो मुनिवरों! देखो, अमृतं शिकामकेतु उद्दालक ने कहा कि मेरी जो पत्नी है, मानो यह शकुन्तका यह बाल्यकाल में देखो, यह बाल्यकाल में इनका श्वेतर भारद्वाज मुनि के रेंगणी भारद्वाज मुनि के तो क्या तत्त्व मुनि महाराज के यहाँ शिक्षा अध्ययन की, और यह मानो मेरे गृह में देवी बन करके आ गई। और मानो इन्होंने विज्ञान को इन्होंने बाध्य किया, और मैं दोनो देखो, याग करते हैं याग में से विज्ञान को हमने निकासा है, और इस विज्ञान को हमने जाना तो मानो देखो, यह प्रकाश है, यह मानो देखो, जड़वत है परन्तु इसमें आध्यात्मिकवाद की पुट लगी हुई है, जैसे याग में याग का आध्यात्मिकवाद से समन्वय रहता है। तो मानो देखो, इस प्रकार उद्गीत गा करके बेटा! वर्णन किया व्रतेन्तु बड़े प्रसन्न हुए, और व्रतेन्तु ने दोनो के चरणों को स्पर्श करते हुए, उन्होंने वहा से गमन किया। और भ्रमण करतु हुए, बेटा! वह मानो देखो, भ्रमण करते हुए भयंकर वन में चले गएं, जहाँ मुनिवरों! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज तपस्या कर रहे थे। वह भी तपस्या करने लगे, तो यह बेटा! सूक्ष्म सा तुम्हें एक परिचय दिया है। विज्ञान का तो विचार-विनिमय क्या कि हमें हमारा विज्ञान बड़ा महत्वदायक रहा है, विज्ञानवेत्ताओं ने बड़ी ऊँची-ऊँची उड़ाने उड़ी हैं, प्रेरणा को प्राप्त करते हुए मृत्यु को विजय करने का प्रयास किया है। तो इसीलिए हमें मृत्यु से मानो देखो, अन्धकार से दूरी रह करके, प्रकाश में जाना चाहिए, और प्रकाश में जब ही रह सकता है। जब प्रभु के गर्भ प्रभु के विज्ञान में रत्त हो करके यह स्वीकार करता है, कि-प्रभु! मानो देखो, इस अपने ब्रह्माण्ड में क्या-क्या वस्तु हैं? कितना ज्ञान है? कितना विज्ञान है? कितनी महानता है? मानो देखो, कितना अग्नि की धाराएं हैं? यह सब मानव को जान करके और अपने आन्तरिक जगत में प्रवेश करके कागभुषुण्ड जी की भान्ति बेटा! तपस्वी बनना चाहिए। यह है मुनिवरों! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् ब्रह्म गणा वाचन्नमा रथं रौ सर्वा आभ्यां देवा वायु रथा वाचन्नम दिनांक १४ ०१ १९८९

# १४ मानव अति मानव १५ ०१ १९८९

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगाना गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है। मानो वह पुरोहित हैं, पराविद्या के प्रदान करने वाले हैं, और वह सर्वज्ञ यज्ञोमयी स्वरूप हैं। मानो याग उसका आयतन है, उसका गृह है, और वह उसी में वास कर रहा है। मानो वे परमपिता परमात्मा जो सर्वज्ञ, जो इस संसार रूपी यज्ञशाला का, जिसने निर्माण किया, और जो नित्यप्रति मानो निर्माण कर रहा है, एक-एक वस्तु के ज्ञान और विज्ञान में जब, हमारी सब की दृष्टि जाती है तो प्रायः मानो एक वृक्ष से ले करके एक पौधा सूक्ष्म, वहाँ तक उसके विज्ञान की और उसकी महानता की कोई सीमा नही है। क्योंकि वह बड़ा अनन्त और ऐसा अनुपम जगत का रचयिता है एक दूसरें में प्रत्येक प्राणी ओत-प्रोत हो रहा है। एक दूसरें में रत्त हो रहा है, मानो जैसे याग, हमारे विचारों में निहित रहता है, और वही विचार हमारे व्यापक हृदयों में निहित रहने वाला है। और वही हमारा जो हृदय है। बेटा! वह सर्वत्रता से मानो वह कटिबद्ध हो रहा है। सर्वत्र मानो जितना भी संसार का क्रियाकलाप है। वह सर्वत्र क्रियाकलाप हमारे हृदय से समन्वय मानो उसी में निहित रहता है। जैसे एक मानव संसार को दृष्टिपात कर रहा है, परन्तु उसकी जो स्थिति है, वह मानव के हृदय में निहित रहती है। चाहे वह किसी भी प्रकार की हो घ्राण में नाना प्रकार की मन्द सुगन्ध को ग्रहण कर रहा है, और हृदय में उस मन्द सुगन्ध की स्थिति नियुक्त रहती है। मेरे पुत्रों! देखो, यह सर्वत्र जितनी प्रीति हैं, अथवा प्रेरित है चाहे मुनिवरों! सर्वत्र आभा में रत्त रहने वाला है, चाहे वह कटुता में हो चाहे वह प्रीति में हो, परन्तु उसकी जो सबकी स्तुति है, वह सब हृदय में निहित रहती है। तो बेटा! यह कैसा अनुपम हृदय है, और यह उस प्रभु का निर्माण किया हुआ हृदय है, जिसमें सर्वत्र ब्रह्माण्ड समाहित हो जाता है। तो हम ब्रह्माण्ड के ऊपर, अपनी कल्पना करते रहते हैं, मानो इसी प्रकार, जब हमारा जीवन इस संसार रूपी यज्ञशाला के ऊपर मनन और चिन्तन करता है, मेरे प्यारे! नाना प्रकार का दुरवृत्तियों में रत्त रहने वाला जो अनुपम विचार है, वह भी बेटा! याग के द्वारा, समीप जा करके वह उसका शुद्धिकरण हो जाता है। मेरे प्यारे! हमारे ऋषि-मुनियों ने पम्परागतों से ही ये माना है, क्या हमारे यहाँ मृत्यु का बड़ा एक प्रसंग रहता है। जो हमने इससे पूर्व काल में भी, तुम्हें वर्णन कराया प्रत्येक मानव के हृदय में यह आशंका बनी रहती है, क्या मृत्यु नही होनी चाहिए, और यदि मृत्यु हो गई तो संसार में मानव क्या रहा।

## प्राणियों के तीन प्रकार

हमारे यहाँ बेटा! तीन प्रकार के प्राणी होते हैं, एक प्राणी वह होता है जो उग्रवादी होता है और उग्रवादी भी दो प्रकार के होते हैं एक तो रक्तमयी क्रान्ति को लाने वाला, मानो जिसमें स्वार्थ है, जिसमें घृणा है, और ईर्ष्या है। मेरे पुत्रों! देखो, एक तो वह जो अपने पालन-पोषण के लिए अपने लिए ही मानो देखो, वह एक उग्रवादी बना हुआ है। जानो वे परमपिता परमात्मा की सृष्टि में बेटा! हारा हुआ दृष्टिपात होता है, वह उसका कोई मूल नही हैं, और एक मानव वह है बेटा! जिसने माता के गर्भ से जिसने जन्म लिया है, माता ने उसे शिक्षा दी है पितरों ने दी है, आचार्यों ने शिक्षा दी है। परन्तु शिक्षा के सन्निधान मात्र से ही, मानव अपने जीवन को संचालित कर रहा है, वह बेटा! देखो, वह प्रातःकालीन ब्रह्मयाग में लगा हुआ है प्रातःकालीन मानो देव याग में परिणत हो जाता है, वह पितर यागों में लग जाता है, मेरे प्यारे! देखो, वही हमारे यहाँ बलिवैश्व और नाना प्रकार के यागों में पवित्रिकरण में परिणत हो जाता है। तो बेटा! वह परमात्मा की महिमा और प्रभु का चिन्तन करता हुआ, मेरे पुत्रों! देखा वह

मानव कहलाता है। वह मानव कहलाता है। जब वह अपने मानव बन जाता है, तो बेटा! वे परमपिता परमात्मा की सृष्टि में, जैसा वह आया है, परमपिता परमात्मा की सृष्टि में वैसा ही प्रभु को प्राप्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह अपनेपन को ही प्राप्त हो जाता है, परन्तु एक मानव वह कहलाता है। जो बेटा! देखो, उग्रवादी है, जिसकी तीव्र गति हो गई है, और वह गति कैसे हो गई है। मानो देखो, वह सबसे प्रथम वह ब्रह्मयाग में परिणत होता है। और ब्रह्मयाग को चिन्तन में लाता है, अपनी क्रियाओं में लाता है, मानो देखो, ब्रह्म का यह जगत है, एक दूसरी तरंगे, तरंगों में परिणत हो रही है। मानो देखो, यह प्रभु का जगत है, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर हैं, उन लोकों की एक माला बनी हुई है। उन लोकों का एक रूद्र रूप बना हुआ है, और वह दोनों को एक दूसरें में पिरोया हुआ सा दृष्टिपात करता है, और अपने को भी उसमें पिरोया हुआ दृष्टिपात करता है। मेरे प्यारे! देखो, जब वह उसको अपने में पिरोया हुआ और अपने को उसमें पिरोया हुआ वह स्वीकार करता है। तो बेटा! उसकी उग्र क्रिया वह तपस्या में परिणत हो जाती है। वह तपस्वी कहलाता है, वह मेरे प्यारे! देखो, कहीं-कहीं तपस्वी ऐसा किया करते हैं, कि उनका वर्णनं ब्रह्मा व्रतों मेरे प्यारे! वह प्राणायाम करने लगते हैं। मुनिवरों! देखो, वह खेंचरी मुद्रा में परिणत हो करके वह संकल्पोमयी प्राणायाम में परिणत हो जाते हैं, और संकल्पोंमयी प्राण में परिणत हो करके अपना जो मानो देखो, उसी प्राण आत्मा के उदान और समान को एकाग्र करके बेटा! देखो, वह सूर्य और चन्द्र स्वरों में प्राण को दृष्टिपात करते रहते हैं। तो मुनिवरों! देखो, वह प्राणायाम करके वह तपस्वी बन जाते हैं। वह संकल्पोंमयी प्राण है। संकल्पोंमयी जीवन बन गया है। संकल्पोमयी मानो वह प्रभु का जगत विचारने लगता है।

मेरे प्यारे! देखो, प्रभु के जब एक-एक कण-कण में अपने को और प्रभु को विचारने लगता है तो जानों बेटा! वह तपस्वी प्राणी कहलाता है। वह तपोमयी ही परिणत होता हुआ, मेरे पुत्रों! जैसा मैंने इससे पूर्व काल में याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की चर्चा की तो मुनिवरों! देखो, वह अपने में ही मानो देखो, प्रभु का दर्शन करता हुआ और अपने प्रभु के ज्ञान और विज्ञान को अपने में धारण करता हुआ मेरे प्यारे! देखो, इस सागर से पार होने का प्रयास करता है। तो वह जो प्राणी है वह देवता है, वह तपस्वी है, जो मानो देखो, उग्र क्रिया है, जैसे परमपिता परमात्मा ने जब सृष्टि का निर्माण किया सृष्टि के निर्माण के समय मेरे प्यारे! परमपिता परमात्मा की यह उग्र क्रिया बनती है। यह उग्रता में मानो प्रकृति को अपने में धारण करता हुआ, यह नाना प्रकार के रूपों में बेटा! यह जगत दृष्टिपात आने लगता है। इसी प्रकार मानव के जीवन में बेटा! जो देवतव है, वह देवता जब ही बनता है, जबकि मानो देखो, वह तपस्वी बन जाता है। मैंने तुम्हें कई कालों में प्रगट करते हुए कहा है, क्या देवर्षि नारद मुनि मानो देखो, जब प्राण की सत्ता को जान गएं थे। तो वह प्राणायाम माध्य से कुम्भक और रेचक में परिणत हो करके और कुम्भक बेटा! देखो, वो वायु मण्डल में वह गमन करते रहते थे। तो बेटा! वह देवता कहलाते थे, इसीलिए हमें देवता बनना है, मानव बनना है। मेरे प्यारे! अपने स्वार्थ के लिए उग्रवादी नही बनना, मेरे प्यारे! देखो, जो उग्रवादी बनता है। वह अपने को हारा हुआ इस प्रभु की सृष्टि में दृष्टिपात करता है। मेरे प्यारे! जो मानव याग इत्यादियों में लगा रहता है, वह मानव है, अति मानव में जाने का प्रयास करता है। वह प्राण के माध्यम से प्राण और अपान को एकाग्र लाने के लिए प्रयास जैसे प्राण को देखो, प्राण को अपान में पिरोया जाता है। अपान को समान में पिरोया जाता है, और समान को व्यान में पिरोया जाता है, और व्यान को उदान में पिरोया जाता है, और इनको पिरो करके मेरे पुत्रों! देखो, वह मन और प्राण ब्रहे क्योंकि मानो देखो, मन को ले करके वह प्रभु के समीप चला जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, प्राण की सत्ता को अपने में धारयामि बनाता है। तो विचार वह देवता कहलाता है, वह अति मानव बन जाता है। तो बेटा! देखो, आज मैं मानव अति मानव की चर्चा विशेषता में तुम्हें नही ले जाना चाहता हूँ। विचार केवल यह कि हम सब ही अपने में विचारें, कि हम सब

परमपिता परमात्मा की सृष्टि में विद्यमान हैं उसके गर्भ में विद्यमान हैं। जैसे हमारा जब निर्माण होता है, तो निर्माणवेत्ता तो निर्माण करता है। माता के हिरण्य गर्भ में हम विद्यमान रहते हैं। शिशु के जाते ही मानो नाना देवतव मानो उसकी रक्षा करते रहते हैं। तो मानो देखो, उसी के गर्भ में वह देवतव है, वह रक्षा करने वाला विष्णु कहलाता है। हे विष्णु! तू पालन करने वाला है। तू महानता में गमन कराता है। जैसे बेटा! देखो, यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके वह मानो वेद मन्त्रों के द्वार आह्वान करता हुआ, जब वह अपने संकल्प से याग करता है। तो बेटा! देखो, उसके हृदय में एक देवतव जागरूक हो जाता है। परन्तु देखो, जब वह अग्नि के समीप जाता है, तो अग्नि से कहता है, हे अग्नि! आ तू मेरे संकल्प को पूर्ण कर मानो देखो, वह अग्नि आयाहि कह करके उसे पुकारता रहता है उसको वह कहता है हे अग्नि! आ, तू मेरे हृदय में समाहित हो, वह ब्रह्माग्नि है मानो वही रुद्र अग्नि है और वही मुनिवरों! देखो, विष्णु वाचक अग्नि कहलाती है। मेरे प्यारे! देखो, वही अग्नि, जब देवताओं के समीप जाती है तो देवताओं का मुख बन करके बेटा! देखो, उनकी तृप्ति करती रहती है, वही अग्नि बेटा! जब विज्ञान के वैज्ञानिकों के समीप जाती है तो वही अग्नि बेटा! नाना प्रकार के परमाणुओं को जागरूक करके, बेटा! देखो, यन्त्रों का निर्माण करने लगती है, तो अग्नि के भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूप आज के हमारे वेद के मन्त्रों में बेटा! गान रूप से गाए हैं। आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष विवेचना देने नही आया हूँ, आज मैं मानो देखो, ये उद्गीत गाने के लिए हम, परमपिता परमात्मा की सृष्टि में आए हैं, हम अपने को हारा हुआ दृष्टिपात न करें, मानव बनें, देवता बनें, और मानो देखो, अपने स्वार्थ की उग्र क्रिया को हम त्याग दें। मानो अति स्वार्थ पापाचार में परिणत हो जाता है। सामान्य जो मानो एक क्रिया है, वह उसके मानो मानवीयतव को दर्शाती रहती हैं। अब मैं अपने विचारों में विशेष विवेचना न देता हुआ, अब मैं अपने प्यारे महानन्द जी से उच्चारण करूंगा, जिनकी बड़ी उत्कृष्ट इच्छा है और वह मानो अपने कुछ विचार व्यक्त करें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् देवाः यं रथा यश्शचां मनो वायुः रथा । मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अपने विचारों में गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे, मानो गागर में सागर को भरण कर रहे थे, आज का हमारे पूज्यपाद गुरुदेव का जो एक उपदेश अथवा उनका जो वाक् है, वह एक दर्शनों से गुथा हुआ, और जिससे मानव दर्शन, अपने में ऊर्ध्वा में गमन करता रहता है, परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव आज मानो हमारी यह जो वाणी है हमारा यह जो उदगार है, यह ऐसी स्थली पर जा रहा है, जहाँ एक याग का आयोजन हुआ, और मैंने बहुत पुरातन काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा है कि यह जो काल चल रहा है, इस काल को मैं वाममार्ग का काल कहता रहता हूँ, मानो देखो, बीज रूप तो संसार के नष्ट नही होते, परन्तु देखो, यह ऐसा काल है, जहाँ मानव ने भक्ष्य और अभक्ष्य पदार्थो को भक्षण करना प्रारम्भ कर दिया। यह कौन करता है? यह मानव नही कर रहा है, यह देवता नही कर रहा है, यह प्राणी करते हैं जिनको मानो देखो, हम वाममार्गी कहते हैं। वाममार्गी वही होत हैं जो उल्टे मार्ग पर गमन करते हैं मानो सुलटे मार्ग को त्याग देते हैं, आहार में पवित्रता और मानवता लाते हैं तो इसीलिए हमें अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह उच्चारण करने के लिए आया हूँ कि वहाँ एक याग हुआ और मेरा अन्तरात्मा याग से सुक्रियाओं से सदैव प्रसन्न रहता है कि प्रत्येक प्राणी मेरा ही नही परन्तु देखो, मेरा जो अन्तर्हृदय रहता है वह यज्ञमान के साथ रहता है हे यज्ञमान! तेरे जीवन की प्रतिभा और महानता बनी रहे सौभाग्य जीवन की आभा में सदैव निहित रहे ऐसी मेरी कामना रहती है परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी मानो देखो, मानव, अति मानव और निकृष्ट मानव की चर्चा की यह तीन प्रकार के प्राणियों की चर्चा करते रहते हैं, परन्तु मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा है क्या हे प्रभु! यह जो मानव धर्म-धर्म कह रहा है यह धर्म मानवीय हृदयों में आप ने जो इससे पूर्व शब्दों में कहा है हृदय में

समाहित रहता है तो इस धर्म को मानव को स्वीकार करना चाहिए परन्तु आधुनिक काल का राष्ट्र कहता है हम निरपेक्ष कहलाते हैं मानो देखो, निरपेक्ष किसे कहते हैं? जिसका कोई धर्म न हो, जिसमें कोई मानवता न हो, परन्तु वह क्या वह अमानव है, अब मैं इस विचार में जाता हूँ कि वह अमानव कैसे बन गया अरे, मानव जब तू मानव को और धर्म की चर्चा धर्म की रक्षा नही कर सकते। धर्म को अपने में ला नही सकते। क्योंकि धर्म की कोई रक्षा नही कर सकता। धर्म तो मानव के शरीरों में स्वतः रहता है। वह हृदयों में, इन्द्रियों में स्वतः विद्यमान रहता है तो वह धर्म कहलाता है, परन्तु देखो, आधुनिक जगत के इस राष्ट्र में नाना प्रकार की रूढ़ियों को धर्म स्वीकार किया, अरे, रूढ़िवादियों में धर्म नही होता, धर्म मानव के कर्तव्य और मानवीयता में रहता है। मानो देखो, उस धर्म को अपनाना चाहिए धर्म क्या है? जो उसका स्वाभाविक गुण है, मानो वही उसका धर्म है, और यदि उस गुण को त्याग दिया गया तो राष्ट्र में रह क्या गया राष्ट्र की पद्धतियाँ नष्ट हो जाती हैं। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद से वर्णन किया था क्या जिस भी काल में राष्ट्र का निर्वाचन होता है राष्ट्रीय प्रणालियों का निर्माण होता है तो उन प्रणालियों में देखो, विवेकी पुरूष विद्यमान हो करके और राजा उसके मध्य में विद्यमान हो करके यह कहते हैं कि हे तपस्वी जनों! हे महापुरूषों! मानो देखो, मुझे कोई आज्ञा दीजिए। उन्होंने यह कहा है महापुरूषों ने क्या जो तुम्हारे अन्तरात्मा की विडम्बना है, विवेचना है, वृत्तिका है, मानो देखो, उसको तुम्हें स्वीकार करना है, और देखो, रूढ़िवाद को समाप्त करना है। रूढ़िवाद कहते हैं, जो वेद के मार्ग से भिन्न होता है, वास्तव से वेद के मार्ग से कोई मार्ग भिन्न नही है, यह भी स्पष्ट है। परन्तु देखो, वह उसमें संकीर्णता आ जाती है, जहाँ अपनापन ईश्वरवाद पर ले करे कोई गमन करता है, तो जानों की यही रूढ़ि आने वाली है वह द्रव्य की लोलुपता में देखो, वाममार्ग बनने जा रहा है। तो यह राष्ट्र का कर्तव्य है, राजा पुरोहित जन कहते हैं कि राजा ऐसे मानो देखो, ऐसे रूढ़ियों को अपने राष्ट्र से दूरी करने का प्रयास करे। ऐसा मेरा मानो सदैव मन्तव्य रहा है, और यदि देखो, इससे भी स्वीकार न हो, तो विचार-विनिमय हो हे राजा! तू ब्रह्मवेत्ता हो, तू ब्रह्म को जानने वाला हो, और ब्रह्म को जानने वाला ही समाज मानो अपने समाज को ऊँचा बनाता है। जैसे आचार्य कुल में देखो, विद्यालयों में जितना भी ब्रह्म को जानने वाला तपस्वी आचार्य होगा उतना ही विद्यालय पवित्र होगा ब्रह्मचारी सुसज्जित होंगे और महानता में गमन करने लगेंगे, तो ऐसा मानो देखो, मेरा मन्तव्य पूज्यपाद गुरुदेव से रहा है। हे प्रभु! देखो, ऐसे राष्ट्र ऐसा समाज निर्वाचन प्रणाली ब्रह्मवेत्ताओं के द्वारा राष्ट्र की होनी चाहिए। यह साधारण वृत्ति और प्रणाली हैं, जो कोई प्रणालियां नही हुआ करती हैं। क्योंकि महापुरूष जो निष्पक्ष होते हैं। जो स्वार्थ से रहित होते हैं। जो मानो स्वार्थ से अग्रणीय मानो कृतियों में निस्वार्थ रहते हैं अरे, वही तो अन्तरात्मा की पुकार को अन्तरात्मा तब पंहुचाने का प्रयास करते हैं। परन्तु देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था क्या आधुनिक काल में वर्तमान के जगत में विज्ञान अपनी पराकाष्ठा पर जाने के लिए कह रहा है, यह कहता है आज का विज्ञान परन्तु जब मैं पुरातन काल के विज्ञानवेत्ताओं की चर्चा और नारद की चर्चाएं मेरे पूज्यपाद कर रहे थे। जब उनकी चर्चाएं आती है, तो प्रायः ऐसा स्मरण आता है कि विज्ञान का जब तक सदुपयोग नही हो पाएगा, जब तक विज्ञान अपनी ईकाई में रमण करता रहेगा, तो इसीलिए ईकाई वाला जो विज्ञान है। यह मानव को ध्रुवा में ले जाता है। राष्ट्र को ध्रुवा में ले जाता है। मानो देखो, इससे बाल्य बालिका उल्टे मार्ग पर चल करके वाममार्ग की प्रणाली उत्पन्न होती है। तो ऐसा मेरा मन्तव्य है, परन्तु मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहता रहता हूँ, हे प्रभु! आपने हृदय में कोई संसार का प्राणी ऐसा नही है, जिसके हृदय में धर्म न रहता हो। चाहे वह राष्ट्र हो, चाहे प्रजा हो, चाहे वह देखो, मानव हो प्रत्येक मानव देखो, उग्र प्राणी के नष्ट करने वाला प्राणी के हृदय में भी मानो देखो, यह प्रेरणा उत्पन्न होती रहती है। तो इसीलिए आज का विचार मैं विशेष न देता हुआ, विचार केवल यह कि इनके हृदयों को हृदय

से अपने को वह मोहिनी बनाना चाहिए। हृदय की प्रतिभा ऐसा नाटय क्रम मानो देखो, इतिहास साहित्य राष्ट्र के संरक्षण में रहना चाहिए, जिससे देखो, उसमें रूढ़िवाद या अज्ञान या मानो देखो, उससे मानवीयता से दूरी न चला जाएं। ऐसा सब राष्ट्र के मध्य में होना चाहिए ऐसा मेरा विचार है, अब मैं विशेष चर्चा नही दूंगा मानो देखो, आज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने प्रारम्भ के शब्दों में धर्म मानवीयता की चर्चा दी है, और आज का मेरा विचार यह कि हे यज्ञमान! मेरा अन्तरात्मा सदैव यह कहता रहता है, कि यज्ञमान तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तेरे जीवन में मानो सदैव अपनी मानवीयता को प्राप्त करता हुआ, अपने हृदय में मानो देवतव को जागरूक बनाता है। ऐसी मेरी कामना रहती है। ऐसा मेरा अन्तर्हृदय कहता रहता है कि आज का विचार अब मैं अपने विचारों को विराम दे रहा हूँ ।

पूज्यपाद गुरूदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे पूज्य ऋषि-मुनियों के सम्मुख महानन्द जी ने अपना विचार दिया और उन विचारों में कितनी विडम्बना है, मानो उस विडम्बना के आश्रित हो करके अपना विचार-विनिमय देते रहते हैं। परन्तु आज का विचार क्या कह रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा की सृष्टि में आए हैं, और परमपिता परमात्मा की सृष्टि में हम अपने प्रभु का चिन्तन करते रहे मनन करते रहें। क्रियाकलापों में सदैव रत्त रहे, और अपने अति मानव मानव और दोनो को अपने को ऊर्ध्वा को ले जाते हुए परमपिता परमात्मा जो सर्वज्ञ है। जो सर्वत्र प्रवाह ओत-प्रोत हो रहा है, हम सदैव उसकी आभा में सदैव रत्त रहें, उसकी सृष्टि को निहारते रहें। विचारते रहें, और उसको अपने हृदय में अगम्य प्रकाश में जा करके विजय होते रहें। ऐसा आज का यह विचार है, मेरे पुत्रों! इन्होंने कहा कि वाममार्ग काल वार्म मार्ग में भी बीज रूप रहता है। परन्तु देखो, उल्टे मार्ग पर मानव को गमन तो नही करना चाहिए, प्रायः देखो, पवित्र मार्ग पर गमन करते हुए, और पवित्रता जब आती है। जब परमपिता परमात्मा का हम चिन्तन करते हैं, उसकी सृष्टि को निहारते हैं, एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके, निहारते रहें, तो आज का विचार अब यह समाप्त होने जा रहा है। शेष चर्चा तो कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् ब्रह्म गणा आभ्यां रेवाः रथं मा वृ वरुणा वाचन्नमाः। दिनांक १५ ०१ १९८९

## १५ यज्ञोमयी स्वरूप २८ १० १९८९

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता के ऊपर विचार-विनिमय किया जाता हैं, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं, और वह यज्ञोमयी स्वरूप क्योंकि याग उसका आयतन है, उसका गृह हैं, और उसका सदन हैं, और वह उसी में वास कर रहा हैं। तो आज मुझे कहीं से ये प्रेरणा आ रही हैं कि मैं याग के सम्बन्ध में कुछ अपने विचारों को व्यक्त करूं। क्योंकि याग के ऊपर हमारे यहाँ, ऋषि-मुनियों ने अपने बड़ी विचित्र-विचित्र लेखनियाँ बद्ध की हैं, और समाधिष्ट हो करके, उन्होंने एक-एक वेदमन्त्र के ऊपर गम्भीर अध्ययन किया है, क्योंकि जब तक हम अध्ययन नही कर पाते, जब तक हमारे अध्ययन की प्रतिक्रियाएं मनस्तव और प्राणतव तक नही जा पाती। तो विचार आता रहता है कि मन और प्राण और विचार ये दोनों एक ही सूत्र के मनके कहलाते हैं, और जब हम इनको एकाग्र करके जब हम किसी वस्तु पर, हम अन्वेषण करते हैं, अथवा विचार-विनिमय करते हैं, तो मानो उसके बहुत गम्भीर, आन्तरिक जगत में प्रवेश हो जाते हैं, जहाँ हमारे वाक्यों को कोई, अवृत्तियों में न परिणत कर दे, वह शब्द अकाटय बन जाते हैं जैसे याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने और भी आदि ऋषियों ने उस परमपिता

## याग एक सवांग पूजा

परमात्मा के सम्बन्ध में और याग के सम्बन्ध में जो उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए है। वह बड़े विचित्र है उन्होंने देखो, परमपिता परमात्मा की सम्बन्ध में कहा है क्या यह जो संसार रूपी यज्ञशाला है, मानो नाना प्रकार की मेखला बनी हुई हैं, वह उस परमपिता परमात्मा की महती है। और उसी में वह रत्त हो रहा है, उसी में गमन कर रहा है।

तो विचार आता है कि हम परमपिता परमात्मा की सम्बन्ध में बेटा! वह यज्ञोमयी स्वरूप माना गया हैं, मानो याग उसका आयतन है, वह उसी में वास, वह उसका गृह हैं, और उसी का वह सदन बना हुआ है, मानो वह उसी में वास कर रहा है। यह कैसा अनूठा हैं, कैसा अनुपम ब्रह्म है, जिसकी महिमा बेटा! परम्परागतों से ऋषि-मुनि उसका बखान करते रहते हैं। वैज्ञानिक जन उसकी प्रतिभा को दृष्टिपात करते रहते हैं। परन्तु उसका ज्ञान, विज्ञान इतना अनन्तमयी है, कि मानव अन्त में मौन हो जाता हैं। और वाणी अपनें में, उद्गीत गाने में मानो असमर्थ हो जाती हैं। तो वे परमपिता परमात्मा मानो यज्ञोमयी स्वरूप है, वे पुरोहित हैं, वे पराविद्या के प्रदान करने वाले याग का अभिप्रायः कि हम वह जितने भी सुक्रियाकलाप है। वह सुक्रियाकलाप एक यज्ञमयी माने गएं हैं। तो आओ, मेरे पुत्रों! देखो, मैंने कई कालों में तुम्हें बहुत-सी चर्चाएं प्रगट भी की हैं ऋषि-मुनियों का जो अध्ययन करने का माध्यम रहा है, वह बड़ा विचित्र रहा है, और उनके अध्ययन की जो प्रतिक्रिया रही है वह विज्ञान आध्यात्मिकवाद और मानवीयतव और ब्रह्माण्ड और पिण्ड इन पंचीकरण करते हुए मानो उन्होंने इसके ऊपर अध्ययन किया तो आओ, मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें ऋषि-मुनियों के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ। क्योंकि हमारे यहाँ प्राण वक्ताओं ने भी प्राणेश्वरों ने भी मुनिवरों! देखो, याग के ऊपर अपनी बहुत-सी टिप्पणीयाएं और अपना विचार दिया है परन्तु देखो, यहाँ याज्ञिक पुरूषों ने अपना-अपना जो मन्तव्य दिया है, वह बड़ा विचित्रतव माना गया है। आओ, मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें ऐसे ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! देखो, बाल्य ब्रह्मचारी देखो, आचार्य के चरणों में विद्यमान हैं, और वह प्रश्न कर रहे हैं, आचार्य उसका उत्तर दे रहा हैं, और उनके प्रश्न करने की जो शैली रही है यह बड़ी विचित्रतम रही है। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे आज, वह आश्रम स्मरण आ रहा हैं, जहाँ मुनिवरों! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ जाने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है, और देखो, जहाँ देखो, महर्षि वैशम्पायन उनका विचार-विनिमय भी उनकी जो गम्भीरताएं भी विचारधारा है उनको भी श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा परन्तु महर्षि व्यास महर्षि भारद्वाज के यहाँ जो क्रियात्मक यज्ञशालाओं का निर्माण अथवा उनका जो याग उसके ऊपर अध्ययन करने का जो एक माध्यम रहा है वह एक बड़ा विचित्रतम माना गया है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में ले जाना चाहता हूँ, जिन वाक्यों का विचार बेटा! हम बहुत पूर्व काल हम में दे चुके हैं आज भी हमें स्मरण आ रहा है, क्योंकि उनके विचार सदैव हमारे अन्तर्हृदयों में नवीन बने रहते हैं, उनमें वृद्धपन नही आता, क्योंकि वृद्धपन उन विचारों में आता हैं, जो विचार मानव के अन्तःकरणीय नही हो पाते। जो अन्तःकरणीय मन और प्राण की संज्ञा को ले करके जो विचार देता है, बेटा! वह सदैव नवीन रहते हैं। क्योंकि ज्ञान सदैव नवीन होता हैं, ज्ञान में वृद्धपन नही आता। वह ज्ञान सदैव एक रस रहता है, वह प्रज्ञावी मानो देखो, ज्ञान का सम्बन्ध प्रज्ञा से रहता है, और वह जब प्रज्ञावी बन जाता है, तो बेटा! देखो, वह अरबों वर्षों पूर्व भी उसी प्रकार मानो उससे मध्य काल में भी उसी प्रकार आज भी यदि हम देखो, उद्गीत गाते हैं, तो देखो, वह उसी प्रकार होगा। तो मेरे प्यारे! देखो, ज्ञान सदैव नवीन रहता है, उसमें वृद्धपन नही आता। तो इसीलिए हमें ज्ञान और विज्ञान के ऊपर विचार-विनिमय करना चाहिए। क्योंकि विज्ञान की तरंगें पुरातन काल में भी उसी प्रकार मध्यकाल में भी और उसी प्रकार आज भी वह उसी प्रकार हैं। क्योंकि परमात्मा का अनूठा

ज्ञान है परमात्मा की अनूठी रचनाएं हैं और वह मानो देखो, उन्ही में वास कर रहा हैं। तो उसके गुणों का गुणवादन करना, ये हमारा कर्तव्य माना गया हैं।

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, आज मैं ऋषियों के समीप जाना चाहता हूँ, मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में कुछ ऋषि-मुनियों का एक समूह, मानो ऋषि के आश्रम में पंहुचा, और महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने उन ऋषि-मुनियों का स्वागत किया, उनमें बेटा! देखो, गाड़ीवान रेवक, ब्रह्मचारी कवन्धि, तो अध्ययन करते ही थे, परन्तु वह भी उनके आश्रम से हो करके आश्रम में प्रवेश हुए, और मुनिवरों! देखो, उन्हीं के यहाँ देखो, जैसे गाड़ीवान रेवक और मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी रेणकेतु, सोमकेतु, और देखो, प्रवाहण, शिलभ और दालभ्य और यह महर्षि वैशम्पायन यह मानो देखो, अपने आश्रम से भ्रमणं ब्रहे कृता वह भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में पधारे। महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के यहाँ उस समय प्रातःकालीन बेटा! ब्रह्मचारीजन और आचार्य जन देखो, याग कर रहे हैं, वह याग में परिणत हो रहे हैं, जब वह याग कर रहे हैं, तो भारद्वाज मुनि के आश्रम में जैसे वह याग हो रहा था उस यज्ञशाला में वह भी विराजमान हो गएं और जब विराजमान हो गएं तो मुनिवरों! देखो, ऋषि भारद्वाज ने दृष्टिपात किया आज तो हमारा बड़ा सौभाग्य हैं, जो ब्रह्मवेत्ताओं का आगमन हुआ है, हम कितने सौभाग्यशाली हैं, तो मेरे पुत्रों! देखो, याग जब उसका सम्पन्न हो गया, भारद्वाज मुनि महाराज ने उनका स्वागत किया उन्होंने कहा कहो भगवन! आज हमारे इस आसन को कैसे तुमने पवित्र किया हैं? हमारा यह कैसा सौभाग्य जागरूक हो गया है, भगवन! उन्होंने कहा हे प्रभु! आज हम देखो, रात्रणं ब्रह्मे देखो, इससे जो पूर्व जो दिवस चला गया है। हम अपने आश्रम में सब विद्यमान थे, मानो अतिथि रूप में महर्षि वैशम्पायन हमारे यहाँ विराजे और यह विचार-विनिमय करने लगे कि याग अपनी स्थलियों में क्या महत्व दायक हैं, उस विचार को हम ले करके हम तुम्हारे समीप आएं हैं। और इसके ऊपर हम विचार-विनिमय करते रहे, तो उन्होंने याग के ऊपर अपनी टिप्पणीयाँ प्रगट की, इतने में महर्षि वैशम्पायन बोले क्या वेदमन्त्रों में तो बहुत से शब्द इस प्रकार के आते हैं, याग के सम्बन्ध में कि याग देखो, यज्ञशाला देखो, एक रथ हैं और उस रथ पर मानो देखो, यज्ञमान, ब्रह्मा, उद्गाता, अध्वर्यु और होताजन मानो देखो, उस रथ में सब विद्यमान है, और वह जो रथ वह मानो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके गमन करता रहता है, और हम मानो देखो, यहाँ तक पंहुच पाए, अब भगवन! देखो, उस ऊर्ध्वा में जब गति होती है, उसके ऊपर हमें आगे विचार-विनिमय करना हैं तो महर्षि प्रवाहण जी ने यह कहा कि भारद्वाज मुनि का जो विद्यालय है, वह क्रियात्मक है, उनके आश्रम में गमन करें। तो मानो यह भगवन! हम इसीलिए आए हैं, क्या हम याग को मानो देखो, उस याग को और महत्व जानना चाहते हैं। जितना हमने जाना है, उससे आगे भी इसका आप वर्णन कीजिए, भगवन! क्योंकि आप विज्ञानवेत्ता हैं तरंगेंवाद को जानने वाले हैं, चित्रों में तुम गमन करते रहते हो, चित्रावलियों का निर्माण करते रहते हो, रक्त के बिन्दुओं से तुम मानो देखो, चित्रावलियों का निर्माण होता रहता हैं। मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ब्रह्मचारी कवन्धि और सुकेता ब्रह्मचारिणी शबरी और उसके पितर मानो देखो, महर्षि पणपेतु ऋषि महाराज से उन्होंने यह प्रार्थना की कि महाराज! देखो, ऋषिवर क्या गान गा रहे हैं? ऋषिवरों उद्गीत गाने का अभिप्रायः यह है कि हम विज्ञानशाला को यन्त्रों में या आध्यात्मिकवाद में हम दृष्टिपात करना चाहते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। वह उन्होंने वह कहा याग का प्रारम्भ होना चाहिए। मेरे पुत्रों! जितने वह गण आए, ऋषि-मुनि वह उनमें से कोई ब्रह्मा बना, कोई उद्गाता बना, अध्वर्यु बना, और होता जन और यज्ञमान और पुरोहित बन करके मेरे प्यारे! देखो, याग में वह परिणत हो गएं, और याग करने लगे। जब यज्ञं भूतं ब्रह्मे देखो, उद्गीत गाने लगे तो बेटा! साम गान में कोई गान गा रहा हैं, कोई मानो देखो, उद्गीत गा रहा

## याग एक सर्वांग पूजा

है कोई मेरे प्यारे! देखो, खेचरी मुद्रा में मुद्रित हो करके बेटा! साम गान की प्रतिभा में रत्त हो गया। मेरे पुत्रों! देखो, जब यह याग का प्रारम्भ उन्होंने किया, याग प्रारम्भ हो गया, तो मुनिवरों! देखो, वह ब्रह्मणा व्रतं ब्रह्रे वह उद्गीत गाने लगे, जब वेदमन्त्रों का स्वरों से उन्होंने गान गाया तो महर्षि भारद्वाज मुनि ने अपने ब्रह्मचारियों से कहा यन्त्रावलियों को लाया जाएं उन्होंने बेटा! देखो, यन्त्रावलियों को स्थित कर दिया, और जैसे ही वह स्वाहा उच्चारण करते थे, वैसे ही मुनिवरों! देखो, मुनिवरों! उनमें उनके चित्र और उनके क्रियाकलाप और मुनिवरों! देखो, द्यौं ब्रह्मा देखो, भ्रमण करते हुए वे शब्द अग्नि की धाराओं पे बेटा! द्यौ लोक को जाते हुए दृष्टिपात आने लगे। जब वह द्यौ लोक यन्त्रों में उनके चित्र दृष्टिपात आने लगे तो मानो देखो, कोई होता बना हुआ है, आहुति दे रहा हैं, मग्न हो करके और मुनिवरों! देखो, कोई जिसकी प्रवृत्ति बनी हुई हैं, उसी प्रकार के चित्रों के सहित उनके क्रियाकलाप भी और देखो, उसकी भावना भी दृष्टिपात आ रही हैं। मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा कि शुद्धं भो सम्भवा यज्ञं भविते ब्रह्मणा लोकं वृत्ति मेरे प्यारे! देखो, उसमें महर्षि वैशम्पायन तो ये विचार रहे थे, क्या ये ब्रह्मवेत्ता हैं परन्तु वह विज्ञान की धाराओं में रत्त हो रहे हैं, यह यथार्थ है। परन्तु शोभनी ऋषि ने अपने मे ये विचारा कि यह जो उद्गीत गा रहे हैं, यह हो सकता है कि ये मान अपमान की धारा मे तो नही उद्गीत गा रहे हैं, मानो देखो, इसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के जो विचार-विनिमय हो रहे थे, उन प्रत्येक विचारों का मुनिवरों! देखो, यन्त्रों में उसके चित्र दृष्टिपात आ रहे थे। तो महर्षि भारद्वाज मुनि ने ये कहा चित्रों शमं ब्रह्मा शुद्धं भूतप्रह्मा व्रते देवत्वां ब्रह्मणा व्रते वह उद्गीत गाने लगे अरे, तुम शुद्ध और पवित्र भाव से याग का प्रारम्भ करो, वह मानो देखो, मेरा बहुत प्रभु की अनुपम कृपा से मेरा अध्ययन है। यन्त्रों के ऊपर और मैं उस याग को क्रियात्मकता में लाने के लिए सदैव तत्पर रहा हूँ, तुम अपने में विश्वसनीय बन करके अपने मनस्तव को एकाग्र करके मानो देखो, तुम याग का प्रारम्भ करो। तो तुम रथ पर विद्यमान हो तो मेरे पुत्रों! देखो, जब महर्षि भारद्वाज मुनि ने ऐसा कहा तो वह अपने मन को समेटने लगे प्रवृत्तियों को सिमट करके जब वह याग करने लगे तो बेटा! देखो, उनका दो घडी के पश्चात दो घडी ब्रह्रे दो पल के पश्चात मुनिवरों! देखो, घड़ी चार हो गई चार घड़ी के पश्चात मुनिवरों! देखो, उनके मनों का शुद्धिकरण हुआ। प्रत्येक ऋषि अपने-अपने सूत्रों को एक सूत्रीय धारा बना करके, उन्होंने याग का प्रारम्भ किया, जब प्रारम्भ किया तो उनमें बेटा! शुद्धिकरण हैं। आहुति दे रहा है, वह यज्ञमान के हृदय को पवित्र देखो, उसकी वाणी को देखो, पवित्र बना रहा हैं। और जब देखो, उद्गाता उद्गीत गा रहा है वह भी यही चाहता है कि मैं वेदमन्त्रों से यज्ञमान की वाणी को पवित्र बनाता चला जाऊं, मानो देखो, जो उसमें से ब्रह्मा बना हुआ है, वह भी यही चाहता है, कोई मन्त्र अशुद्ध न हो जाए, जिससे यज्ञमान की प्रवृत्तियों मे अशुद्धवाद आ जाएं, इसी प्रकार देखो, अमृतां देखो, जो पुराहित जन है, वह भी अपने में यह विचार रहा है कि मैं पुरोहित हूँ, मेरा यह कर्तव्य हैं, मैं अपने पुरोहितपने से देखो, पराविद्या को, मेरी भावना और मन के विचार मेरी पराविद्या में होने चाहिएं परन्तु देखो, जम्ब्रहा कृतं और वह जो अध्वर्यु को कह रहा है, कि मैं इसका धिपति हूँ, साकल्य का यह मेरा कर्तव्य है, जैसे राष्ट्र में राजा अध्वर्यु का क्रियाकलाप करता है, ऐसे ही मैं भी मानो देखो, अध्वर्यु बन करके, इस द्रव्य का स्वामीतव मैं कर रहा हूँ, जब यह विचार आ गएं, तो मुनिवरों! देखो, यज्ञ का शुद्धिकरण हो गया, शुद्धिकरण हो जाने के पश्चात, अमृतां ब्रह्मणे लोकां मुनिवरों! देखो, याग अपने में बड़ा अनूठा एक क्रियाकलाप है। विचार आता रहता है जब इस भाव से देखो, उन्होंने आहुति दी, तो उनके चित्र मुनिवरों! देखो, यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगे, भारद्वाज मुनि ने कहा हे ऋषिवर! हे गाड़ीवान रेवक! हे वैशम्पायन! देखो, यह तुम्हारे चित्र बन करके ये द्यौ लोक में जा रहे हैं। और द्यौ लोक में इनकी क्या गतियां होती है इस तक मैं अभी तक नही जान पाया हूँ, केवल इतना ही जानता हूँ क्या यज्ञमान का रथ बन करके, वह द्यौ लोक में प्रवेश हो जाता है। और द्यौ में क्या गति होती है

इसको मैं नही जानता। मेरे प्यारे! देखो, जब याग उनका सम्पन्न हो गया, तो गाड़ीवान रेवक मुनि ने कहा क्या हे भगवन! इतना तो मानो देखो, हम अपने में विचार तो लाते रहे हैं हमारा क्रियात्मक जो हमने दृष्टिपात किया, कि हमारा बड़ा सौभाग्य है, हम भगवन! ये जानना और चाहते हैं क्या इसके आगे का कोई ऐसा वैज्ञानिक हैं, जो द्यौ मे जाने के पश्चात जो गति होती है, उस गति को जो मानो जानते है ऐसा ऋषि हमें उद्गीत गाईए ऐसा कोई निर्णय कराईए इसके समीप उनके चरणों की हम वन्दना करें, और देखो, इसका स्पष्टीकरण हो जाएं। मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने ये कहा ऋषि-मुनियों ने जब ऋषि मुनियों ने ये कहा गाडीवान रेवक ने भी और मुनिवरों! देखो, और ब्रह्मणे देखो, वैशम्पायन ने भी यही वाक् कहा, प्रवाहण और शिलक और दालभ्य ने भी यही वाक् कहा जब एक स्वर हो गया, तो भारद्वाज मुनि ने यह कहा भई! इतना ही मैं जानता हूँ मैं विचार कर रहा हूँ मेरे प्यारे! उन्होंने बहुत मौन हो करके कहा मेरे विचार में ऐसा आता है क्या महर्षि उद्दालक गोत्र में कुछ ऐसे ऋषि हैं, जिनका वास्तव में ऐसा निर्णय है, क्या उन्होंने बहुत अनुसन्धान किया हैं, उन्होंने कहा तो भगवन! ऐसा विचार आता है, चलो उनके द्वारा गमन करेंगें और उनसे यह प्रश्न करेंगे, और उनसे मानो क्रियात्मक इसी याग की प्रतिभा को हम जान सकेंगें भगवन! देखो, याग के माध्यम से जो विज्ञान की उपलब्धियां होती हैं, विज्ञान अपनी धाराओं में आता हैं, मानो देखो, उसको हम जान सके हैं, तो मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है, पुत्रों! क्या मंगलं ब्रह्वे कृतप्रह्वा अमृतां ब्रह्वे कृतं विद्याः वेद के आचार्यों ने कहा भगवन! चलो, गमन करते हैं मेरे पुत्रों! महर्षि भारद्वाज मुनि ने जब अपना यह कर्म बनाया, तो वहाँ के विद्यार्थी ब्रह्मचारियों ने कहा-प्रभु! प्रश्न ऋषि के दर्शन तो हम भी करना चाहते हैं, जिन्होंने इतने महान विशाल विज्ञान को जानने का प्रयास किया हैं, ऐसे मानो देखो, उद्दालक गोत्र में हमारा भी गमन होना चाहिए। महर्षि भारद्वाज मुनि ने ब्रह्मचारियों से कहा बहुत प्रियतम। मेरे पुत्रों! देखो, कुछ ब्रह्मचारी विद्यालय में से ब्रह्मचारी कवन्धि सुकेता, ब्रह्मचारिणी शबरी, यज्ञदता और रेणकेतु मुनि महाराज यह सर्वत्र जो ब्रह्म के जिज्ञासु थे, परमाणुवाद के ऊपर अध्ययन करने वाले थे, और वह ब्रह्मवेत्ता ऋषि-मुनियों ने सबने वहाँ से गमन किया, और भ्रमण करते बेटा! ऋषि-मुनियों से मिलान करते हुए वह भ्रमण करते हुए बेटा! देखो, दण्डक वनों में उनका आश्रम था, और वह उस आश्रम में पंहुचे। मेरे पुत्रों! जैसे आश्रम में पंहुचे तो महर्षि शिकामकेतु उद्दालक मुनि महाराज बेटा! अपने मे बड़े महान पवित्रतम कहलाए गएं। मुनिवरों! देखो, यह वाक् मैंने पुरातन काल में भी कई कालों में प्रगट किया है कि आज भी मैं इसकी विवेचना अथवा यह यह वाक् उच्चारण कर रहा हूँ। तो मुनिवरों! देखो, जब वह ऋषिम्ब्रहा कृतं दिव्यं ब्रह्वे जब मुनिवरों! शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ पंहुचे तो मुनिवरों! देखो, वह मध्य दिवस का समय था और देखो, उसकी पत्नी रम्भेश्वरी और मुनिवरों! देखो, ऋषिवर अमृतां ब्रह्मणे कृतं दिव्यां लोकं व्रतं देवाः उन्होंने कहा-देवी! आज तो ऋषियों का आगमन हो रहा हैं, हम कैसे सौभाग्यशाली है, देवी क्या आज तो देखो, ब्रह्मवेत्ता जो ब्रह्म की उड़ाने उड़ते रहते हैं, सदैव ब्रह्म की ही चर्चा करते रहते हैं, गाड़ीवान रेवक महर्षि वैशम्पायन और भी ऋषिवर देखो, इस प्रकार के जैसे प्रवाहण है। जैसे शिलभ, दाल्भय जिन्होने माता ने अपने गर्भस्थल से देखो, ऋषितव की उपाधि प्रदान कर दी थी, वह भी हमारे आश्रम में विराज रहे हैं, यह हमारा कैसा सौभाग्य हैं। उन्होंने कहा हां देवतव, मेरे प्यारे! ऋषि-मुनि उनके आश्रम में आ गएं, उन्होंने बारी-बारी ऋषि को नमः किया और नमः करते हुए अपने-अपने आसन पर विद्यमान हो गएं, और जब विद्यमान हो गएं, तो मुनिवरों! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने कहा क्या भगवन! आज मेरा कैसा सौभाग्य है? जो आप मेरे आश्रम में विराजे हो, भगवन! ये प्रभु की प्रतिभा और प्रभु की अनुपम कृपा हो गई है भगवन! तो मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा सम्भव ब्रह्वा कृतं लोकं व्रत्यं देवाः हे प्रभु! हम आपके दर्शनों के बहुत समय से अभिलाषी थे, हम यह चाहते हैं कि ऋषि का दर्शन हो, प्रभु! यह हमारा सौभाग्य। मेरे पुत्रों! देखो, वह विराजमान जैसे, उन्होंने

**याग एक सर्वांग पूजा**

अतिथि सेवा के लिए, नाना प्रकार के कन्दमूल जो उनके यहाँ उपलब्ध था, बेटा! वह उन अतिथियों को प्रदान किया। अतिथि बड़े प्रसन्न हुए, क्योंकि हमारे आचार्यों ने बेटा! परम्परागतों से ही, ये पांच यागों का बड़ा वर्णन किया हैं। मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मयाग, देवयाग, अतिथि याग और बलि वैश्व याग और बेटा! देखो, पितर याग भी हमारे यहाँ विशेषता में परिणत किए हैं। तो मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ जो अतिथि सेवा है, वह बड़ी विचित्र मानी गई है। देखो, बिना समय के ऋषि-मुनियों का आगमन हुआ, उनकी सेवा करना, अथवा उनको भोज्य देना क्योंकि जो ऋषि को अन्तरात्मा से बेटा! देखो, उसका अतिथि करता हैं उनका आत्मा भी प्रश्न हो जाता हैं, क्योकि अन्न से मानव के मन मन प्रसन्न हो जाता हैं जितना भी अन्न पवित्र होता है कन्दमूल इत्यादि होते हैं, उतना ही मुनिवरों! देखो, उसका हृदय प्रफुल्लित होता हैं और हृदय में महान से महान तरंगों का जन्म हो जाता है मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ जब भी साधना में हम प्रवेश होते रहे हैं, तो साधक के लिए क्या चाहिए, अन्न पवित्र चाहिए। मेरे प्यारे! जितना भी अन्न पवित्र होगा, तपे हुए प्राणियों का अन्नाद होगा, देखो, उतना ही मानव देखो, पवित्रतव की आभा में रत्त हो जाएगा, और मन में पवित्र तरंगों का जन्म हो करके वह मन पवित्रता में रत्त हो करके मेरे प्यारे! देखो, विषर्भ बन करके इसमें से देखो, जो तरंगें उत्पन्न होती हैं, उन तरगों को जो श्रवण करता है, वह देवता बन जाता हैं, तो देवता बन जाता है इसीलिए बेटा! हमारे यहाँ अतिथि जो सेवा हैं, अतिथि जो अन्नाद प्रदान किया जाता है, यह बड़ा सौभाग्य है। तो मुनिवरों! देखो, ऋषि शिकामकेतु उद्दालक ने, दोनों पति पत्नियों ने बेटा! उनको स्वागत किया, और स्वागत करने के पश्चात उन्होंने नत मस्तिष्क हो करके कहा, कहो भगवन! आज तुम्हारा आगमन कैसे हुआ है? उन्होंने कहा-प्रभु! हमारा आगमन इसीलिए हुआ है, भारद्वाज मुनि ने कहा-प्रभु! हमारे यहाँ विद्यालय में जो हमारी विज्ञानशाला है, अथवा यज्ञशाला है, उस यज्ञशाला में उन्होंने चित्रों का दर्शन किया मैंने जितना चित्र जाना उतना दृष्टिपात कराया परन्तु देखो, हमने यह विचारा है कि इससे आगे का कौन जानता है? तो प्रभु! आपका नामोकरण हमारे कण्ठ से वर्तित हो रहा था समाहित हो रहा था भगवन! देखो, हमने यह उद्गीत गाया तो सबने अपना क्रम बनाया चलों क्या देखो, ऐसे महापुरूष का दर्शन करेंगें क्या जो ब्रह्मवेत्ता भी हो, और आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता भी हो, और जो मानो देखो, विज्ञान में भी रत्त रहने वाला हो। तो प्रभु! आप तो ब्रह्मवेत्ता भी हैं, ब्रह्मनिष्ठ भी है, और भगवन! देखो, आप विज्ञान में भी पारायण हैं। मानो जो विज्ञान में पारायण होता हैं, वह भी महान होता है, और दिव्या को नमः हैं, क्योंकि देखो, यह आपं ब्रह्मे यह आप में विज्ञानवेत्ता है। मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषियों ने इस प्रकार वर्णन किया महर्षि शिकामकेतु उद्दालक उनकी पत्नी ने कहा-प्रभु! तो आप उद्गीत गाना चाहते हैं, वह हमे आज्ञा दीजिए। उन्होंने कहा-प्रभु! हम यह आपकी विज्ञानशाला जो आपने अब तक अध्ययन किया हैं उस अध्ययन को हम दृष्टिपात करना चाहते हैं, कि तुम्हारी विज्ञान में कितनी गतियां हैं, आध्यात्मिकवाद को तो हम इमसें इतना नही जानना चाहते। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होने कहा तो आओ, मेरे पुत्रों! देखो, भ्रमण कराते हुए देखो, जहाँ वह याग करते थे उसकी यज्ञशाला थी यज्ञशाला के साथ विज्ञानशाला थी और विज्ञानशाला के साथ ही वह जो नित्यप्रति अपना क्रियाकलाप करते थे वह भी इसमें मानो देखो, उन स्थलियों पर ले गएं उन्होंने कहा-प्रभु! यह तो हमारी मानो यज्ञशाला हैं, इसमें याग करते हैं, एक सौ पांच वर्ष हो गएं हैं, हमें इस यज्ञशाला में याग करते हुए यह चौबीस कोणों की यज्ञशाला है। इसमे याग करते हैं। और मानो एक सौ पांच वर्ष हो गएं इसकी अग्नि हम शान्त नही होने देते, यह अग्नि मानो देखो, हमारी यज्ञशाला में प्रदीप्त रहती है। इस अग्नि के ऊपर हम अनुसन्धान करते रहते हैं। और हमारा जब देखो, मन मस्तिष्क जब इन वाक्यों पर रत्त हो गया कि यज्ञ में से तरंगों का प्रादुर्भाव होता है, यह दर्शनों में वेदमन्त्रों में जब हमने अध्ययन किया, एक वेदमन्त्र आया जब हम प्रारम्भ में यज्ञशाला में हम याग करने के पश्चात विचारने लगे प्रश्न आया चित्रं रथं यज्ञं प्रद्वा रथं देवत्वां ब्रह्मे आयु सम्भव

## याग एक सर्वांग पूजा

ब्रहा हे प्रभु! यह वेदमन्त्र आया वेदमन्त्र यह कहता है कि मं ब्रहे देखो, इसके चित्र बनते हैं और चित्रावलियों में परिवर्तित हो जाता है। तो देखो, भगवन! इसके ऊपर हम अध्ययन करेंगें। बारह वर्ष हो गएं अध्ययन करते हुए परन्तु हम दोनों क्या पान करते थे देखो, कुछ वायु का सेवन करते कुछ मानो कन्दमूल मानो देखो, कन्दमूलों को हम लाते उनका पान करते और विचार मानो यह लग गया मानो हमें यह प्रतीत नही हुआ क्या यह शब्दं ब्रह्मा हम मानो देखो, कि यह चित्रावलियों की आज्ञा देता हैं। यज्ञमान भी अपने में चित्रावलियों का निर्माण कर सकता हैं, तो हे प्रभु! क्या हम मानो देखो, इस वाक् के ऊपर विचार किया विचारते-विचारते बारह वर्ष के तप करने के पश्चात हम मानो देखो, एक यन्त्र का निर्माण कर सके ऊर्ध्वा में भी कोई कुछ हैं परन्तु देखो, द्यौ में (यहाँ से कुछ भाग पुस्तक से लिया गया है क्योंकि वह शब्द ध्वनि के रूप में उपलब्ध नही हैं) एक यन्त्र का निर्माण कर सके और उस यन्त्र में जो हम स्वाहा उच्चारण करते थे, उद्गाता अध्वर्यु अमृतं बन करके हम स्वयं उद्गाता भी बनते, अध्वर्यु भी बनते, विचारधारा में पवित्रतव रहता, तो मानो देखो, उनके चित्र हमे दृष्टिपात आने लगे। तो भगवन! देखो, यह यन्त्र सबसे प्रथम है। जब आगे अध्ययन किया, तो हमारे पचीसवें जो महापिता थे हमें उनका दिग्दर्शन होने लगे, यन्त्रों के द्वारा हम उनका अध्ययन करने लगे। यह मानो देखो, चित्रशाला में हमें दृष्टिपात आ रहे हैं, भगवन! मानो देखो, आगे पचासवें महापिता के दर्शन होने लगे। और सौवें महापिता तक हमने दर्शन किया। परन्तु देखो, अग्नि की धाराओं पर शब्द और क्रिया मंगलं ब्रह्मे और उनका क्रियाकलाप और देखो, चित्र बन करके अग्नि की धाराओं पर गमन करने लगा तो द्यौ में स्थित हो गया।

### चित्र गमन द्यौ से ऊपर भी होता है

जब द्यौ में स्थित हो गया तो हमने यह दृष्टिपात किया हमने एक वेदमन्त्र हमें स्मरण आया था द्यौ ब्रह्मा ऋतो द्यौ ब्रह्मी कृणां वस्तुतं अन्दधानं ब्रहे कृतोलोकाः यह वेदमन्त्र की आख्यिका हमें स्मरण आई कि द्यौ से भी ऊर्ध्वा में भी कुछ है परन्तु देखो, द्यौ में जब स्थित हो जाते है तो वही मानो देखो, चित्र अन्तरिक्ष में गमन करने लगते हैं वह जब भी मानो कोई अनुसन्धान करता है तो वह चित्र उसी को प्राप्त होते रहते हैं जिसके वह चित्र होते हैं जिसका वह क्रियाकलाप होता हैं। यह संसार में नही है परन्तु उनकी अन्तरात्मा जहाँ भी वृत्तियों में रह होती है संस्कार के रूप में उदबुद्ध होते रहते हैं इसी प्रकार वेद के आचार्यों ने कहा कि वो सदैव नित्य रहने वाला है और वो देखो, द्यौ से ऊर्ध्वा में जो मृचिका है उसमे वे प्रवेश कर जाते हैं और जब भी कोई उन्हें अपने में स्मरण करना चाहता हैं वह उसे स्मरणाता में परितण हो जाते हैं।

### विज्ञान सार्वभौमिक होना चाहिए

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन कराया कि चित्रों का दर्शन होता रहता हैं क्रियाकलाप भी देखो, दृष्टिपात आते रहते हैं। मेरे पुत्रों! कैसा विज्ञान हैं उस मेरे प्यारे प्रभु की इस वैदिक पवित्र विद्या में किस प्रकार का विज्ञान है इस विज्ञान के ऊपर हमें विचार करना चाहिए। बेटा! एक पक्षीय विज्ञा हैं उन्होंने अपने पिता महापिता, पड़पिता सौंवे महापिता का उन्होंने दर्शन किया, मुनिवरों! वह एक पक्षीय विज्ञान माना गया है। मानो वह अपने पितरों का अमृतां देवत्वाम् मेरे प्यारे! देखो, अपने ही पितरों का दर्शन करना एक पक्ष का विज्ञान है। मुनिवरों! देखो, इसी प्रकार द्विपक्ष में भी विज्ञान है और विज्ञान एक सर्वभौम भी कहलाता हैं तो जिसका हम दर्शन करना चाहते हैं इसी के हो जाएं इस प्रकार का विज्ञान सर्वभौम कहलाता हैं।

बेटा! मैं आज विशेष चर्चा तो तुम्हें देने नही आया हूँ व्याख्याता नही हूँ परिचय देने के लिए आया हूँ बेटा! इन वाक्यों की यदि हम व्याख्या करने लगे निर्माण कैसे होता हैं वह निर्माण कम तक रहा है मानो देखो, चित्र कैसे गमन करते रहते हैं यह सब मुनिवरों! देखो, एक समय की आवश्यकत है केवल मैं तो इतना ही परिचय दे

सकता हूँ आज बेटा! हम इतना ही परिचय देने आए हैं कि मुनिवरों! देखो, हम इन वाक्यों के ऊपर विचार कि विज्ञान अपनी स्थली पर बड़ा विचित्र बन करके रहा है। इसीलिए विज्ञानशालाओं में मेरे पुत्रों! देखो, चित्रों का दर्शन होता रहता हैं पिता, महापिता, पड़पिता, मुनिवरों! देखो, वह सौंवे महापिता तक के चित्र उन्होंने अपने यन्त्रों में लाने का प्रयास किया। चित्रावलियों मे जाना है तो मुनिवरों! देखो, चित्रावली अपनी स्थली पर बड़ी विचित्र बन करके रही हैं।

मुनिवरों! देखो, जब ऋषि-मुनियों ने इस विज्ञानशाला को दृष्टिपात किया तो भारद्वाज मुनि ने रेवक से कहा कहो-भगवन! अब कोई और जिज्ञासा हो तो उद्गीत गाई। उन्होंने कहा कि-कोई हमें ऐसी जिज्ञासा पूर्णतव को प्राप्त हो गई हैं आज का विचार यह क्या कह रहा है मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि-मुनि अपने में बड़े महान देखो, विचारक और वह देखो, याग के ऊपर बेटा! महर्षियों ने बड़ा विचारा है चिन्तन किया है और देखो, विज्ञान को इस याग से बेटा! उन्होंने कटिबद्ध करके बेटा! आध्यात्मिक और भौतिकवाद का उन्होंने मिलान किया है और मिलान करके वे मुनिवरों! देखो, द्यौ में प्रवेश हो जाते हैं। द्यौ से गमन भी करते रहते हैं मानो सूक्ष्म धाराएं आती रहती हैं तो मुनिवरों! देखो, यह एक विज्ञान की प्रतिभा कहलाती हैं

आओ, मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि ने अपने ब्रह्मचारियों से कहा हे ब्रह्मचारियों! यह ऋषि का दर्शन हैं यह मानो देखो, ऋषि शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ मैंने यह जो तुम्हें दिग्दर्शन कराया है हय मानवीय दर्शन है यह याज्ञिक है और क्रियाकलाप वाला मानो एक वर्णन कहलाता है मेरे पुत्रों! देखो, वह मौन हो गये। उन्होंने कहा धन्य है तो मुनिवरों! देखो, ऋषि-मुनि शिकामकेतु उद्दालक के क्रियाकलाप और अग्नि की धाराओं पर जो शब्द गमन कर रहा हैं रथ बन रहा है उसे सब दृष्टिपात करते हुए सब ऋषियों ने आज्ञा पा करके बेटा! वहाँ से प्रस्थन किया और यह कहा धन्य है प्रभु आज हमारा बड़ा सौभाग्य है आपके मानो दर्शन हुए और आपकी यज्ञशाला का हमें दिग्दर्शन हुआ है प्रभु यह हमारा सौभाग्य है मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनि अपनी स्थलियों में जा पंहुचे। सम्भवं अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें। (यहाँ से शब्द ध्वनि से लिया गया है)

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् देवाः भद्रं भवितं ब्रह्मणाः मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल, अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ऐसे विज्ञान में हमें ले गये, जिस विज्ञान की इस वर्तमान काल में हम कल्पना भी नही कर पा रहे हैं ऐसा विज्ञान वैदिक साहित्य में हमें उपलब्ध होता है इस विज्ञान के लिए ऋषि-मुनियों ने तप किया है और नमः नम्रता की आभा में रत्त रहे हैं।

देखो, आधुनिक काल जो वर्तमान का काल चल रहा हैं वह ऐसा एक काल है जिसे हम वाममार्ग काल कहते हैं विज्ञान है वह भी मानो अधूरे पन में है और उस विज्ञान में वाममार्ग आ गया और वाममार्ग जब आता हैं जब निर्माण अनुसन्धान करने वालों में देखो, प्रभु की प्रतिभा को समाप्त कर देते हैं इसीलिए आधुनिक काल का जो विज्ञानवेत्ता है, वह अपने से अपने में यह शान्त कर गया है, कि यह प्रभु की प्रतिभा है, प्रभु का ही मानो रचाया हुआ ये जगत है, इसमें देखो, ज्ञान विज्ञान अपनी आभा में बड़ा अनन्तमयी रहा हैं, इसको जब अपने में शान्त कर देते हैं, तो विज्ञानवेत्ता को इसमें अभिमान आ जाता है, अभिमान आ करके देखो, विज्ञान का दुरूपयोग होना प्रारम्भ हो जाता हैं। और जब दुरुपयोग होना प्रारम्भ हो जाता है तो समाज में सुरा सुन्दरी और मानो देखो, एक मानव, मानव को न स्वीकार करते हुए और उग्र क्रिया आ जाना ये विज्ञान की एक देन बन गई है। और जहां विज्ञान से मानव को नम्र होना हैं, जहाँ विज्ञान से मानव को चिन्तन और मानवीय दर्शन को विचारना हैं, वहाँ आधुनिक काल को जो प्राणी है, वह विज्ञान में इतना मानो देखो, अपने को वृत कर गया है कि वह वाममार्ग बन गया है। राजा क्या प्रजा क्या केवल पद ही पद रह गया है। विचारों में देखो, राज सभा में तो देखो, पद ही पद

रह गया हैं और विज्ञानवेत्ताओं के यहाँ भी पद रह करके अभिमान रह गया हैं। तो इस प्रकार देखो, मैं विचार न देता हुआ केवल यह कि वाममार्ग उसे कहते हैं, जो उल्टे मार्ग पर गमन कर गया है, जो मानो देखो, जो ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी नही रहा, क्योकि ब्रह्म सूत्र उससे दूरी हो गया हैं, क्योंकि ब्रह्म सूत्र होना बहुत अनिवार्य हैं, इसीलिए मैं प्रभु से ये प्रार्थना करता रहता हूँ, अपने पूज्यपाद गुरुदेव को मैं यह निर्णय दिलाता रहता हूँ क्योंकि वह पुरातन काल समाप्त हो गया, जिस काल में देखो, राजा और प्रजा दोनों, वैज्ञानिकों को मध्य में ले करके विद्यमान होते और वह विचार-विनिमय ये करते, कि राजा के राजा कहता राष्ट्र में विज्ञान होना चाहिए परन्तु राष्ट्रीय प्रणाली उस विज्ञान से भ्रष्ट न हो जाएं, ऐसा विज्ञान भी हमारा देखो, राष्ट्र को बनाता है। तो राजा देखो, प्रजा दोनों और वैज्ञानिक जब दोनों का एक सूत्र बन जाता है, तो विज्ञान राजा के राष्ट्र में सात्विक बन करके वह विज्ञान देखो, एक महापुरूषों की निधि बन जाती है, और परमपिता परमात्मा की महती आ जाती हैं, परन्तु देखो, वाममार्ग मैं इसीलिए कह रहा हूँ क्या देखो, जहाँ मेरी पुत्रियों को नृत्त होते हैं, और नृतिका बन करके जब चित्रों को दृष्टिपात करते हैं। तो उन चित्रों में जहाँ पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा महापुरूषों के चित्र होने चाहिए, पिता और महापिताओं के क्रियाकलाप उनमें दृष्टिपात कराए जाने चाहिएं। परन्तु आधुनिक काल में जो वर्तमान का काल चल रहा है, उनमें मेरी पुत्रियों के नृत्यांगनियां हो रही हैं, उनको दृष्टिपात करते हुए, छात्र और छात्रिका जब दृष्टिपात करते हैं, तो उनका ब्रह्मचर्य दूषित हो रहा हैं, और जब ब्रह्मचर्य जहाँ दूषित हो जाता हैं, तो वहाँ कर्तव्यवाद नही रहता वहाँ आलस्य और प्रमाद आ जाता है, और जब आलस्य और प्रमाद आ गया है, और जब आलस्य और प्रमाद की प्रतिभा ऊर्ध्वा में गमन करने लगती हैं, तो वहाँ भी अधिकार की पुकार होने लगती हैं। प्रत्येक मानव देखो, अधिकार चाहता हैं, अधिकार पर अधिकार चाहता है, कर्तव्य हो नही रहा है, अधिकार की पुकार है, और अधिकार की पुकार वाला प्राणी अन्त में कोई राष्ट्र कोई समाज ऐसा नही हुआ हैं जो मानो किसी प्राणियों के अधिकार की पूर्ति कर सके। सृष्टि के प्रारम्भ से ले करे, कोई अधिकार की पूर्ति नही करता। क्योंकि कर्तव्य जब करता है कर्तव्य भी अधिकार, मानो उसके गर्भ में रहता है, और अधिकार उसे स्वतः जब कर्तव्य का पालन करता है, तो अधिकार स्वतः प्राप्त हो जाता है। परन्तु देखो, आलस्य और समाज में गमन करने वाला मानो अधिकार की पुकार कर रहा हैं अन्त में यह कि रक्तभरी क्रान्तियां आ जाती हैं वह रक्तभरी क्रान्तियों का मूल कारण है कि ये नाना प्रकार की सम्प्रदाएं और विज्ञान का दुरूपयोग जो मानो ईश्वर के नामों पर नाना प्रकार की सम्प्रदाएं होती है। सम्प्रदा जब होती है जब राजा ब्रह्मवेत्ता नही होता और जब राजा ब्रह्मवेत्ता होता है, उसी वृत्तियों रत्त करने वाला देखो, उपनिषद का विद्वान हो तरंगेंवाद का विद्वान हो, और क्रियात्मक अपने जीवन को ले जाने वाला हो, जब राजा ब्रह्मवेत्ता होता हैं, तो वह कोई ईश्वर के नाम पर रूढ़ि नही बनती बेटा! और जब रूढ़ि नही पनपती तो एकोकीचरण होता है, एकोकी विचार रहता हैं, और देखो, समाज में मानव कर्तव्य का पालन होता है। तो इसीलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव यह प्रगट कराता रहता हूँ

आज को देखो, यह मेरा हर्षध्वनि कि अमृतां देखो, जिस स्थली पर हमारी यह वाणी जा रही हैं, आकाशवाणी जा रही है, वहां एक याग का आयोजन हुआ है मेरा अन्तरात्मा जो यज्ञमान के साथ रहता हैं, क्योंकि ऐसे वाममार्ग काल में द्रव्य का सदुपयोग करना, देवताओं को हूत करना, अपनी अन्तरात्मा को पवित्र बनाना, ये मानो देखो, उसकी महानता हैं, और द्रव्य का सदुपयोग करना हैं, द्रव्य का सदुपयोग करना ही मानो देखो, उसकी प्रतिभा है। इसीलिए मेरा अन्तरात्मा यज्ञमान के साथ में रहता हैं, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मानो देखो, तेरे गृह में सदैव द्रव्य का सदुपयोग होता रहे।

द्रव्य का सदुपयोग होना संसार में बहुत अनिवार्य है। जब इसका दुरूपयोग होता है, ये द्रव्य दूसरे रूप में

माता है जब माता का दुरूपयोग होने लगता है, तो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मणे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने ये वर्णन कराया है कि जब भी द्रव्य का दुरूपयोग हुआ हैं, तो उसी समय वह द्रव्य देखो, जैसे माता दूषित पुत्र को अपने से दूरी कर देती हैं, इसी प्रकार ये द्रव्य देखो, उस मानव को अपने से दूरी कर देता है। और देखो, उससे यह दूरी हो करके, वह केवल अपने में शून्यता को अनुभव करने लगता है। तो इसीलिए देखो, इसका सुदपयोग जब हो जाता है, तो ये द्रव्य ही माया बन करके, उसके अपनेपन से आलिंगन करने लगती है, और द्रव्य ही देखो, एक मानव के लिए महानता का क्रियाकलापों में, महानता में ले जाता है, और महानतं ब्रह्मे कृतं देखो, जैसे अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव प्रकट करा रहे थे, क्या विज्ञान अपने में कितना सार्थक और महानता में रहा है। इसीलिए प्रत्येक मानव को चाहिए, हे यज्ञमान! मानो देखो, मेरा अन्तरात्मा यज्ञमान के साथ रहता है, मैं सदैव यह चाहता रहता हूँ, कि द्रव्य का सदुपयोग हो और गृह में मानो देखो, द्रव्यां भूतं प्रमाणं ब्रह्मे इस प्रकार सदैव अपने में क्रियाकलाप शुद्धता में परिणत रहे। आज मैं कोई विशेष चर्चा नहीं, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा, क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव ऐसी गम्भीर हमें मुद्रा में ले गए हैं ऐसे उद्दालक गोत्र में ले गए हैं वे भी जैसे ऐसा अनुभव कर रहे थे जैसे हम देखो, शिकामकेतु उद्दालक के गृह में प्रवेश कर रहे हो। उसी में अपना आसन ग्रहण कर रहे हों। भारद्वाज की यज्ञशाला में हम विद्यमान हैं। ऐसा अनुभव कर रहे थे, तो इसके साथ मैं अपने विचारों को विराम दे रहा हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने इतने भव्य और विडम्बनामयी विचार दिए हैं। ये विडम्बनामयी विचार हैं। प्रायः ऐसा होना चाहिए, कि राजा को ब्रह्मवेत्ता और रूढ़िवाद वास्तव में ईश्वर के नाम पर नहीं पनपने चाहिए। क्योंकि राजा रावण के काल में भी रूढ़ियाँ पनपीं और देखो, उस काल में भी मानव अग्नि के मुख में चला गया। द्वापर के काल में भी रूढ़ियाँ पनपी। यह रूढ़ियाँ नही पनपनी चाहिए। यह आज का विचार अब समाप्त होने जा रहा हैं। समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन होगा। आज के विचारों का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा जो यज्ञमयी स्वरूप हैं, जिसका विज्ञान मंगलं ब्रह्मे देखो, जिसका उद्गीत गाना हमारा कर्तव्य हैं। परमपिता परमात्मा महान और पवित्र है, यह है आज का वाक् समय मिलेगा, शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें। ओ३म् देवाः आभ्यां रथप्रा वसु मां रेवाः ओ३म् यज्ञमा ऋषि आ पा रेधि अमृताः ओ३म् यशाहम्। दिनांक २८ १० १९८९

# १६ स्वाहा ११ ०४ १९९१

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रां पठन-पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है, क्योंकि उस अनन्तवान के लिए सृष्टि के प्रारम्भ से और वर्तमान के काल तक मानव अन्वेषण कर रहा है, और यह विचार रहा है कि वह जो प्रभु अनन्तवान हैं, उसका ज्ञान और विज्ञान कितना विशाल है। तो इसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, अन्वेषण करता रहा है, अपनी विज्ञानशाला में विद्यमान हैं, और वह विज्ञान के ऊवर अन्वेषण कर रहा है, और उस विज्ञान को कहाँ तब ले जाता है, इसको वह माप नही सकता, परन्तु एक आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता है, वह आध्यात्मिकवाद में ही रमण करता रहता है, और आध्यात्मिकवाद मानो देखो, इतनी अनुपम धारा में रमण करने लगता है, क्या वह आध्यात्मिकवाद मानो देखो, उसकी आत्मा का विषय बन करके रहता है, क्योंकि प्रत्येक मानव आत्मा की प्रेरणा के आधार पर अपने क्रियाकलापों को वह निहित करता रहा है। तो इसीलिए वेद का ऋषि यही कहता है, कि आत्मा और मन मस्तिष्क के द्वारा ही मानव को अपने क्रियाकलापों में सदैव रत्त रहना चाहिए। आज का हमारा वेदमन्त्र मानो यह कहा रहा है प्राणं ब्रीहि वर्णनं ब्रह्वा स्वः व्रता ऋषि-मुनियों का बेटा! एक वेदमन्त्र को ले करके जब अन्वेषण करने लगता है, और विचारने लगता है क्या यह जो यागां भवि वर्णसुतं ब्रह्मा मानो यह जो याग है, यह अपने में कितना विचित्र है, और परमपिता परमात्मा का एक अनूठा जगत है, और उस ऊँचे मंगल ब्रहे ऊँची सुगठिता में, मानव अपने को उसी में गठित करना चाहता है।

तो मेरे प्यारे! मुझे एक काल आज स्मरण आ रहा है, आज के वेदमन्त्रों के आधार पर मैंने एक वाक् प्रगट किया था, क्या ऋषि-मुनियों का जब भी समूह एकान्त स्थली पर विद्यमान होता है, तो अपने गम्भीर जगत में चले जाते हैं, और जब आध्यात्मिकवाद मानो देखो, इस विज्ञान में रमण करने लगता है, और आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिकवाद दोनों का मानव सौम्यता को प्राप्त हो जाता है। मेरे पुत्रों! वह सोम बन जाता है, तो इसीलिए हम जब उस सोम को पान करते हैं, तो हमारा जो जीवन है वह अमरावति को प्राप्त हो जाता है, तो बेटा! हमारे यहाँ सोम की बड़ी विचित्र महिमा का वर्णन आता है, मानो देखो, कहीं उत्तरायण को हमारे यहाँ सोम कहते हैं, जब उत्तरायण में गमन करने लगता है। तो सोम की उपलब्धि हो जाती है। बेटा! हमारे यहाँ उत्तरायण का बड़ा विचित्र एक स्वरूप माना गया है, क्योंकि उत्तरायण उसे कहते हैं, जहाँ मानव प्रकाश में रहता है। और अन्धकार उसके निकट नही आ पाता। तो उसे सोम कहते हैं, और सोम का जो स्थान है, वह मानो देखो, उत्तरायण कहलाता है। उत्तरायण में सोम रहता है, और वह सोम्यता को जब प्राप्त होता है, तो सोम का पान करने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यहाँ सोम के बड़े पर्यायवाची शब्द माने जाते हैं। क्योंकि सोम कहते हैं मधुर वाणी को और मधुर वाणी में भी यदि स्वाहाः होता है, मधुर वाणी में भी मधुर पन और ज्ञान होता है, और सत्य होता है तो वह वाणी उसी को मानो सौम्यता को प्राप्त होती है, और यदि वाणी के रूप में ही मानो देखो, जल और अन्न का भी मुनिवरों! देखो, शोधन किया हुआ अन्न पान किया जाता है, और जल को भी सोम बना करके पान किया जाता है। तो वह सौम्य बन जाता है। तो हमारे यहाँ उसका नाम सोम कहा गया है, हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में सोम के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं, मानो देखो, यह ज्ञान देखो, जो भौतिक ज्ञान आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनो एक सूत्र में आ जाते हैं तो हमारे यहाँ उसका नाम भी सोम कहा गया है क्योंकि देखो, भौतिक ज्ञान और विज्ञान

और आध्यात्मिक ज्ञान और विज्ञान का जब समन्वय हो जाता है, तो मानव अपने में धन्य हो जाता है, और यह स्वीकार करता है कि मैं सोम बन गया हूँ, तो सौम्यता को प्राप्त करना यह मानव का कर्तव्य है। सौम्यता की आभा में रत्त रहना ही मानवीयतव कहलाता है, और वह देवता को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहा है, एक समय बेटा! देखो, अमृतं ब्रहे अमरावती अमृतो सम्भवा कृता बेटा! देखो, एक समय कात्यायनी से यह प्रश्न किया गया कि हे कात्यायनी! यह सोम क्या है? तो कात्यायनी ने यह कहा कि-प्रभु! मैं सोम को नही जानती, उन्होंने मैत्रयी से कहा कि देवी! यह सोम क्या है? तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि यह सोम क्या है? तो वह मैत्रयी ने कहा-प्रभु! यह जो सोम है, यह ज्ञान है, यह जो सोम है, यह प्राण है, और जब यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके स्वाहाः कहता है वह भी सोम कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब पर्यायवाची इतने शब्द सोम के बन गएं। तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि हे देवी! यह मानो सोम स्वाहाः कैसे कहलाता है। उन्होंने कहा यह जो स्वाहाः शब्द है, यह द्यौ लोक में जाता है, यदि मानव का यज्ञमान का या होता गणों का यज्ञशाला में देखो, मन कर्म वचन एकाग्र होते हैं। और जिस देवता के प्रति मन्त्र का उद्गीत गाया जाया रहा है। उसी देवता का उसके हृदय में मानो वास हो जाता है। तो वह स्वाहा उसी देवता को प्राप्त हो करके वह देवता उसके बदले सोम प्रदान कर देता है। बेटा! वह सोम कहलाता है। तो स्वाहा जो शब्द है यह सोम बन जाता है। तो मुनिवरों! देखो, जब मैत्रयी ने यह कहा तो उन्होंने कहा कि हे भगवन! मैं एक समय देखो, अमृतं ब्रह्मा कात्यानं जसुते देवत्वां मैं एक समय मानो एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके मनन कर रही थी, और मैं यह उच्चारण कर रही थी कि मेरा जो सोम है, मेरा जो स्वाहा है, यह मानो देखो, सर्पराज को प्राप्त हो जाएं, अथवा यह सिहंराज को प्राप्त हो जाएं, तो यह सिंहराज को प्राप्त हो जाता है। क्योंकि मन कर्म और वचन तीनों ही उसके साथ होते हैं। जब तीनों मेरे साथ रहते हैं तो जिसके प्रति मैं आह्वान के रूप में परिणत कराना चाहती हूँ। तो मानो वह स्वाहाः उसी को प्राप्त होता है। स्वाहाः का अर्थ है स्वाहाः कहते हैं मानो देखो, अपनी वाणी को स्वाहाः कहते हैं। अपने चित्रों को स्वाहाः कहतें हैं। मानो देखो, जो साकल्य की जो धाराएं उत्पन्न होती हैं, और उन धाराओं को जो अपने में पान करना चाहता है। जानों कि वह सोम का पान कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जब माता मलदाल्सा का जीवन स्मरण आता है, तो माता मदालसा ने यह कही वेदमन्त्रों में अध्ययन किया एक समय वह बाल्य अमृतं मानो देखो, अपने में वेदमन्त्रों का उद्गीत गा रही थी, प्रातःकालीन उन्होंने अपनी यज्ञशाला में याग किया और याग के पश्चात गान गाने लगी गान क्या था सोमं ब्रह्मा वर्णसुतं विराचां चक्रे व्रत्यां देवत्वां मा वर्णनं प्राणा मानो देखो, मैं यह अप्रतं मानो देखो, वह उद्गीत गा रही थी माता मलदाल्सा कहती थी कि मेरा जो यज्ञ का स्वाहाः है, यह सोम को प्राप्त हो जाएं, और सोमं ब्रह्मा मानो यह सोम को प्राप्त होता रहे, तो वह सोम को प्राप्त हो गया, अब विचार आया कि सोम यहाँ किसे कहा गया? तो मेरे प्यारे! देखो, वेद की एक आख्यिका आती है, और वेदमन्त्र कहता है सोहम ब्रह्मा स्वयं बह्वा सोमं प्री वर्णनं बह्वे आत्मां भू वर्णनं मानो देखो, सोम उसे कहते हैं कि जहाँ आत्मा का परमात्मा से मिलान होता है, और आत्मा परमात्मा की प्रतिभा में रत्त हो जाता है। तो उसका सोम कहते हैं। मानो देखो, मिलन होने का नाम सोम हैं, जब सन्धि का काल आता है, और सन्धि को हमारे यहाँ सोम कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब दो वस्तुओं की सन्धि होती है। मिलन होता है, जैसे आत्मा परमात्मा का मिलन होता है, जैसे बाह्य जगत का और आन्तरिक जगत का समन्वय होता है। जैसे स्वाहाः उच्चारण करने वाला यज्ञमान जब स्वाहाः कहता है, जब दोनो का मिलन होता है, तो बेटा! उसको सौम्य कहते हैं। तो विचारने में आता है कि वह सौम्य आभा कहलाती है, तो विचार आता रहता है, मेरे पुत्रों! सौम्यं ब्रहा हम सोम के आधीन न बनें हम सोम के आधीन न बनें, सोम हमें प्राप्त हों परन्तु हम सोम को प्राप्त न हो ऐसा बेटा! उद्गीत गाने वाला उद्गीत गाता है।

तो माता मल्दालसा ने यह वाक् जब अपने में श्रवण किया, तो सोम प्राणों को भी कहते हैं, जब प्राण और अपान को मिलाने की सत्ता मुनिवरों! साधक मे हो जाती है। तो वही साधक मुनिवरों! ओ३म् ब्रहे स्वाहाः कह करके और वह मुनिवरों! देखो, प्राण और अपान का दोनो का समन्वय करता है, और दोनो का जब सन्धिकाल हो जाता है, तो उसको सोम कहते हैं, मेरे प्यारे! वही तो सोम कहलाया गया है। तो मुनिवरों! देखो, माता मलदाल्सा ने याग करने का विचार बनाया तो बेटा! याग कहते हैं, यज्ञमान बाह्य जगत में अग्नि का ध्यान करता है। अग्नि को प्रचंड करता है। उस स्वाहाः से इसी प्रकार जब मेरी प्यारी माता याग करती है, तो उसका याग ही कुछ और प्रतिभाशाली होता है। बेटा! वेदमन्त्रों में इस प्रकार की अनन्य विद्याएं हमारे यहाँ आती रही हैं। जिनको प्रायः हमारे यहाँ माताएं जानती हैं, और माताएं मुनिवरों! देखो, उस काल में जानती रही हैं, आधुनिक काल का तो मुझे इतना प्रतीत नही है, देखो, माता जो प्राणो को जान लेती है, और प्राणों का सन्निधान जान लेती है। तो मानो देखो, वह माता अपने में सोम का पान करा सकती है। तो मुझे बेटा! माता मलदाल्सा का जीवन प्रायः स्मरण आता रहता है। माता मलदाल्सा के सम्बन्ध में वैदिक साहित्य में यह आया है। उनके विचारों में की वह अपनी आत्मा अपने विचारों में अपने प्राण और अपान को दोनों का समन्वय करती हुई और वह जो गर्भस्थल में जो आत्मा होता है। अथवा शिशु हैं उससे वह वार्त्ता प्रगट करती रही है। तो माता मलदाल्सा उसका जब उदबुद्ध गान गाती है। तो मानो देखो, आत्मा से कहती है, कत्मोसी ब्रण कृतं हे आत्मा! तू कौन है? कैसे मेरे गर्भ में तूने प्रवेश किया है। तो मुनिवरों! देखो, वह आत्मां भू वर्णनं ब्रहे मेरे प्यारे! देखो, प्राण और अपान का दोनो का समन्वय करना ही माता के गर्भ की आत्मा अपने में वार्त्ता प्रगट करती है। मेरे प्यारे! देखो, जब प्राण और अपान का दोनों का मिलन हो करके उसमें समान की पुट लगाई जाती है, और समान की पुट उदान के ऊपर सवार हो जाते हैं, और वह मानो देखो, सामान्य प्राण के आधार पर जब वह गमन करते हैं, तो माता इतनी साधक बनी है, क्या माता मल्दाल्सा अपने गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रगट करती है, और उसको साक्षात्कार दृष्टिपात करती है। और वह कहती है हे आत्मा! तू मेरे गर्भ में तेरा प्रवेश हुआ, तो वह गर्भ का आत्मा कहता है, सोमं सोमं शमं ब्रह्वे कृतं मानो देखो, हम सोम को पान करने आए हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह सोम को पान कराती है। वह सोम एक औषध होती है। जो पर्वतीय क्षेत्रों में प्राप्त होती है, और मानो देखो, उस औषधि को ले करके और उसमें मृचिका औषध का समन्वय करते हुए उसको खरल करके जब उसको अग्नि में तपा करके और मानो उसको स्वच्छ बना करके और गायत्रिणी मन्त्रों से उसको पुट दी जाती है। गायत्राणी मन्त्रों से पुट दी जाती हैं। वेदमन्त्रों से भी मानो देखो, वह महा मृतिका मन्त्र से भी देखो, उसको पुट लगाई जाती है। तो वह मुनिवरों! देखो, तपा हुआ औषध वह अमृत बन गया है। वह सोम बन गया है। उसको माता पान करती है, जिस माह का मानो देखो, जो भी कहा आता है, उसी माह का वह औषध बना करके सोम बना करके मेरे पुत्रों! वह अपनी गर्भ की आत्मा को प्रदान करती रही है, और वह जब कहती है कि प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः और समानाय स्वाहाः कह करके उसमें आहुति देती है, और स्वाहा कहती है तो मुनिवरों! देखो, वह सोम याग कहलाता है। उसे हम सौम्य याग कहते हैं। उसके गर्भ का आत्मा गर्भ का जो रहने वाला जो शिशु है, वह ब्रह्मवेत्ता की विद्या को माता के उदगारों से अपने में ग्रहण कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण आता है, कि वैदिक साहित्य में इस प्रकार की विद्याए बेटा! देखो, माताओं और आचार्यों के गर्भ में पनपती रही हैं। इस प्रकार का देखो, विज्ञान प्रायः हमारे यहाँ होना चाहिए मेरे प्यारे! देखो, माता मलदाल्सा का जीवन स्मरण है, क्या वह अपनी गर्भ की आत्मा को ब्रह्म विद्या देती रही, और वह ब्रह्म विद्या क्योकि माता ही दे सकती है। क्योंकि माता जो है, वह पांचं ब्रहे द्वितीय वर्णा आस्वातं पृथ्वी लोकां मानो देखो, वह प्रत्येक माह में लोक-लोकान्तरों की शिक्षा दे करके और अन्त में वह

कहती है, कि यह ब्रह्म का एक चक्र कहलाता है, यह ब्रह्म कहलाती है, और इस माला को तुम धारण करो तो उसी माला के आश्रित मेरे प्यारे! देखो, बाल्य माता के गर्भ में पनपता रहा है। तो मुनिवरों! देखो, माता मलदाल्सा ब्रह्म विद्या दे रही है। और ब्रह्म विद्या पाना ही यह मानवीयता का एक कर्तव्य माना गया है। तो विचार आता रहता है बेटा! माता इस प्रकार सोम का पान करती रही है, और वह माताएं जब सोम का पान करती है तो उनके गर्भ से ऊर्ध्वा ऊर्ध्ववेत्ता ब्रह्मचारियों का जन्म होता है, वह ब्रह्मवेत्ता बन करके ब्रह्म की चर्चा करते रहते हैं, वह अपने में ब्रह्मनिष्ठ होते रहे हैं। तो इस प्रकार को जो विद्यां अपने में धारण करता है। वह महान और पवित्र कहलाता है। बेटा! मैं द्वितीय देखो, द्वितीय विषय पर चला गया हूँ। यह आज का विषय मेरा नही था, परन्तु मुझे कही से यह प्रेरणा प्राप्त हो रही थी कि इस पर कुछ उदगार दियें जाएं। परन्तु मैं याग के सम्बन्ध में विचार-विनिमय दे रहा था कि माता अपने में भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों में परिणत होता रहा है, मेरे प्यारे! देखो, याग कितने प्रकार के होते हैं? उन यागों के ऊपर मैं बहुत से कर्मकाण्ड भी जानता हूँ, परन्तु कुछ नही जान पाया। तो बेटा! जैसे अग्निष्टोम याग कहलाता है, वह अग्नि के ऊपर मानो देखो, याग अश्वत हो करके और वह अन्तरिक्ष में द्यौ में अपनी उड़ाने उड़ता हैं। वह शोधन करते रहते हैं, वह विज्ञान के वांगमय में जब प्रवेश होते हैं, तो विज्ञान की उन धाराओं में वह रमण करता है। जहाँ पृथ्वी के गर्भ में वह तरंगे जाएगी, वहाँ हम सोम उत्पन्न करेंगे, वह देखो, बाह्य जगत में मानो देखो, अग्नि की धाराओं में और वायु की तरंगो में रमण करेंगे वहाँ भी अमृत को प्रदान करते हैं। वह सोमवेत्ता बना देते हैं। सौम्य बनाती रहती है। तो आओ, मेरे पुत्रों! इस सन्दर्भ में मैं विशेष चर्चा नही प्रगट करूंगा केवल विचार-विनिमय यह कि हम अपने में याज्ञिक बनें, क्योंकि याग का प्रकरण बड़ा विचित्र प्रकरण है। जो ऋषि-मुनि बेटा! एकान्त स्थलियों में विद्यमान हो करके अपने में यागों का चयन करते रहें हैं। मेरे प्यारे! देखो, सत्य उच्चारण करना और सत्य भी देखो, वेद के मन्त्रों से गुथां हुआ हो, तो वह भी मुनिवरों! देखो, तरंगे बन करके याज्ञिक बन जाते हैं। एक बेटा! देखो, अग्नि में जब यज्ञमान स्वाहाः कहता है। तो स्वाहाः का अपना बड़ा महत्व माना गया है। क्योंकि यज्ञमान का जो स्वच्छ हृदय से जैसे देखो, उसका जो हृदय है, वह याग में तन्मय रहना चाहिए। देखो न कर्म वचन उसी के आश्रिता में रमण करने चाहिएं। और जब वह स्वाहाः उच्चारण करता है मानो स्वाहाः उसे द्यौ लोक मे पंहुचा देता है, उसे द्यौ में प्रवेश करा देता है, बेटा! मुझे स्मरण आता रहा है एक समय बेटा! शिकामकेतु उद्दालक मुनि के यहाँ उनकी पत्नी रम्भेश्वरी ने यह कहा कि-प्रभु! आप यह वेदमन्त्रों में स्वाहा की ध्वनि क्यों आती है, यह ध्वनित क्यों हो रहा है? तो उस समय शिकामकेतु उद्दालक ने यह कहा था क्या इसके ऊपर हम विचार-विनिमय करेंगे, विचार करने के पश्चात दोनों ने विचार किया, परन्तु विचार में यह आया कि यह जो स्वाहा है यह आत्मा है यह आत्मा कहलाता है। मानो देखो, तब माता के गर्भ में शिशु विद्यमान होता है, तो वह भी आन्तरिक जगत में बेटा! स्वाहाः की ध्वनि से मानो देखो, वह अपने में ध्वनित होता रहा है। इसी प्रकार जब मुनिवरों! देखो, यज्ञमान अपने में ध्वनित होता हुआ स्वाहाः कहता है, तो वह भी ध्वनि स्वाहाः बन करके द्यौ में प्रवेश कर जाती है। यह आत्मा की ध्वनि है, मानो देखो, आत्मा का वह रूप है, जैसे मुनिवरों! देखो, एक मानव के शरीर में आत्मा विद्यमान होता है, और वह आत्मा जब तक मुनिवरों! शरीर में रहता है, शरीर चेतनित बना रहता है, जब तक शरीर में रहता है, जब तक बुद्धिमान बना हुआ है, जब तक शरीर में विद्यमान है, तब तक मानो वह नाना प्रकार का अनुसन्धान कर रहा है। जब तक आत्मा इस शरीर में विद्यमान हैं, तभी तक मुनिवरों! देखो, संसार का विज्ञानवेत्ता बन जाता है। जब तक आत्मा विद्यमान है। जब तक यौगिक क्षेत्र में जा करके सूर्य की किरणों के साथ वह मानो देखो, सूर्य का यात्री बन जाता है, मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा का यात्री बन जाता है, और सूर्य के साथ में वह परिक्रमा बद्ध हो करके परिवर्तन हो जाता है। तो परन्तु यह आत्मा जब तक शरीर में

विद्यमान है। वह पिता कहलाता है। वह पति बन जाता है। मानो देखो, वही आचार्य बन करके ब्रह्मचारी को शिक्षा देता है। और जब तक आत्मा वही ब्रह्मचारी आचार्य के चरणों में विद्यमान हैं, मुनिवरों! देखो, आत्मा यह अमृता कहलाता है। यह आत्मा ही तो अमृता है, जिसको मानव जिसके लिए प्रयास करता रहता है, तो विचार आता है कि अमृता को जाना है, अमृता ब्रह्मं आत्मा मेरे प्यारे! देखो, जो ब्रह्म आत्मा होती है। वही तो अमृत है, उसी को पान करना है, उसके प्रति हमें मानो देखो, इस शरीर का वह आत्मा है। वह बाल्य ब्रह्मचारियों का आत्मा है, वह माता ही तो आत्मा है, जब माता को अग्नि में दाह कर दिया जाता है। कुछ समय के पश्चात माता स्मरण नही आता, तो विचार आता है कि आत्मा जब तक विद्यमान है, वह माता है, वही पितर है, और मुनिवरों! देखो, वही आचार्य के रूप में विद्यमान हमें दृष्टिपात आता है। वही ब्रह्मचारी के रूप में है तो मानो देखो, इस प्रकार जो इसे जानता है, तो यह मुनिवरों! देखो, स्वाहाः कहलाता है, उसका नाम स्वाहाः है, जिसके न रहने से मानो देखो, मृतक है, शून्य है, अन्धकार है, और जिसके रहने से मानो देखो, सर्वत्र चहुं मुखी बना हुआ है, वह कहीं बेटा! वैज्ञानिक बना हुआ है, अन्तरिक्ष की यात्रा कर रहा है।

मेरे पुत्रों! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब महर्षि तत्त्व मुनि महाराज और ब्रह्मचारी श्वेता श्वेतर और मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी रोहिणी केतु यज्ञदत यह चारों मानो देखो, ब्रह्मचारियों ने यज्ञ विज्ञानशाला में अपने में विद्यमान हो करके जब वह यन्त्र में रमण करने लगे, तो यन्त्र जब यहाँ से गमन किया अपने विद्यालय से तत्त्व मुनि के यहाँ से तो वह चन्द्रमा में प्रवेश कर गया, चन्द्रमा से उड़ान उड़ता है, तो बुद्ध में चला गया, और बुद्ध से उड़ान उड़ी तो मानो वह मंगल में प्रवेश कर गया, और मंगल से उड़ाने उड़ी तो वह स्वाति नक्षत्र में चला गया। जब वहाँ से उड़ान उड़ता है, तो कृतिका नक्षत्र में प्रवेश हो गया और जब कृतिका नक्षत्र से उड़ान उड़ता है, तो वही रोहिणी केतु मण्डल में प्रवेश हो गया, और जब वहाँ से उड़ान उड़ता है, तो वह मूल नक्षत्र में प्रवेश कर गया और मूल नक्षत्र से उड़ान उड़ता है, तो मानो देखो, वह अरूणधती मण्डल में चला गया अरूणधती मण्डल से उड़ान उड़ता है तो वशिष्ठ में चला गया तो विचार यह जब यह वशिष्ठ मण्डल से मानो देखो, अपने मार्ग को गमन कर रहे थे, तो यह मानं ब्रहे यह वशिष्ठ मण्डल में इन्होनें अपने यान को मानो वहाँ विश्राम कराया, और वहाँ के प्राणियों से वार्त्ता प्रगट की और प्राणी देखो, प्राणी उद्गीत गा रहे थे, स्वाहाः श्वंगतप प्रह्े स्वाहा तो उन्होंने कहा हे प्राणं ब्रहे यह तुम क्या उद्गीत गा रहे हो। उन्होंने कहा हम याग की अपनी वाणी को पवित्र बना रहे हैं क्योंकि वाणी जब भी पवित्र बनेगी, तो स्वाहा शब्दों से ऊँची बनेगी स्वहाः शब्दों से वाणी में तेज और ओज की उत्पति आयेगी। इसीलिए परमात्मा की उस ध्वनि में हम ध्वनित हो रहे हैं, जिस ध्वनि में ध्वनित हो करके हमारा अन्तरात्मा पवित्रता को प्राप्त हो जाता है, यह आत्मा की मानो देखो, यह आत्मा है, यह स्वाहा देखो, यज्ञ में जाओं तो यज्ञ की आत्मा है। यही स्वाहा शरीर में जाओगे। तो यह आत्मा रूप बन करके यह स्वाहाः ही आत्मा कहलाता है। यदि राष्ट्र में चले जाओ तो राष्ट्र में देखो, राष्ट्र का चरित्र ही स्वाहाः कहलाता है, और चरित्र यदि स्वाहा बन करके रहेगा, और यदि स्वाहाः चला जाता है, राष्ट्र से तो राष्ट्र का सार चला जाता है। इसी प्रकार देखो, प्रत्येक आभा में जब तुम दृष्टिपात करोगे तो यह मानो देखो, यज्ञमान का वह शब्द अपने में स्वाहाः है, जो द्यौ लोक में रमण कर रहा है, जो लोक-लोकान्तरों की प्रतिभा बना हुआ है, तो इसीलिए स्वाहाः के ऊपर अपने विचार होने चाहिए। मेरे प्यारे! यज्ञमान को स्वाहाः कहना चाहिए। परन्तु यज्ञमान को मन, कर्म, वचन एकाग्र हो करके यदि वह स्वाहा कहता है, तो उसके प्राणी की रक्षा। मेरे प्यारे! देखो, वह स्वाहाः करता रहता है, वह प्राणी नही उसका चला जाता, प्राण उसका बलवती हो जाता है, प्राण उसके साथ में गमन करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार वेद के वांगमय में वेद के शब्दों में आता है, तो आज मैं बेटा! वेद के उन रहस्यों में उद्गीतता नही गाना चाहता हूँ।

## याग एक सर्वांग पूजा

केवल यह क्या हम मुनिवरों! देखो, यज्ञ में स्वाहाः उच्चारण करें। यह स्वाहा की वाणीं ब्रहे यह वाणी ही तो स्वाहाः है, यह वाणी चली जाती है, तो मानो देखो, निर्द्वन्द हो जाता है, निध्वनित हो जाता है तो इसीलिए स्वाहा कह करके हमें हूत करना चाहिए। हमें मुनिवरों! देखो, स्वाहाः के ऊपर विचार-विनिमय मुझे स्मरण आता रहता है, मैं शिकामकेतु उद्दालक की चर्चा कर रहा था, जब रम्भेश्वरी ने यह कहा कि-प्रभु! यह स्वाहाः क्या है? उन्होंने कहा-देवी! यही तो आत्मा है, यही तो मानो देखो, अग्नि की आत्मा है जब अग्नि मानो देवताओं में देवताओं को चरू प्रदान कर देती है। जब देवताओं को साकल्य देती है, जब देवताओं को मानो देखो, यह हवि दे करके और मानो देखो, स्वतः प्रसन्न होती है। और प्रसन्न हो करके स्वतः हवि बन करके ज्ञान की हवि बन करके यह प्रकाश ही प्रकाश में ज्योति बन जाती है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब इस प्रकार ऋषि ने वेद के मन्त्र के वांगमय में इस प्रकार की चर्चाएं की तो उस समय अभ्यं ब्रह्मण ब्रहे देवत्वां वह अभ्यो ब्रहे मानो देखो, उसके चित्र आने लगे रम्भेश्वरी से बोले शिकामकेतु उद्दालक देखो, देवी यन्त्र है, और उन यन्त्रों में मानो देखो, चित्रवाली आ रही है, और वह चित्रावली देखो, उसमें रत्त हो रही है। हे देवी! तुम्हें यह प्रतीत है क्या मानो देखो, स्वाहाः कहने यह यन्त्र बन गया है, और यही स्वाहाः वाणी का एक शब्द ध्वनि बन करके मानो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके यही द्यौ को जाता है, और द्यौ से जब मानो देखो, यन्त्रों का निर्माण करते हैं, तो शब्द के आकार को शब्द में चित्र है, शब्द में मानो देखो, एक आकार और ध्वनियां हैं, मेरे प्यारे! देखो, चित्र और उनके क्रियाकलाप हमें दृष्टिपात आते रहते हैं, तो विचार-विनिमय क्या बेटा! विज्ञान अपने में बड़ा माधुर्य बन करके रहा है, विज्ञान अपने में विज्ञान रूप बन करके रहा है, तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, विशेषता में तो मैं तुम्हें ले जाऊंगा नही, केवल विचार-विनिमय यह मुनिवरों! देखो, स्वाहा याग की आत्मा है, यह यज्ञमान का आत्मा कहलाता है, यह परमाणुवाद को मानो देखो, अपने मैं निगलने वाला है, और यह अग्नि देवताओं का मुख रह करके मानो देखो, यह नाना प्रकार के याग को अपने में प्रकाश में लाता चला जाता है। जैसे अश्वमेध याग है अश्व के नाना स्वरूप माने गएं हैं। अजामेध याग है, तो अजामेध याग के भी भिन्न-भिन्न प्रकार के स्परूप माने गयें है, जैसे वाजपेयी अग्निष्टोम याग है। उसके भी भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं, मेरे प्यारे! देखो, यह ऋषियों की बड़ी एक महान उपलब्धि रही है। जिसके ऊपर हमें विचारना है अन्वेषण करना है जैसे देखो, एक मानव देखो, उद्गीत गा रहा है, वेदमन्त्रों का और प्रारम्भ में वह ओ३म् उच्चारण कर रहा है। अ उ और म मानो यह तीन अक्षर कहलाते हैं। तीनों धाराएं जब वह उनका उद्गीत गाता है, उसके पश्चात वह मन्त्र की मन्त्रणा करता है। वह वेदमन्त्रों का उद्गीत गाता है, और उद्गीत गाता हुआ मानो देखो, वह ओ३म् में पिरोया हुआ है। जैसे मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार के मनके होते हैं, और वह मनके मुनिवरों! देखो, एक सूत्र में पिरोऐ जाते हैं, तो वह माला बन जाती है। इसी प्रकार यह जो ब्रह्माण्ड है। यह माला के सदृश्य है, इसी प्रकार यह जो वेदमन्त्र है, यह माला के सदृश्य हैं, मानो देखो, ओ३म् रूपी सूत्र में ओ३म् रूपी धागें में यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड का एक-एक वेदमन्त्र वेदों का पिरोया हुआ है, और उसकी माला बन जाती है। इसी प्रकार देखो, वही कही ज्ञान काण्ड रूपी माला है। कहीं कर्म काण्ड रूपी माला है। कही ज्ञान माला है, तो यह मुनिवरों! देखो, यह त्रिवर्धा बन जाती है, यह त्रि विद्या कहलाती है। ज्ञान, कर्म और उपासना इसकी माला बन करके वह ओ३म् रूप सूत्र में पिरोई जाती है। इसी से जो उद्गाता उद्गीत गाता है। यज्ञशाला में उद्गीत गा रहा है, उदगान गा रहा है, वेदमन्त्रों की ध्वनि के सहित वह ओ३म् का उच्चारण पूर्व करता है। क्योंकि जितना भी एक-एक अक्षर है, वेदमन्त्र में वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया जाता है, इसी प्रकार जितना भी संसार का ज्ञान है अथवा विज्ञान है कर्मकाण्ड है, वह सब मानो ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है, मेरे प्यारे! जैसे नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर हैं, एक मानो जैसे यह पृथ्वी है इस पृथ्वी का जो सूत्र हैं। मुनिवरों! देखो, वह सूत्र सूर्य है, और सूर्यों का जो सूत्र

है। वह बृहस्पति है, और बृहस्पति का जो सूत्र है, वह आरुणि मण्डल है, और आरुणि मण्डलों का जो सूत्र है, मेरे प्यारे! वह ध्रुव कहलाता है, और ध्रुव का जो सूत्र है, वह पुष्प नक्षत्र है, और पुष्प नक्षत्रों का जो ध्रुव है। वह स्वाति नक्षत्र है, और वह स्वाति नक्षत्र को एक जो मानो सूत्र है वह मूल नक्षत्र कहलाता है। और मुनिवरों! मूल नक्षत्रों की जो माला मूल नक्षत्र इसमें पिरोऐ जाते हैं, वह श्वेतकेतु मण्डल मानो उसका सूत्र बना हुआ है, और श्वेतकेतु जो मण्डल है उसका जो सूत्र है मानो देखो, वह अचंग वृत्तिका मण्डल कहलाए जाता है, और अचंग वृत्तिका मण्डल का जो सूत्र है, वह गन्धर्व कहलाता है और गन्धर्व मण्डल का जो सूत्र है मेरे प्यारे! देखो, वह इन्द्र कहलाता है और इन्द्र का जो सूत्र है वह प्रजापति कहलाता है, और प्रजापति का जो सूत्र है, मुनिवरों! देखो, वह याग कहलाता है। मेरे प्यारे! सूत्रों में सूत्र बनते चले गएं और जब इनका जो हम सूत्र हम स्वीकार करेंगे, या इनके ऊपर जो अन्वेषण होगा तो बेटा! देखो, यह जो नाना प्रकार का जो सौर मण्डल है, और इन सौरमण्डलों का एक सूत्र बन करके बेटा! एक माला बन गई है। और भिन्न-भिन्न प्रकार की माला तुम्हें दृष्टिपात आयेगी और वही माला मेरे पुत्रों! जब अग्रणीय बनेगी तो वही मुनिवरों! देखो, मानं ब्रह्मे कृतं देवाः वह आकाश गंगा मेरे प्यारे! एक आकाश गंगा जिसकी माला बन जाएगी और सहस्रों क्या मुनिवरों! देखो, अरबों खरबों जब एक सूत्र में पिरोया जाता है। तो उसका सूत्र मुनिवरों! देखो, वह निहारिका बनेगी, और निहारिकाओं को मुनिवरों! पौने दो अरब लगभग अमृते देखो, पौने दो अरब देखो, एक निहारिकाओं की बेटा! एक मानो अवन्तिका बन करके मुनिवरों! देखो, नेति-नेति कह करके ऋषि मौन हो जाता है। तो विचार आता रहता है बेटा! मैं बहुत दुरी चला गया हूँ, गम्भीर क्षेत्रो में चला गया हूँ, विचार-विनिमय क्या यदि एक दूसरा अपने सूत्र को अपने में धारण कर ले तो बेटा! यह संसार विकृत बन जाएगा यह संसार मानो देखो, ब्रहित बन जाएगा इसी प्रकार यह ब्रह्मसूत्र में पिरोया हुआ यह सर्वत्र जगत है, और ब्रह्म सूत्र मेरे प्यारे! देखो, यह आत्मां भूवर्णनं ब्रह्मा यह जो मानव के शरीर का या अथवा वेदमन्त्रों में ओ३म् ध्वनि आती है, और ओ३म् ध्वनि कह करके आगे वेद के मन्त्रों का शब्दों का मानो देखो, सजातीय शब्दों का उदगीत गाया जाता है। तो मुनिवरों! देखो, वह पवित्र सूत्र बन करे मुनिवरों! देखो, उसमें क्या वेद प्रत्येक वेदमन्त्र और वेदमन्त्रों में जो ज्ञान है विज्ञान है कर्म काण्ड है मानवीयत है। वह भी बेटा! सब उसमें पिरोई जाती है। तो बेटा! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा नही प्रगट करूंगा विचार-विनिमय क्या मैं तो वन में चला गया हूँ। यह तो विचारों का वन है, मेरे प्यारे! इसीलिए मैं उच्चारण कर रहा हूँ कि स्वाहाः बेटा! ब्रह्मे यज्ञ की आत्मा है मानो देखो, यज्ञं ब्रह्म स्वाहाः का अर्थ है, स्वाहाः मां ब्रहे कृतं मैं आवरणां ब्रहे मैं यहाँ विद्यमान हूँ, तो यह इसका रूप बन करके मेरे प्यारे! देखो, जो स्वाहाः कहता है, तो अग्नि में अपने विचारों को उसमें रत्त कर देता है अग्नि देवताओं का मुख है, जैसे साकल्य जाता है, वैसे ही स्वाहाः भी उसमें प्रवेश हो गया है, उस अग्नि में स्वाहाः को ले करके बेटा! द्यौ लोक में पंहुचा दिया है द्यौ मण्डल में प्रवेश कर दिया है। वह उसके क्रियाकलाप और उसका मंगलं मानो उसका शब्द और उसका आकार द्यौ में प्रवेश हो जाता है। वह निहित रहता है। जब मानव अपने में उसे धारण कर लेता है, उसी को वह प्राप्त हो जाता है तो आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नही हूँ संक्षिप्त विचार देने चला आता हूँ। वह विचार क्या है क्या मैं परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए हम सागर से पार होने वाले बनें और स्वाहाः कह करके अपने मन कर्म और वचन के द्वारा द्यौ में अपने को पंहुचायें यही बेटा! देखो, आज का हमारा वाक् अब मैं इन वाक्यों को समाप्त कर रहा हूँ। आज के विचारों का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा का जो ब्रह्माण्ड है। परमात्मा का जो जगत है, मानो देखो, उसे हम अनुसन्धान युक्त हो करके उसे जानना चाहिए मेरे प्यारे! प्रत्येक रूप में अपने को जानना चाहिए अपने को अपने में ही निहित कर देना चाहिए। यही बेटा! आज के विचारों का आश्रय है,

वास्तव में मैं देवता ब्रह्मणे स्वाहाः की वार्त्ता तो मैं किसी काल में ही प्रगट करूंगा। अपने विचारों को पूर्ण रूपेण नही कर सका हूँ, समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मना गायन्त्वा ऋषि वाचन्नमाः वायु रथं आ पाहां। ओ३म् अग्नं ब्रीहि तत्त्वा रथं आ पा रेवा। दिनांक ११ ०४ १९९१

# १७ सुविधा न होने पर याग १२ ०४ १९९१

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रां का पठन-पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है, और याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है, और वह प्रायः उसी में वास कर रहा है। तो इसीलिए हमारा वेद का मन्त्र उस परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन कर रहा है, क्योंकि वह स्वतः यज्ञोमयी सर्वत्रता में रमण करने वाले हैं, और वह यज्ञोमयी भवन ब्रहे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी कहलाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, सृष्टि के प्रारम्भ में जब परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया, तो याग को उन्होंने मानो आध्यात्मिक और भौतिकवाद से दोनो में कटिबद्ध कर दिया। क्योंकि याग अपने में भौतिकवाद भी इसमें निहित रहता है। और आध्यात्मिकवादी प्राणी इसका अनुसरण करते रहे हैं। और ये उद्गीत गाते रहते हैं क्या वह ब्रह्मणे व्रतं देवतवा ब्रहे मानो वह यज्ञोमयी स्वरूप परमपिता होने से इस दोनो प्रकार के विज्ञान को उन्होंने एक सूत्र में सूत्रित किया है। क्योंकि याग हमें आध्यात्मिकवाद में और भौतिकवाद में भी प्रवेश करा रहा है, इसीलिए दोनो स्वरूपों को हमें जानना चाहिए क्योंकि सृष्टि के पिता ने इस संसार रूपी यज्ञशाला का जब सृजन किया तो बेटा! वे परमपिता परमात्मा स्वयं ब्रह्मा बने और यज्ञमान स्वतः आत्मा बनी और यह जो पंच महाभूत हैं, कोई इनमें से उद्गीत गाने वाला वायु उद्गीत गाता है, और कोई मानो देखो, इन्हीं में से अध्वर्यु मानो अग्नि और प्रथम ब्रह्मा यह पृथ्वी अध्वर्यु कहलाती है। कोई उनमें से मानो देखो, प्राण वर्धक कर्त्ता और होता बन करके अपना याग प्रारम्भ हो जाता है, तो यह संसार रूपी यज्ञशाला जिसमें आत्मा यज्ञमान है। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा है, और वायु उद्गीत गा रही है, अग्नि और यह देखो, यह आपोमयी होता बन करके हूत करे रहे हैं। तो बेटा! यह परमपिता परमात्मा का कैसा अनूठा जगत है, कैसी इसमें महानता का दर्शन होता रहता है। परन्तु ऋषि-मुनियों ने और वैदिक मन्त्रों ने बेटा! इसको आध्यात्मिकवाद से भी कटिबद्ध किया क्या मुनिवरों! देखो, आध्यात्मिकवादी ब्रह्माण्ड और पिण्ड की परम्परागतों से कल्पना करते रहे हैं। और यह उद्गीत गाते रहे हैं, ब्रह्माण्डे सो पिण्डे, पिण्डे सो ब्रह्माण्डे मानो पिण्ड में जो क्रियाकलाप हो रहा है, वह ब्रह्माण्ड में हैं, और जो ब्रह्माण्ड में हो रहा है वह मेरे पुत्रों! पिण्ड में निहित रहता है। तो एक दूसरे से कटिबद्ध होने वाला, यह प्रायः देखो, यज्ञशाला के रूप में परमात्मा का अनुपम जगत प्रायः हमें दृष्टिपात आता रहता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र क्या कह रहा है वेद का मन्त्र कहता है वर्णनं ब्रह्वा व्रतं देवतवां यज्ञनं ब्रह्मे यज्ञनं आत्मां भू वर्णनं वेद का वाक् कहता है कि आत्मा ही ब्रह्म और आत्मा ही वरुण है परन्तु स्वतः आत्म ब्रह्वे आत्मा की प्रतिभा में मानव सदैव रत्त रहता है। तो उस आत्मा को हम अपने में जानने का प्रयास करें, तो आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सन्दर्भ में तुम्हें विशेष नही ले जा रहा हूँ, आज मैं बेटा! उन्हीं पुनरूक्ति विचारों में ले जाना चाहता हूँ, जिन विचारों में नैतिक वाद की शिक्षा का व्यवधान आता है। मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आता रहा है, यह वाक् मुझे बड़े प्रिय लगते हैं। याग के सम्बन्ध में यों तो याग के ऊपर यदि विवेचना दी जाए, तो समय-समय की आभा में मानव रत्त होता रहता है, और उसका अन्तिम छोर नही प्राप्त होगा, परन्तु यह कि केवल आज मैं तुम्हें नैतिकवाद की शिक्षा और नैतिकवाद में ले जाना चाहता हूँ। जिसकी कल्पना विचित्र अपनी ध्वनित होते हुए, ध्वनि में परिणत की है, क्योंकि एक वाक् पुनरूक्ति में परिणत होता है। तो उसमें रहस्यतम होते हैं और उन्हीं रहस्यों को हमें उद्गीत गाना चाहिए। आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें याज्ञवल्क्य मुनि के विद्यालय में ले जाना

चाहता हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान हैं, और प्रातःकालीन बेटा! देखो, वह नैतिक शिक्षा देते रहते ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हैं, और ब्रह्मचारियों को याग की महिमा का वर्णन कर रहे थे। उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारियों! न्यौदा मे वेदमन्त्र मानो याग के ऊपर अपनी विवेचना दे रहे हैं, याग का अपने में वृत कर रहे हैं।

आओ, मैं तुम्हें उस विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ, मुनिवरों! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज यज्ञशाला पर विद्यमान हो करके अपना उपदेश अपनी उपदेश मंजरी प्रारम्भ कर रहे हैं। ब्रह्मचारी उसे अपने में श्रवण कर रहे हैं, परन्तु देखो, उनके वर्णसुतं आचार्य ने कहा कि हे ब्रह्मचारियों! तुमने जान लिया कि संसार नैतिकता में रमण करता है। राष्ट्र अपने में जब नैतिकवाद में परिणत हो जाता है, तो राष्ट्र ऊँचा बन जाता है, मानव जब नैतिकवादी बन जाता है। तो उसका जो मन, कर्म, वचन है, जो शरीर है, वह सर्वत्र एक सूत्र में पिरोया जाता है और वह एक उदय होने वाला जैसे एक सूर्य है, ऐसे एक मानव को प्रकाश में ले जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि इस प्रकार वर्णन करने लगे तो उनकी वर्णन शैली बड़ी विचित्र रही है। ब्रह्मणे लोकां ब्रह्मणे वाचसुतप्रह्वा लोकां मानो देखो, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों को जानने वाला बन जाता है। जो मानव इस प्रकार याग के कर्म काण्डों को अंगो और उपांगो से जानता है। तो मेरे प्यारे! अमृतं जब वह उपदेश दे रहे थे याज्ञवल्क्य तो मेरे प्यारे! उनमें से एक ब्रह्मचारी यज्ञदत नाम के उपस्थित हुए, और यज्ञदत ने कहा हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ क्या जब आप प्रातःकालीन उपस्थित होते हैं। तो उस समय देखो, याग हूत करने के पश्चात तू हूत के ही सम्बन्ध में अपने उदगार देते रहते है। हे प्रभु! यह उदगार तो प्रत्येक ऋषि के आश्रम में दिए जाते हैं, आप विशेषकर देते हैं, मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा हाँ तो अमृतं वह ऋषि से बोले कि-प्रभु! हम सब देखो, यह ब्रह्मचारी हैं, और ब्रह्म में विचरण करने की हमारी सदैव प्रवृत्ति बनी रहती है। तो उसको हम बना जब ही सकते हैं, जब हमारा आध्यात्मिकवाद ऊँचा हो और भौतिक विज्ञान उसके अन्तर्गत मानो गमन करने वाला हो तो हे प्रभु! हम न्यौदा में वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते रहे। तो उन्होने कहा कि-प्रभु! हमारी इच्छा यह है कि आप याग के सम्बन्ध में आपका बड़ा अध्ययन है, आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों का समन्वय कर देते हो तो हे प्रभु! मेरी एक इच्छा है। आज जो हम तुमसे प्रश्न करने लगे जिज्ञासा ले करके आए क्या हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हैं। होतागण अध्वर्यु और ब्रहे उद्गीत गाने वाले सब मानो देखो, यज्ञशाला में उपस्थित हैं, हे प्रभु! हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा याग तुम्हें करना है, तो होता गण होने चाहिए, और देखो, अध्वर्यु उद्गाता और यज्ञमान और अमृतां मानो यह सर्वत्रतव होना चाहिए। उद्गाता अपना उद्गीत गा रहा है, अध्वर्यु द्रव्य का स्वामी है, उद्गाता अपनें में वेदमन्त्रों का उद्गीत गा रहा है, और मानव अपने में इनका निरीक्षण कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा इस प्रकार यज्ञशाला नाना प्रकार के कोणों वाली होनी चाहिए। सबसे उत्तम यज्ञशाला है, जो वह चतुष स्तम्भ कहलाती है। द्वितीय जो यज्ञशाला है, वह मानो अपनें में त्रिकोण कहलाती है। और पंचम कोण का भी वर्णन प्रायः आता रहा है, इस प्रकार देखो, यज्ञमान जब याग करने लगे, तो समिधा और यज्ञशाला सुन्दर बननी चाहिएं। मानो यज्ञशाला द्वि कोण, त्रि कोण, चतुष कोण और नवम कोण तक की मानो देखो, उसमें विधान आया है, उसमें यज्ञमान जब याग करता है। तो इस संसार के एक लोक को विजय कर लेता है। वह एक राष्ट्र का जो भाग है, लोकप्रियता उसे अपने में वह धारण कर लेता है। तो इसीलिए देखो, जिसको याग करना चाहिए, वह याग करे बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और ब्रह्मचारी जन अपने में याज्ञिक बन करके याग करने लगे। यागां भवितं ब्रह्मणा यागां रूद्र वास्त मानो देखो, वह याग अपने में याग करते रहे मेरे पुत्रों! याग बड़े भव्यता में परिणत होता रहा है।

## याग एक सर्वांग पूजा

आओ, मेरे प्यारे! देखो, मैं दूरी नही जाना चाहता हूँ, केवल तुम्हें अपने उदगार देने के लिए आया हूँ, उदगार क्या कहते हैं? मेरे प्यारे! यज्ञदत ने कहा-प्रभु! धन्य है, उन्होंने कहा कि यज्ञशाला में जो साकल्य होता है, अथवा चरू होता है, वह चार प्रकार का होता है, उसमें मधुपन माधुर्यतं पौष्टि वर्धक और सुगन्धित मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार का साकल्य होना चाहिए। जब वह साकल्य उसमें अपने पौष्टिकता है, और उसी में मानो देखो, वृहीत कहलाती है। मानो देखो, पौष्टिकता है, सुगन्धित है, और रोगनाशक है, यह चार प्रकार की औषधियों का अवृत होता रहता है, और उसको अग्नि के मुखारबिन्दु में परिणत करते हैं, तो अग्नि देवताओं का मुख होने से देवता अपने में धारण कर रहे हैं। देवतव को अपने में प्राप्त कर रहे हैं, तो इस प्रकार तुम्हारी यज्ञशाला उसमें याग होना चाहिए। यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले कि हे प्रभु! कहीं मानो यह सुविधा प्राप्त हमें हो नही पाती और हमें याग करना है, तो याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि तुम्हें कोई सुविधा नहीं प्राप्त हो रही है, और याज्ञिक तुम बन गएं हो, और याज्ञिक तुम्हें और बनना है, तो तुम्हारा अमृतं जब देखो, यह सब सुविधा न हो तो अग्नि और समिधा के द्वारा दोनों के द्वारा यज्ञमान याग करें, और कहे कि उसमे क्या कहना है, जब समिधा को ले करके मानो समिधा ही तो ईन्धन है, और वह ईन्धन को ही मुनिवरों! देखो, अग्नि कहते हैं, उन्होंने सबसे प्रथम कहा प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, समानाय, उदानाय स्वाहाः कह करके हूत करना चाहिए। यह आहुति देनी चाहिएं, और स्वाहाः कह करके ही हूत करना चाहिए मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने समिधा के प्रति ऐसा कहा क्या अग्नि प्रचण्ड है, वह समिधा उसका ईन्धन है, जैसे मानव के देखो, आत्मवेत्ता का जो ईन्धन है। वह ज्ञान होता है, विद्यालय में मानो ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहा है। उसका जो मानो देखो, ईन्धन है, वह उसका ज्ञान है, और उसमें क्रियात्मक जीवन की धाराएं विद्यमान रहती हैं, जब मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि अमृतं ब्रह्मा वर्ण सुते इस प्रकार का वर्णन किया तो वह बड़े प्रसन्न युक्त हो गएं, परन्तु पुनः अपने में पुनवृत्ति लोकां वसुतं ब्रह्वे कृणा वेद के आचार्य एक-एक शब्द को मूलकता में स्वीकार करते हैं, यज्ञदत ने कहा हे प्रभु! कहीं ऐसा हो क्या यह अग्नि और समिधा भी प्राप्त न हो, तो याज्ञिक याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि यह सुविधा न प्राप्त हों तो तुम मानो साकल्य के द्वारा और देखो, अग्नि अमृतं अग्नि ब्रहा यह जो अग्नि यह देवताओं का मुख है, तुम अग्नि को स्वीकार करते हुए मानो देखो, याग में परिणत हो जाओ। यागां भवि वर्णो व्रतं मेरे पुत्रों! वह अपने में ही विचारता रहता है, जब यह अपने में देखो, प्रश्न और उत्तरावली के रूप में प्रत्येक प्राणी को जिज्ञासा बनी रहती है। वह जिज्ञासु बन करके सागर से पार होता है, तो मेरे प्यारे! वही जिज्ञासु बन करके ऋषि ने कहा-प्रभु! ब्रह्मणे यज्ञदत ने कहा भगवन! मानो देखो, यदि तुम्हारें द्वारा अग्नि और साकल्य नहीं है, तो तुम मानो देखो, जल की अंजलि ले लो, और जल की अंजलि से तुम मानो कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः, कह करके तुम हूत करो यह तुम्हारा नृत्त होना चाहिए ऋषिपर हे ब्रह्मचरिष्यामि सते व्रत्यं ब्रह्मा आकृतं देवतं ब्रहे वृता यज्ञदत ने कहा-प्रभु! आपको धन्य है। हे भगवन! मैं यह और जानना चाहता हूँ, कहीं मानो यह भी हमें कहीं प्राप्त न हो देखो, जल भी नही हैं, तो हम याग कैसे करें? उसे अंजलि से बारह व्रते उन्होंने कहा यदि तुम्हारे द्वारा जल नही हैं, और तुम्हें याग करना है मानो देखो, तुम पृथ्वी के साकल्यों को लो पृथ्वी की रज को ले करके और तुम प्राणाय, अपानाय, उदानाय, समानाय, व्यानाय इस प्रकार का उद्गीत गा करके तुम हूत करने लगो मेरे प्यारे! देखो, प्राणों को तम्हें प्रसन्न करना है, प्राणों से हमें कुछ प्राप्त करना है। मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया उन्होंने कहा यज्ञदत से ब्रहा हे ब्रह्मचरिष्यामि कही मानो यह जो पृथ्वी है, यह रज रूप में रहती है, यह पिण्ड बनाती है, यह पिण्डों का प्रतिनिधि है। और यह जल मानो देखो, जल ही इसमें मिलन करके नाना प्रकार के पिण्ड बनाता है, मैंने इससे पूर्व काल में बेटा! तुम्हें पिण्डों की चर्चाएं की और यह ब्रह्माण्ड जितना भी दृष्टिपात आ रहा है। पिण्ड के रूप में वह

पिण्डाकार करने वाला ही मानो देखो, यह गुरूतव कहलाता है, यह पृथ्वीतव कहलाता है। यह पृथ्वी अपने को ब्रह्माण्डित रचित करने लगती है। तो मानो देखो, जब इस प्रकार प्रसन्न किया उन्होंने अप्रते अपने में अवृत्तियों में रत्त रहने के लिए तत्पर हुए। तो मेरे प्यारे! वह यज्ञदत ब्रह्मचारी कहते हैं, कहीं प्रभु! रज भी न प्राप्त हो मानो कहीं आपां वर्णानं ब्रहे उन्होंने कहा आपो को ले करके तुम याग करो, उन्होंने कहा आपां भू वर्णानं व्रते मानो यही तो आपा कहलाती है। जिसके द्वारा हम याग करते हैं, हम जब माता के गर्भस्थल में होते हैं, हम जैसे शिशु तो हम एक बिन्दु में होते हैं, जिस बिन्दु में भी शिशु बन करके मानो देखो, उसमें माता के गर्भ में विद्यमान हो जाते हैं। तो माता मानो उसका पालन कर रही है। माता अपने में ओजस बना रही है, और देखो, जल ही उसका आसन बना रहता है, जल ही उसका ओढ़न है, और पांशे भी जल ही मानो हैं, जिसमें वह माता के गर्भ में वास करके अपने को पनपा रहा है। मेरे प्यारे! प्रभु का विज्ञान कितना नितान्तर कितना अनुपम हैं। तो विचार आता रहता है कि यह नाना प्रकार की जो धाराएं हैं, यही तो याग में परिणत कराने वाली हैं। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सन्दर्भ में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, विचार केवल यह कि ऋषि कहता है, क्या प्रथम ब्रह्मे आपां देवाः यह आपो ही तो ज्योति है। आपो ही तो मानो देखो, आपो कहलाता है, इस आपो के गर्भ में सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान की धाराएं ओत-प्रोत रहती हैं। यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले कि कही भगवन! हमें यह जल भी प्राप्त न हो, और हम मानो देखो, रेवो कंगलं हम रज की ही धारा में चले जाएं, और रज हमें प्राप्त नही हो रहा है। उस रूप में तो मानो हम क्या करें, उन्होंने कहा यदि तुम्हारे द्वारा यह अमृतं यह आपो भी नही है। तो मानो देखो, पृथ्वी की रज को लो और पृथ्वी की रज भी नही है। तो उस समय तुम अपने में रजनं ब्रह्ले देखो, पृथ्वी की रज को ले करके और उससे तुम आहुति दो और वह पिण्डों आकार बनाने वाला मानो देखो, पिण्डों के रूप में पिण्ड दृष्टिपात आते रहें है इस प्रकार तुम याज्ञिक बनों यागाम देखो, ब्रह्मणे देखो, यदि यह कोई सुविधा न प्राप्त न हो। तो हम याग कैसे करें? तो यज्ञदत ने कहा यदि मानो देखो, अग्नि भी न हो चरू भी न हो, तो तुम अग्न्याध्यान करके याग करो, अग्न्याधान भी इस प्रकार में न हो तो तुम मानो देखो, जल के परमाणुओं को जल ले करके याग करो और कही जल भी प्राप्त न हो, तो पृथ्वी की रज को लो और कही रज भी प्राप्त न हो, तो आपो को लो मेरे प्यारे! कही आपो भी न हो तो मानो देखो, शून्यवत हो करके तुम मानो देखो, अपने मन, कर्म, वचन को एकाग्र करके तुम वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते रहो और वेदमन्त्रों का उद्गीत गा करके कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः मानो इस प्रकार तुम उद्गीत गाने वाले बनों, क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र मानो ओ३म् रूपी सूत्र से पिरोया हुआ है। उस सूत्र के ऊपर हमें विचार-विनिमय करना बहुत अनिवार्य है, तो मेरे प्यारे! देखो, यह विचार आते ही मानवीयतव मे एक महानता का दर्शन हो रहा है। तो आओ, मेरे प्यारे! विचार आता है वेद का ब्रह्मचारी कहता है, प्रभु! कही मानो देखो, कोई भी सुविधा जल की भी सुविधा मानो देखो, यह आपोमयी है, पृथ्वी के रज हैं, गुरूतव है। यह भी न हो तो मानो हम कैसे याग करें? मानो उस समय तुम मन कर्म और वचन एकाग्र करके और वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते रहो, प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः कह करके तुम हूत करने लगो तुम्हारा कल्याण हो जाएगा। तो मेरे प्यारे! इस प्रकार विचार देता हुआ ऋषि अपने में शान्त हो गया, अपने में विचार-विनिमय करता हुआ अपने में अपनेपन को धारण कर रहा है। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा नही दूंगा विचा-विनिमय केवल यह कि हम अपने में अपने अपनेपन को ही धारण अपने को करते रहें। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ब्रह्मचारी को यह उत्तर दिया तो ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! मैं निरूतर हो गया हूँ, मानो देखो, वह भी एक याग है, तो याग ही एक ब्रह्माण्ड है। यागों में परिणत होने वाला प्रत्येक मानव सुचिन्तक बन जाता है। जिस काल में देखो, सर्वत्र समाज शुभचिन्तक बन जाता है, वह मानव अपने में अपनेपन को धारण

करता हुआ, अमृतमयी को पान कर लेता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया तो वह ब्रह्मचारी अपने में मौन हो गएं, उन्होंने कहा आपं ब्रहे माता के गर्भस्थल में ही निर्माण होता है। वही उत्पति का मूल रहता है, तो इसीलिए यह दोनों प्रियतम अपने में मग्न हो रहे हैं। तो विचार आता रहता है एक दूसरे में पिरोया हुआ जगत एक दूसरे में वृत्तियों में रत्त रहने वाला जगत ही तो मानव को ऊँचा बनाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय क्या हम अपने में याज्ञिक बनें, और याग में ही परिणत हो करके अपने जीवन को उदबुद्ध करने वाले हों, अपने जीवन में एक महानता की प्रियता होनी चाहिए। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेषता में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ। तुम्हें केवल मैंने संक्षिप्त परिचय दिया है, और उस परिचय के ऊपर तुम्हें विचार-विनिमय करना चाहिए, आओ, बेटा! देखो, विचार क्या वेद का ऋषि कहता है मनों से मन्त्रों का उद्गीत गाओं जिससे वायुमण्डल पवित्र हो जाएं, तुम अपने में याज्ञिक बन करके देखो, जल की अंजलि से याग करो जिससे परमाणुवाद दूषित न हो करके पवित्र वेदी पर रत्त हो जाएं। तुम पृथ्वी की रज को ले करे गुरूतव भाव को ले करके तुम याग करो तो मानो देखो, वह जो गुरूतव भाव है। वह तुम्हारा मनोनीत पवित्र बन जाएगा, इसी प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया तो वह अपने में मौन होने लगे जब अपने में मौन हो गएं तो अपने में शान्ति की स्थापना हो गई, तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तो दूंगा नहीं केवल विचार-विनिमय यह कि माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु होते हैं। तो उस समय मानो आपो ही तो हमें धारण कर रहा है, और वह सूर्य की किरण ही तो हमें तपायमान कर रही हैं, हम स्वयं तपायमान बन करके सागर से पार होने का प्रयास करें। आओ, बेटा! देखो, हमारा वाक् क्या कह रहा है यं ब्रह्मो सम्भवा यं रथं ब्रह्मे कृतं देवतवं लोकाः मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार जब मानव के उदगार एक उद्गीत में परिवर्तित होते हैं। तो उस समय उसकी भी मनोनीत धारा एक विचित्र बन सकती है।

तो आओ, मेरे प्यारे! इस सन्दर्भ में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, विचार-विनिमय केवल यह क्या मुनिवरों! देखो, हमारा जीवन याज्ञिक होना चाहिए हमारे जीवन में याग क्योंकि याग के बहुत पर्यायवाची शब्द हैं, सुकामना देना और मानो उसमें मौन रह करके उसको जानने का नाम याग है, वह कुशलता से जाना जाता है, अपने में अपनेपन को ध्यानावस्थित हो करके जाना जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का यह विचार क्या कह रहा है। क्या यज्ञं भवित ब्रह्मणा अपने में याग के ऊपर देखो, विचार-विनिमय देना और विचारार्थ रहना और अपने जीवन को महान महानता में रमण करना और कराना और उसका जीवन माना गया है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, विचार अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः- मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे और वह कल्पना केवल क्या है, क्या याग देखो, भिन्न-भिन्न रूपों से याग किया जाता है। सबसे प्रथम अग्न्याध्यान यज्ञशाला के द्वारा द्वितीय जो व्यवधान है, वह अग्नि और समिधा के द्वारा तीसरा जो व्यवधान है, वह देखो, जलं ब्रहे जल की अंजलि और चतुर्थ जो धारा है। वह अग्नि की धाराओं में क्या वह आपोमयी धारा में रमण कराना, और जब आपो भी ऊर्ध्वा में गमन करने लगती है। आपों ज्योति आपों रूद्रो आपां देवतवं ब्रह्मा वह मानो देखो, आपा में रत्त हो करके और आपा भी अमृतो को प्राप्त हो जाती है। तो बेटा! अपने ज्ञान की संकल्प रज के द्वारा अपनी अन्तरात्मा को ही अन्तरात्मा में दृष्टिपात करें, वही तुम्हारा जीवन है, वही तुम्हारी धारा है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह विचार क्या कह रहा है, कि हम उन धाराओं में रहने के लिए तत्पर हो जाएं। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी प्रगट करा रहे थे, मैं अपने विचारों में कोई विशेष नहीं दूंगा, क्योंकि मेरा जो अन्तरात्मा है, वह यज्ञमान के साथ रहता है, और मैं यह कहता रहता हूँ, हे

## याग एक सर्वांग पूजा

यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। तेरा अन्तरात्मा सदैव अन्तरात्मा में सदैव गमन करने वाला हो, इस प्रकार मानं ब्रह्मे मैं अपने पूज्यपाद गुरुदवे से वर्णन कराता रहता हूँ। क्या वह यज्ञमान मेरी दृष्टि में बड़ा सौभाग्यशाली जिसके गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता हो और द्रव्य अपनी आभा में रत्त रहने वाला हो, क्योंकि द्रव्य का यदि सदुपयोग करोगे, वह तुम्हारे द्वार से नही जाएगा, और यदि द्रव्य का दुरूपयोग करोगे तो द्रव्य तुमसे चला जाएगा। तुम मानो देखो, निर द्रव्य बन करके अपने में एक चिन्ता की आहुति का निर्माण करते रहें। तो इस प्रकारं ब्रहे कृतं मानो देखो, मेरी ये कामना रहती है कि तुम्हारा जीवन, सदैव महानता की वेदी पर रमण करता रहे, तो मेरे अमृतां मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी अभी देखो, गागर में सागर की कल्पना की है। और जितने भी सुक्रियाकलाप हैं उन सर्वत्र का नाम एक यज्ञमयी स्वरूप माना गया है। हम याज्ञिक बनें और अपने गृह में द्रव्य का सदुपयोग करें, और अग्नि में हूत करें, क्योंकि अग्नि देवताओं का दूत मेरे पूज्यपाद ने वर्णन कराया। तो मानो देखो, उस दूत को अपने में धारण करते हुए, दूतं ब्रह्मा वह दूत ब्रह्मा है और ब्रह्मा वर्णो मैं अपने को धारण करता रहा हूँ। तो मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन करा रहा हूँ, आधुनिक काल के राष्ट्रवाद की मैं चर्चा नही प्रगट करूंगा। क्योंकि राष्ट्र कुछ है नही, राष्ट्र में विभृत्तियां हैं, परन्तु उस राजा की आभा द्वितीय रूपों में रमण करती रही है।

तो आओ, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन करा रहा हूँ क्या आधुनिक काल में मानो देखो, अमृतं राष्ट्रवाद नही है, परन्तु गतिवान है, राजं ब्रह्मे कृतं देवाः अश्वमेध याग नही है, परन्तु देखो, वह विकृत रूप में दृष्टिपात आता है। इसी प्रकार मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को उद्गीत गा रहा हूँ। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, तेरे जीवन की पवित्र धारा मानवीयता में सदैव निहित रहे मानवीय धारा तेरी महानता में रमण करनी चाहिए। तो आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, विचार केवल यह कि मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आराधना करता रहता हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना करते रहते हैं, गागर को सागर में भरण करते रहते हैं, या सागर को गागर में मानो निहित कराते रहते हैं। तो इसी प्रकार मानो देखो, जब मैं यागों के कर्म काण्ड में जाना चाहता हूँ। तो कर्म काण्ड अपनी आभा में बड़ा विचित्र बन करके रहा है, यह कर्मकाण्ड ही मानव को ऊँचा बनाता है। कर्मकाण्ड ही मानो देखो, ज्ञान और प्रकाश की कुंजी कहलाता है। तो इस प्रकार मेरी देखो, यह मनोनीत भावना रहती है, क्या यज्ञमान का जीवन ऊँचा बना रहे, और ग्रह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, अथवा यह क्रियाकलाप पवित्र बना रहे। तो ऐसी मेरी धारणा रहती है ऐसी मेरी कामना रहती है। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा, क्योंकि मुझे राष्ट्र के ऊपर कोई विचार नही देना है, आधुनिक काल का विचार नही देना हैं। क्योंकि यह तो परम्परागतों से अपनी-अपनी आभा में रमण करता रहा है। उसमें अपनेपन का ध्यानावस्थित न हो करके द्वितीय मूलों में प्रवेश हो जाता है, तो यह आज का वाक् मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद गुरूदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे पूज्य ब्रहे मानो मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने विचार व्यक्त किए, इनके विचारों में एक महानता रही है, इनके विचारों में एक उदगार ऐसे विचित्र बन गएं हैं कि वह प्रायः संसार का कल्याण चाहते हैं, और उनके हृदय में ये पिपासा है, क्या मेरा जीवन महान से महान बन करके सागर से पार हो जाएं, ऐसा मानो देखो, कल्पना करते हुए, यह अपने में अपनेपन के विचार देते रहते हैं। तो आज का हमारा ये विचार क्या कह रहा है, हमारे विचारों में सदैव ये रहा है कि देखो, जहाँ नैतिकता की वार्त्ता आती है, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपनी विवेचना दी है और हम भी प्रायः इसके ऊपर अपने विचार व्यक्त करते रहते हैं, क्या देखो, हमारे यहाँ यज्ञ होने चाहिएं। नाना प्रकार के याग होने चाहिएं यागों का अभिप्रायः यह है

कि जितने भी सुकर्म हैं सर्वत्र का नाम याग माना गया है। इसीलिए मानव में अपने मनों में वेदमन्त्रों का अध्ययन समय-सयम पर साकल्य और अग्नि के मुखारबिन्दु में देना यह भी समय-सयम पर होता रहा है। तो इस प्रकार विचार देना और महानन्द जी ने अपने सुन्दर विचार दिए अब इस विचारों के साथ हमारा यह वाक् समाप्त होने जा रहा है, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या मानव को अपने दार्शनिक रूपों में रत्त रहना चाहिए। परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, अपने में ही अपनेपन को शान्त कर देना है, तो यह आज का वाक् अब सम्पन्न होने जा रहा है। समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। अब वेदों का पठन-पाठन। के-३, लाजपत नगर। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मना प्राची रथं वायाः आभ्यां रथ मनो वाचन्न रथं देवा यम रथाः। दिनांक १२ ०४ १९९१

# १८ ब्रह्म ज्ञान २६ १२ १९९१

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महान है, और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया हैं। जिसके ऊपर हमारे यहाँ, परम्परागतों से मानव, अपने में इसका विचार-विनिमय करता रहा हैं, क्योंकि हमारे यहाँ जब वेदों का उद्गीत गाया जाता है तो वह भिन्न-भिन्न प्रकार के रूपों में रत्त होता रहा हैं। जैसे हमारे यहाँ गान गाने वाला गान गाता है, तो वह जटा पाठ और घन पाठ में उसकी प्रतिभा का मानो अपने में यशोगान गाने लगता है। इससे पूर्व काल में हमने तुम्हें यह प्रगट करते हुए कहा था, क्या जब ज्ञानी अपने में वर्णित होता है, अपने में गुणगान गाता है, और गान गाने वाला गाता ही रहता है, और वह उद्गीत रूप में मानो उसका गान गाता है। तो यह जो परमपिता परमात्मा का जो यशो गान हैं, अथवा उसकी जो महती है, उसको हम अपने में धारण करते रहते हैं।

तो आओ, मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन कर रहा हैं, और उसके गुणों का गुणगान गान रहा है, हमारे यहाँ ऋषि-मुनि जब यह विचारते रहते हैं, कि वेदों का गान गाना, एक प्रकाशां भवितां वर्णसुतं ब्रह्मा क्योंकि वेद हमारे यहाँ प्रकाश की संज्ञा में प्रकाशक माना गया है तो वेद का ऋषि कहता है, प्रश्न करने वाला, क्या महाराजा जब हम जब भी वेदों का गान गाते हैं। आप उसको प्रकाश की संज्ञा प्रदान करते हैं। परन्तु प्रकाश तो ये सूर्य का भी उदय हो रहा हैं। और ये प्रातःकाल से मानो उदय हो करके सांय काल तक प्रकाश देता रहा है। परन्तु आचार्य ये कहते हैं कि जब गान गाने वाला गान गाता है, तो गानां भवितं ब्रह्मा वर्णसुतप्रह्वा मेरे प्यारे! जब वह गान गाता है, तो गानां भूतं द्वितीयं ब्रह्मा वर्ण सुते आचार्य ये कहता है कि यह जो प्रकाश हैं यह बाह्य मानव के नेत्रों का प्रकाशक बना रहता हैं। परन्तु ये जो वेदों का प्रकाश है ये मानव के अन्तःकरण को प्रकाशमान बनाता हैं और अन्तःकरण का जो प्रकाश है, यह अनुपम प्रकाश माना गया हैं।

तो आओ, मुनिवरों! देखो, हम इस प्रकाश के लिए सदैव अपने में गान गाते रहे यह विचारते रहें कि यह गान गा रहा हैं, तो उस प्रकाश के लिए हम सदैव अपने में याचक बने रहे यह विचारते रहे कि यह हमारे अन्तःकरण का प्रकाश हैं, और मानव के अन्तःकरण के प्रकाश में लाना बहुत अनिवार्य है। आओ, मुनिवरों! देखो, हम उस परमपिता परमात्मा की अनुपम प्रकाश के लिए हम प्रकाशक बने रहें और प्रकाश ही मानो सदैव हम रत्त होते रहें। तो विचार बेटा! यह कैसा विचार भवितं ब्रह्मा मुझे बेटा! वह काल स्मरण आता रहता है। राजा जनक के यहाँ नाना प्रकार के याग होते रहे हैं, कहीं उनके यहां कहीं देखो, ब्रह्मयाग होता रहा है देव याग को अपने में याज्ञिक रूपों में परिणत रहा है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणा व्रतं देवाः याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा! अपनी सभा में विद्यमान है और सभा में सम्भूति ब्रह्मणा व्राता मानो याज्ञवल्कय मुनि महाराज से, यहाँ नाना प्रकार के यहाँ प्रश्न किए जा रहे थे, तो उनके प्रश्नों में एक यह भी प्रश्न था भवो सम्भवा ब्रह्मा कृते देवाः चाक्राणी गार्गी उपस्थित हो करके बोली, कि हे प्रभु! हम आपसे कुछ जानना चाहते हैं, उन्होंने कहा-देवी! तुम प्रश्न करो, जितना मैं जानता हूँगा, उतना अवश्य उत्तर दूंगा। उन्होंने ब्रह्मवेत्ताओं से कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं! यदि तुम्हारी आज्ञा हो, तो मैं इस आचार्य से कुछ प्रश्न कर सकूं? ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा कि अवश्य कीजिए। तो चाक्राणी गार्गी उनसे ये प्रश्न किया कि महाराज! ये जो संसार मुझे दृष्टिपात आ रहा है, चाहे वह जड़ रूप में हैं, चाहे चैतन्य रूप में विद्यमान हैं, प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ, कि यह जो संसार मुझे दृष्टिपात आ रहा है, ये नाना प्रकार की सृष्टि वाला जगत हैं हे

भगवन! यह कहाँ किसमें यह प्रतिष्ठित हो जाता हैं। तो उन्होंने प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में जानती रहती हूँ, हे प्रभु! मेरा ये प्रसंघ सदैव बना रहता है, क्या एक माता का पुत्र है, माता है, महामाता हैं पितर है महापितर हैं। परन्तु ये सर्वत्र जगत है ये चार प्रकार की सृष्टि मानो देखो, निहित रहती हैं। और ये सृष्टि में नाना प्रकार की योनियां विद्यमान है। हे भगवन! मैं ये जानना चाहती हूँ कि ये जो संसार है यह चार प्रकार की सृष्टियों में इसका विभक्त होता रहा हैं। मानो सबसे प्रथम यह स्थावर सृष्टि है, और द्वितीय अण्डज सृष्टि मानी जाती हैं, और तृतीय भगवन! ये जंगम है ये चार प्रकार की सृष्टि हैं। यह मुझे भली भांति दृष्टिपात आती रहती है। परन्तु स्थावर सृष्टि में भी नाना प्रकार की जातियता का भाव रहता हैं और अण्डज सृष्टि में भी नाना प्रकार की मानो योनियां का भास होता रहता है। हे प्रभु! जंगम सृष्टि में भी, इसी प्रकार असंख्य योनियों का मानो देखो, इसमें प्रतिपादन किया जाता हैं। इसी प्रकार जो स्थावर सृष्टि है उसमें भी इसी प्रकार का हमें जगत दृष्टिपात आता हैं हे प्रभु! ये जो जगत है और जगत में भी नाना प्रकार के भेदन माने गएं हैं। हे प्रभु! मैं ये जानना चाहती हूँ ये जो संसार है जो मुझे दृष्टिपात आ रहा है क्या चाहे वह समुद्रों के रूप में हो चाहे नद नदियों के रूप में हो, चाहे वह पृथ्वी के रूप में विद्यमान हों हे प्रभु! इसकी प्रतिष्ठा कहाँ है? कहाँ यह ओत-प्रोत होता हैं? तो मुनिवरों! देखो, जब यह याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने श्रवण किया तो याज्ञवल्क्य ने कहा कि यह जो संसार हैं इसमें जो प्रतिष्ठा है, यह मानो देखो, पृथ्वी मानी जाती है, और यह पृथ्वी में प्रतिष्ठित हो जाता है। ये पृथ्वी का अपना ये जो स्वरूप है, यह मानो देखो, वह यह अमृतं गुरूतव रूप में इसका प्रतिपादन किया जाता हैं। और इस पृथ्वी में ही मानो देखो, प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता है। प्रतिष्ठां प्रतिष्ठं प्रह्वा लोकां मानो देखो, ये सब उसमें प्रतिष्ठित हो जाता हैं। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि ये पृथ्वी में ओत-प्रोत हो जाता हैं, तो उस समय मानो देखो, चाक्राणी गार्गी ने कहा-प्रभु! मैं ये जानना चाहती हूँ, क्या मानो देखो, ये पृथ्वी कहाँ प्रतिष्ठित होती हैं? ये पृथ्वी में जब यह संसार निहित हो जाता है, तो यह पृथ्वी कहाँ प्रतिष्ठित हो जाती हैं? उन्होंने कहा ये जो पृथ्वी है, ये मानो आपो में ओत प्रोत हो जाती हैं। आपो में ये प्रतिष्ठित हो जाती है, आपो ही इनका एक कृतिक माना गया है। और ये उसी में और ओत-प्रोत हो करके यह अपनेपन को धारण कर लेती है मेरे प्यारे! उन्होंने कहा सम्भव ब्रह्मे लोकां यह आपो ही मुनिवरों! देखो, यह सर्वत्र पृथ्वी के नाना रूप इसमें प्रतिष्ठित हो जाते हैं। मानो ये अपने में अपनेपन में भासने लगता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि हे प्रभु! यह जो प्रकरणं ब्रह्मा यह जो आपां ब्रह्मे आपा यह कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता हैं। उन्होंने कहा यह आपो ही जल हैं, और जल ही मानो देखो, आपो कहलाता है, यह आपो ही मुनिवरों! देखो, अपने में प्रतिष्ठित हो जाता हैं। यह अपनी भिन्न-भिन्न प्रकार के रूप में रत्त रहता हैं यह अपने जब वास्तविक स्वरूप में होते हैं तो एक दूसरे के यह अपने में प्रतिष्ठित मानो देखो, एक दूसरे के सहायता में सहायक बन जाते हैं, और एक दूसरे में एक दूसरे की प्रतिष्ठा हो जाती हैं। परन्तु यदि कलापो का सम्मिश्रण होता हैं तो उसका स्वरूप मानो देखो, विशाल बन जाता हैं। मेरे प्यारे! यहाँ तो एक दूसरे के सहायक बन करके, अपने में क्रियाशील हो रहे है। जैसे माता का पुत्र माता का सहायक बना हुआ हैं, और पुत्र की माता सहायक बनी रहती हैं। पति पत्नी एक दूसरे के सहायक होते हैं भिन्न-भिन्न प्रकार के जो प्राणी हैं, एक दूसरे के सहायक बन करके बेटा! उसमें प्रतिष्ठा को प्राप्त कर रहे हैं इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, एक दूसरे में ओत-प्रोत होता हुआ ये आपो मानो अग्नि में प्रतिष्ठित हो जाता हैं। और उसी में प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेती हैं, उन्होंने कहा-प्रभु! ये भी मैंने स्वीकार कर लिया। माता के कुल में जब मैं अध्ययन करता था, तो माता अपनी लोरियों का पान करा करके यह मुझे शिक्षा प्रदान करती रही हैं, यही अग्नि भिन्न-भिन्न प्रकार के रूपों में रत्त रही है। जैसे गार्हपथ्य, गृहपथ्य और वैश्वानर मानो देखो, यही अग्नि वैश्वानर बन करके यही अग्नि आह्वनीय नाम की अग्नि कहलाती हैं यह अग्नि भिन्न-भिन्न प्रकार के रूपों में रत्त हो करके अणु और परमाणु में

समाहित हो जाती हैं। मेरे प्यारे! ये अग्नि अपने में महान पवित्रता को प्राप्त करती रहती हैं, और इसी में यह आपो प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता हैं। मेरे प्यारे! देखो, उस समय जब चाक्राणी ने ये श्रवण किया तो ऋषि से बोली कि हे प्रभु! जब मुझे मेरी प्यारी माता अपने अंग संग विद्यमान करके, मुझे कुछ शिक्षा देती रही है, और मुझे ये कहा करती थी, कि अग्नि का अध्ययन करो अग्नि हमारे मानवीय शरीर में प्रविष्ट हैं, और अग्नि ही संसार का पिण्ड रूप में, पिण्डों अभ्यों को जन्म देती रहती हैं। ये जो नाना प्रकार के पिण्ड विद्यमान हैं। चाहे वह लोक-लोकान्तरों के रूप में हो, चाहे वह मानो देखो, सूर्य पिण्ड के रूप में विद्यमान हों, यह सर्वत्र एक पिण्ड रूप बना हुआ हैं चाहे वह माता के गर्भस्थल में पिण्ड बना हो परन्तु देखो, यह सब पिण्डाकार कहलाते हैं। और यह एक दूसरे में प्रतिष्ठित रहते हैं। तो इसी प्रकार ये जो अग्नि अग्नं ब्रह्मा देखो, अग्नि वायु में प्रतिष्ठित हो जाती हैं। क्योंकि जहाँ अग्नि होती है, जहाँ वायु होती है वही अग्नि का प्रकाश होता है। और अग्नि के प्रकाश में ही मुनिवरों! देखो, वह अपने में प्रकाशित रहती हैं, और ये वायु अपने में उसकी अमृता से उसकी जननी कहलाती हैं। तो मुनिवरों! देखो, हम वायु के ऊपर विचार-विनिमय करें, वायु गति है, और यह मानो देखो, कहीं प्राणों के रूप में गति करती हैं, कहीं अणु के रूप में गतिवान कहलाती हैं, ये एक-एक रूप में मानो वायु ही गति का स्रोत माना गया है इसीलिए तो ये हमें विचारना है कि वायु के ऊपर हम विचार-विनिमय करते हुए, वायु के स्वरूप को जानना हैं, वायु जब अपने स्वरूप में होती है, तो प्राण सत्ता को प्रदान करती रहती हैं। ये परमात्मा की दी हुई, एक अनुपम एक गति हैं, जिस गति को धारण करता हुआ मानव गतिवान हो रहा हैं, प्रत्येक प्राणी अपने में गतिवान हो रहा हैं। मेरे पुत्रों! इसी प्रकार यह गति अमृतं कहलाता हैं। तो विचार आता है मुनिवरों! देखो, ऋषि कहता हैं, हे देवी! ये जो वायु है, ये गतिवान हो रही हैं, और अग्नि इसमें प्रतिष्ठित हो जाती हैं। परन्तु चाक्राणी बोली, कि-प्रभु! जब मैं यह आचार्य कुल में अध्ययन करती हूऐं तो आचार्य मुझे इसका अध्ययन कराते रहे हैं। मैं यह जानना चाहती हूँ प्रभु! जब ये मानो देखो, अग्नि भी नही होती तो अग्नि मानो ब्रह्मा यह वायु कहाँ हो जाती हैं उन्होंने कहा अन्तरात्म प्रह्वा गतं वर्णसुतं ब्रव्हे अन्तरिक्ष में ये ओत-प्रोत हो जाती हैं। मानो देखो, अन्तरिक्ष इसका देवतव माना गया है, और उसी में यह प्रतिष्ठा को प्राप्त करता रहा हैं। मेरे पुत्रों! देखो, जब इस प्रकार वर्णन किया, तो ऋषि मुनिवरों! देखो, यह अन्तरिक्ष में आ करके शान्त हो गया। उन्होंने कहा ये जो शब्द है, ये अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हैं, जैसे मानव के हृदय में सर्वत्र इन्द्रियों का विषय समाहित हो जाता हैं, उसी प्रकार मानो देखो, बाह्य जगत में जितना भी तत्त्वों का विषय है मानो पंच महाभूतों का विषय है यह सर्वत्र मानो देखो, अन्तरिक्ष में समाहित हो जाता हैं। जैसे लोक-लोकान्तर अपने में गतिवान रहते हैं, इसी प्रकार ये मानो देखो, यह अपने स्वरूप में गतिवान हो जाते हैं। तो अमृतं ब्रह्मा ये अन्तरिक्षं ब्रव्हे ये अन्तरिक्ष में मानो देखो, एक दूसरे की परिक्रमा करते रहते हैं, एक दूसरे में प्रतिष्ठा को प्राप्त करते रहे हैं। तो मेरे पुत्रों! जब उन्होंने ये कहा तो चाक्राणी और ऋषि दोनों मौन हो गएं। परन्तु चाक्राणी को एक वेदमन्त्र स्मरण आया और वेदमन्त्र कह रहा था ब्रह्मणां ब्रव्हा कृतं देवो असुतं ब्रह्म वाया सुति देवा प्रतिष्ठायां उन्हें वेदमन्त्र की एक आख्यिका उन्हें स्मरण आई और उन्होंने कहा कि वेदां ब्रह्मा वेदमन्त्र यह कहता है कि अन्तरिक्ष में कहाँ प्रतिष्ठित होता हैं उन्होंने कहा यह जो अन्तरिक्ष है, यह महतत्व की प्रतिभा में प्रतिष्ठित हो जाता हैं। अथवा शून्य बिन्दु में प्राप्त हो जाता हैं जिसको महतत्व कहते हैं, जो सर्वत्र मानो एक दूसरें में लय होता हुआ एक दूसरे में प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता हैं। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा चाक्राणी ने कहा-प्रभु! जब मानो देखो, यह जो महतत्व है, यह कहाँ प्रतिष्ठा को प्राप्त करता हैं। उन्होंने कहा यह जो महतत्व है यह चन्द्रमा में ओत-प्रोत हो जाता है। चन्द्रमा ब्रह्मा वृते चन्द्रमा ही मानो देखो, एक शीतल और अग्नि का एक पिण्ड माना गया हैं। इस अमृतमयी को धारा को अपने में धारण करें तो बेटा! ऋषि-मुनियों की यह एक बड़ी विचित्र देन रही है। उच्चारण

करने की मानो देखो, ध्रुवा से ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में जाने की उनकी एक मानो बड़ी विचित्र शैली रही है। क्योंकि वेदों के वांगमय में जब प्रवेश करते रहे हैं तो उनकी शैली में इस प्रकार की धाराएं ओत-प्रोत रही हैं। तो बेटा! देखो, जब उन्होंने ये कहा कि देवी! ये जो चन्द्रमा हैं, यह महतत्व की प्रतिष्ठा मानो उसे भाषता रहता हैं, और यही मानो देखो, नाना प्रकार की वनस्पतियों को, वनस्पतियों के रसों को अपने में धारण करता हैं और यही मानो देखो, जान करके वनस्पति का रस उसमें मानो प्रतिष्ठित कर देता हैं। तो विचार आता रहता है, क्या उसी में यह अपनी आभा को प्राप्त करता रहता हैं। तो विचार आता रहता है हमारे यहाँ सम्भूति ब्रह्मा सम्भूति लोकां देवत्वां लोकं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि कहता हैं क्या वह पुत्रों! देखो, प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता हैं। और प्रतिष्ठां यानां भूतं ब्रह्मे मानो देखो, प्रतिष्ठित हो करके, अपनी धारा में परिणत हो जाता हैं।

तो आओ, मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र ये कहता है कि हम मुनिवरों! देखो, चन्द्रमा जो वनस्पतियों के रस को ले करके यह भरण करता है यह सबको रसों को प्रदान करता रहता हैं, चाहे वह माता के गर्भस्थल में हो, चाहे वह वनस्पतियों के रूप में हो, चाहे वह मुनिवरों! खाद्यान्न में विद्यमान हो, चाहे वह खनिज में विद्यमान हो सर्वत्रता में यही मानो देखो, भासता रहता हैं, और वह मुनिवरों! देखो, अपनी शीतल आभा को परिणत करता रहता हैं।

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक् उन्होंने प्रगट किया अमृतं ब्रह्मा वेदां भूतं ब्रह्मे लोकां आचार्यों ने कहा है हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ, भगवन! ये जो चन्द्रमा हैं ये कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता है? उन्होंने कहा ये जो चन्द्रमा है, ये सूर्य लोकों में प्रतिष्ठित हो जाता हैं। यह चन्द्रमां भूतं ब्रह्मा क्योंकि चन्द्रमा, सूर्य से सहायता को प्राप्त करता हुआ ये मानो अमृत देता हैं, और वे चन्दंमं ब्रह्मा यह जो सूर्य हैं यह प्रकाश है इसे देने से अदिति कहते हैं। मानो उसे भास्कर भी कहते हैं और वही मुनिवरों! देखो, सूर्य है, जो मेरे प्यारे! देखो, नाना वृत्तियों में रत्त रहने वाला हैं। यही सूर्य जिसका समन्वय मुनिवरों! द्यौ से रहता है, ये द्यौ से प्रकाश को ले करके, और ये संसार को प्रकाशवान बना करके यह मानो देखो, अमृतां ब्रहे चन्द्रमा को अमृतवान बनाता हैं, और यही अमृतवान बना करके, मानो उसे धारयामि बनाता हैं।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि कहता है वेदां श्वंधनं भूतं ब्रह्मा वर्णा मेरे पुत्रों! देखो, ये जो सूर्य है, यह प्रकाश् का अपने में दूत बना हुआ जिसके ऊपर हम विचार-विनिमय करते रहें। परम्परगतों से ही हमारा ये सदैव विचार बना रहा हैं क्या ये जो सूर्य है यह अदिति मानो यह उदयन ये जो प्रातःकालीन उदय हो करके प्रकाश देता है, रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता हैं अन्धकार को अपने में धारण करके ये प्रकाश का दूत बन जाता हैं, प्रकाश का द्यौतक कहलाया गया है। तो वेद का ऋषि कहता है, कि तुम सूर्य की अपना अदिति स्वीकार करो। और यह चन्द्रमा उसमें प्रतिष्ठित हो जाता है, उसी से सहायता को प्राप्त करता हुआ, अपने में प्रकाशित होता रहता है यह मानो अदिति बन करके मानो यह प्रकाश देता है। यह ऊर्ज्वा को प्रदान करता रहता हैं। मेरे पुत्रों! देखो, चाक्राणी उपस्थित हो करके नमः नतमस्तिष्क हो करके बोली कि-प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ। भगवन! मानो यह सूर्य कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता हैं। उन्होंने कहा यह जो सूर्य है, मानो देखो, गन्धर्व में ओत-प्रोत हो जाता हैं, और यह गन्धर्व ब्रह्मा वर्णासुते गन्धर्व वह मण्डल हैं। जो मेरे प्यारे! देखो, यह जो सौर मण्डलों का अन्तिम मनका कहलाया जाता हैं। जब मुनिवरों! देखो, आचार्य नाना प्रकार के तारामण्डलों को गणना में लाता रहा और गणना में लाते-लाते मुनिवरों! देखो, गणानां भूतं ब्रह्मे वह एक मनका मानो गन्धर्व कहलाता हैं। मेरे पुत्रों! जब आचार्य जन वैज्ञानिक जन जब इसको गणना में लाना प्रारम्भ करते हैं। तो पृथ्वी की गणना करते-करते पृथ्वी सूर्य में और सूर्य बृहस्पति में और बृहस्पति मानो देखो, यह आरुणि में आरुणि मुनिवरों! देखो, अमृतं भू मैं और भू मुनिवरों! देखो, इसी प्रकार स्वाति नक्षत्र में नाना प्रकार के नक्षत्रों की गणना करते-करते अन्तिम मनका यह गन्धर्व

रह जाता है, और यह गन्धर्व मानो देखो, सूर्य ओत-प्रोत हो जाता हैं। मेरे प्यारे! यह जो गन्धर्व है, हमारे गान गाने वाले गन्धर्व कहा जाता है। परन्तु गान अमृतं मानो गन्धर्व नाम मुनिवरों! देखो, लोक-लोकान्तरों मण्डल को भी कहा गया हैं, मंगलां भूतं ब्रह्मा मंगलां वाचसुति लोकां मेरे पुत्रों! देखो, विचार-विनिमय करने से यह प्रतीत होता है, कि यह जो गन्धर्व है। यह गणना का अन्तिम मनका कहलाता हैं। जैसे माला माला में नाना प्रकार के मनके होते हैं। एक सुमेरू के साथ में मनका होता है। वह भी अन्तिम मनका कहलाता हैं। मेरे पुत्रों! देखो, इसी प्रकार यह नाना प्रकार के मण्डलों का एक मानो देखो, अमृतं अपने में प्रतिष्ठित हो जाता है। उसको हमारे यहाँ सौर मण्डल कहते हैं, और सौर मण्डल का अन्तिम मनका बेटा! वह गन्धर्व है, उसी में सूर्य प्रतिष्ठित हो जाता है। परन्तु वेद पर चलने वाला इस वाक् पर शान्त नही हो जाता, क्या चाक्राणी ने मग्न हो करके यह कहा-प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ, कि मानो गन्धर्व कहाँ प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा यह जो गन्धर्व है, यह इन्द्र लोकों में ओत-प्रोत हो जाता हैं, हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में बेटा! इन्द्र की बड़ी विवेचना मानी गई है, क्योंकि राजा का नाम इन्द्र है, और इन्द्र नाम आत्मा का है, इन्द्र नाम परमात्मा का हैं, और इन्द्र नाम की बेटा! मैं विवेचना कर रहा हूँ। मेरे प्यारे! जब नाना प्रकार के मण्डलों में जब मानव गणित करने लगता है, तो यह हमारे यहाँ इन्द्र नाम का एक मण्डल कहलाता है। जो धिराज के रूप में विद्यमान हैं मेरे प्यारे! देखो, जो गन्धर्व लोकों में यह गन्धर्व इन्द्र में प्रतिष्ठित हो जाते हैं, क्योंकि इन्द्र की पत्नी का नाम शचि हैं। मानो देखो, शचि नाम बेटा! देखो, विद्युत को कहा गया हैं, और मुनिवरों! देखो, अमृतं ब्रह्मे अमृतं देवतवां देखो, इन्द्र वायु के रूप में भी परिणत किया गया हैं, और मुनिवरों! देखो, वायु को इन्द्र कहते हैं। वहाँ लोक को इन्द्र कहते हैं, जिसकी मैं विवचेना कर रहा हूँ, यह इन्द्र में इन्द्रो अस्तं ब्रह्म वाचा यह इन्द्र अपने में प्रतिष्ठित हो रहा हैं। मेरे पुत्रों! देखो, इसमें गन्धर्व ओत-प्रोत हो जाता हैं, और गन्धर्व इसकी प्रतिष्ठा मानी जाती हैं। मेरे पुत्रों! चाक्राणी उपस्थित हो करके बोली प्रभु! आपकी विवेचना से मौन होते हैं। परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ, प्रभु यह मानो देखो, इन्द्र कहाँ प्रतिष्ठित होता हैं? उन्होंने कहा प्रजापति में ओत-प्रोत हो जाता है, उन्होंने कहा यदि प्रजा नही होगी, तो इन्द्र भी नही रहेगा और प्रजापतियां का भी मानो इन्द्र पति कहलाता है। इसीलिए वह प्रतिष्ठित हो जाता हैं। मेरे प्यारे! देखो, इन्द्र प्रजापति में ओत-प्रोत हो जाता हैं। जो प्रजा का स्वामी है, प्रजा का नेतृतव करने वाला हैं। ऐसा प्रजापति है, वे परमपिता परमात्मा है। राजा का नाम प्रजापति है, परन्तु प्रजापति नाम पितरों को कहा गया हैं, मुनिवरों! देखो, इसीलिए पितराम भूतं ब्रह्मा वर्णसुति देवत्वां पिता वह पितर मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ जीवन को ऊँचा बनाते हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! देखो, यह पितरों अमृतं वह प्रजापति कहलाता है, जो प्रजा का स्वामी है, प्रजा का नेतृतव करने वाला हैं। वही प्रजापति कहलाता है। हे प्रजापते! तू आ देखो, प्रजा का नेतृतव करता हुआ, प्रजा का स्वामी बन करके तू मानो देखो, यह हमें जानकारी करा हम प्रजापति प्रजावान बन करके सागर से पार होने का प्रयास करें। मेरे पुत्रों! देखो, चाक्राणी नतमस्तिष्क हो करके बोली प्रभु! हम जानना चाहते हैं यह प्रजापति कहाँ प्रतिष्ठित होता हैं? कहाँ ओत-प्रोत हो जाता है, उन्होंने कहा यह जो प्रजापति हैं, यह मानो देखो, याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। यागां भूतं ब्रह्मा यागां देवत्वां देवं ब्रह्मा यागा मेरे प्यारे! देखो, याग में प्रतिष्ठित हो जाता हैं, याग में प्रजापति रहता है। जितने भी संसार के सु आत्मीय कर्म हैं। उन सर्वत्र का नाम मुनिवरों! याग में प्रतिष्ठित स्वीकार किया गया है। विचारवेत्ता कहते हैं कि यह मानो देखो, याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। तो मुनिवरों! देखो, विचं ब्रह्मो देवता यागाः हे मानव! इसीलिए तू याज्ञिक बन। मेरे पुत्रों! देखो, याग में मानव को प्रतिष्ठित हो जाना चाहिए। याग वसु कहलाता हैं। क्योंकि याग संसार को बसाने वाला है, याग को इसीलिए विष्णु भी कहते हैं, और याग का नाम वसु कहा गया हैं। मेरे पुत्रों! देखो, जो यज्ञमान को अपने में बसाने वाला है। यह प्रजापतं ब्रहे प्रजा को भी अपने में बसाने वाला

हैं, मेरे पुत्रों! देखो, याग में परिणत हो जाना चाहिए, और याग ही मुनिवरों! देखो, इसमें प्रजापति निहित रहता हैं। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने जब यह वाक् प्रगट किया तो देवी ने नतमस्तिष्क हो करके कहा हे प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ, यह मानो देखो, याग कहाँ प्रतिष्ठित रहता हैं? उन्होंने कहा याग दक्षिणा में रहता हैं, जब यज्ञमान याग के पश्चात पुरोहित को अपनी दक्षिणा प्रदान करता हैं। दक्षिणा कहते किसे हैं? विचार आता है वेद में मन्त्र आया है और वेद में वह आख्यिका को मैं वर्णन कर रहा हूँ, यागां ब्रह्रै व्रतं सम्बृत्ति देवत्वां देवाः व्रहा वन्तमं यज्ञमानश्च सुति देवत्वां लोकाः मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि कहता है क्या यह दक्षिणा क्या हैं? जो यज्ञमान मानो पुराहित को दक्षिणा देता हैं। मेरे प्यारे! यज्ञमान में मानो त्रुटियां होती हैं, उन त्रुटियों को वह संकल्पवादी बनता है, और कहता है। आज से मैं अमुक त्रुटि को नष्ट कर रहा हूँ। मैं आचार्य दक्षिणा में प्रदान कर रहा हूँ, आचार्य को हर्ष अपने में स्वीकार करता हैं। मानो द्रव्य तो केवल इसीलिए यज्ञमान देता है कि उसके उदर की पूर्ति हो जाएं, परन्तु दक्षिणा का अभिप्रायः यह है कि वह अपनी त्रुटियों को प्रदान करता हैं। मानो देखो, वह दक्षिणा अपने में संकल्पवादी बनता हैं। यदि यज्ञमान देखो, अपनी दक्षिणा नही देगा तो याग सफलता को प्राप्त नही होगा और दक्षिणा कहते हैं, अपनी त्रुटियों को त्यागना हैं। अपने में याग जैसे यज्ञमयी स्वरूप को बनाना हैं। तो मुनिवरों! देखो, जब यज्ञमयी स्वरूप बनता हैं। तो उसकी त्रुटियां नष्ट हो जाती हैं, मेरे पुत्रों! देखो, मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है। एक समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव देखो, हम देवत्वां देखो, महाराजा प्रजापति के यहाँ एक यज्ञ हुआ था, उस यज्ञ में जब दक्षिणा देने लगे तो राजा ने अपनी देवी से कहा हे देवी! दक्षिणां भूतं ब्रह्वे देवी आचार्य को कुछ दक्षिणा प्रदान करो आचार्य कहता है, मुझे दक्षिणा दो, तो देवी ने यह संकल्प किया क्या हे प्रभु! मैं यह वार्त्ता प्रगट किया करूंगी परन्तु आचार्य कहता है कि मेरे हृदय में जितनी भी दूरिता है। मैं उन्हें आपको दक्षिणा प्रदान करना चाहता हूँ, मेरे प्यारे! देखो, वह दक्षिणा दे करके आचार्य प्रसन्न हो गएं, उनका याग सफलता को प्राप्त हो गया। मेरे प्यारे! देखो, अभिमान हो, कामना की प्रवृत्ति विशेष हो, मेरे प्यारे! देखो, उसमें यागां ब्रह्वे कृतं में बाधक जो भी क्रियाकलाप हो, उन सब त्रुटियों का माना गया हैं। उन त्यागना ही मुनिवरों! उनको त्यागना ही मुनिवरों! देखो, याग की दक्षिणा का एक नृत्त कहा जाता है। तो मुनिवरों! देखो, यह आचार्य को सब यह प्रदान करनी चाहिए। मेरे पुत्रों! मुझे वह काल स्मरण आता है, जब पुत्रेष्टि याग हुआ था तो कौशल्या ने अपने मे देखो, राष्ट्र के अन्न को न पान करने का संकल्प किया था, और यह दक्षिणा में दिया कि हे प्रभु! मैं यह दक्षिणा में देना चाहती हूँ। देखो, जब मेरे अमृतं मैं उस अन्न को पान अवश्य करूंगी। जिस अन्न में देखो, किसी प्रकार का दोषारोपण न हो, अथवा किसी प्रकार की मंगलं वृत्ति राष्ट्र का जो अन्न है, वह रजोगुण, तमोगुण से सना हुआ होता हैं। मैं उस अन्न को ग्रहण नही करूंगी, जिस अन्न को आचार्य को बेटा! प्रदान किया, तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता हैं मैं उस काल में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, विचार-विनिमय यह कि दक्षिणा देनी चाहिए। परन्तु दक्षिणा का अभिप्रायः यह अपनी त्रुटियों को त्यागना है। अपने में संकल्पवादी बनना है। आत्मा के स्वरूप को जानने के लिए सदैव तत्पर रहें। ऐसी दक्षिणा जब प्रदान करता है। तो यज्ञमान का याग मुनिवरों! देखो, सफलता को देव लोक को ले जाता हैं। तो विचार आता है जब ऋषि ने इस प्रकार विवेचना की तो चाक्राणी ने नतमस्तिष्क हो करके कहा-प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ, कि दक्षिणा कहाँ प्रतिष्ठित रहती हैं, वह कहाँ शयन करती है, तो उस समय आचार्य ने कहा मुनिवरों! देखो, याज्ञवल्क्य बोले कि हे देवी! तुम प्रश्न कर रही हो, मैं तुम्हारा उत्तर दे रहा हूँ, परन्तु जहाँ अन्तिम प्रश्न बनेगा देता रहूँगा, यह जो दक्षिणा है इसका समन्वय मानव के हृदय से होता हैं, यह मानो देखो, दक्षिणा हृदय में समाहित रहती हैं, और वह मानो देखो, श्रद्धा सहित दक्षिणा को प्रदान करता हैं। दक्षिणा श्रद्धा में रहती है, श्रद्धा में देहि श्रद्धं ब्रह्मा वर्णसुतं ब्रह्मे लोकां देवत्वां भूतं ब्रह्मा वर्णा वेद का आचार्य कहता है कि

देखो, उसका सम्बन्ध हृदय से हैं। मानो श्रद्धा है और श्रद्धा का समन्वय देखो, हृदय से माना गया है, हे देवी! वही श्रद्धा हृदय में शयन करती रहती हैं। हृदय में प्रतिष्ठित रहती है। इसीलिए देखो, हृदयग्राही बनना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, आगे ऋषि कहता है चाक्राणी तुम आगे प्रश्न मत कर देना। अन्यथा तुम्हारा मस्तिष्क नीचे गिर जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी ने जब यह कहा कि मस्तिष्क यह उन्होंने स्वीकार किया प्रभु! मैं आगे प्रश्न नही करूंगी क्योंकि वास्तव में मेरा मस्तिष्क वास्तव में मेरा मस्तिष्क नीचे गिर जाएगा बेटा! ऐसा ऋषि ने क्यों कहा हैं क्योंकि प्रश्नकर्त्ता के सीमा होती है, प्रश्नों की और वह सीमा जब हृदय का समावेश हो जाता हैं। तो मुनिवरों! आगे प्रश्न करना व्यर्थ हो जाता है, और जब प्रश्न करना होता रहता है तो आचार्य से उसका प्रश्न का उत्तर नही बन पाता क्योंकि वह उसमें प्रतिष्ठित हो जाता हैं। तो यहाँ वर्णन आता है, तो उसे प्रश्नकर्त्ता को अभिमान हो जाता हैं, और अभिमान मुनिवरों! देखो, संसार में मृत्यु मानी गई हैं। उसका मस्तिष्क नीचे गिर जाता हैं। क्योंकि अभिमान ही मानव को देखो, त्रुटियों का वृत बना देता हैं। अभिमान ही मानव को मृत्यु के द्वार पर ले जाता हैं। मानो देखो, मृत्यु के तट पर विद्यमान हो जाता हैं। इसीलिए मुनिवरों! देखो, हम अपने में जब यह प्रसंग आ गया क्या हृदय मानो देखो, हृदय व्रतं दक्षिणा हृदय में मानो श्रद्धा हृदय में हृदय का मिलान मानो देखो, उस परमपिता परमात्मा से हृदय से जब समन्वय हो जाता है। तो आगे बेटा! देखो, प्रश्न और उत्तर नही बन पाता विचार आता है कि हृदय से हृदय का जहाँ मिलान हुआ, वहाँ मुनिवरों! देखो, आत्मा का परमात्मा से मिलान हो जाता हैं, और आत्मा परमात्मा से जहाँ मिलान हुआ वहाँ बेटा! मोक्ष की पगडण्डी प्राप्त होने लगती हैं। तो विचार आता रहता है मुनिवरों! देखो, वह हृदय, हृदय में श्रद्धा, श्रद्धा में दक्षिणा, दक्षिणा में याग, और याग से प्रजापति और प्रजापति से इन्द्र, इन्द्र से गन्धर्व और गन्धर्व से सूर्य, और सूर्य से चन्द्रमा बेटा! यह ध्रुवा से ऊर्ध्वा में जो ध्रुवा से ऊर्ध्वा में गमन किया ऋषि ने और यह मानो देखो, ऊर्ध्वा ब्रह्मे यह ध्रुवा से मानो देखो, ऊर्ध्वा की उड़ाने उड़ने लगे, क्या मुनिवरों! यह संसार मानो यह पृथ्वी में और पृथ्वी आपों में और आपो जल में और जल मुनिवरों! देखो, यह वायु में और वायु अन्तरिक्ष में अन्तरिक्ष महतत्व में यहाँ आ करके बेटा! देखो, अपने मे एक दूसरे में समाहित हो जाते हैं।

तो विचार आता रहता हैं बेटा! ऋषि-मुनियों की बड़ी विचित्र शैली रही हैं, शिक्षा देने की उन्होंने कहा कि ध्रुवा से ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में गमन करना मानो देखो, हमारा कर्तव्य है। हमारा यह विज्ञान मानो देखो, जिस भी स्थली में तुम जाओ, वहाँ एकता के सूत्र मे सूत्रित हो जाओ एक माला बना लो और माला को धारण करके मुनिवरों! देखो, धारयामि बना करके तुम संसार को अपने में पिरो दो अपने में अमृतं और संसार तुम्हारे में पिरोया जाएं तो तुम्हारा कल्याण हो जाएं। तो आज बेटा! तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नही हूँ, परन्तु देखो, मैं केवल दो ऋषियों की वार्त्ता को प्रगट कर रहा था चाक्राणी ने बेटा! देखो, बड़े-बड़े अनुष्ठान किए ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त करने के लिए और वह प्रश्न करती रहती थी। आचार्य से और मुनिवरों! देखो, जब गान गाने लगती तो गान गाती रहती थी, मृगराज भी नतमस्तिष्क हो करके चरणों में ओत-प्रोत होते रहे हैं। इसी प्रकार आचार्यों का यह कथन रहा हैं, क्या प्रत्येक मानव को तपस्वी बनना चाहिए, और तपा हुआ जो ज्ञान हैं, वही ज्ञान मुनिवरों! देखो, मानव के हृदय में समाहित हो करके विवेकी बन जाता है, और विवेकी मानो विवेकी का जब समन्वय जब परमपिता परमात्मा के हृदय से आलिंगन हो जाता है। तो मेरे प्यारे! वह आत्मा का परमात्मा से मिलान होना प्रारम्भ हो जाता हैं। या यूं उच्चारण करिये कि प्रतिष्ठा को प्राप्त करना मानो देखो, मानो देखो, एक दूसरे में एक दूसरे को लय करते चले जाओ और लय करते-करते प्राणों के माध्यम से जैसे प्राण को अपान में अपान को व्यान में व्यान को मुनिवरों! समान में और समान को मुनिवरों! देखो, उदान में जब समेट

लिया जाता है। तो बेटा! चित्त के संस्कार जागरूक हो जाते हैं वह जो चित्त में नाना प्रकार के संस्कार विद्यमान होते हैं। उनको उनकी जागरूकता हो जाती है। तो विचार आता रहता है, अब मुनिवरों! देखो, उस वाक् को विचार-विनिमय करते हुए बेटा! इससे पूर्व काल में तुम्हें उच्चारण कर रहा था महर्षि गौतम की चर्चा मानो देखो, गौतम ऋषि ने इस प्रकार के विचार-विनिमय करके अपने में धारयामि बने, तो विचार आता रहता हैं, चाक्राणी गार्गी बेटा! अन्त में देखो, मौन हो गई, और ऋषि के चरणों को स्पर्श करके अपने स्थान पर विद्यमान हो गई, मेरे प्यारे! देखो, नृतं ब्रह्मा वह ब्रह्मयाग होता हमारे यहाँ ब्रह्मयाग कहते हैं ब्रह्मयाग उसे कहते हैं जहाँ ब्रह्म की प्रतिभा हमें प्राप्त हो जाएं अथवा ब्रह्म के मानो देखो, उस मार्ग पर चलने के लिए हमे मार्ग प्राप्त हो जाएं गतियां प्राप्त हो जाएं हम उसको जान करके मुनिवरों! देखो, अपनेपन में उसमें सिमट जाएं और वह हममें सिमट जाएं तो बेटा! इसका नाम ब्रह्म ज्ञान कहा जाता है यह ब्रह्म ज्ञान क्या ब्रह्म ज्ञान का नाम ही याग है क्योंकि उसमें चरू है उसमें मुनिवरों! देखो, प्रकाश है आनन्दवत है मुनिवरों! देखो, वेद का जो प्रकाश हैं मानव के अन्तःकरण को प्रकाशमान बनाता हैं देखो, मानो देखो, नाना सूर्य मानव के नेत्रों का प्रकाश बन करके आते हैं और वह सूर्य मानो देखो, नेत्रों का देवता बन करके प्रकाशक बन करके आता है इसीलिए प्रकाश मानव के अन्तःकरण को प्रकाशमान बनाने वाला एक केवल अमृतं ब्रह्मा वर्णनं ब्रह्मे लोकाः वाचसुतप्रह्वा वेद का आचार्य कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा को मानो देखो, अपने में धारण करते रहे यह है बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए एक दूसरे मनके को एक दूसरे में पिरोते चले जाएं माला के सदृश्य ..... शेष अनुपलब्ध। दिनांक २६ १२ १९९१

# १९ ऊर्जा का स्रोत-अतिथि-०१४

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय हैं, और मानव को उसका वरण कर लेना चाहिए अथवा वर लेना चाहिए। क्योंकि जो भी मानव उसको वर लेता है, अथवा उसको अपना वरण बना लेता है, वह महान और पवित्रता की वेदी पर सदैव रत्त हो जाता है। क्योंकि जो भी मानव संसार में क्रियाकलाप करता है। वह प्रायः उसी आभा में परिणत हो जाता है। तो वह कल्पना करता है। क्योंकि मानव, परम्परागतों से भिन्न-भिन्न प्रकार की कल्पनाएं करता रहा है। और जीवन सत्ता के सम्बन्ध में नाना प्रकार की आभाएं और नाना प्रकार के गान के रूप में अपने को ध्वनित करता रहा है।

हमारे यहां एक समय ऋषि-मुनियों का एक समूह एकत्रित हुआ और ऋषि-मुनियों के मध्य में एक वाक्य उत्पन्न हुआ क्या मानव को ऊर्ज्वा कहां से प्राप्त होती है, जिस ऊर्ज्वा शक्ति के द्वारा मानव अपना नृत्य करता रहता है? तो मुनिवरों! सबसे प्रथम आचार्यों ने यह कहा कि हम जो वाणी से उद्गीत गाते हैं, मानो उस वाणी के उद्गीत में तीनों प्रकार के रूप उसमें निहित होते हैं, उन रूपों में मानो रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण भासता रहता है। तो विचार आया, प्रसंग यह कि ऊर्ज्वा कहां से प्राप्त होती है? तो ऋषि-मुनियों ने अपना वक्तव्य देना प्रारम्भ किया। महर्षि प्रद्वाण ने यह कहा कि हमें ऊर्ज्वा प्राप्त होती है, वह सबसे प्रथम मानो मानव की वाणी से होती है, क्योंकि वाणी शब्द स्रोत है। मुनिवरों! देखो, वाणी का उद्गीत गाता हुआ मानव, मानव को सजातीय बना देता है, प्राणी, प्राणी को सजातीय बना देता है, तो मानव के शब्दों में एक ऊर्ज्वा है और उस ऊर्ज्वा को लेकर मानव प्रकाशित होता है, क्रियावान बनता है। इसीलिए वेद का ऋषि कहता है कि वाणी में यथार्थता होनी चाहिए, सत्यवाद होना चाहिए। परन्तु यह वाक्य उच्चारण करके महर्षि प्रद्वाण अपने आसन पर विद्यमान हो गए।

महर्षि उद्दालक जी के विचार, उन्होंने कहा कि जो पूर्व विचारक जी ने अपने विचारों को व्यक्त किया, वह बड़े प्रिय हैं। परन्तु हमें जो ऊर्ज्वा प्राप्त होती है, वह जब वाणी के स्रोत को अन्तर्मुखी हो करके, वह अन्तर्मयी हो करके, मानो देखो, उसका नृत्य होने लगता है और वह हृदय अगम्य मौन रह करके एकाग्र करता हुआ मनस्तव को, जब वह उद्गीत गाता है। तो मुनिवरों! देखो, वह उद्गीत उससे भी वाणी से भी मानो महान ऊर्ज्वा वाला है। परन्तु वैदिक ऋषियों ने कहा, महर्षि शिल्क जी ने कहा कि वास्तव में वह यथार्थ है। परन्तु जब इन्हीं स्रोतों को हम, मानो देखो, वाणी और मौन को, दोनों का मिलान कर देते हैं, दोनों का समन्वय कर देते हैं। इन्द्रियों के सर्वत्र विषयों को अन्तर्मुखी बना करके, तो शिल्क जी ने कहा कि उनका जैसे ही अन्तर्मुख हुआ मनस्तव और प्राणत्व एक सूत्र में प्रवेश कर जाते हैं, और जब वे एक सूत्र में प्रवेश कर गए। तो मानो देखो, एक सूत्र रह गया जो मानो महान ऊर्ज्वा वाला है। और, मन और प्राण जब दोनों एक रूप में परिणत हो गए, तो वह मुनिवरों! देखो, मस्तिष्क, लघु मस्तिष्क, में जब मानव की प्रवृत्तियां सूक्ष्म बन करके जाती हैं, तो वह जो मन, प्रकृति का सबसे सूक्ष्मतम तन्तु माना गया है, मानो वही तन्तु एक विशिष्ट रूप धारण करके हमारे समीप आता है, क्योंकि वह प्राणम् ब्रह्मा प्राण से तो यह गुथा जगत है, और मन से यह प्राण मानो देखो, ऊर्वघृतियों में दृष्टिपात आता है। परन्तु जब मन और प्राण का दोनों का समन्वय हुआ और मानव की बाह्य प्रवृत्ति मौन प्रवृत्ति में प्रवेश कर गई और मौन प्रवृत्ति मुनिवरों! देखो, अति लघु-मस्तिष्क में बेटा! अनुभव में परिणत हो गई। मानो देखो, जब हम इस ब्रह्माण्ड को एक माला के रूप में दृष्टिपात करते हैं, क्योंकि जहां तक अणु और परमाणु को मानव भौतिक विज्ञान

में रत्त हो करके जानता है, तो जो साधना करने वाला योगीजन है, जो साधना करने वाला प्रभु का गुणगान गाता है, और प्रभु का गुणगान गाता हुआ, लघु मस्तिष्क में बेटा उसकी प्रतिभा दृष्टिपात करता है और लघु मस्तिष्क में जो मानो ब्रह्माण्ड और पिण्ड की, दोनों की एक अभ्योदय होते हुए, हम कल्पना करते हैं। वह कल्पना ही नहीं रहती, वह एक साकार रूप बन जाता है। और वह साकार रूप बन करके बेटा! योगीजन उसको अपने में दृष्टिपात करके क्रियावान बनते हैं।

मुनिवरों! देखो, हमने लघु मस्तिष्क की चर्चाएं कीं। इससे मानव को महान ऊर्वावह प्राप्त होती है। ऊर्ज्वा का स्रोत मानवीय मस्तिष्क माना गया है, जिसे हम लघु मस्तिष्क कहते हैं। जिसमें ऋतम्भ्रावी और प्रज्ञावी दोनों प्रवेश करके मुनिवरों! देखो, संसार का दिग्दर्शन किया जाता है। वैज्ञानिक परम्परागतों से ही, नाना प्रकार के विज्ञान में रत्त रहे हैं। परन्तु जो परमाणु उन रूपों में न रह करके मुनिवरों! देखो, लघु मस्तिष्क में मन और प्राण इन दोनों का जब समन्वय होता है और योगीजन उसमें सूत्ररूप में इन दोनों मनकों को पिरो देता है और वह सूत्र अपने में सूत्रित हो रहा है, तो मानव का अन्तरात्मा बलिष्ठ बन जाता है, मानव की अन्तरात्मा में एक तप की ऊर्ज्वा का जन्म हो जाता है। और तप ही मानव का जीवन है। क्योंकि इसमें मानो हम प्राण को और अपने मन के मनके बना करके पर चेतना सूत्र में हम प्रवेश कर देते हैं। हमारी देखो, भौतिक संसार की जितनी भी आवश्यकताएं हैं, भौतिकवाद में जितनी भी हमें अपनो में वृहे मानो देखो, उसका वृहन नहीं बनता क्योंकि वह उसमें रत्त रह करके क्योंकि एक ही सूत्र में सूत्रोंभ्योदय होता रहता है। तो मेरे पुत्रों! यह विचार आता है कि वह ऊर्ज्वा कितनी बलिष्ठ हैं, जिसमें मुनिवरों! देखो, ब्रह्मवर्चोसि ब्रह्मज्ञान अपने में जनित रहता है। ब्रह्मज्ञान में परिणत हो करके मानो देखो, व्यष्टि और समष्टि समष्टि को व्यष्टि में व्यष्टि को समष्टि में दोनों को एक सूत्र में ला देता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, यह कैसा अनुपम ज्ञान है। जिसके ऊपर हम बहुत परम्परागतों से बेटा अन्वेषण करते रहते हैं। विचार-विनिमय करते रहते हैं। यह तो हमारा आत्मा का भोजन है, यह तो आत्मा का भोज्य कहलाता है, इससे मानव का अन्तरात्मा बलिष्ठ बनता है और विचित्र बन करके रहता है।

## ऊर्ज्वा और देवपूजा

अब हम बाह्य जगत में आते हैं। बाह्य जगत में वही ऋषियों का आदेश, वह ऋषियों का मन्थन किया हुआ जो उपदेश है, बेटा! हम याग को सर्वांग पूजा के रूप में दृष्टिपात करते रहते हैं। जहां बेटा देखो, पंच महाभूतों का पूजन होता है, जो हमारे अन्तः शरीर में क्रियाकलाप कर रहे हैं। हमारे इस मानव शरीर में बेटा! देखो, यह अग्नि तेज और वायु का मानो इसमें वृत विद्यमान रहता है। जैसा हमारे इससे पूर्व काल में तुम्हें प्रकट किया, मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी पार्थिव गुरूतव जिसे कहते हैं और आपो, जिसे जल कहते हैं। अग्नि जिसे उष्णावत कहते हैं। मानो वायु जिसे गति कहते हैं, और मुनिवरों! देखो, अन्तरिक्ष जिसे अवकाश कहते हैं। मानो ये तीनों जब हम पंचीकरण में प्रवेश करते हैं। तो पांचों की पूजा का जो स्रोत है, वह देवपूजा कहलाता है। बेटा देवपूजा का अभिप्राय तो तुम्हें मैंने कई काल में हमने प्रकट किया था, परन्तु यह सर्वांग इसीलिए है, बेटा! देखो, यह आपोमयी पूजन है, जिससे ऊर्ज्वा उत्पन्न होती है। अग्नि काष्ठ में रहती है, उसको प्रदीप्त किया जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, इसी प्रकार वायु इन परमाणुओं को तरंगों को लेकर अन्तरिक्ष में गति कराती है। मेरे पुत्रों! देखो, यह शब्द नित्य बन जाता है वह शब्द किसी भी काल में समाप्त नही होता। परन्तु वह अपने क्रियाकलापों को अपने सहित ले जा करके उस में रत्त हो जाता है। मेरे पुत्रों! तुमने यह विचार जान लिया होगा कि यह विचार क्या कह रहा है। विचार, अपने में विचार है, महानता वाला है, चिन्तनीय है और महानता की ज्योति पर लाने वाला है।

मेरे पुत्रों! देखो, बाह्य जगत में यदि हम विज्ञान को सार्थक बनाना चाहते हैं, या अपने मानवीय जीवन को

सार्थक बनाना चाहते हैं, तो वह देवपूजा में परिणत हो जाएं, वेदमन्त्र अपने में वाहन है। प्रत्येक मानव के हृदय में वेदमन्त्रों के सम्बन्ध में भिन्न-भिनन प्रकार की रूचियां रही हैं। मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक समय मुझे वर्णन कराया कि आधुनिक काल में कुछ ऐसा मार्ग स्वीकार किया जाता है कि वेद के मन्त्र उच्चारण करने से यागों में विद्या की रक्षा होती है, तो यह उसका उतर नहीं हैं, मानो जैसा महानन्द जी ने कहा कि यह उसका उतर नहीं हैं मुनिवरों! देखो, जब हम दर्शन की बेला में जाते हैं, या दर्शनों के ऊपर अध्ययन करते हैं, और इसको क्रियात्मक में दृष्टिपात करते हैं। तो वेदमन्त्रों का अभिप्राय यह है क्योंकि हमारे यहां परम्परागतों से पारायण यागों की बड़ी परम्परा रही है। मुझे एक समय मेरे प्यारे महानन्द जी ने वर्णन करते हुए कहा था कि जो मध्य काल गया है, उस मध्य काल में एक वेदमन्त्र को लेकर के याग का प्रारम्भ होता रहा है। जैसे विष्णु याग में एक विष्णु परामन्त्र होता है। जैसे हमारे यहां शिव याग में एक वेद मन्त्र ही देखो, शिव याग का चलन है। परन्तु देखो, ऐसा नहीं हैं परम्परा के काल में या मैं उस काल में जाऊं, जिस काल में राम का राज्य था, राम के राज्य से पूर्व साहित्य के वांगमय में जाने से मानो देखो, आधुनिक काल का तो मुझे प्रतीत नहीं, परन्तु परम्परा के कालों में साहित्य कहता है कि याग पारायण होने चाहिएं। क्यों होने चाहिए? इसका एक बड़ा गूढ़ रहस्य माना गया है। और वह रहस्यतम् यह है कि प्रत्येक वेदमन्त्र का कोई न कोई देवता है, और उस देवता का सम्बन्ध इन पंचमहाभूतों से रहता है, और जितनी विद्या है, संसार की चाहे वह आध्यात्मिकवाद में हो, चाहे वह भौतिकवाद में हो, परन्तु चहो वह किसी भी सम्बन्ध में हो, चाहे राष्ट्रीयवाद में हो चाहे वह मानो देखो, साम्यवाद में हो चाहे वह तन्त्रवाद में हो परन्तु सर्वत्र विद्या का अन्मूलन है। वह सब वैदिक मन्त्रों से उदधृत होता है। वह वेदमन्त्र उसी से उदधृत होता है। तो मानो देखो, उन वेदमन्त्रों से इस विद्या का बड़ा विशेष समन्वय रहता है। और जब समन्वय रहता है। तो इसीलिए देखो, इसके दोनों स्वरूप मैंने तुम्हें वर्णन किए हैं कि बाह्य जगत में मानो देखो, मानव जब याग करता है, तो याग में सुगन्ध आती है। याग में मानो देखो, वह सुगन्ध अपने-अपने रूपों में परिणत हो जाती है। जैसे मानव, नाना प्रकार के आहारों को पान करता है। परन्तु देखो, जैसे आहार सबसे प्रथम जठराग्नि में जाता है। जठराग्नि उसको तपाती है, और अग्नि तपा करके रस बना देती है। वह रस प्राणम् ब्रह्मे मुनिवरों! देखो, वह समान प्राण को अर्जित कर देती है। वह उसका रस बना करके अपने-अपने भागों में परिणत हो जाता है। यह विभाजन कौन कर रहा है, यह अग्नि ही है, जो विभाजन कर रही है। वह प्राणसता है, वह प्राण सत्ता है। जो विभाजन कर रहा है, मानो देखो, प्रत्येक इन्द्रियों का भाग उन्हें प्राप्त हो रहा है। उनका दिया हुआ पदार्थ देखो, उसी सत्ता को लिए हुए वह उन्हें प्राप्त हो गया है। इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, वह जठराग्नि अपने-अपने रूपों में यह पंच महाभूत हमारे शरीरों में क्रियाकलाप कर रहे हैं। जहां अन्नाद पदार्थ पंहुचा, उसको मानो देखो, सब इन्द्रियों ने अपने में धारण कर लिया। मानो, उसका रस बनता है। इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, बाह्म जगत में जब यह मानव शरीर का इस प्रकार का क्रियाकलाप है।

मुनिवरों! देखो, जैसे यज्ञमान आहुति देता है, वेदमन्त्र देखो, उद्गाता उद्गीत रूप में गाता है। ब्रह्मा उसकी आभा में निहित रहता है। मानो देखो, जब वह उन वेदमन्त्रों का उदगीत गाता है, विशुद्ध रूप से तो मानव के शरीर में जो शब्द की उत्पति होती है, शब्द का जो जन्म होता है। वह पंचीकरण को लिए हुआ होता है। शब्द का जो जन्म होता है। क्योंकि उस शब्द में अग्नि भी होती है, उस शब्द में आपो भी होता है, और उस शब्द में अग्नि भी होती है, उस शब्द में गुरूतव की आभा होती है। परन्तु प्राण तो गति शब्द को देता ही है। और आकाश में मानो यह शब्द ध्वनि को लिए हुए ध्वनित हो रहा है। तो मुनिवरों! यह पंचीकरण हो गया। ऐसे जब वेदमन्त्रों का उच्चारण किया जाता है। तो हमारे मुखारबिन्दुओं में यह जो सप्त ऋषि विद्यमान हैं। मानो देखो, इसके सम्पर्क में आ करके

वह शब्द ध्वनित हो करके वह सर्वत्र मानो देखो, वह यदि पंचीकरण की एक भी आभा नही होगी, तो गान शब्द भी नहीं उच्चारण किया जाता। इसीलिए उसमें पंचीकरण हमें दृष्टिपात आता है। और वह जो पंचीकरण की वेदमन्त्रों में आभा से नियुक्त किया जा रहा है। वेदमन्त्र की ध्वनि हो रही है, और होताजन स्वाहा कह रहे हैं, उद्गाता भी स्वाहा कह रहा है, मानो देखो, वही अव्यप्रहाः नाना प्रकार के वह जो वेदमन्त्र हैं। पदार्थ अग्नि में प्रदान किए जा रहे हैं, क्योंकि अग्नि देवताओं का मुख है। मानो देवता अपनी-अपनी आभा को प्राप्त कर लेते हैं।

मेरे पुत्रों! देखो, प्रभु की रचना के ऊपर जब हम गति करते हैं, तो वह प्रभु कितना रचनाकार है, कितना विज्ञानवेत्ता है, विचार आता है कि उसके विज्ञान की कोई सीमा नहीं हैं। परन्तु वह इतना वक्तव्य देने वाला है कि उसकी भी कोई सीमा नहीं हैं। तो विचार विनिमय क्या? मेरे पुत्रों! देखो, यह जो बाह्य जगत है, याग अपने में पूर्ण सर्वांग कहलाता है, मानो देखो, प्रत्येक वेदमन्त्र में देवता विद्यमान है। उस देवता के सम्बन्ध में आहुति है, जैसे इन्द्र है, इन्द्र के सम्बन्ध में मानो देखो, आहुतियां हैं, अग्नि के सम्बन्ध में हैं। इसी प्रकार देखो, वायु के प्राण के सम्बन्ध में भी हैं। और वह समन्वय होती हुई वाणी अपने में ध्वनित होती हुई मानो अपने में हर्ष ध्वनि हो रही है। मेरे पुत्रों! देखो, विचार-विनिमय क्या? यह वेद देवप्रहाः वेद का ऋषि कौन? मुनिवरों! देखो वह क्या कह रहा है? पुनीत ऋषि महाराज, बेटा! महात्मा अटूटी से कहते हैं हे अटूटी! यह याग अपने में पूर्ण है, यह देवपूजा कहलाती है। मानो इसमें पितरों की भी पूजा की जाती है, पितरजन कौन है? जो ऊँचे मार्ग पर ले जाते हैं, वह पुरोहितजन हैं। वह जो ब्रह्मा उद्गाता बने हुए हैं, वह चैतन्य देवता हैं। उनका भी पूजन हो रहा है, उस विद्या का उपयोग याग के द्वारा हो रहा है वह मानो देखो, पितर पूजन कहलाता है। इसी प्रकार, पितरों का पूजन करना हमारा कर्तव्य है। परन्तु याग अपने में सर्वांग पूजा है। सर्वांग पूजा इसीलिए है, क्योंकि कोई वस्तु संसार की ऐसी नहीं रह पाती जहां वह मानो देखो, पूर्ण वृत्तियां न जाती हों। वह प्रत्येक आभा में नियुक्त हो जाती है। परन्तु एक मानव साधना पूजा कर रहा है। मानो देखो, वह पीपल के वृक्ष में, मानो देखो, उसमें जल को अर्पित कर रहा है, सूर्य की ऊर्ध्वा में मुख रहता है परन्तु वह केवल देखो, वृक्ष और अपने तक हीमानो वह जल सीमित रहता है। परन्तु यह जो याग है, यह अपने तक सीमित नहीं है, यह देखो, सार्वभौम बन करके, मानो देखो, तरंगों में तरंगित हो जाता है।

मुझे स्मरण आता रहता है, एक समय बेटा! महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां एक गोष्ठी हुई थी बहुत परम्परा की वार्ता है। परन्तु उसमें देखो, यह विचार आया भारद्वाज मुनि के यहां नाना वैज्ञानिक विद्यमान हो गए और वे कुछ यौगिक भी विद्यमान हो गये। उन्हें यह विचार आया कि वे अपने में ऊर्ज्वा को, अपने में ही धारण करना चाहते हैं परन्तु देखो, वहां यह भी प्रसंग आया मानो देखो, जो हम याग करते हैं, और वेदमन्त्र ध्वनि के सहित ध्वनित हो रहे हैं। यज्ञमान अपने में स्वाहा कह करके मानो देखो, वह श्रद्धामयी अपनी आभा में नृत्य कर जाता है। श्रद्धा का कहां-कहां तक समन्वय रहता है? बेटा ऋषि-मुनियां में यह गोष्ठी हुई। ऋषि-मुनियों में जब यह विचार आया तो भारद्वाज मुनि महाराज पनपेतु मुनि, मानो उस यज्ञ उस ब्रह्म चिन्तन में ब्रह्मयाग में वह सर्वोपरि थे। मेरे पुत्रों! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, निर्णय होने लगा। मानो ध्यानावस्थित हो गए और विचारों में परिणात होने लगे। मेरे पुत्रों! देखो, ऐसा दृष्टिपात किया गया कि ब्रह्मे वाच प्रवाः हम साधना से मानो देखो, इसको सिद्ध नहीं कर सकते। यह सिद्धि तो मानो देखो, विज्ञान के वांगमय में पंहुचों तो मुनिवरों! देखो, साधना और विज्ञान के नाना प्रकार के यन्त्रों में ऐसा दृष्टिपात किया गया कि शब्द वेदमन्त्र जितना भी शुद्ध वायुमण्डल में और शुद्ध वाणी से उद्गीत गाया जाएगा और स्वाहा कह करके, मानो देखो, प्रत्येक साकल्य स्वाहा मानो देखो, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो जाएगा तो अग्नि मानो देखो, उन शब्दों की एक माला बना देती है, और माला बना करके मानो वही शब्द अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो जाते है। प्रतिभा में रत्त हो जाते हैं। बेटा मैं बहुत दूरी चला गया हूँ। यह बड़ा

## याग एक सर्वांग पूजा

गम्भीर एक चिन्तन है जिस चिन्तन के करने यह प्रतीत होता है, कि प्रभु की सृष्टि कितनी विचित्र है, और कितनी महानता में रहती है। मानो देखो, वही शब्द, अग्नि की धाराओं में विद्यमान हो करके द्यौ में प्रवेश कर गया है। और वह द्यौ का निर्माण होता है। और निर्माण मानो देखो, वेद ध्वनि का देवता अन्तरिक्ष में मानो वह ऊर्ध्वा ब्रहे कृतां मुनिवरों देखो, वह द्यौ में रमण करेगा उतना द्यौ शक्तिशाली बनेगा और जितना द्यौ शक्तिशाली बनेगा उतना ही सूर्य अपने में ऊँचा भासता रहता है। चन्द्रमा अपने में विशुद्ध कान्ति देता रहता है। जिस कान्ति के द्वारा मानव के जीवन की प्रतिभा का प्रायः निर्माण होता रहता है।

मेरे पुत्रों! देखो, वेद का ऋषि क्या कहता है, वेद का आचार्य अपने में, अपनी धारा में रत्त होता हुआ अपने वाक्यों को प्रदर्शित कर रहा है। तो विचार-वेत्ताओं ने यह निर्णय दिया है कि ऊर्ध्वा ब्रह्म है, इसका शब्द से समन्वय रहता है। इसीलिए शब्द, चाहे वह बाह्म जगत वाला हो चाहे वह आन्तरिक जगत वाला हो, परन्तु वह जब विशुद्ध रूप में उद्गीत गाया जाता है। वही अपने में सार्थक बन करके पवित्र बनता रहता है।

### याग एक सर्वांग पूजा

मेरे प्यारे! देखो, यह निर्णय हुआ कि शब्द अन्तरिक्ष में अपनी आभा में निहित रहता है। जिस शब्द के द्वारा मानव अपने में ज्ञान और विज्ञान की धाराओं में रत्त रह करके मानो वह शब्द अपने में ऊर्ध्वा को लिए हुए मुनिवरों! देखो, भ्रमण करता रहता है। तो वेद के ऋषियों ने बेटा देखे अपने यन्त्रों में इस आभा को दृष्टिपात किया है, जिस आभा में अभ्योदय होता हुआ, अपनी धाराओं में रत्त होता रहता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, भारद्वाज मुनि ने इस वाक्य को स्वीकार कर लिया। आदि ऋषियों में यह निर्णय हो गया कि मानो देखो, ब्रह्म वाच प्रवाहः यह जो याग है। यह अपने में सर्वांग है। यह अपने में मानो देखो, सर्वांग पूजा है। पूजा का अभिप्रायः यह है कि उसे हमें कहीं प्रसारण करना हैं मानो देखो, पूजा का बाह्म जगत और ही कुछ कहता है। हम अग्नि का पूजन करना चाहते हैं, तो अग्नि का सदुपयोग करते चले जाएं। जल का पूजन करना चाहते हैं, तो जल का भी सदुपयोग होना चाहिए। परन्तु हम देखो, पृथ्वी की पूजा के भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूप माने गए हैं। मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी हमारी माता और पितर दोनों कहलाती है। मानो देखो, पितर को भी शुक्र रस वहीं से आता है। माता को भी रजत्व वहीं से आता है, वहीं से निर्माण की प्रतिक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। तो मानो देखो, माता-पिता दोनों है। इसीलिए वह देवपूजा है। वह अपने में मानो देवपूजा कहलाती है। मेरे पुत्रों! देखे इसके गर्भ में इसका सदुपयोग करना है। इसमें नाना प्रकार के खाद्य और खनिज है, इस खाद्य और खनिज को मानो जान करके इसका उपयोग किया जाए। मानो देखो, वैज्ञानिकों को तरंगें प्राप्त होती हैं, तो वैज्ञानिक बन जाना चाहिए। मानो एक भक्तजन को, जो जिज्ञासु है, उसे वनस्पतियों के रस से मानो उसके मस्तिष्क में प्रज्ञा जागरूक होती है, तो वह प्रज्ञावी में मानो जाकर के साधक बनकर अपने में महान बन सकता है। तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, वह वैज्ञानिक जब इसके धातु पिपाद में प्रवेश करता है। तो नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण होता है। तो माना देखो, यह जो पृथ्वी है, यह अपने में मानो देखो, हम पूजा में प्रवेश करते हैं। तो इसकी पूजा का केवल एक ही स्वरूप है कि सदुपयोग किया जाएं, प्रत्येक वस्तु का सदुपयोग लक्ष्मी का पूजन करना चाहते हैं।

### लक्ष्मी पूजन

मेरे प्यारे! मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक समय मुझे प्रकट कराया कि लक्ष्मी का पूजन होता है, तो लक्ष्मी का पूजा होना चाहिए, उसका तिरस्कार नहीं होना चाहिए। परन्तु देखो, लक्ष्मी का यदि हमें पूजन करना है, तो लक्ष्मी का सदुपयोग करना है जैसे, यज्ञमान अपने द्रव्य को यज्ञशाला में अग्नि को अर्पित कर देता है देखो, उसका स्रोत लक्ष्मी है। लक्ष्मी से उसका रूप द्रव्य बन गया। द्रव्य का रूप मानो देखो, अग्नि बन गया, संकल्प बन गया,

संकल्प से अग्नि बन गई और अग्नि से मानो देखो, देवताओं का यह भोज्य बन गया। वह देवताओं का भोज बन गया। वही द्रव्य है, परन्तु देखो, वही लक्ष्मी है, और लक्ष्मी अपने रूप को परिवर्तन करती चली गई वही मानो देखो, जब इसका सदुपयोग होता है, इसी लक्ष्मी का तो यह लक्ष्मी मानो देखो, जहां माता के रूप में थी वहां यह शत्रु के रूप में बन गई।

मेरे पुत्रों! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें एक गाथा प्रकट की थी वह गाथा मुझे पूर्व से स्मरण आ रही है, ऐसा कहते हैं कि एक समय मानो एक आलांकारिक वार्ता है, एक समय लक्ष्मी और विष्णु दोनों अपनी स्थलियों पर विद्यमान थे, अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके दोनों में यह विवाद बना मानो दोनों में एक संघर्ष हुआ क्या मृत्युलोक की वार्ता आने लगी। उन्होंने कहा हे लक्ष्मी! जो मेरे प्रिय भक्तजन जिज्ञासु होते हैं, यह वह मुझे कोई महत्व नहीं देते। तेरा अस्तित्व कुछ नही होता, उनकी दृष्टि में। परन्तु लक्ष्मी मुग्ध हो करके बोली कि हे प्रभु! आप क्या उच्चारण कर रहे हैं? जब मैं तुम्हारे भक्त को मोह लेती हूँ, मोहिनी बन कर के मोहती हूँ, तो मानो देखो, तुम्हारा कोई अस्तित्व नही होता। तो मुनिवरों! देखो, वह दोनों में मानो एक संघर्ष हुआ। बहुत समय हो गया संघर्ष को कोई निबटारा नही हुआ तो उन्होंने कहा-क्रियात्मक इसको जानना चाहिए। तो क्रियात्मक रूप में जानने के लिए मानो देखो, भगवान विष्णु एक राजा के समीप पंहुचे। जब राजा के समीप पंहुचे तो राजा ने उनका स्वागत किया। आईए भगवन! वह महात्मा के रूप में पंहुचे, ऋषि के रूप में पंहुचे। उन्होंने कहा आइये भगवन! यह प्रतिभाशाली थे। अब प्रतिभा मानो राजा पर छायामान हो गई। राजा ने कहा-हे राजन! मेरा तो एक नियम है, मैं जब आसन पर विराजमान होता हूँ, मेरे लिए एक नियम है, मैं जब आसन पर विराजमान होता हूँ। मेरे लिए एक आसन का नवीन निर्माण हो जाए, किसी वाटिका में। तो राजा ने कहा बहुत प्रिय। तो उन्होंने नगर से दूरी पर, एक वाटिका मंह एक कूटी का निर्माण किया। मानो एक सदन का निर्माण किया। जब यह गृह में उनका नियुक्त किया गया। वह आसन पर विराजमान हो गए और विराजमान हो जाने के पश्चात उनका पूजन करने लगे। मेरे प्यारे! देखो, उनसे उपदेश लेते। ज्ञान की धारा लेते और उन्हें प्रथम भोज कराते और उसके प्श्चात स्वतः भोज करने लगे। तो वह मुनिवरों! देखो, वह मानो उनकी पूजा में सदैव रत्त रहने लगे। उनसे उपदेश और ज्ञान लेते रहते। जब यह जान लिया कि राजा मोहित हो गया है। तो कुछ समय के प्श्चात लक्ष्मी ने एक भिक्षुक का स्वरूप धारण करके मुनिवरों! देखो, वहां राजा के गृह में प्रवेश किया। और उन्होंने भिक्षामयी देहि कह करके भिक्षा को जागृतियों में, कि मुझे भिक्षा दो, में अन्न से पीड़ित हूँ। उन्होंने कहा बहुत प्रिय माता!। आइये, मानो हमारा कर्तव्य है कि हम तुम्हें भोज करायें। परन्तु प्रथम महात्मा को भोज जाएगा। महात्मा को भोज करा करके आचार्य अपने गुरुजी को और उसके प्श्चात लक्ष्मी को जब भोज देने लगे तो लक्ष्मी ने मानो देखो, अपनी खुर्जी (पोटली) में से पाचं स्वर्ण के पात्र निकाले और उन्होंने कहा राजन मैं इन पांच पात्रों में भोजन करती हूँ। और जिनमें एक समय भोजन करती हूँ, द्वितीय समय भोजन नहीं कर पाती, राजा के हृदय में बड़ी विचित्रता आई कि यह कैसी भिक्षुक है। मुनिवरों! देखो, नित्यप्रति राजा उसे भोज कराते, परन्तु देखो, वही पांच स्वर्ण के पात्रों में भोजन कराते। जब राजा ने विचारा यह तो बड़ी विचित्र है। यह तो वास्तव में माता है। इसका तो हमें पूजन करना चाहिए। मेरे प्यारे! जब लक्ष्मी ने यह विचार लिया कि राजा देखो, तेरे ही आंगन में परिणत हो गया है। मुनिवरों! राजा ने यह विचार लिया कि यदि कुछ समय यह भिक्षुक मेरे द्वारा बनी रहेगी, तो मैं स्वर्णपति बन जाऊंगा, राष्ट्र में स्वर्ण ही स्वर्ण हो जाएगा, पात्र हो जाएंगें।

मुनिवरों! देखो, वह जब लक्ष्मी ने जान लिया कि अब यह तेरे पर मोहित हो गया है। उसने कहा अच्छा भगवान अब मैं यहां से प्रस्थान कर रही हूँ। राजा ने कहा मातेश्वरी! तुम कहां जा रही हो? मेरे राष्ट्र को तुम

सुशोभित करो। मेरा राष्ट्र तुम्हीं से जीवित रहेगा। मुनिवरों! उन्होंने कहा नहीं, मेरा समय इतना ही है, तो मुनिवरों! प्रार्थना करने लगे। राजा ने कहा माता तुम किसी प्रकार मेरे यहां वास कर सकती हो? उन्होंने कहा एक मेरी प्रतिज्ञा है। तुम एक महात्मा का पूजन करते हो, वह महात्मा यहां से यदि तुम्हारी वाटिका से अपने वहां को प्रस्थान कर जाए। तो मैं तुम्हारे यहां वास कर सकती हूँ, मेरे प्यारे! देखो, राजा ने कहा माता यह तो मैं उन्हें नहीं उच्चारण कर सकता। कोई और युक्ति हो। तो निहित कीजिए। उन्होंने कहा, युक्ति यह है कि उसको भोज नहीं पंहुचाओगे वह क्षुधा से पीड़ित होकर यहां से प्रस्थन कर जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, वह राजा ने उस ममता में, उस स्वर्ण के आवेशों में आ करके देखो, महात्मा का तिरस्कार कर दिया जब महात्मा का तिरस्कार हो गया, विष्णु का तिरस्कार हो गया तो मेरे प्यारे! यह क्षुधा से पीड़ित होकर वहां से चले गए, गमन किया। मेरे पुत्रों! वह समय व्यतीत होता रहा। कुछ समय के पश्चात लक्ष्मी ने पुनः अपना देखो, वहां से जाना प्रारम्भ किया। महाराजा ने कहा मातेश्वरी! जब तुम कहां चली? उन्होंने कहा हे राजन्! तुम तो स्वार्थी हो। तुम तो स्वार्थपरता में रहते हो। मानो देखो, एक अप्रियतम् ब्रह्म वह जो तेरे द्वार पर रहते थे वह धर्म है, और मैं लक्ष्मी हूँ। मानो जहां मेरे स्वामी धर्म का तिरस्कार हो जाता है, वहां से लक्ष्मी भी चली जाती है। मेरे प्यारे! देखो, लक्ष्मी ने कहा कि जहां मेरे स्वामी का तिरस्कार हो गया है। तो वहां मेरा रहना मानो देखो, मेरा वास करना व्यर्थ है। मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या? मुनिवरों! देखो, विचार यह कि यह जो लक्ष्मी है, इसका सदुपयोग करना है, मानो देखो, इसके स्वामी का तिरस्कार नहीं करना है। यदि सदुपयोग करोगे तो उस धर्म का तिरस्कार नहीं होगा और जहां धर्म नहीं रहा, विष्णु नहीं रहा, मानो देखो, वहां लक्ष्मी भी नहीं रहेगी। आज नहीं तो कल यहां से प्रस्थान कर जाएगी। और, वह राजा, मानो देखो, निर्द्रव्य हो करके मुनिवरों! देखो, वह भिक्षुक की कोटि में आ जाएगा। तो विचार-विनिमय क्या? मेरे पुत्रों! विचार यह है कि हम पूजन के रूप को जानना चाहे हैं, तो सदुपयोग करें। मानो देखो, इसका सदुपयोग है, हम सदैव अपनी आभा में नियुक्त रह करके मानो देखो, प्रभु का चिन्तन करते हुए, इस सागर से पार हो जाएं। आज बेटा मैं विशेष तुम्हें चर्चा देने नही आया हूँ। विचार यह देने के लिए आया हूँ कि हम अपने प्रभु का गुणगान गाते हुए इसी ज्ञान और विज्ञानमयी धारा को जानते हुए मानो देखो, एक सागर से पार हो जाएं।

आज बेटा! मैंने बाह्य जगत आन्तरिक जगत दोनों की चर्चाएं कीं। मानो देखो, किसी भी काल में कोई भी प्राणी हो, परन्तु उसका पूजन का एक ही मार्ग है, एक ही उसका वृत कहलाता है। एक ही क्रियाकलाप है, मानो देखो, उसे हमें जान लेना चाहिए। शेष वार्ता तो हम इस सम्बन्ध में, कल ही प्रकट करेंगें। आज का विचार तो केवल यह उच्चारण कररहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए ऊर्ज्वा कहां से मानो हम यहां सर्वांग पूजा करते हैं देखो, ऋषि-मुनियों का यह कथन है, प्रह्लाण और शिल्क मुनि इत्यादियों ने अपना-अपना यह विचार दिया। परन्तु देखो, वह समाधिष्ट होना ही, ऊर्ज्वा को प्राप्त करना है उसमें आत्मबल की प्राप्ति होती है और यह जो मानवीय प्रवृत्ति है यह मानो व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश हो जाती है और समष्टि से हमें ऊर्ज्वा प्राप्त होती है, शक्ति प्राप्त होती है। वह कैसे? मानो जितना व्यापक विचार होगा, उतना हीमानव देखो, महान और ऊर्ज्वा वाला होगा। मुनिवरों! देखो, इसी प्रकार, हमें, मानो देखो, बाह्य जगत में सर्वांग पूजा इस याग से ऊर्ज्वा प्राप्त होती है इसके सम्बन्ध में चर्चा देखो, इससे पूर्व काल में हमने कई काल में की है। आज भी मुनिवरों! देखो, यह वार्ता प्रकट करते दो प्रहर समय हो गया। ऊर्ज्वा के सम्बन्ध में शेष चर्चाएं कल प्रकट करेंगें।

आज का विचार-विनिमय क्या? हम अपने में बेटा! महान बनना चाहते हैं तो हम ऊर्ज्वा को एकत्रित करके उसको जानने वाले बनें। अपने में मौन रह कर के मन और प्राण का एक सूत्र बना करके बेटा! उसमें रमण करते चले जाएं। मानो देखो, वह ऊर्ज्वा का केन्द्र है। ऊर्ज्वा मानो सर्वत्र ओत-प्रोत है द्यौ में है, तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड में है।

**याग एक सर्वांग पूजा**

मेरे प्यारे! द्यौ किसे कहते हैं मुनिवरों! पृथ्वी और अन्तरिक्ष के मध्य में हैं, उसे द्यौ कहते हैं, उसी में तो परमाणु भ्रमण करता रहता है, तो बेटा यह वाक्य अब हमारा समाप्त। अब मुझे समय मिलेगा, तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें। आज का विचार यह कहता है कि वे परमपिता परमात्मा वरणीय ऊर्ज्वा वाला है। उस ऊर्ज्वा को हम प्रभु को प्राप्त कर जाएं तो सर्वांग ऊर्ज्वा हमें प्राप्त होने लगती है आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा। श्री देवराज अबरोल-के-३, लाजपत नगर नई दिल्ली।

# २० ओत-प्रोत की चर्चाएं- अतिथि-०१५

जीते रहो! देखो, मुनिवरों!, आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है मानो जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में मानो वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान की चर्चाएं करता रहता है अथवा उसका उद्गीत गाता रहता है। जब हम ये विचारने लगते हैं कि सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में मानो एक चेतना अपना क्रियाकलाप कर रही है और वह प्रभु भी चैतन्यवत् माने गएं हैं, जैसे आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में नाना प्रकार का एक शोभनीय और विचित्रताएं आ रही थीं। क्योंकि इस ब्रह्माण्ड को मापने वाले परम्परागतों से ही, बेटा! इसको मापने में अपने जीवन को समाप्त कर देते हैं।

## ऋषि मुनियों का जीवन

मुझे बहुत से ऋषि-मुनियों का जीवन स्मरण आता रहता है, जिन ऋषि-मुनियों ने मानो एक-एक श्वास पर श्वास जो भी क्रिया हो रही है। उसमें एक महान प्रभु की प्रतिभा में उसको पिरोने लगा है। मानो वह अपने श्वास को ब्रह्म सूत्र में पिरो देता है। जब वह ब्रह्म सूत्र में पिरो देता है, तो ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है। क्योंकि प्रत्येक मानव उस महान देव की आराधना में लगा हुआ है। जिस देव ने बेटा! इस ब्रह्माण्ड और मानो जीवन की ऊर्ध्वा में कल्पना की है। अथवा ऊर्ध्वा में रचने के लिए वह तत्पर रहे हैं। तो मानव जिस मेरे देव ने ये मानवीय शरीर और ब्रह्माण्ड की रचना की है। मानो एक-एक अणु मात्र में एक-एक परमाणु मात्र में बेटा! ब्रह्माण्ड का चित्र ब्रह्माण्ड की प्रतिभा दृष्टिपात आती रहती है। तो मानो देखो, उस प्रभु के सम्बन्ध में उस मान देव के सम्बन्ध में परम्परागतों से ही, मानव बेटा! अनुसन्धान करता रहा है। अथवा अनुष्ठान भी करता रहा है। अनुष्ठान उसे कहते हैं जो मानव एक अपनी प्रतिक्रिया में रत्त रहना चाहता है। मानो उसके अन्तिम सूत्र में प्रवेश करना चाहता है। जैसे बेटा! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया मानो बेटा! यहां एक समय श्वेत्ता-श्वेतर ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी कवन्धि बेटा! एक समय अपने में यह निर्णय करने लगे अथवा अनुष्ठान करने लगे कि हम अपनी वाणी को पवित्र बनाना चाहते हैं। परन्तु वाणी में सत्यवाद लाने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहते हैं। क्योंकि वह परब्रह्म परमात्मा सत्य है, और सत्य को ही हम अपने में अपनाते हुए सत्य ही बनना चाहते हैं। परन्तु देखो, बहुत समय तब अनुष्ठान किया और वो सत्य की आभा में रत्त हो गये, वाणी तेजोमयी बन गयी। परन्तु देखो, आज मैं बेटा तुम्हें ऋषि-मुनियों के अनुष्ठानों मंग ले जाना नही चाहता हूँ।

आज मैं बेटा तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जिस क्षेत्र की चर्चाएं बेटा हम कई समय से उसका उद्घोष करते रहे हैं। मानो कई समय हो गएं हैं। एक ही मानो देखो, एकोकीकरण में लगे हुए हैं। परमपिता परमात्मा के अनन्य चरण है। परन्तु हम एकोकीकरण की चर्चा कर रहे हैं। वो ओत-प्रोत वाली चर्चाएं हैं। जो प्रतिष्ठा की चर्चाएं हैं। मानो हमारे यहां परम्परागतों से होती रहती हैं, और उसका उद्घोष भी हम करते रहते हैं। परन्तु आज का हमारा वेद का मन्त्र सूर्य चन्द्र मसौ जलौ देवो वाचन नमः अग्ना। मेरे प्यारे! देखो, सूर्य चन्द्रमा एक आभा में जो अपना प्रकाश देते रहते हैं। जैसे वेद का प्रकाश मानव के अन्तःकरण में प्रकाश में रत्त होने वाला है। इसी प्रकार बाह्य जो प्रकाश है। मानो वो चन्द्रमा और सूर्य प्रकाश का द्यौतक कहलाते हैं। मानो जैसे वैदिक ज्ञान में रत्त हो जाते हैं। तो मानो बाह्य और आन्तरिक जगत में प्रकाश आ जाता है। क्योंकि वेदाः प्रकाशाम् रथत्वम्

जवनम् देवाः वह मानव देखो, वेद प्रकाश का कुंज है। वेद को हमारे यहां प्रकाश कहा जाता है। वेदान्तारिको जगत्याम् वो आन्तरिक जगत को प्रकाशित करने वाला है। मानो वो प्रकाश में लाता रहता है। तो इसीलिए हमारे यहां वेद के ऊपर परम्परागतों से ही, बेटा देखो, प्रत्येक मानव अनुसन्धान करता रहता है। अथवा अन्वेषण करता रहता है। उसी वेद के विचारक प्राणियों में बेटा! कोई आचार्य बन रह है। तो कोई ब्रह्मचरिष्यामि बन रहा है। बेटा! आचार्य जब मानव को प्रकाश में ले जाता है, ब्रह्मचारी को प्रकाशित कर देता है। तो वो ब्रह्मचारी ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है। परन्तु जब वह आचार्य के चरणों में विद्यमान हो करके मानवीय दर्शन की चर्चा करता रहता है, और मानवीय दर्शनों में लाने के लिए सदैव तत्पर रहता है। मेरे प्यारे! हमारे ऋषि मुनि मानो देखो, एक शून्य बिन्दु तक विकास से शून्य बिन्दु तक मानो एक आभा को ले जाते हैं और शून्य बिन्दु से अग्रणीय बन करके बेटा! विकासवाद की चर्चा कर रहा है। वेद का मन्त्र कहता है वेद मन्त्रों में यही विशेषता मानी गई है।

बेटा! मुझे एक वेदमन्त्र मुझे स्मरण आ रहा है, वेदमन्त्र कहता है सूर्याणि ब्रह्म वाचो देवम् जहाम् सन्तमम् वाचन ब्रहे एको वसी असुति रूद्राः मेरे प्यारे! देखो, ये वेदमन्त्र यह कहता है कि क्या सम्भो देवा ब्रह्मा क्योंकि शून्य बिन्दु से शून्य बिन्दु की भी कोई प्रतिष्ठा का प्रसंग हमारे आचार्यों ने माना है। जैसे बेटा देखो, मानव अपनी वाणी को सत्यता में ले जाता है, और सत्य को मानो सत्य बनकर द्वन्द्व में परिणत कर देता है। इसी प्रकार अपने में रत्त होता रहता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ। जैसे बेटा महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ये चर्चाएं कि क्या मानो देखो, ये शून्य बिन्दु में वायु और ब्रह्माण्ड मानो परिणत हो जाता है, अथवा उसमें पिरोया जाता है। इसी प्रकार अबभ्रो उदय ब्रह्मा मानो तेजोमयी देवयाः अस्सुतम तेजाः मेरे प्यरे वह जो ब्रह्म का तेज है। जब वो शून्य बिन्दु में तेज की प्रतिभा का जन्म होता है। वो मानो एक-एक तेज कहीं का कहीं अपनी-अपनी प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता है।

तो मेरे प्यारे! चाक्राणी गार्गी ने महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से यह कहा कि प्रभु! ये ब्रह्मवेत्ताओं का समाज है, ये मानो ऊंची-ऊंची उड़ान उड़ने वाले यहां देखो, अर्धभाग जैसे ऋषि और महात्मा दिग्ध जैसे मानो तार्किक यहां विद्यमान हैं। मैं ये जानना और चाहती हूँ भगवन! क्या जैसे अपने मानो अन्तरिक्ष को शून्य बिन्दु में प्रवेश होने के लिए कहा है, इसमें ओत-प्रोत होने के लिए आपने अपना मन्तव्य प्रकट किया है। परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ, क्या यह जो महतत्व है, इसका भी तो कोई न कोई मानो सूत्र है, ये किसमें प्रतिष्ठित हो जाता है? तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह वाक्य श्रवण किया तो चाक्राणी गार्गी से बोले हे देवी! ये जो महतत्व है। इनकी प्रतिष्ठा ये चन्द्रलोक माने गएं हैं। जैसे आज का हमारा वेदमन्त्र कह रहा था। ये चन्द्रलोक मानो देखो, उसकी प्रतिष्ठा कहलाते हैं। उसका गुणगान गाने लगते है। उसकी महती का वर्णन करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, ये जो चन्द्रमा है, ये सोम की वृष्टि करने वाला है। ये सोम को देने वाला है। सोम की वृष्टि करता हुआ मानव को आनन्दित करता रहता है। मानो ये जो पृथ्वी है। इसमें नाना प्रकार के व्यंजनों का जो प्रादुर्भाव करता है। वो मानो देखो, यह चन्द्रमा माना गया है। ये चन्द्रमा मेरे प्यारे! देखो, प्रति अमावस्य से ले करके मानो देखो, ये प्रकाश में आना प्रारम्भ होता है। एक पदा-द्विपदा, चतुष्पदा और पन्द्रह पदाओं तक मुनिवरों! देखो, ये पूर्ण रूपेण बन जाता है और ये मानो समुद्रों से जलों को अपने में सिंचन करने लगता है। वही जल मुनिवरों! देखो, वह उसीजल को मुनिवरों! देखो, पूर्णिमा के दिवस पूर्ण हो करके मानो देखो, एक पदा, द्विपदा और चतुष्पदा मुनिवरों! देखो, इसकी कलाएं मानो देखो, सूक्ष्म होती रहती है। यह मानो देखो, अपनी कलाएं मानो देखो, बखेरता रहता है। मानो देखो, हेमन्त ऋतु में शीतलता को बखेरता रहता है, और वह पृथ्वी में नाना प्रकार के मानो देखो, पंच महाभूतों को

अपनी आभा में परिणत करने लगता है। अपनी आभा को उसमें निहित कर देता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है, वेद का क्या मानो देखो, अमावस्य का एक दिवस ऐसा आता है। जिसमें एक भी कला चन्द्रमा में नही रहती मानो ये सुषुप्ति में चला जाता है। ये शून्य आभा में परिणत हो जाता है। इसलिए शून्य को अपने में यह धारण कर लेता है। ये स्वयं शून्यवत बन जाता है। मेरे प्यारे! जैसे ही मानो देखो, अमावस्य का प्रारम्भ हुआ तो प्रतिपदा आ गई। तो एक कला सूर्य की, चन्द्रमा की उदय हो गई और द्वितीय और पन्द्रह कलाओं का बेटा यह चन्द्रमा कहलाता है। बेटा इसी से हमारे यहां कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष बनते हैं। मेरे पुत्रों! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था क्या मुनिवरों! देखो, शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष इसी आभा को ले ककरे मानो देखो, ये अपनी आभा में निहित हो जाते हैं, मानो देखो, ये चन्द्रमा सम्पन्न कलाओं से युक्त हो करके मानो अमृत को बखेरता रहता है।

मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी गार्गी मौन नहीं रही। चाक्राणी ने कहा प्रभु! ये व्याख्या तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे कराते रहते थे। मैं मानो देखो, जैसा भ्रमण किया तो मुझे ये वाक्य प्राप्त हुआ मैं यह जानना चाहती हूँ, ये जो चन्द्रलोक हैं, इनकी प्रतिष्ठा क्या है, ये किसमें ओत-प्रोत हो जाते हैं? तो मानो देखो, बेटा ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि बोले देवी! ये जो चन्द्रमा हैं, इनकी प्रतिष्ठा ये सूर्यलोक माने गएं हैं, अथवा सूर्य मण्डल माने गएं हैं। जब मानो देखो, इसी से यह सहायता लेता रहता है, और प्रतिपदा एक पदा, द्विपदा, चतुष्पदा इसी प्रकार पदों में अपने को मानो देखो, चन्द्रमा से ये चन्द्रमा सूर्य से प्रकाश ले करके धीमा-धीमा प्रकाश ले करके बेटा! अपनी कलाओं से पूर्ण हो जाता है। अपनी कला घटित हो जाता है। इसी प्रकार ये जो चन्द्रमा है। ये सूर्य में ओत-प्रोत हो जाता है। ये सूर्य प्रकाश के देने वाला है। वेद का ऋषि बेटा! सूर्य को इसीलिए मुनिवरों! देखो, उसको अदिति कहते हैं। ये सूर्य अदिति है। ये भास्कर है। मानो यही मुनिवरों! देखो, वृत कहलाता है। ये सूर्य उदयन कहलाता है, अदिति कहलाता है। भिन्न-भिन्न रूपों से बेटा! इसका नामोकरण किया गया है। मानो देखो, इसी को वामन कहते हैं। प्रातःकाल में बेटा! जब यह सूर्य उदय होता है। तो अपना पूर्णरूपेण प्रकाश को ले करके मानो देखो, यह पावन बन करके आता है। मानो देखो, उषा और कान्ति दोनों किरणों के साथ इस मानो रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता है। बेटा! रात्रि को कौन धारण कर रहा है? रात्रि को मुनिवरों! देखो, वह रात्रि को ये सूर्य की जो उषा और कान्ता किरणे हैं। मानो यह अपने में धारण कर लेती हैं। अन्धकार को और प्रकाश को देना प्रारम्भ करती हैं। जिससे मुनिवरों! देखो, संसार का ये जनजीवन पवित्र बनने लगता है, अथवा प्रकाश में आना प्रारम्भ हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ये जो सूर्य है, ये अनुपम है, ये मानो देखो, प्रकाश के देने वाला है। मेरे प्यारे! जब सूर्य की विवेचना होने लगती है। तो यही जलों का उत्थान करके ये वृष्टि करने वाला है। इसको वैदिक आचार्यों ने बेटा इसको उर्वासित कहा है। ये उर्णातित बन ककरे प्रकाश के देने वाला है। ये द्यौ से प्रकाश लेता है। संसार में अपनी ऊर्ज्वा से मानो देखो, संसार को ऊर्ज्वा से तपाता है। यही सूर्य है, जो प्रकाशक है, प्रकाश के देने वाला है, अंधकार को अपने में धारण करने वाला है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव को सूर्य के सदृश बनना चाहिए। अन्धकार को शान्त करना और प्रकाश को लाना और अज्ञान को मुनिवरों! देखो, नष्ट करना और आभा में परिणत होना है। तो विचार-विनिमय क्या ये जो यह सूर्य है बेटा! इसी से यह सवंत्सर बनते हैं। इस सूर्य से ही मुनिवरों! देखो, उतरायण और दक्षिणायन बना करते हैं, मेरे प्यारे! देखो, जो यह सूर्य से प्रकाश ले करके प्राण सूत्र में अपने को पिरो देता है। तो मुनिवरों! देखो, सदैव उतरायण में रहता है, और इसके प्रकाश से वंचित हो जाता है। इसके प्रकाश से अप्रकाशित हो जाता है, तो मेरे प्यारे! सदैव दक्षिणायन में रहता है, अंधकार में रहता है, अज्ञान में रहता है। इसीलिए मुनिवरों! देखो, प्रत्येक मानव को अपने जीवन को उत्तरायण बना लेना चाहिए।

## याग एक सर्वांग पूजा

मैंने कई काल में तुम्हें ये चर्चाएं की क्या छह माह तक ये सूर्य उतरायण में रहता है, और छह माह तक यह दक्षिणायन में रहता है। मानो देखो, जो तपस्वी प्राणी होते हैं। जो परमात्मा का चिन्तन करने वाले ज्ञान और विन में रत्त हो जाते हैं। वे अपने जीवन को बेटा! उतरायण में ले जाते हैं। जहां इस बाह्य जगत में प्रकाश का प्रसंग आता है, क्या ये जो जगत ये प्रकाश बाह्यजगत में प्रकाश लाने वाला बेटा देखो, दो पक्ष बन जाते हैं। मानो छः-छः माह के दो पक्ष बन जाते हैं। जब इन्हीं पक्षों को आन्तरिक जगत में ये मानव ले जाता है, ज्ञान और विवेक के क्षेत्रों में प्रवेश हो जाता है। तो बेटा! देखो, यह उतरायण बन जाता है। तो विचार-विनिमय क्या आज मैं कोई विशेष इस सम्बन्ध में चर्चा नही करने वाला हूँ। विचार केवल ये देने के लिए आया हूँ। मेरे प्यारे! देखो, ये सूर्य प्रकाशक है। मानो देखो, चन्द्रमा इसी में प्रतिष्ठित हो जाता है।

## सूर्य की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब ऐसा वर्णन किया तो चाक्राणी गार्गी उपस्थित होकर के बोली कि प्रभु! मैं ये जानना चाहती हूँ। क्या ये जो सूर्य है, ये किसमें प्रतिष्ठित हो जाता है, इसका भी तो कोई सूत्र है? उन्होंने कहा इसका एक सूत्र है मानो उसे गन्धर्व कहते हैं। जो गान गाता है, गन्धर्व उसे कहते हैं, जो उद्घोष करता है। गन्धर्व उसे कहते हैं मुनिवरों! देखो, जो संसार की धुरी बन करके रहता है। मेरे प्यारे! देखो, गन्धर्व गायक को कहते हैं। परन्तु गन्धर्व प्राण को कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है। एक समय बेटा देखो, महात्मा दधीचि से अश्वनी कुमारों ने यह कहा कि महाराज! ये गन्धर्व क्या है? उन्होंने कहा गन्धर्व नाम की एक देखो, हिमालयों में एक बूटी भी कहलाती है। जिसे हमारे यहां गन्धर्व कहते हैं। मानो देखो, द्वितीय रूप में जो गन्धर्व है, वह एक लोक कहलाता है। जो मानो सौर मण्डलों का एक अधिपति कहलाता है। मानो देखो, जब एक दूसरे में ये लोक ओत-प्रोत होते हुए दृष्टिपात आयेंगें तो उनमें मानो एक गन्धर्व भी कहलाता है। मानो देखो, प्रतिष्ठित रहता है, लोकों का स्वामी कहलाता है। जैसा मुनिवरों! देखो, हमारे यहां ये पृथ्वी सूर्य में और सूर्य मुनिवरों! देखो, इस महा मानो देखो, सूर्य इस बृहस्पति में और बृहस्पति मानो देखो, आरुणि में ओर आरुणि मुनिवरों! देखो, अस्सुतो ब्रह्मा अस्सुतम मानो ध्रुव में और ध्रुव मुनिवरों! देखो, इस मानो स्वाति में स्वाति मूल में और मूल मुनिवरों! देखो, रेणकेतु में और रेणकेतु कृतिभा में और कृतिभा मुनिवरों! देखो, यह अचल मण्डल में और अचल मण्डल मुनिवरों! देखो, त्रिकाट में और त्रिकाट मण्डल मुनिवरों! देखो, गन्धर्व में समाहित हो जाता है।

मेरे प्यारे! तुम्हें यह वाक्य पूर्वकाल में भी मैंने प्रकट किया था। आज और किए देता हूँ। क्या बेटा देखो, तीस लाख पृथ्वियां जैसा हमारा यह पृथ्वी मण्डल है, ऐसी तीस लाख पृथ्वियां सूर्य में एक सहस्र सूर्य बृहस्पति में और एक सहस्र बृहस्पति आरुणि में और एक सहस्र आरुणि देखो, ध्रुव में एक सहस्र ध्रुव मुनिवरों! देखो, वह स्वाति में एक सहस्र स्वाति देखो, मूल में और एक स्हस्र मूल अश्वेत्तों में और एक सहस्र आरुणि मण्डल देखो, अचंग में और एक सहस्र अचंग क्रुट में और एक सहस्र क्रुट मण्डल मानो गन्धर्व में ओत-प्रोत हो जाते हैं। तो इतना यह विशाल मण्डल है। बेटा प्रभु का मानो देखो, अनन्तता में रहता है, और एक मानो देखो, मुनिवरों! देखो, यह जो गन्धर्व है यह सब मानो देखो, इतने मण्डलों का बन करके एक सौर मण्डल बनता है। और सौर मण्डल में बेटा! मानो देखो, एक गन्धर्व है, और गन्धर्व में मेरे प्यारे! जब गणना की जाती है। तो एक समय बेटा देखो, गन्धर्व लोकों की गणना करने लगे तो एक आकाश गंगा में उन्होंने बेटा! एक करोड़ पच्चीस लाख उनन्चस हजार पांच सौ बावन तो मेरे प्यारे! देखो, इतने मण्डलों की चर्चा इतने गन्धर्वां की चर्चा करने के प्श्चात मानम् ब्रह्म वाचो देवाः ऐसा मानो देखो,एक आकाश गंगा में, गन्धर्व दृष्टिपात हुए। इतने सौर मण्डल कहलाते हैं। और ऐसी-ऐसी मानो देखो, तैंतालीस हजार आकाश गंगाएं बेटा एक निहारिका में समाहित हो जाती हैं। तो मेरे प्यारे! ये कैसा

## याग एक सर्वांग पूजा

अनुपम मेरे देव का ये ब्रह्माण्ड है। आज मैं इस ब्रह्माण्ड की मानो आभा में जाना नही चाहता हूँ। विचार-विनिमय केवल ये है, क्या मुनिवरों! देखो, अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है।

### गन्धर्व की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, जब महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराजा ने जब यह निर्णय दिया तो चाक्राणी उपस्थित हो करके बोली हे प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ, ये गन्धर्व किस में प्रतिष्ठित हो जाते हैं? उन्होंने कहा कि ये गन्धर्व जो मण्डल है, ये इन्द्र लोकों में प्रतिष्ठित हो जाते हैं ये इन्द्रों भवा सम्भवा देवा ब्रह्म वाचाः मानो ये जो इन्द्र लोक है, इन्द्र मण्डल हैं ये इनमें गन्धर्व भी समाहित हो जाते हैं, अपनी आभा में रत्त हो जाते हैं। मानो ये जो इन्द्र है, हमारे वैदिक साहित्य में नाना पर्यायवाची शब्दों की विवेचना आती रहती है। जैसे हमारे यहां इन्द्र नाम बेटा! सूर्य को कहा गया है। परमपिता परमात्मा को इन्द्र कहते हैं। इन्द्र नाम राजा का है। मानो देखो, इन्द्र नाम विद्युत का माना गया है। ये इन्द्र के बहुत से पर्यार्यवाची शब्द हैं। परन्तु यहां प्रकरण से मानो इन्द्र नाम बेटा! विद्युत को माना है। क्योंकि विद्युत में यह सब समाहित रहते हैं।

### इन्द्र लोक की प्रतिष्ठा

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब ऐसा वर्णन किया तो चाक्राणी गार्गी बोली प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ। ये क्या ये इन्द्र लोक किसमें प्रतिष्ठित हो जातो हैं, इनका भी तो कोई सूत्र है? तो ऋषि ने कहा कि ये जो इन्द्र है, ये प्रजापति में ओत-प्रोत हो जाते हैं। प्रजपाति की अभ्योदय होने वाला है। ये ही बेटा! नाना प्रकार के व्यंजनों के रूप में दृष्टिपात आता रहता है, ये मंगलम् ब्रह्म वाचाः वाचो नमन् ब्रह्म वाचो मानो देखो, यह जो प्रजापति है, जो प्रजा की उत्पति करने वाला है। प्रजा को मानो प्रजा के अपने को प्रजा के रूप में ही दृष्टिपात करने वाला है। यह अभ्योदय कहलाता है। ये मानो गन्धर्व अस्सुताम् सम्भविते देवा इन्द्राः ये सब इसमें समाहित हो जातो हैं।

### प्रजापति की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि से देवी ने कहा चाक्राणी ने प्रभु मैं यह जानना और चाहती हूँ, क्या भगवन! ये प्रजापति किसमें प्रतिष्ठित हो जाता है? इस प्रजापति का भी कोई सूत्र है? तो ऋषि ने कहा कि ये याग में प्रतिष्ठत हो जाता है। मानो देखो, प्रजापति याग में रहता है। ये यज्ञम भविता देवाम् ब्रह्मलोकाम् हिरण्यव्रथाः बेटा! जितना भी मानव का सुसंकल्प है, सुक्रिया है, वो सर्वत्र मानो देखो, एक यज्ञ रूप माना गया है। ये ब्रह्माण्ड एक प्रकार से यज्ञोमयी रत्त रहने वाला है, ये यज्ञमयी स्वरूप कहलाता है। तो मेरे प्यारे! ये जो याग है इसमें बेटा! प्रजापति निहित रहता है। क्योंकि वो यज्ञम् भविता वो याग कहलाने वाला है, एक याग मानो यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके वह अग्न्याधान कर रहा है। वह मानो देखो, वैश्वानर नाम की अग्नि को प्रदीप्त कर रहा है। एक मानव देखो, गृह में रहने वाला यह गार्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन कर रहा है। मानो एक ब्रह्मचारी विद्यालय में अध्ययन कर रहा है। वो गार्हपथ्य नाम की अग्नि का चयन कर रहा है। मानो देखो, अग्नि वृत्तिका कहलाती है। जो भयंकर वनों में मानो देखो, अपने आप प्रदीप्त हो जाती है। नाना प्रकार का यह जो मानो देखो, याग हो रहा है, एक मेरी प्यारी माता अपने बाल को अपनी लोरियों का पान कराती हुई मानो ब्रह्मवेत्ता बना रही है। बेटा वो सब याग के रूपों परिणत रहता है। ये सब याग कहलाता है। एक राजा अपने राष्ट्र को मानो पवित्र बनाना चाहता है, वह अश्वमेध याग कर रहा है वह अश्वमेध याग करके मुनिवरों! वह प्रजा को और अपने को एक सूत्र में दृष्टिपात करना चाहता है।

### याग की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! अब्रहे वाचम् व्रचत ब्रह्मवाचाः मानो याज्ञवल्क्य इतना कह करके मौन हो गये। परन्तु चाक्राणी

**याग एक सर्वांग पूजा**

गार्गी ने कहा हे प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ कि यज्ञ की प्रतिष्ठा क्या है, ये याग किसमें प्रतिष्ठित हो जाता है? उन्होंने कहा-देवी! ये जो याग है, ये दक्षिणा में प्रतिष्ठित हो जाता है। ये दक्षिणा में प्रतिष्ठित हो जाता है। परन्तु दक्षिणा के भिन्न-भिन्न स्वरूप माने गएं हैं। वेद का वाक्य तो यह कहता है कि क्या यज्ञमान अपने पुरोहित को दक्षिणा प्रदान करता है। प्रभु! मेरे हृदय में जो नाना प्रकार की त्रुटियां हैं, इन्हें आप अपने में अर्पित कर लिजीए मानो इसे मैं आपको दक्षिणा में अर्पित करना चाहता हूँ। मानो देखो, उस समय वह पुरोहित वह ब्रह्मवेत्ता तपा हुआ मानो देखो, ब्रह्मज्ञान में वह उनकी त्रुटियां का शोधन कर देता है। मानो द्रव्य देना तो वह उसके उदर की पूर्ति का है। परन्तु दक्षिणा का अभिप्राय क्या एक दूसरे की त्रुटियां बेटा! समाप्त हो जाएं। याग में तो वह याग दक्षिणा कहलाती है। मुनिवरों! देखो, दक्षिणा में ओत-प्रोत होने वाला, अभ्योदय होने वाला एक उद्गीत कहलाता है।

**दक्षिणा की प्रतिष्ठा**

मेरे प्यारे! जैसा उन्होंने ये कहा तो चाक्राणी मौन नही रह सकी। उन्होंने कहा प्रभु! यह जो दक्षिणा हे ये किसमें ओत-प्रोत हो जाती है? उन्होंने कहा-देवी! यह जो दक्षिणा है, ये श्रद्धा में रहती है। मानो देखो, ये श्रद्धा में ओत-प्रोत होने वाली है, ये श्रद्धा से सर्वत्र जगत अपने में मानो प्रकाशित हो रहा है। जितना भी कुटुम्ब बनता है, परिवार बनता है, मानो वो सब श्रद्धा से बनता है। माता है, पिता है, पुत्री है, राजा है, प्रजा है मानो यह ब्रह्माण्ड है परमपिता परमात्मा ये सब एक श्रद्धा में ही ओत-प्रोत होने वाली प्रतिभा कहलाती है। ये श्रद्धा में दक्षिणा रहती है, और मानो हमें श्रद्धावान बन करके इस सागर से पार होना है।

**श्रद्धा की प्रतिष्ठा**

मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी गार्गी बोली प्रभु! यह जो श्रद्धा है इसकी प्रतिष्ठा क्या है? उन्होंने कहा-देवी! ये जो श्रद्धा है। ये मानव के हृदय में जन्म लेती है। मानो देखो, हृदय में समाहित हो रहती है। मानव का जो हृदय है, इसका समन्वय परमपिता परमात्मा के हृदय से रहता है। इसीलिए मानो देखो, दोनों हृदयों का जब समावेश हो जाता है, एकोकीकरण हो जाता है। तो मानव की मुक्ति हो जाती है, यह मोक्ष में परिणत हो जाता है। मानो देखो, एकोकीकरण में प्रवेश होना है।

मेरे प्यारे! देखो गार्गी कुछ उच्चारण करने वाली थी तो इतने में याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि हे देवी! यदि तुम अति प्रश्न करोगी तो तुम्हारा ये मस्तिष्क नीचे गिर जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी मौन हो गई और उन्होंने कहा ये आखिर में अप्रतो ब्रह्मा मानो बेटा! देखो, प्रश्नकर्त्ता जब बुद्धिमान से प्रश्न करता ही रहता है, ब्रह्मवेत्ता से जब मुनिवरों! देखो, परमात्मा का हृदय और मानव का हृदय दोनों का समावेश हो करके इन्द्रियां मौन हो जाती हैं, और जब इन्द्रियों का विषय मौन हो जाता है। तो उस समय बेटा! प्रश्नकर्त्ता को अभिमान हो जाता है, क्योंकि वो उतर नही दे पाता। उतर तो समावेश हो गया है। परन्तु प्रश्नकर्त्ता को अभिमान आ जाएगा और अभिमान ही संसार में मृत्यु मानी गई है। तो मुनिवरों! देखो, चाक्रार्णी अन्त में मौन हो गई और ऋषि ने ये कहा कि हे देवी! ये जो हृदय है, इसमें संसार में मृत्यु मानी गई है। बेटा! देखो, यही मानव को मृत्यु को प्राप्त हो जाना अभिमान आ जाना है। तो मुनिवरों! देखो, चाक्रार्णी अन्त में मौन हो गई और ऋषि ने कहा कि हे देवी! ये जो हृदय है, इसमें संसार समाहित हो रहा है। हृदय में समाहित हो जाता है। मानो श्रोत्रों से नाना प्रकार के शब्दों को लाता है, यह भी हृदय में समाहित हो जाता है। बेटा नाना प्रकार के रस रसना स्वादन लाता है, रसों को लाता है। वो भी सब रस हृदय में समाहित हो जाते हैं। मानो देखो, जब बेटा! नाना प्रकार की प्रीति ला करके वह भी हृदय में समाहित हो जाते हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, हृदय मानो सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान का बेटा! कुंज कहलाता है। मानो ज्ञान और विज्ञान उसी में समहित हो जाता है। मानो देखो, पंचीकरण एक ज्ञान कहलाता है। पंचीकरण ही बेटा देखो, इस

**याग एक सर्वांग पूजा**

संसार में हमारी इन्द्रियां कहलाती हैं। इनका जो विषय है। जो बाह्यजगत और आन्तरिक जगत दोनों का समन्वय करता है, दोनों का मिलान करता है।

विचार क्या है मेरे पुत्रों! मानो याज्ञवल्क्य मुनि महराज बेटा इतना कह करके मानव का हृदय, परमात्मा का हृदय जब दोनों समावेश हो जाते हैं, तो मानव बेटा इस संसार को जान करके इस ब्रह्माण्ड को जान करके परमात्मा की गोद में प्राप्त हो जाता है। मानव उसकी आनन्दमयी लोरियों का पान करने लगता है। उसके मानो आनन्द में वो प्रवेश हो जाता है। तो मेरे प्यारे! इतना उच्चारण करते हुए याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा मौन हो गये। मेरे प्यारे! देखो, हृदय, हृदय से श्रद्धा, श्रद्धा से दक्षिणा, दक्षिणा से याग और याग से प्रजापति और प्रजापति से इन्द्र इन्द्र से गन्धर्व और गन्धर्व से सूर्य और सूर्य से मुनिवरों! देखो, चन्द्रमा ये मानो देखो, मनके हैं। एक ही सूत्र के बेटा एक मनके हैं, और यह मनके भी सूत्र में पिरो करके बेटा भक्तजन मानो इनकी माला बन जाती है। इतने मनकों को ले करके बेटा शून्य तो मानो देखो, विकास शून्य में और शून्य विकास में ये ही बेटा सर्वत्र जगत कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो, जैसा मैंने कितने मनकों की गणाना करायी कल भी इससे पूर्वकाल में मानो गणाना करायी। बेटा! जैसे मानव देखो, हृदय से ले करके हृदय श्रद्धा और दक्षिणा और दक्षिणा से देखो, याग, याग से प्रजापति, प्रजापति से इन्द्र और इन्द्र से गन्धर्व और गन्धर्व से सूर्य और सूर्य से चन्द्रमा और मुनिवरों! देखो, महतत्व महतत्व से उग्रगति मेरे प्यारे! अन्तरिक्ष वायु, अग्नि और अग्नि से जल और जल से मुनिवरों! देखो, ये पृथ्वी और ये पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म दे देती है। तो मेरे प्यारे! देखो, ये मैंने तुम्हें एक सूत्र के मनकों की चर्चाएं की हैं। मानव इस माला को ज्ञान और विवेकी जो पुरूष हैं। वे अपने कण्ठ में धारण करते हैं। अपने में ओत-प्रोत हो जाते हैं। ये है बेटा आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय ये क्या वह जो मेरा चैतन्य देव है। वह जो प्रभु है वह जो ब्रह्माण्ड नायक है, स्वामित्व करने वाला है, मानो देखो, वह जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत है, बेटा सब में वो ओत-प्रोत हो रहा है। ये है बेटा! एक दूसरे में ओत-प्रोत की चर्चाएं। एक दूसरे में बेटा कैसा ये संगतिकरण हो रहा है। इस संगतिकरण को ले करके मानव अपने को उद्बुद्ध करना चाहता है। ये है बेटा आज का वाक् समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा।

# २१ मण्डलों की माला 78-92-028

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते रहते हैं क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, और जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, तो मुनिवरों! इसी प्रकार वेद का मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। जिस गाथा को गाने के पश्चात मानव के जीवन में एक महानता का प्रदर्शन होता रहता है। और उसकी महान महती का वर्णन करना यह प्रायः हमारा कर्तव्य माना गया है। तो इसी प्रकार हमारा वेद का मन्त्र अपने में गाथा गाता रहता है। अथवा उसके गुणों का वर्णन करता रहता है। उसकी महती का वर्णन उसके ज्ञान और विज्ञान को उद्धधृत करते रहते हैं। जब हम वेदमन्त्रों की माला को अपने में धारण करने लगते हैं। तो बेटा! वह माला ही बन करके नही रह जाती वह हमारे जीवन का एक सूत्र बन करके रहती है। और हम उसके मनके बन जाते हैं। तो इसी प्रकार हम उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान की गाथा गाते रहते हैं। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र कुछ ऐसा वर्णन कर रहा है। तो मुनिवरों! देखो, माता का पुत्र माता की तो गाथा गा रहा है। माता का वर्णन कर रहा है, परन्तु यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। जब मैं ब्रह्माण्ड की चर्चा हम करने लगते हैं। तो बेटा! एक ऐसी माला हमारे समीप आती है। एक माला माला में परिणत हो रही है। जिन माला को अपने में धारण करने के पश्चात मानव उस माला का सूत्र बन जाता है। तो मुनिवरों! देखो, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक जितने भी विज्ञानवेत्ता हुए हैं। चाहे वह विज्ञान चाहे वह ज्ञान के आंगन में रमण करने वाले हो, चाहे वह विज्ञान की धाराओं में रत्त रहने वाले हो, चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञान में अपनी उड़ाने उड़ने वाले हों, परन्तु देखो, वह भौतिक विज्ञान एक ऐसा विज्ञान है। जिसके ऊपर मानव को अपने जीवन निर्धारित करना ही होता है। जैसा मुनिवरों! हमारा वेद का मन्त्र कहता है, आज भी हमारी उस वेद की माला का सूत्र हमें बेटा! यह वर्णन कर रहा है। तो आज मैं बेटा! देखो, जिस भी काल में वैज्ञानिकों के समीप हम विद्यमान होते हैं, और वैज्ञानिकों की वार्त्ता हमारे समीप आती है। तो मुनिवरों! देखो, एक विचित्र माला बन करके रहती है, और विज्ञानवेत्ताओं ने उसके ऊपर एक विशाल अन्वेषण किया है। और अनुसन्धान होता रहता है। परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र कुछ कह रहा है। देखो, विज्ञान के सम्बन्ध में हमने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था क्या जो वेदमन्त्रों के ऊपर अन्वेषण करने वाले हैं, अथवा अनुसन्धान करने वाले हैं। उनकी एक ही उपलब्धि रही है। वह दोनों प्रकार के ज्ञान और विज्ञान में रत्त होते रहे हैं। एक वह विज्ञान कहलाता है। जिसको हम भौतिक विज्ञान कहते हैं। अथवा भौतिकवाद कहते हैं, अणु और परमाणुओं का जगत कहते हैं। मेरे प्यारे! पुत्रों! एक विज्ञान जिसे हम आध्यात्मिक विज्ञान कहते हैं। परन्तु आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में अपने को स्वीकार करता है। और अपनी अन्तरात्मा में जो विज्ञान मानो देखो, उसी में वह रत्त हो जाता है। यदि संसार में आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता हुए हैं, वह मुनिवरों! देखो, भौतिक विज्ञान के मार्ग से हो करके मानो देखो, अपनी आत्मा की उपलब्धि कर सके हैं। आत्म विज्ञान को वह जान सकें हैं। बेटा! जब मुझे स्मरण आता रहता है, तो नाना प्रकार के ऋषि-मुनियों का समूह हमें स्मरण आने लगता है। भारद्वाज मुनि के यहां एक समय बेटा! एक सभा हुई और उनका मुनिवरों! देखो, एक भौतिक याग हुआ एक याग होता रहता था उनके यहां हमारे यहां भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चलन परम्परागतों से रहा है। जिसे हम ब्रह्मयाग कहते हैं। ब्रह्मयाग कहते हैं, कि ब्रह्म की कृतिका अथवा उसके विज्ञान को साकर रूप बनाना और

उसके ऊपर मनन और चिन्तन करना उसे ब्रह्मयाग कहते हैं। मेरे प्यारे! एक विज्ञानां ब्रह्रे एक मुनिवरों! देखो, भौतिक याग है, भौतिक याग उसे कहते हैं, जहां मानव देखो, संसार का क्रियाकलाप करता है। बाह्य जगत की उपलब्धियों में वह अपने को साकार बनाता है। और उन उपलब्धियों को भी साकार रूप देता रहता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार आज मुझे घनिष्टता में नही ले जा रहा हूँ। मैं उसी माला के मानो सूत्रों में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। जिन सूत्रों से यह पृथ्वी अपनी गाथा गाती रहती है। जैसे मुनिवरों! देखो, माता का पुत्र माता की गाथा गाता रहता है। और माता के गर्भस्थल में बेटा! उसका निर्माण हुआ है, और माता का निर्णय करने वाला पुत्र ही कहलाता है। और संसार की कोई वस्तु ऐसी नहीं जो माता को माता की संज्ञा प्रदान करने वाला हो, वह पुत्र ही ऐसा है, जो उसकी संज्ञा देता है, इसी प्रकार जब भौतिक विज्ञान या मानवीय क्षेत्रों में गति करते हैं, या विज्ञान की उपलब्धियों में जाते हैं, तो वह भोतप्रहा वह जो पृथ्वी पार्थिव तत्त्व है। मानो सबसे प्रथम उसके परमाणु में पार्थिकता में रत्त होता है, और पार्थिकता को जान करके मानो आगे विज्ञान की उपलब्धियां होती रहती हैं। जिस भी मानव ने अब तक सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक जो भी विज्ञानवेत्ता बना है, मानो चाहे वह इस पृथ्वी मण्डल पर रहने वाला हो, चाहे वह मंगल में वास करने वाला हो, चाहे वह बुद्ध में रहने वाला हो, किसी भी लोक-लोकान्तरों में क्यों न हो, परन्तु वह सबसे प्रथम भौतिक मानो इस पृथ्वी के परमाणुओं को ही गुरूतव को जानने के पश्चात आगे विज्ञान में वह गति करता रहता है। तो इसी प्रकार मानो मैं माला के उन सूत्रों की विवेचना तुम्हें प्रगट करने आया हूँ, कि जो माला मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन की है। ये माला मुझे बहुत प्रिय लगती है। मानो ये ऋषि-मुनियों की एक विशाल उपलब्धियां है। जो मानो वेद के वांगमय में उन्होंने जानने का प्रयास किया है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह माला का सबसे प्रथम तो मनका है, वह पार्थिव कहलाता है। परन्तु गुरूतव को सर्वत्र ही ब्रह्माण्ड में मानो लोक-लोकान्तरों में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहता है। परन्तु पृथ्वी के परमाणुओं को गुरूतव कहते है। मेरे प्यारे! वह गुरूतव आभा में रत्त रहने वाले हैं। तो उन्होंने गुरूतव को जानने का प्रयास किया, तो बेटा! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है। जब मैं भारद्वाज मुनि के विद्यालय में प्रवेश होता हूँ। महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के यहां बेटा! नाना प्रकार की धाराओं का जन्म होता रहा है। भारद्वाज मुनि के यहां बेटा! ये निर्णय होने लगा, विद्यालयों में ब्रह्मचारियों के आचार्यों के मध्य में नाना प्रकार के योगियों के सम्बन्ध में क्या विज्ञान की सबसे प्रथम जो उपलब्धियां हैं, या इस ब्रह्माण्ड की सबसे प्रथम वह मनका है। जो वह पार्थिव तत्त्व कहलाता है। गुरूतव रूप में वह हमें दृष्टिपात आने लगता है। तो मेरे पुत्रों! कुछ ऐसा स्मरण है मानो ऋषि-मुनियों ने ये निर्णय प्रसंग रूप में लायें मानो ये ब्रह्माण्ड ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा कैसे गा रही है। क्योंकि वेद का मन्त्र कहता है, ब्रह्माणं ब्रह्मा वर्णो सम्भवा लोकां वाचन्नमं ब्रह्मे कृत लोकां अभ्योदय प्रह्वा लोकां मेरे प्यारे! देखो, इस आभा में रत्त रहने वालों में मानो देखो, ऋषि अपनी-अपनी आभा प्रगट कर रहे थें, भारद्वाज मुनि महाराज ने ऋषियों को ये निर्णय कराया, क्या मेरे विचार में तो ये आ रहा है, क्या सम्भवा लोकां ब्रहे वाचन्नमं ब्रह्मा कृत लोकां मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अपनी आभा में नियुक्त होते हुए भारद्वाज मुनि ने कहा है, उन्होंने अपने उदगम मानो देखो, वाणी में व्रतता उन्होंने कहा है, क्या ये जो पृथ्वी ये जो ब्रह्माण्ड गाथां रूपां देवो ब्रह्मा वासं वली लोकां मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्माण्ड की ये गाथा रत्त हो रह है। अपनी आभा में वह गति करने वाली है। तो मानो देखो, हम उस आभा में सदैव अपने में रत्त रहना चाहते हैं। तो मेरे प्यारे! ऋषि कहते हैं, क्या ये मानव पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा कैसे गा रही है। उसको हम जानना चाहते हैं। तो मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने एक समय मुनिवरों! देखो, वेद की लोलुक्ति प्रगट की और वेद का मन्त्र उन्होंने विचार किया और वेदमन्त्र ये कहता था कि रेवं श्वमं ब्रह्मा पृथ्वी वाचन्नमं ब्रह्मा कृत लोकां गतं ब्रह्मा वाचाः मेरे प्यारे! देखो, ये वेद का

## याग एक सर्वांग पूजा

मन्त्र ये कह रहा है। क्या ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। बेटा! गाथा का अभिप्रायः क्या है। मानो उसको निर्णय करा रही है। अथवा ये उच्चारण कर रही है, अथवा ये उच्चारण कर रही है कि उसका कोई सूत्र उसका कोई ऊर्ध्व वृत्तियां हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, इसका निर्णय देने वाले महर्षि भारद्वाज मुनि ने बेटा! अपना वर्णन किया है उन्होंने अपनी आभा में रत्त रहने वालों ने बेटा! देखो, अपना-अपना निर्णय देते हुए उन्होंने कहा क्या ये पृथ्वी अपने में पूर्ण रूपाण वाचप्रह्रे अस्तु ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, वेद का मन्त्र ये कहता था क्या तीस लाख पृथ्वियां हैं। जो मानो देखो, एक माला के रूप में रहती है, और उन पृथ्वियों का यदि कोई मानो सूत्र है। तो वह सूर्य कहलाया जाता है। वह सूर्य उनका सूत्र कहलाया जाता है। मुनिवरों! देखो, तीस लाख पृथ्वियां सूर्य मण्डल में समाहित हो रही हैं। मानो उन्हें वह धारण कर रहा है, उन्हें वह माला बना करके अपने में मानो देखो, पिरो रहा है उन्हें ऊर्ज्वा दे रहा है। सत्ता प्रदान कर रहा है, मानो देखो, वही द्यौ से प्रकाश ले करके इनको प्रकाशित कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जब ये वाक् उन्होंने प्रगट किया वसु ब्रह्म वाचो देव ब्रह्मा मुनिवरों! देखो, जब ये वाक् उनके समीप आया तो आगे वर्णन करते हुए कहा क्या महाराज क्या इसके आगे भी कोई सूत्र है। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा क्या ये जो मानो देखो, ये जो सूर्य मण्डल है। एक सहस्त्र मानो देखो, अभ्योदय कहते हैं, मानो देखो, एक सहस्त्र सूर्य मण्डलों की माला बनती है। और उस माला को मानो देखो, बृहस्पति अपने में धारण कर रहा है। बेटा! बृहस्पति कितना विशाल मण्डल है। मानो कितनी विशालता को अपने में लिए हुए है। मानो देखो, एक सहस्त्र मण्डलों की माला बनी उस माला को मेरे प्यारे! देखो, कौन बृहस्पति अपने में धारण कर रहा है। अपने में पिरो रहा है, उन्हें मानो देखो, अपनी-अपनी ऊर्ज्वा दे करके उन्हें मानो देखो, शक्तिशाली बना रहा है। मेरे प्यारे! देखो, आगे ऋषियों ने आगे निर्णय दिया योगाभ्यास परिणात हो करके लघु मस्तिष्क में जाने के पश्चात ये निर्णय दिया क्या एक सहस्त्र मानो देखो, बृहस्पतियों की माला बनती है, और उस माला को आरुणि मण्डल अपने में धारण कर रहा है। आरुणि मण्डल मुनिवरों! देखो, अपने में धारण करता हुआ मानो देखो, वह एक मलं ब्रह्मा को अपने में धारण कर रहा है। वह एक विचित्र माला बन करके बेटा! वह एक लोक-लोकान्तर की भव्य माला बन जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, आगे वेद के ऋषियों ने निर्णय किया क्या एक सहस्त्र आरुणि मण्डलों की भी माला बनती है, और उस माला को ध्रुव मण्डल अपने को धारण कर रहा है। वह ध्रुव मण्डल उसको अपने में धारण करता हुआ उस माला को अपने में धारण करता हुआ मानो अपनी स्थलियों पर स्थिर रहने वाला है। वह ध्रुव है, वह मानो देखो, अस्तुतियों में रत्त रहने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, आगे वेद का आचार्य वेद के मन्त्र उद्धधृत करता हुआ कहता है। सम्भवं ब्रह्वे लोकां रत्त प्रही व्रतां बेटा! वेद का आचार्य कहता है कि एक सहस्त्र मानो ध्रुव मण्डलों की माला बन करके उसको मेरे प्यारे! मूल नक्षत्र अपने में धारण कर रहा है, अपने में पिरो रहा है। अपने में गृतियों को धारण करा रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वह कैसी विचित्र माला है। बेटा! जिस माला को धारण करने के पश्चात मानव के जीवन में एक अनुपमता छा जाती है, मुनिवरों! देखो, मूलं ब्रह्मा व्रतो आगे वेद के ऋषियों ने बेटा! लघु मस्तिष्क में चिन्तन करने वालों ने निर्णय किया है, क्या एक सहस्त्र मूल नक्षत्र इनको मेरे प्यारे! देखो, स्वाति मण्डल अपने में धारण कर रहा है मुनिवरों! देखो, स्वाति मण्डल इतना विशाल मण्डल है। मानो एक सहस्त्र मूल नक्षत्रों को अपने में धारण कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, आगे वेद का ऋषि आचार्य कहता है निर्णय देता हुआ क्या एक सहस्त्र मानो देखो, ये अपृतं ब्रह्मा मुनिवरों! देखो, एक सहस्त्र स्वाति मण्डलों को मुनिवरों! देखो, अचंग मण्डल अपने में धारण कर रहा है एक सहस्त्र अचंग मण्डलों की माला को धारण करने वाला बेटा! व्रेतकेतु मण्डल है। व्रेतकेतु में देखो, ये समाहित हो रहे हैं। और व्रेतकेतु मण्डल मेरे प्यारे! देखो, उनकी एक सहस्त्र व्रेतकेतु मण्डलों की माला बन करके बेटा! उसको व्रेतकेतु मण्डल अपने में धारण कर रहा है। एक सहस्त्र व्रेतकेतु मण्डलों को मेरे

## याग एक सर्वांग पूजा

प्यारे! देखो, वह स्वाति ब्रहा ब्रही अप्र मण्डलों का ब्रहे वर्णास्वति मुनिवरों! देखो, गन्धर्व लोक अपने में धारण कर रहा है। बेटा! गन्धर्व जो मण्डल है। वह बड़ा विचित्र है। जो मानो इस माला का अन्तिम मनका कहलाता है। उस मनके जो मेरे पुत्रों! देखो, जो धारण करता है वह माला को अपने में जानने लगता है। वह माला बन करके मुनिवरों! देखो, एक विचित्र आभा में परिणत हो जाती है, और जिस आभा को हम सदैव अपने में धारयामि बना लेते हैं। तो मुनिवरों! देखो, जिस आभा को हम अपने में धारण करके मुनिवरों! देखो, विचित्र बना करके उस माला की प्रतिभा बन करके एक अपने में ओत-प्रोत हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, आभा में निहित करने वाले अपनी आभा में गति करने लगता है।

तो आओ मेरे प्यारे! वाक् क्या चल रहा है वाक् ये चल रहा है कि हम अपने में उस माला को अपने में पिराने वाले बनें, जिस माला को अपने में धारण करने के पश्चात मानवीय जीवन एक विचित्र बन जाता है। मानवीय जीवन एक धारा में रत्त हो जाता है। जिसके ऊपर मुनिवरों! देखो, मानव परम्परागतों से ही, भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ता रहता है, भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ करके अपने में रत्त हो जाता है। तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र ये क्या कह रहा है आभा में हमें नियुक्त कराता हुआ मेरे पुत्रों! देखो, वेद का ऋषि कहता है सम्भवो ब्रह्म लोकां वाचस्तप्रही लोकां मेरे प्यारे! देखो, अपनी आभा में रत्त ब्रहे सिद्ध लोकां मुनिवरों! देखो, जब हम अपने में ये विचारते हैं कि मानो देखो, इतने सौर मण्डलों की माला मानो देखो, इतने सौर मण्डलों का एक सौर मण्डल बना है, और उन सौर मण्डलों को कौन धारण कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, उन सौर मण्डलों को लगभग मानो देखो, व्रते लाखों मण्डलों की मानो एक आकाश गंगा का निर्णवस्ति प्रह्वा मानो एक आकाश गंगा का कहलाती है, और मुनिवरों! सहस्त्रों आकाश गंगाएं मानो देखो, एक मानो अवन्तिका में क्या अवन्तिका में प्रवेश कर जाती है। उसकी एक अवन्तिका कहलाती है। मानो देखो, सहस्त्रों अवन्तिकाओं की बेटा! एक निहारिका बन जाती है। तो मुनिवरों! देखो, प्रभु का अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है, ये जो पृथ्वी है ये ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है ब्रह्माण्ड का वर्णन कर रही है। जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से विचारता रहा है, अनुसन्धान करता रहा है, अन्वेषण करता रहा है। तो मुनिवरों! देखो, हमें विज्ञान के वांगमय में जब प्रवेश करते हैं। तो लघु मस्तिष्क में जा करके बेटा! योगीजन इसका निर्णय करते रहते हैं, और वही बाह्य जगत में मानो देखो, विज्ञान की भौतिकवाद की एक तरंगें बन करके मानव इसे बेटा! अपने में पिरोने वाला बन जाता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विचार विशेष तुम्हें चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ विचार ये देने के लिए आया हूँ क्या मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा की गाथा गाता हुआ एक वेदमन्त्र बेटा! परमात्मा की गाथा गाता रहता है, जिस प्रकार ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। ये ब्रह्माण्ड एक अनन्तमयी माना गया है। जिसके ऊपर बेटा! प्रत्येक मानव मानवीयतव अपने में रत्त होता रहा है। आओ मेरे प्यारे! आज का विचार हमारा क्या कह रहा है। हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए बेटा! प्रत्येक वेदमन्त्र मानो ये उच्चारण कर रहा है। क्या जितना ये ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है। मानो चाहे वह वनस्पति के रूप में हैं चाहे वह मानो किसी भी रूप में विद्यमान है। उस सर्वत्र के गर्भ में वे परमपिता परमात्मा में दृष्टिपात आता है। वह सर्वत्रता में निहित रहने वाला है। एक चेतना है। जो क्रियाकलाप कर रही है, वह चेतना अपने में चेतनित रहती है, उस चेतना के ऊपर हम सदैव मानो अपनी चेतना में चेतना का भान करते रहें। जिससे मुनिवरों! देखो, मानव में विवेकी की उपलब्धि हो करके, और वह ब्रह्मवर्चोसि बन करके मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा की अनुपम सृष्टि को जानने वाला बन जाएं। ये सृष्टि का कितना विचित्र एक अनुपम एक धारामयी मान वृत्ति कहलाता है। जिसके ऊपर बेटा! मानव परम्परागतों से ही, बेटा! देखो, भारद्वाज मुनि के यहां इस प्रकार का अन्वेषण होता रहा है,

**याग एक सर्वांग पूजा**

अथवा वह अन्वेषण एक महानता की ज्योति में रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब हम ये विचारते हैं क्या मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि जैसों के यहां नाना ऋषि-मुनियों की भिन्न-भिन्न प्रकार की गोष्ठियां होती रही हैं, और उन्होंने बेटा! नाना प्रकार के यागों का चयन किया है। उन्होंने कहीं ब्रह्मयाग में अपने को ले गएं हैं, और कहीं वह मानो देवयाग में ले गएं हैं, यागों में परिणत कराना वही यागों का चयन सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक बेटा! उसी प्रकार अपने में मानव रत्त रहा है। उसकी आभा एक नित रही है। तो प्रत्येक मानव को मानवीय क्षेत्र में ले जाने वाला मानो ये समूह विज्ञान कहलाता है। विज्ञान में रत्त रह करके अपनी विवेक की उपलब्धियां करता हुआ और वह महान बन जाता है। पवित्र बन करके प्रभु की महिमा और प्रभु के गान में मानो देखो, वह महान बनता रहता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, आज मैं तुम्हें ये निर्णय देने आया हूँ। क्या बेटा! इस माला को हमें अपने में धारण करना चाहिए। प्रत्येक प्राणी जब इस माला को अपने में धारण करने लगता है। तो वह माला में ही रत्त हो करके बेटा! प्रभु की सृष्टि को निहारने लगता है। प्रभु की सृष्टि को मानो देखो, महानता में दृष्टिपात करता हुआ सागर से पार हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जैसे माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, ये वाक् मैंने तुम्हें कई काल में पूर्व भी प्रगट किया है मानो देखो, माता के गर्भस्थल में बेटा! शिशु का प्रवेश है, शिशु में देखो, एक बिन्दु हैं, बिन्दु में शिशु है, और शिशु के प्रवेश होते ही मेरे प्यारे! देखो, सर्वत्र देवता रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। रक्षा करने के लिए कौन आते हैं। मेरे प्यारे! देखो, अपने गुणों को ले करके उस शिशु के योनि अप्रतों में प्रवेश हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह चन्द्रमा अमृत बन करके प्रवेश हो गया है, और सूर्य प्रकाश बन करके ओत-प्रोत हो गया है, और मुनिवरों! आपो अमरावृत्ति बन करके आपो उसका आसन बन करके प्रवेश हो गया है। ओढ़न बन करके प्रवेश हो गया है, मेरे प्यारे! देखो, अग्नि उष्ण बनाने के लिए तत्पर हो गई है। और वायु प्राण देने के लिए तत्पर हो गई है मानो देखो, अन्तरिक्ष अवकाश देता है, उसमें वह परमाणु बन करके वहां स्थूल बन करके मानो देखों उसमें वह अवकाश में भ्रमण करते हैं। तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, सर्वत्र देवता आ करके मानो देखो, उस शिशु की रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। बेटा! अपना-अपना क्रियाकलाप अपने में मानो क्रियारत हो करके मुनिवरों! देखो, शिशु की मानो देखो, उसके गृह का निर्माण होने लगता है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कैसा विज्ञानवेत्ता है। तेरे विज्ञान की कोई सीमा नही हैं। कैसा विज्ञानवेत्ता है। मेरे प्यारे! देखो, उस विज्ञान में रत्त रह करके मानव को ये ज्ञान होता है अरे कैसे निर्माणं ब्रह्मा मेरी भोली माता जिसके गर्भ में वह शिशु है, देखो, बिन्दु है और बिन्दु में शिशु है और देवता रक्षा कर रहे हैं। कोई अमृत बहा रहा है। कोई प्रकाश बहा रहा है। कोई प्राण को प्रदान कर रहा है। मेरे प्यारे! कोई उष्ण बना रहा है। कोई पार्थिव गुरूतव दे रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऐसा अभ्योदय होता रहता है। मुनिवरों! देखो, प्रभु का विज्ञान इसमें भासता रहता है। मेरी भोली माता उस ज्ञान और विज्ञान से वंचित रहती है। उसे कोई ज्ञान नही हो रहा है। वह मानो देखो, उससे बहुत दूरी रहती है। तो विचार-विनिमय क्या ये निर्माणवेत्ता वह जो मेरा प्यारा प्रभु है। वह निर्माणवेत्ता है, देखो, हम जैसे पुत्रों! का निर्माण होता है। तो बेटा! बहतर करोड़ बहतर लाख, दस हजार दौ सौ नाड़ियों का निर्माण हो रहा है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कैसा विज्ञानवेत्ता है। मानो तू कैसे धारयामि बना रहा है। जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अन्वेषण कर रहा है। तो मुनिवरों! देखो, विचार क्या वह माता का पुत्र माता के गर्भ से पृथक हो करके माता को निर्णित कर रहा है। माता उसी से प्राप्त होती है। मेरे प्यारे! देखो, वह देवता रक्षा कर रहे हैं। मानो वह निर्माण हो करके ही माता का इसी प्रकार बेटा! देखो, वह जो शिशु है, वह बेटा! देखो, पृथ्वी के गर्भ में भी माता के गर्भस्थल में भी मानो वही तो दृष्टिपात आ रहा है। इसीलिए मुनिवरों! देखो, उसको

वसुन्धरा कहते हैं। हे माता! तू वसुन्धरा है तेरे ही गर्भ में ही मानो देखो, बस रहे हैं। मुनिवरों! देखो, अन्त में जब माता के गर्भ से पृथक हुआ, तो बाल्य तो बेटा! देखो, पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश हो गया है। पृथ्वी मानो खाद्य और खनिज पदार्थों के द्वारा उसका पालन कर रही है। मानो देखो, जब उससे भी उपराम होता है तो विवेक में आता है। तो प्रभु! की गोद में चला जाता है। हे माता! तू वेदां मं ब्रहे अमृत को देने वाली है। उस अमृत को पान करके मानो तेरा हम यशोगान गाते हैं। तो हमारे में रत्त हो करके अपनी प्रतिभा को ऊँचा बना करती है। और तेरे ही गर्भ में प्रवेश करके हम इस ब्रह्माण्ड को जानते हैं।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नही आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नही हूँ, केवल संक्षिप्त परिचय देने के लिए आया हूँ। ये परिचय देना हमारा कर्तव्य है। तो मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि-मुनियों ने बड़ा अन्वेषण किया है, विज्ञानवेत्ता ने इस संसार को जानकारी के लिए बेटा! बहुत अपना तपश्चं ब्रह्मा कृते उन्होंने तप किया है। वेदमन्त्र के ऊपर अन्वेषण किया है, विचार-विनिमय किया है, इसको जानने के पश्चात बेटा! हमारा मानवीय जीवन पवित्रता में परिणत हो करके इस संसार सागर से मानव पार हो जाता है। तो ये मानव की बेटा! तीन माताएं हैं। मानो वसुन्धरा है। जिसमें वह बसता रहता है, बेटा! एक समाहित हो करके मुनिवरों! देखो, अपने प्रभु को इस माता वसुन्धरा को निहारता रहता है। जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड का स्वामीतव करने वाली है। जो मानो इस ब्रह्माण्ड का सूत्र बना हुआ है, सूत्र बन करके वह मुनिवरों! देखो, वह मनके बन करके मुनिवरों! देखो, उसमें पिरोऐ हुए हैं, और ये माला बन करके ऐसी विचित्र माला है। जो मुनिवरों! देखो, हमें परमाणुओं की माला बन करके एक मानो उसके शरीर का निर्माण होता है, और मुनिवरों! लोक-लोकान्तरों की माला बन करके बेटा! एक दूसरा लोक लोक की सहायता कर रहा है। मानो देखो, वह ब्रहे वह उसमें ओत-प्रोत हो रहा है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का विचार-विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए दोनों प्रकार के विज्ञान में रत्त हो जाएं, मानो भौतिक विज्ञान आध्यात्मिक विज्ञान दोनों की उपलब्धि गुरुतव से होती है। पार्थिव परमाणुओं से होती है। इसीलिए हमें उसे जानना है ये है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन ओ३म् देवाः मानं त्वा यम रथा आपा रथं गाया मां रेवाः। ओ३म् तनु मां गृहिता रथं मा वाया गर्भ ब्रह्म गाता सर्वा। ओ३म् रुद्रा हसा मां धेनु गतप्राजा आपाहाम्। ओ३म् सर्वं भद्रा। अच्छा भगवन्! आज्ञा।